रजिस्ट्री सं. डीएल(एन)-04/0007/2003--05 REGISTERED No. DL(N)-04/0007/2003—05

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 47] नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर 25—दिसम्बर 1, 2017 (अग्रहायण 4, 1939)

No. 47] NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 25—DECEMBER 1, 2017 (AGRAHAYANA 4, 1939)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ सं.
भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं.	871
भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	1035
भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	11
भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	2095
भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम.	*
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ.	*
भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट.	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं).	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं.	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं).	*
भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश.	*
भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.	23527
भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस	*
भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.	*
भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं.	2763
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस.	2001
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक.	*

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

	Page No.
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	871
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1035
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	11
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	2095
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi language, of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	23527
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	*
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	2763
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	2001
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folios not received.

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 2017

सं. 108-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, दिल्ली अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवा के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1. श्री हरी सिंह मीना (मरणोपरांत)
   लीडिंग फायरमैन

2. श्री हरी ओम (मरणोपरांत)
   लीडिंग फायरमैन

2. दिनांक 24.02.2017 को 05.35 बजे दिल्ली फायर सर्विस कंट्रोल रूम में सूचना प्राप्त हुई कि चटकोरा फूड एवं स्नैकर दुकान संख्या-15, एच. ब्लॉक, लाल मार्केट, विकासपुरी, नई दिल्ली में आग लग गई है। सब ऑफिसर, श्री राज सिंह के नेतृत्व में दो फायर टेंडर घटनास्थल की ओर तत्काल रवाना हो गए। घटनास्थल पहुँचने पर उन्होंने देखा की आग की बड़ी-बड़ी लपटें दुकान से बाहर आ रही है और शटर में ताला लगा है। भीड़ ने बताया कि 4 रसोईगैस सिलेन्डर, रेफ्रिजरेटर, खाना बनाने का तेल, लकड़ी की सर्विंग कांउटर इत्यादि समान अन्दर है जिसमें आग लगी हुई है। रसोईगैस के रिसाव के कारण आग तेजी से फैल रही थी। अग्निशमन दल ने तुरन्त आग बुझाने का कार्य शुरू कर दिया। लीडिंग फायरमैन, श्री हरी सिंह मीना और श्री हरी ओम, आग की लपटों के फैलाव और ज्वलनशील गैस के रिसाव के बावजूद भी जलती हुई दुकान के नजदीक पहुँचे व उपलब्ध उपकरणों/साधनों की सहायता से दुकान के शटर को तोड़ना आरम्भ किया। फायर ऑपरेटर श्री नवीन और श्री रविन्दर, चार्ज हौज लाईन के साथ पानी की बौछार के द्वारा उन्हें सुरक्षा प्रदान करते हुए आग बुझा रहे थे। इस कार्य के दौरान दुकान के अंदर एक तेज विस्फोट हुआ विस्फोट की वजह से उत्पन्न हुई तरंगों की वजह से दुकान का शटर टूट कर हवा में लहराते हुए दूर जा गिरा जिसकी वजह से अग्निशमन दल के सदस्य लीडिंग फायरमैन हरी सिंह मीना, हरी ओम, फायर ऑपरेटर नवीन और रविन्दर गंभीर रूप से जल गए। लीडिंग फायरमैन श्री हरी सिंह मीना को पार्क अस्पताल, केशोपुर ले जाया गया जहाँ डॉक्टर ने उन्हें मृत लाया घोषित कर दिया। लीडिंग फायरमैन श्री हरी ओम, फायर ऑपरेटर श्री नवीन और श्री रविन्दर को डी.डी.यू. अस्पताल, हरी नगर ले जाया गया जहाँ श्री हरी ओम को जीवन रक्षक उपचार दिया गया, लेकिन वे बच नहीं पाये। फायर ऑपरेटर श्री नवीन और श्री रविन्दर कुमार को उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

3. लीडिंग फायरमैन, श्री हरी सिंह मीना, और लीडिंग फायरमैन, श्री हरी ओम, ने उत्कृष्ठ वीरता, अदम्य साहस, व्यवसायिक कुशलता एवं उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

4. यह पुरस्कार वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाली नियमावली के नियम 3(1) के तहत प्रदान किये जाते हैं और परिणामतः नियम 5(क) के तहत अनुमय विशेष भत्ता दिनांक 24.02.2017 से इसके साथ देय होगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 109-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, दिल्ली अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवा के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1. श्री सुनील कुमार (मरणोपरांत)
   फायरमैन
2. श्री मंजीत सिंह (मरणोपरांत)
   फायर ऑपरेटर

2. दिनांक 28.09.2016 को 16.45 बजे, दिल्ली फायर सर्विस कंट्रोल रूम में सूचना प्राप्त हुई कि फैक्टरी परिसर, सी.-389, नरेला फैक्टरी क्षेत्र में आग लग गई है। स्टेशन ऑफिसर श्री सुमित कुमार के नेतृत्व में भोरगढ़, नरेला एवम् रोहिणी फायर स्टेशनों के कर्मी दल पाँच फायर टेंडर के साथ घटनास्थल की ओर तत्काल रवाना हुए। वहाँ पहुँचने पर अग्निशमन दल ने देखा कि फैक्टरी के तहखाने से लेकर ऊपरी तीन मंजिलों तक कच्चे माल व पूर्णतः तैयार माल की प्लास्टिक प्लेटें/ग्लास के विशाल भंडार से आग की लपटें निकल रही हैं। प्रभारी अधिकारी ने तुरंत आग को "मध्यम श्रेणी" की घोषित कर आग बुझाने का कार्य शुरू किया। आग बुझाने के दौरान, बचाव दल ने सुना कि दो व्यक्ति आग में फंसे हुए हैं। फंसे हुए व्यक्तियों को खोजने व बचाने के लिए दो दल बनाये गये जिसमें सब ऑफिसर श्री तेज पाल, फायरमैन श्री सुनील कुमार, फायरमैन श्री अनूप सिंह और फायर ऑपरेटर श्री मंजीत सिंह शामिल थे उन्हें चार्ज हौज लाईन सहित इमारत में प्रवेश करने के निर्देश दिए। दोनों दल, उच्च तापमान व धुँए के जोखिम से पूर्णतः अवगत थे परन्तु स्वयं की रक्षा और अपनी जान की परवाह न करते हुए इमारत में घुस गए और गुम व्यक्तियों को ढूंढ़ने के साथ आग बुझाने का कार्य शुरू कर दिया।

3. 2200 बजे के करीब, इमारत के अन्दर दो विशाल विस्फोट हुए जिसमें इमारत ढह गई। अग्निशमन दल के सदस्य गर्म निर्माण सामग्री के मलबे के नीचे दब गए। सब-ऑफिसर श्री तेज पाल व फायरमैन अनूप सिंह जली हुई हालत में पाये गए। फायर ऑपरेटर श्री मंजीत सिंह और फायरमैन श्री सुनील कुमार को गुम बताया गया। उनके पार्थिव शरीर को 1 अक्टूबर 2016 को मलबे से निकाला गया।

4. फायरमैन, श्री सुनील कुमार और फायर ऑपरेटर श्री मंजीत सिंह, ने उत्कृष्ठ वीरता, अदम्य साहस, व्यवसायिक कुशलता एवं उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

5. यह पुरस्कार वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाली नियमावली के नियम 3(1) के तहत प्रदान किये जाते हैं और परिणामतः नियम 5(क) के तहत अनुमय विशेष भत्ता दिनांक 28.09.2016 से इसके साथ देय होगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 110-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, दिल्ली अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवा के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1. श्री नवीन
   फायर ऑपरेटर
2. श्री रविंदर कुमार
   फायर ऑपरेटर

2. दिनांक 24.02.2017 को 05.35 बजे दिल्ली फायर सर्विस कंट्रोल रूम में सूचना प्राप्त हुई कि चटकोरा फूड एवं स्नैकर दुकान संख्या-15, एच. ब्लॉक, लाल मार्केट, विकासपुरी, नई दिल्ली में आग लग गई है। सब ऑफिसर, श्री राज सिंह के नेतृत्व में दो फायर टेंडर घटनास्थल की ओर तत्काल रवाना हो गए। घटनास्थल पहुँचने पर उन्होंने देखा की आग की बड़ी-बड़ी लपटें दुकान से बाहर आ रही है और शटर में ताला लगा है। भीड़ ने बताया कि 4 रसोईगैस सिलेन्डर, रेफ्रिजरेटर, खाना बनाने का तेल, लकड़ी की सर्विंग कांउटर इत्यादि समान अन्दर है जिसमें आग लगी हुई है। रसोईगैस के रिसाव के कारण आग तेजी से फैल रही थी। अग्निशमन दल ने तुरन्त आग बुझाने का कार्य शुरू कर दिया। लीडिंग फायरमैन, श्री हरी सिंह मीना और श्री हरी ओम, आग की लपटों के फैलाव और ज्वलनशील गैस के रिसाव के बावजूद भी जलती हुई दुकान के नजदीक पहुँचे व उपलब्ध उपकरणों/साधनों की सहायता से दुकान के शटर को तोड़ना आरम्भ किया। फायर ऑपरेटर श्री नवीन और श्री रविन्दर, चार्ज हौज लाईन के साथ पानी की बौछार के द्वारा उन्हें सुरक्षा

प्रदान करते हुए आग बुझा रहे थे। इस कार्य के दौरान दुकान के अंदर एक तेज विस्फोट हुआ विस्फोट की वजह से उत्पन्न हुई तरंगों की वजह से दुकान का शटर टूट कर हवा में लहराते हुए दूर जा गिरा जिसकी वजह से अग्निशमन दल के सदस्य लीडिंग फायरमैन हरी सिंह मीना, हरी ओम, फायर ऑपरेटर नवीन और रविन्दर गंभीर रूप से जल गए। लीडिंग फायरमैन श्री हरी सिंह मीना को पार्क अस्पताल, केशोपुर ले जाया गया जहाँ डॉक्टर ने उन्हें मृत लाया घोषित कर दिया। लीडिंग फायरमैन श्री हरी ओम, फायर ऑपरेटर श्री नवीन और श्री रविन्दर को डी.डी.यू. अस्पताल, हरी नगर ले जाया गया जहाँ श्री हरी ओम को जीवन रक्षक उपचार दिया गया, लेकिन वे बच नहीं पाये। फायर ऑपरेटर श्री नवीन और श्री रविन्दर कुमार को उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

3. फायर ऑपरेटर, श्री नवीन और फायर ऑपरेटर, श्री रविंदर कुमार, ने उत्कृष्ठ वीरता, अदम्य साहस, व्यवसायिक कुशलता एवं उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

4. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाली नियमावली के नियम 3(1) के तहत प्रदान किये जाते हैं और परिणामतः नियम 5(क) के तहत अनुमय विशेष भत्ता दिनांक 24.02.2017 से इसके साथ देय होगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 111-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, दिल्ली अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवा के निम्नलिखित अधिकारियों को वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1. श्री तेज पाल
   सब-ऑफिसर

2. श्री अनूप सिंह
   फायरमैन

2. दिनांक 28.09.2016 को 16.45 बजे, दिल्ली फायर सर्विस कंट्रोल रूम में सूचना प्राप्त हुई कि फैक्टरी परिसर, सी.-389, नरेला फैक्टरी क्षेत्र में आग लग गई है। स्टेशन ऑफिसर श्री सुमित कुमार के नेतृत्व में भोरगढ़, नरेला एवम् रोहिणी फायर स्टेशनों के कर्मी दल पाँच फायर टेंडर के साथ घटनास्थल की ओर तत्काल रवाना हुए। वहाँ पहुँचने पर अग्निशमन दल ने देखा कि फैक्टरी के तहखाने से लेकर ऊपरी तीन मंजिलों तक कच्चे माल व पूर्णतः तैयार माल की प्लास्टिक प्लेटें/ग्लास के विशाल भंडार से आग की लपटें निकल रही हैं। प्रभारी अधिकारी ने तुरंत आग को "मध्यम श्रेणी" की घोषित कर आग बुझाने का कार्य शुरू किया। आग बुझाने के दौरान, बचाव दल ने सुना कि दो व्यक्ति आग में फंसे हुए हैं। फंसे हुए व्यक्तियों को खोजने व बचाने के लिए दो दल बनाये गये जिसमें सब ऑफिसर श्री तेज पाल, फायरमैन श्री सुनील कुमार, फायरमैन श्री अनूप सिंह और फायर ऑपरेटर श्री मंजीत सिंह शामिल थे उन्हें चार्ज हौज लाईन सहित इमारत में प्रवेश करने के निर्देश दिए। दोनों दल, उच्च तापमान व धुँए के जोखिम से पूर्णतः अवगत थे परन्तु स्वयं की रक्षा और अपनी जान की परवाह न करते हुए इमारत में घुस गए और गुम व्यक्तियों को ढूंढ़ने के साथ आग बुझाने का कार्य शुरू कर दिया।

3. 2200 बजे के करीब, इमारत के अन्दर दो विशाल विस्फोट हुए जिसमें इमारत ढह गई। अग्निशमन दल के सदस्य गर्म निर्माण सामग्री के मलबे के नीचे दब गए। सब-ऑफिसर श्री तेज पाल व फायरमैन श्री अनूप सिंह जली हुई हालत में पाये गए। फायर ऑपरेटर श्री मंजीत सिंह और फायरमैन श्री सुनील कुमार को गुम बताया गया। उनके पार्थिव शरीर को 1 अक्टूबर 2016 को मलबे से निकाला गया।

4. सब-ऑफिसर, श्री तेज पाल और फायरमैन, श्री अनूप सिंह, ने उत्कृष्ठ वीरता, अदम्य साहस, व्यवसायिक कुशलता एवं उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

5. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाली नियमावली के नियम 3(1) के तहत प्रदान किये जाते हैं और परिणामतः नियम 5(क) के तहत अनुमय विशेष भत्ता दिनांक 28.09.2016 से इसके साथ देय होगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 112-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, सी.ए.डी., पुलगांव, रक्षा मंत्रालय के निम्नलिखित अग्निशमन अधिकारियों को वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1.	श्री बालू पाण्डुरग पाखरे लीडिंग हैन्ड फायर	(मरणोपरांत)
2.	श्री अमित महादेवराव दांडेकर फायर इंजन ड्राइवर	(मरणोपरांत)
3.	श्री अमोल वसंतराव येसनकर फायर इंजन ड्राइवर	(मरणोपरांत)
4.	श्री लीलाधर बपुरावजी चोपड़े फायरमैन	(मरणोपरांत)
5.	श्री धर्मेंद्र कुमार यादव फायरमैन	(मरणोपरांत)
6.	श्री कृष्ण कुमार फायरमैन	(मरणोपरांत)
7.	श्री प्रमोद महादेवराव मेश्राम फायरमैन	(मरणोपरांत)
8.	श्री नवजोत सिंह फायरमैन	(मरणोपरांत)
9.	श्री कुलदीप सिंह फायरमैन	(मरणोपरांत)
10.	श्री अमित पुनिया फायरमैन	(मरणोपरांत)
11.	श्री अरविन्द कुमार फायरमैन	(मरणोपरांत)
12.	श्री धनराज प्रभाकर मेश्राम फायरमैन	(मरणोपरांत)
13.	श्री शेखर गंगाधर बालसकर फायरमैन	(मरणोपरांत)

2. दिनांक 31.05.2016 को 00.50 बजे सन्तरी ने सामान्य क्षेत्र, डेल्टा सब डिपो विस्फोटक क्षेत्र से धुँआ निकलता देखकर तुरन्त अलार्म बजाया। सेक्यूरिटी जूनियर कमीशन्ड ऑफिसर, ट्रक फायर फाइटिंग के साथ डेल्टा सब डिपो रवाना हुए। लीडिंग हैन्ड फायर श्री बालू पाण्डुरग पाखरे ने दल के साथ तुरन्त जल छिड़काव का कार्य विस्फोटक स्टोर हाऊस संख्या-192 में मध्य क्षेत्र से शुरू किया। लीडिंग हैन्ड फायर श्री बालू पाण्डुरग पाखरे और दल के सभी सदस्य वहाँ पर रखे हुए आयुध के खतरे से पूर्णतः जागरूक थे, जो कि युनाइटेड नेशन हैजार्ड डिविजन 1.1 वर्ग के अंतर्गत आता था। श्री बालू पाण्डुरग पाखरे ने अपने दल के सदस्यों का हौसला बढ़ाते हुए एक कुशल नेतृत्व द्वारा टीम की अगुवाई करते हुए सदस्यों को डिलीवरी हौज बिछाने में मार्गदर्शन देते हुए पानी का छिड़काव कई जगह एक साथ शुरू करवाया। पानी की कमी को भांपते हुए उन्होंने तुरन्त दल के कुछ सदस्यों को पानी के टैंक 102 पर भेजकर निरन्तर पानी की सप्लाई को जारी रखवाया। करीब 1.20 बजे एक के बाद कई विस्फोट 134 मैट्रिक टन के स्टोर में हुए, जिसकी वजह से 19 लोगों की जान चली गई, जिसमें 1 लीडिंग फायर हैन्ड 2 फायर इंजन ड्राइवर और 10 फायरमैन थे। दल ने जोखिम उठाकर आत्मविश्वास के साथ जलते हुए स्टोरों पर लगातार पानी का छिड़काव का कार्य जारी रखा जिसके कारण ही सामने के क्षेत्र के 14 विस्फोटक स्टोर, डिपो व हजारों लोगों की जान बचाई जा सकी एवम् बड़ी दुर्घटना होने से बच गई।

3. लीडिंग हैन्ड फायर, श्री बालू पाण्डुरग पाखरे, फायर इंजन ड्राइवर, श्री अमित महादेवराव दांडेकर व श्री अमोल वसंतराव येसनकर, फायरमैन, श्री लीलाधर बपुरावजी चोपड़े, श्री धर्मेन्द्र कुमार यादव, श्री कृष्ण कुमार, श्री प्रमोद महादेवराव मेश्राम, श्री नवजोत सिंह, श्री कुलदीप सिंह, श्री अमित पुनिया, श्री अरविन्द कुमार, श्री धनराज प्रभाकर मेश्राम व श्री शेखर गंगाधर बालसकर, ने उत्कृष्ठ वीरता, अदम्य साहस, व्यवसायिक कुशलता एवं उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

4. यह पुरस्कार वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाली नियमावली के नियम 3(1) के तहत प्रदान किये जाते हैं और परिणामतः नियम 5(क) के तहत अनुमय विशेष भत्ता दिनांक 31.05.2016 से इसके साथ देय होगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 113-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, सी.ए.डी. पुलगांव, रक्षा मंत्रालय के निम्नलिखित अग्निशमन अधिकारियों को वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1. श्री चन्दु दादा पराते
   स्टेशन ऑफिसर
2. श्री किशोर मोतीलाल साहु
   लीडिंग हैन्ड फायर
3. श्री स्वप्निल रमेश खुर्गे
   फायर इंजन ड्राइवर
4. श्री नामदेवराव वनकर
   फायरमैन
5. श्री सतिश शालिकराम गवालकर
   फायरमैन
6. श्री राजेन्द्र गंगाराम महाजन
   फायरमैन
7. श्री संतोष बबोसा पाटिल
   फायरमैन
8. श्री प्रदिप कुमार
   फायरमैन
9. श्री दीपक अर्जुन शिंदे
   फायरमैन

2. दिनांक 31.05.2016 को 00.50 बजे सन्तरी ने सामान्य क्षेत्र, डेल्टा सब डिपो विस्फोटक क्षेत्र से धुँआ निकलता देखकर तुरन्त अलार्म बजाया। सेक्यूरिटी जूनियर कमीशन्ड ऑफिसर, ट्रक फायर फाइटिंग के साथ डेल्टा सब डिपो रवाना हुए। लीडिंग हैन्ड फायर श्री बालू पाण्डुरग पाखरे ने दल के साथ तुरन्त जल छिड़काव का कार्य विस्फोटक स्टोर हाऊस संख्या-192 में मध्य क्षेत्र से शुरू किया। लीडिंग हैन्ड फायर श्री बालू पाण्डुरग पाखरे और दल के सभी सदस्य वहाँ पर रखे हुए आयुध के खतरे से पूर्णतः जागरूक थे, जो कि युनाइटेड नेशन हैजार्ड डिविजन 1.1 वर्ग के अंतर्गत आता था। श्री बालू पाण्डुरग पाखरे ने अपने दल के सदस्यों का हौसला बढ़ाते हुए एक कुशल नेतृत्व द्वारा टीम की अगुवाई करते हुए सदस्यों को डिलीवरी हौज बिछाने में मार्गदर्शन देते हुए पानी का छिड़काव कई जगह एक साथ शुरू करवाया। पानी की कमी को भांपते हुए उन्होंने तुरन्त दल के कुछ सदस्यों को पानी के टैंक 102 पर भेजकर निरन्तर पानी की सप्लाई को जारी रखवाया। करीब 1.20 बजे एक के बाद कई विस्फोट 134 मैट्रिक टन के स्टोर में हुए, जिसकी वजह से 19 लोगों की जान चली गई, जिसमें 1 लीडिंग फायर हैन्ड 2 फायर इंजन ड्राइवर और 10 फायरमैन थे।

3. स्टेशन ऑफिसर श्री चन्दु दादा पराते जो कि ऑफ ड्यूटी पर थे, विस्फोट की आवाज सुनते ही स्वेच्छा से मुख्य फायर स्टेशन में ड्यूटी पर रिपोर्ट कर घटनास्थल की ओर रवाना हो गए व आग बुझाने का कार्य संभाल लिया। लगभग 850 मीटर व्यास के

वृत्ताकार क्षेत्र में अभी भी आग फैली हुई थी, जिसमें 450 एम.टी. क्षमता के भंयकर 20 विस्फोटक स्टोर हाऊस (ई.एस.एच.) 600 एकड़ क्षेत्र में फैले हुए थे। ऐसे बुरे हलात में श्री चन्दु दादा पराते बचे हुए ट्रक फायर फाईटिंग और दल के सभी सदस्यों में प्रेरणा भरते हुए, ज्वलनशील विस्फोटक स्टोर हाउस से बचाने का कार्य जारी रखवाया। अग्निशमन गाड़ी और बचाव दल को ई.एस.एच. सं. 189, 191, 193, 194, 195, 196, 198 और 203 में तैनात किया। दल का नेतृत्व करते हुए तथा अन्य कर्मियों का हाथ बटाते हुए बढ़ती हुई आग पर काबू पाया तथा सुनिश्चत किया कि वहाँ आसपास और आग तो नहीं है। जब तक आग पूर्ण रूप से बुझ नहीं गई, तब तक उन्होंने अपनी तथा दल के सदस्यों की जान की परवाह न करते हुए क्षतिग्रस्त डिपो की आग को पूर्ण रूप से बुझाया, इस तरह और डिपो, व्यक्तियों व सम्पति को होने वाले नुकसान से बचाया।

4. स्टेशन ऑफिसर, श्री चन्दु दादा पराते, लीडिंग हैन्ड फायर, श्री किशोर मोतीलाल साहु, फायर इंजन ड्राइवर, श्री स्वप्निल रमेश खुर्गे, फायरमैन, श्री राम नामदेवराव वनकर, श्री सतिश शालिकराम गवालकर, श्री राजेन्द्र गंगाराम महाजन, श्री संतोष बबोसा पाटिल, श्री प्रदिप कुमार और श्री दीपक अर्जुन शिंदे ने उत्कृष्ठ वीरता, अदम्य साहस, व्यवसायिक कुशलता एवं उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

5. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाली नियमावली के नियम 3(1) के तहत प्रदान किये जाते हैं और परिणामतः नियम 5(क) के तहत अनुमय विशेष भत्ता दिनांक 31.05.2016 से इसके साथ देय होगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 114-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवा के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए अग्निशमन पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1. श्री दीपक भटु गायकवाड
   सब-ऑफिसर
2. श्री देविदास दत्तात्रय इंगले
   ड्राइवर
3. श्री हेमंत बाबुराव बेलगांवकर
   फायरमैन
4. श्री शिवाजी लक्ष्मण खुलगे
   फायरमैन
5. श्री शिवाजी फकिरा फुगट
   फायरमैन
6. श्री अविनाश सुभाष सोनवणे
   फायरमैन
7. श्री बालासाहेब पोपट लहांगे
   फायरमैन

2. दिनांक 12.07.2016 को 1600 बजे, सूचना प्राप्त हुई कि खाद्क-सुकने ताल, दिंडोरी, नासिक में लगातार मूसलाधार बारिश एवं पालखेड बांध से 31,800 क्यूसेक पानी छोड़ने के कारण विनाशकारी बाढ़ के कारण छह मछुआरे नदी तट से 200 मीटर की दूरी पर स्थित द्वीप में फंसे हुए हैं। सब-ऑफिसर श्री दीपक भटु गायकवाड के नेतृत्व में बचाव दल घटनास्थल की ओर रवाना हुआ। वहाँ पहुंचने पर उन्होंने पाया कि 6 मछुआरे द्वीप में फंसे हुए हैं। नदी के विकराल और तेज जल प्रवाह में उनको बचाना असंभव था। बचाव दल अपनी जान की परवाह ना करते हुए, गर्जन और अशांत जल के बीच नाव की मदद से कुशलता के साथ अपनी जान को जोखिम में डालकर कठिनाईयों का सामना करते हुए द्वीप पर पहुँचे एवं सभी 6 मछुआरों को रस्सी और नाव के सहारे सुरक्षित बाहर निकाला।

3. 21.30 बजे बचाव दल को पुन: सूचना मिली कि तीन लोग कुंडेवाड़ी, ताल, निफाड के उसी नदी से 40 किमी दूर बाढ़ में फंसे हुए हैं। उन्होंने पुन: उपरोक्त सभी तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए सेना की मदद से 3 व्यक्तियों की जान बचाई।

4. सब-ऑफिसर, श्री दीपक भटु गायकवाड, ड्राइवर श्री देविदास दत्तात्रय इंगले, फायरमैन, श्री हेमंत बाबुराव बेलगांवकर, श्री शिवाजी लक्ष्मण खुलगे, श्री शिवाजी फकिरा फुगट, श्री अविनाश सुभाष सोनवणे और श्री बालासाहेब पोपट लहांगे ने उत्कृष्ठ वीरता, अदम्य साहस, व्यवसायिक कुशलता एवं उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

5. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाली नियमावली के नियम 3(1) के तहत प्रदान किये जाते हैं और परिणामतः नियम 5(क) के तहत अनुमय विशेष भत्ता दिनांक 12.07.2016 से इसके साथ देय होगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 115-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, तेलंगाना अग्निशमन एवं आपातकालीन सेवा के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

श्री अर्जुन हमीलपुर
फायरमैन

2. दिनांक 30.09.2016 को 08.15 बजे कंट्रोल रूम में सूचना प्राप्त हुई कि मैग्नाक्वेस्ट, प्लॉट नं. 523 एवं 524, सड़क सं. 12, बंजारा हिल्स, हैदराबाद में आग लग गई है। फायरमैन श्री अर्जुन हमीलपुर बचाव दल के साथ तत्काल घटनास्थल की ओर रवाना हुए। वहाँ पहुंचने पर उन्होंने देखा कि दो मंजिला इमारत में आग लगी हुई है व पूरी इमारत धुएँ से भरी हुई है। वहाँ उन्हें सूचना मिली कि दो कर्मचारी बिल्डिंग के अंदर फंसे हुए हैं। श्री अर्जुन हमीलपुर को ज्ञात था कि इस बिल्डिंग में अन्दर जा कर फंसे हुए व्यक्तियों को बचाने में उनकी जान को भी खतरा हो सकता है, परन्तु उन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए गर्म लपटों, धुएँ और अंधेरे के बावजूद भी बिल्डिंग के अन्दर प्रवेश किया तथा सीढ़ियों की मदद से एक मंजिल से दूसरी मंजिल पर जाकर खोज और बचाव अभियान को जारी रखा तथा अंत में एक-एक करके दोनों व्यक्तियों को जिन्दा बचा लिया। खोज और बचाव अभियान के दौरान, श्री अर्जुन हमीलपुर अत्यधिक गर्मी व विकिरण के कारण घायल हो गए।

3. फायरमैन, श्री अर्जुन हमीलपुर ने उत्कृष्ठ वीरता, अदम्य साहस, व्यवसायिक कुशलता एवं उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

4. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाली नियमावली के नियम 3(1) के तहत प्रदान किये जाते हैं और परिणामतः नियम 5(क) के तहत अनुमय विशेष भत्ता दिनांक 30.09.2016 से इसके साथ देय होगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 116-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, तेलंगाना राज्य आपदा मोचन एवं अग्निशमन सेवा विभाग के निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

श्री सुधाकर वीरगोनि
फायरमैन

2. दिनांक 15.08.2016 को 12.30 बजे, ईरकीगुदाम घाट, कृष्णा नदी, नलगोंडा जिला, तेलंगाना में दंपत्ति अपने डूबते हुए बेटे को बचाने के लिए चिल्लाने लगे। फायरमैन श्री सुधाकर वीरगोनि, जो वहाँ ड्यूटी पर तैनात थे, एक क्षण बिना विलंब किये पानी के तेज बहाव व खतरनाक मगरमच्छ क्षेत्र की परवाह न करते हुए रक्षा पेटी और रस्सी के सहारे नदी में कूद गये। बच्चा बहकर ओझल हो चुका था। फायरमैन सुधाकर ने अपनी जान की परवाह न करते हुए पानी के अंदर जा कर खोज एवं बचाव का कार्य जारी रखा । बच्चा दिखाई नहीं दे रहा था इसलिए फायरमैन श्री सुधाकर वीरगोनि पानी की और गहराई में जाकर बच्चे को जिन्दा निकाल लाया।

3. फायरमैन, श्री सुधाकर वीरगोनि ने उत्कृष्ठ वीरता, अदम्य साहस, व्यवसायिक कुशलता एवं उच्च कोटि की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

4. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाली नियमावली के नियम 3(1) के तहत प्रदान किये जाते हैं और परिणामतः नियम 5(क) के तहत अनुमय विशेष भत्ता दिनांक 15.08.2016 से इसके साथ देय होगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 117-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, स्वतंत्रता दिवस 2017 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1. श्री अब्दुर रहमान
सीनियर स्टेशन ऑफिसर
असम

2. श्री विपिन केंटल
चीफ फायर ऑफिसर
दिल्ली

3. श्री मदन लाल ठाकुर
स्टेशन फायर ऑफिसर
हिमाचल प्रदेश

4. श्री पी. मुरलीधरन
स्टेशन ऑफिसर
केरल

5. श्री राजकिशोर जेना
स्टेशन ऑफिसर
ओडिशा

6. श्री सुरेश कुमार बारिक
लीडिंग फायरमैन
ओडिशा

7. श्री नरहरी राउत
डिप्टी कमांडेंट (फायर)
सी.आई.एस.एफ., एम.एच.ए.

8. श्री सनत कुमार मजूमदार
असिस्टेंट सब-इंस्पैक्टर (फायर)
सी.आई.एस.एफ., एम.एच.ए.

9. श्री नीरज शर्मा
जनरल मैनेजर (फायर सर्विस)
ओ.एन.जी.सी., एम./ओ. पेट्रोलियम एवं नेचुरल गैस

2. यह पुरस्कार विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाले नियमों के नियम 3 (ii) के तहत प्रदान किया जाता हैं।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 118-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, स्वतंत्रता दिवस 2017 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी सराहनीय सेवा के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1. श्री के. यूसुफ़
पी.सी. (ड्राइवर)
अंडमान एवं निकोबार

2. श्री बालाकृष्णा लोहार
पी.सी. (फायरमैन)
अंडमान एवं निकोबार

3. श्री किरण सालोई
सब-ऑफिसर
असम

4. श्री बिमल चन्द्र दास
लीडिंग फायरमैन
असम

5. श्री शशिभूषण सिंह
सब-ऑफिसर
बिहार

6. श्री अरविन्द प्रसाद
सब-ऑफिसर
बिहार

7. श्री अशोक कुमार सिंह
लीडिंग फायरमैन
बिहार

8. श्री नियाज़अहमद बदरुद्दीन फदरा
स्टेशन फायर ऑफिसर
दमन एवं दीव

9. श्री राजबीर सिंह
सब-ऑफिसर
दिल्ली

10. श्री हरीश चंद
लीडिंग फायरमैन
दिल्ली

11. श्री राजेश कुमार
असिस्टेंट वायरलेस ऑफिसर
दिल्ली

12. श्री राम गोपाल ठाकुर
सब-फायर ऑफिसर
हिमाचल प्रदेश

13. श्री जसोल राम
लीडिंग फायरमैन
हिमाचल प्रदेश

14. श्री राजेन्द्र राम
सब-ऑफिसर
झारखंड

15. श्री भगवान ओझा
सब-ऑफिसर
झारखंड

16. श्री रमेश सोमसमुद्रा
डिस्ट्रिक्ट फायर ऑफिसर
कर्नाटक

17. श्री वेंकटरमना मोगेरा
फायर स्टेशन ऑफिसर
कर्नाटक

18. श्री वेंकटस्वामी
असिस्टेंट फायर स्टेशन ऑफिसर
कर्नाटक

19. श्री रेवनसीदेश्वर एस.एम.
लीडिंग फायरमैन
कर्नाटक

20. श्री राजन वी.एन.
स्टेशन ऑफिसर
केरल

21. श्री ससि के.एस.
ड्राइवर मैकेनिक
केरल

22. श्री कृष्णन एस.
फायरमैन
केरल

23. श्री के.टी. चन्द्रन
फायरमैन ड्राइवर कम पम्प ऑपरेटर
केरल

24. श्री खर्गेश्वर बोरो
इंस्पैक्टर
मेघालय

25. श्री सीरमण रैंगांग
फायरमैन
मेघालय

26. श्री बसन्त कुमार सामल
स्टेशन ऑफिसर
ओडिशा

27. श्री बिबेकानन्द मल्लिक
लीडिंग फायरमैन
ओडिशा

28. श्री बालक्रिष्न सामल
ड्राइवर हवलदार
ओडिशा

29. श्री गनेश प्रसाद नन्द
फायरमैन
ओडिशा

30. श्री जित बहादुर गुरुंग
असिस्टेंट सब-फायर ऑफिसर
सिक्किम

31. श्री बालकृष्ण पिल्लई प्रदीपकुमार
डिस्ट्रिक्ट ऑफिसर
तमिलनाडु

32. श्री नागलिंगम सक्थीवेल
स्टेशन ऑफिसर
तमिलनाडु

33. श्री सैंथिआगो लॉरेंस इनिको
लीडिंग फायरमैन
तमिलनाडु

34. श्री वैथियालिंगम मुथुवेल
फायरमैन ड्राइवर
तमिलनाडु

35. श्री राजु
स्टेशन फायर ऑफिसर
तेलंगाना

36. श्री वेंकटेशवरलू कंडीमल्ला
ड्राइवर ऑपरेटर
तेलंगाना

37. श्री महिपाल सिंह भंडारी
सब-ऑफिसर
त्रिपुरा

38. श्री मृदुल कान्ति नाथ
लीडिंग फायरमैन
त्रिपुरा

39. श्री मनिक लाल शर्मा
फायर स्टेशन ऑफिसर
उत्तराखंड

40. श्री हरिश गिरि
फायर स्टेशन ऑफिसर
उत्तराखंड

41. श्री मिलन नाग
डिविजनल फायर ऑफिसर
पश्चिम बंगाल

42. मोहम्मद हुसैन खान
फायर ऑपरेटर
पश्चिम बंगाल

43. श्री शिबु चन्द्र दास
फायर ऑपरेटर
पश्चिम बंगाल

44. श्री दावा त्शेरिंग तमांग
फायर ऑपरेटर
पश्चिम बंगाल

45. श्री गुरमुख सिंह
सब-इंस्पैक्टर (फायर)
सी.आई.एस.एफ., एम.एच.ए.

46. श्री त्रिनाथ भोई
हेड कॉस्टेबल (फायर)
सी.आई.एस.एफ., एम.एच.ए.

47. श्री जय किशन शर्मा
चीफ फायरमैन
ओ.एन.जी.सी. एम./ओ. पेट्रोलियम एवं नेचुरल गैस

48. श्री गदाधर तालुकदार
फायर इंजन ऑपरेटर-II,
ओ. आई. एल एम./ओ. पेट्रोलियम एवं नेचुरल गैस

49. श्री दुलेन बोरह
टेक्निकल असिस्टेंट (फ. और स.)
नुमालीगढ़ रिफाइनरी लिमिटेड
एम./ओ. पेट्रोलियम एवं नेचुरल गैस

50. श्री हरेश बोरह
टेक्निकल असिस्टेंट (फ. और स.)
नुमालीगढ़ रिफाइनरी लिमिटेड
एम./ओ. पेट्रोलियम एवं नेचुरल गैस

2. यह पुरस्कार, सराहनीय सेवा के लिए अग्निशमन सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाले नियमों के नियम 3(ii) के तहत प्रदान किया जाता है।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 119-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, स्वतंत्रता दिवस 2017 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का गृह रक्षक और नागरिक सुरक्षा सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1. श्री लखि राम बरदलै
डिप्टी डायरेक्टर ऑफ़ सिविल डिफेन्स एवं
डिप्टी कमांडेंट जनरल ऑफ़ होम गार्ड्स
असम

2. श्री शेखर नारायण बोरवणकर
डिस्ट्रिक्ट कमाण्डेंट
छत्तीसगढ़

3. श्री कलम सिंह जौहटा
कमाण्डेंट
हिमाचल प्रदेश

4. श्री रमेश
डिप्टी कमाण्डेंट
कर्नाटक

2. यह पुरस्कार विशिष्ट सेवा के लिए गृह रक्षक और नागरिक सुरक्षा सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाले नियमों के नियम 3 (ii) के तहत प्रदान किया जाता है।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 120-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, स्वतंत्रता दिवस 2017 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी सराहनीय सेवा के लिए गृह रक्षक और नागरिक सुरक्षा सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

1. श्री नबज्योति बरा
सीनियर स्टाफ ऑफिसर
असम

2. श्री मुकूट अली
सूबेदार
असम

3. श्री इन्द्र मोहन सिंग्ला
प्लाटून कमांडर
चंडीगढ़

4. श्री दविंदर सिंह
प्लाटून सर्जेंट
चंडीगढ़

5. श्री रामअनुग्रह विश्वकर्मा
हवलदार स्टोरमैन
छत्तीसगढ़

6. श्री चुमन लाल नामदेव
नायक
छत्तीसगढ़

7. श्री धरम दास साहू
हवलदार
छत्तीसगढ़

8. श्री नरोत्तम लाल नेताम
नायक (गृ.र.)
छत्तीसगढ़

9. श्री हिम्मतकुमार दयालभाई पटेल
गृह रक्षक
दमन दीव

10. श्री दीना नाथ यादव
इंस्ट्रक्टर (ना.सु.)
दिल्ली

11. श्री रामेश्वर प्राणशंकर व्यास
ट्रेन्ड इंस्ट्रक्टर
गुजरात

12. श्री बाबूभाई देवराजभाई झडफीया
चीफ वार्डेन
गुजरात

13. श्री देवेन्द्र इश्वरलाल पटेल
डिविजनल कमाण्डर
गुजरात

14. श्री रोहितकुमार जयंतीलाल ब्रह्मभट्ट
कंपनी कमाण्डर
गुजरात

15. श्री हरीलाल गोर्धनभाई कालरीया
हेड क्लर्क
गुजरात

16. श्री किशोरसिंह विजयसिंह चूडासमा
सेंटर कमांडर
गुजरात

17. श्री खोडाभाई पथुभाई वेण
हवलदार
गुजरात

18. श्री राकेश कुमार भारद्वाज
डिविजनल कमाण्डेंट
हिमाचल प्रदेश

19. श्री सुरेश नन्द शर्मा
कंपनी कमांडर
हिमाचल प्रदेश

20. श्रीमती रंजना
प्लाटून कमांडर
हिमाचल प्रदेश

21. श्री हरदयाल सिंह ठाकुर
गृह रक्षक
हिमाचल प्रदेश

22. श्री के.वी. मंजुनाथ
सेक्शन लीडर
कर्नाटक

23. श्री बी.के. बसवलिंगा
प्लाटून कमांडर
कर्नाटक

24. डॉ एच.जे. चन्द्रकान्त
सीनियर प्लाटून कमांडर
कर्नाटक

25. श्री पी.टी. बसवराजप्पा
सार्जेंट
कर्नाटक

26. श्री एल. सोकेन्द्रो सिंह
सूबेदार (गृ.र.)
मणीपुर

27. श्री होलविंग जलोन्ग
हवलदार
मेघालय

28. श्री रेस्टरवेल मुक्तिह
नायक
मेघालय

29. श्री अपुर्बा मारक
लांस नायक
मेघालय

30. श्री प्रताप कुमार परिडा
सिविल डिफेंस वालंटियर
ओडिशा

31. सुश्री मन्जुलता होता
लेडी होम गार्ड
ओडिशा

32. श्रीमती वासन्ती सिन्हा
लेडी होम गार्ड
ओडिशा

33. श्री सुजीत दिगाल
प्लाटून कमांडर (गृ.र.)
ओडिशा

34. श्री निरन्जन देहुरी
गृह रक्षक
ओडिशा

35. श्री परमजीत सिंह
कंपनी कमांडर
पंजाब

36. श्री सुखराज सिंह
कंपनी कमांडर
पंजाब

37. श्री पी. दुरई सिंह
कंपनी कमांडर
तमिलनाडु

38. श्री के. पन्नीरसेल्वम
कंपनी कमांडर
तमिलनाडु

39. श्रीमती एम. कविता
प्लाटून कमांडर
तमिलनाडु

40. श्री सी. थुयमनी
असिस्टेंट प्लाटून कमांडर
तमिलनाडु

41. श्री आर. कलईवासन
असिस्टेंट सेक्शन लीडर
तमिलनाडु

42. श्री बाबुल चक्रवर्ती
गृह रक्षक
त्रिपुरा

43. श्री प्रेमानंद भौमिक
गृह रक्षक
त्रिपुरा

44. श्री विनोद कुमार रत्रा
डिविजनल वार्डेन
उत्तर प्रदेश

45. श्री सुनील कुमार यादव
डिविजनल वार्डेन
उत्तर प्रदेश

46. श्री रवि शंकर द्विवेदी
आई.सी.ओ. सिविल डिफेंस
उत्तर प्रदेश

47. श्री अमिताभ श्रीवास्तव
सीनियर स्टाफ ऑफिसर
उत्तराखंड

48. श्री शाहाजान गाज़ी
गृह रक्षक
पश्चिम बंगाल

49. श्री पालान चन्द्र मंडल
गृह रक्षक
पश्चिम बंगाल

50. श्री अशोक कुमार बर्वे
जुनियर डेमोस्ट्रेटर
एन.सी.डी.सी., एम.एच.ए.

2. यह पुरस्कार, सराहनीय सेवा के लिए गृह रक्षक और नागरिक सुरक्षा सेवा पदक पुरस्कार को शासित करने वाले नियमों के नियम 3 (ii) के तहत प्रदान किया जाता हैं।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

दिनांक 9 नवम्बर 2017

सं. 121-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. बी. बालाजी नाइक
वरिष्ठ कमांडो

02. बी. नरसिम्हा रेड्डी
कनिष्ठ कमांडो

03. पी. मल्लेश
कनिष्ठ कमांडो

04. के. हरिकृष्णा
कनिष्ठ कमांडो

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

दिनांक 24 और 25.10.2016 को ओडिशा राज्य के जिला मल्कानगिरि के पुलिस स्टेशन चित्रकोंडा की सीमा के अंतर्गत गांव रामगुरहा में हुई गोलीबारी में सीपीआई माओवादी को काफी अधिक क्षति पहुंची और उनके (26) महत्वपूर्ण कैडर मारे गए। ग्रेहाउंड दल ने दिनांक 26/27.10.2016 की मध्य रात्रि में वापस लौटना शुरू कर दिया। वे अंधेरे में बारूदी सुरंगों और माओवादी कैडरों की संभावित घात वाले काफी असुविधाजनक और जोखिम भरे क्षेत्र में 10 किमी. तक पैदल चले और पूर्वाह्न 3.30 बजे आन्ध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम ग्रामीण जिले के पुलिस स्टेशन मुनचिंगपुर की सीमा के अंतर्गत सिरिलिमेट्टा गांव के बाहरी क्षेत्र में पहुंचे।

माओवादियों के एक समूह ने वापस लौट रहे ग्रेहाउंड दलों पर बदला लेने के इरादे से सिरिलिमेट्टा गांव के बाहर घात लगाकर हमला किया। पुलिस दलों की आवाजाही का पहले से अनुमान लगा रहे माओवादियों ने उन्हें देखते ही अचानक गोलीबारी आरंभ कर दी। ग्रेहाउंड दलों ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की और कुशलतापूर्वक घातक क्षेत्र से बाहर आ गए तथा घात लगाकर किए गए हमले का सामना किया। माओवादियों ने महसूस किया कि वे मुकाबला करने में असमर्थ हैं और उन्होंने अंधेरे में उस क्षेत्र से भागना आरंभ कर दिया ग्रेहाउंड दलों ने अंधेरे तथा जोखिम भरे क्षेत्र की परवाह किए बिना माओवादियों का पीछा किया। जब वे शत्रु का पीछा करते हुए 07 किमी. और पैदल चलने के बाद दमागुडा और रामगुरहा गांव के बीच जंगल वाले क्षेत्र में पहुंचे, तो माओवादियों ने एक बार फिर ग्रेहाउंड दलों पर गोलीबारी की। ग्रेहाउंड कमांडो अपनी जान की परवाह किए बिना आगे बढ़ते रहे और माओवादियों का पीछा किया। उन्होंने भारी और लगातार गोलीबारी का सामना किया, फिर भी वे घबराए नहीं, एक-दूसरे को प्रोत्साहित किया और उपलब्ध जमीनी आश्रयों और पेड़ों की आड़ लेते हुए कुशलतापूर्वक आगे बढ़े।

वरिष्ठ कमांडो (एससी) 7456 बी. बालाजी नाइक, कनिष्ठ कमांडो (जेसी) 3444, बी. नरसिम्हा रेड्डी, जेसी 3716 पी मल्लेश और जेसी 4487 के. हरिकृष्णा ने माओवादियों की निरंतर गोलीबारी के सामने जबरदस्त साहस का प्रदर्शन किया और अपनी जान को अत्यधिक जोखिम में डालकर उनका पीछा किया। माओवादी पहाड़ी पर चढ़ गए और ग्रेहाउंड दल पर भारी गोलीबारी की। लेकिन, कमांडों ने असाधारण साहस तथा दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया और सभी युक्तिपूर्ण एहतियात बरतते हुए माओवादियों का पीछा करते हुए पहाड़ी पर चढ़ना जारी रखा। श्री बी. बालाजी नाइक, एस.सी. ने आगे बढ़कर दल का नेतृत्व किया। कमांडो ने एक-दूसरे का साथ दिया और आवाजाही को सुगम बनाने के लिए कवर फायर देते हुए दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़े। घना जंगल कवर और पहाड़ी की तीव्र ढलान मुख्य बाधा थी, लेकिन कमांडो ने आगे बढ़ने के लिए अनुकरणीय धैर्य का प्रदर्शन किया। उन्होंने जबरदस्त दल भावना का प्रदर्शन किया, जो सफल अभियान का प्रमाण है।

भयंकर गोलीबारी के बाद, उन्होंने दो (02) माओवादियों को मार गिराया और एक एसएलआर राइफल तथा एक .303 राइफल और 02 हैंड ग्रेनेड बरामद किए। बाद में मारे गए माओवादियों की पहचान छत्तीसगढ़ राज्य के गौतम, एरिया कमेटी सदस्य (एसीएम) और ओडिशा राज्य के नरेश, पार्टी के सदस्य (पीएम) के रूप में की गई। रामगुरहा गांव में हुई गोलीबारी के पश्चात हुई इस गोलीबारी ने माओवादियों को और हतोत्साहित कर दिया और सुरक्षा बलों के मनोबल को बढ़ाया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री बी. बालाजी नाइक, वरिष्ठ कमांडो, बी. नरसिम्हा रेड्डी, कनिष्ठ कमांडो, पी. मल्लेश, कनिष्ठ कमांडो और के. हरिकृष्णा, कनिष्ठ कमांडो ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.10.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 122-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. मोहम्मद अबुबकर (मंरणोपरांत)
वरिष्ठ कमांडो

02. जे. ईश्वर राव
सहायक हमला कमांडर

03. वी. सुब्बा राव
कनिष्ठ कमांडो

04. के. भानु प्रसाद
कनिष्ठ कमांडो

05. पी. नगेन्द्र
कनिष्ठ कमांडो

06. पी. राम कृष्णा राव
उप निरीक्षक

07. डी. सथीश कुमार
कनिष्ठ कमांडो

08. एम. रामैय्या
वरिष्ठ कमांडो

09. पी. श्रीरामुलू
वरिष्ठ कमांडो

10. एम. नारायण राव
सहायक हमला कमांडर

11. वी. अरुण किरण
उप निरीक्षक

12. ए. शिव शंकर
कनिष्ठ कमांडो

13. के. ईश्वर राव
कनिष्ठ कमांडो

14. आर. अप्पाला नायडू
कनिष्ठ कमांडो

15. डी. हरि किरण
कनिष्ठ कमांडो

16. बी. अप्पाला नायडू
सहायक हमला कमांडर

17. वाई. अंजी
कनिष्ठ कमांडो

18. वी. शिव प्रसाद
वरिष्ठ कमांडो

19. ए. राम कृष्ण
कनिष्ठ कमांडो

20. वी. सथीश कुमार
कनिष्ठ कमांडो

21. तिरूमला सेट्टी अनिल कुमार
वरिष्ठ कमांडो

22. डी.वी. महेश
कनिष्ठ कमांडो

23. के. सुरेश
कनिष्ठ कमांडो

24. एम.के. नरसिम्हुडू
सहायक हमला कमांडर

25. पी. दुर्गा प्रसाद
कनिष्ठ कमांडो

26. बी. सतीश
कनिष्ठ कमांडो

27. आर. लक्ष्मण राव
कनिष्ठ कमांडो

28. आर. रमेश
कनिष्ठ कमांडो

29. आर. असिरिताता
सहायक हमला कमांडर

30. के. गोविन्दा
कनिष्ठ कमांडो

31. के. रघुराम रेड्डी, आईपीएस
पुलिस अधीक्षक

32. राहुल देव शर्मा, आईपीएस
पुलिस अधीक्षक

33. ए. बाबूजी, आईपीएस
अपर पुलिस अधीक्षक

34. के. नारायण रेड्डी
अपर पुलिस अधीक्षक

35. ए. भास्कर राव
कनिष्ठ कमांडो

36. सीएच. श्रीनिवास राव
वरिष्ठ कमांडो

37. सीएच. मधुसूदन राव
कनिष्ठ कमांडो

38. ई. शिवनारायण
वरिष्ठ कमांडो

39. के. चिरंजीवी
कनिष्ठ कमांडो

40. आर. दुर्गा राव
कनिष्ठ कमांडो

41. के. डोरा बाबू
कनिष्ठ कमांडो

42. पी. सिम्हाचलम
कनिष्ठ कमांडो

43. एस. मेहर वासु
कनिष्ठ कमांडो

44. आर. सूरी बाबू
वरिष्ठ कमांडो

45. जी. अदिनारायण
कनिष्ठ कमांडो

46. जी. वासु
वरिष्ठ कमांडो

47. बी. वेंकटेश
कनिष्ठ कमांडो

48. सीएच. वी. भास्कर राव
कनिष्ठ कमांडो

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

इस विश्वसनीय सूचना पर कि राज्य के विरूद्ध हिंसक कार्य करने के इरादे से आन्ध्र ओडिशा सीमा (एओबी) के कट-ऑफ क्षेत्र में आन्ध्र ओडिशा बार्डर स्पेशल जोनल कमेटी (एओबीएसजेडसी) के शीर्ष नेताओं सहित बड़ी संख्या में माओवादी एकत्र हो रहे हैं, दिनांक 23.10.2016 की शाम को स्थानीय पुलिस और विशेष आसूचना शाखा (एसआईबी) के प्रतिनिधियों के साथ ग्रेहाउंड्स की तीन हमला यूनिटें अभियान के लिए तैनात की गईं। ओडिशा पुलिस ने बालीमेला जलाशय के पश्चिम की ओर कट-ऑफ दल तैनात किए। ये दल बारूदी सुरंगों तथा माओवादी गश्त दलों और सशस्त्र उग्रवादियों द्वारा संभावित घात का सामना करते हुए पूरी रात माओवाद से अत्यधिक प्रभावित गांवों से होते हुए 26 किमी. से अधिक काफी कठिन और असुविधाजनक क्षेत्र से जंगल में पैदल चले और दिनांक 24.10.2016 को प्रात: लगभग 6 बजे रामगुरहा (वी) के बाहर पहुंचे। वहां उन्होंने अपने आप को छोटी उप-यूनिटों में बांट लिया और हमला तथा कट-ऑफ समूहों के रूप में आगे बढ़े।

उप हमला कमांडर (डीएसी) श्री के. रामाराव के नेतृत्व में कमांडो का एक समूह, जिसमें सहायक हमला कमांडर (एससी) 5098 बी. अप्पाला नायडू, कनिष्ठ कमांडो (जेसी) 3666 वाई, अंजी, वरिष्ठ कमांडो (एसी) 3375 वी. शिव प्रसाद, जेसी 3703 वी. सतीश, जेसी

3681 पी. सिम्हाचलम, जेसी 2547, के. चिरंजीवी, जेसी 3689 मेहर बासु, एससी 8650 ई. शिवनारायण, जेसी 3568 ए. रामकृष्ण, जेसी 3626 के. डोराबाबू, जेसी 3586 आर. दुर्गा राव और जेसी 3397 पी. दुर्गा प्रसाद और अन्य कमांडो शामिल थे, रामागुरहा (वी) के उत्तर की ओर पहाड़ी भू-भाग की तलाशी ले रहे थे। लगभग 0600 बजे उन्हें जंगल में कुछ तम्बुओं और व्यक्तियों की संदिग्ध आवाजाही का पता चला और युक्तिपूर्वक चलकर उस स्थल पर पहुंचे। तथापि, माओवादी संतरियों ने उन्हें देख लिया और स्वचालित तथा सह-स्वचालित हथियारों से उन पर गोलीबारी की। यद्यपि उन पर भारी और निरंतर गोलीबारी हुई, तथापि ग्रेहाउंड्स दल अपनी जान की परवाह किए बिना आगे बढ़ा। और शत्रु के स्थल पर पहुंच गया। भयंकर गोलीबारी के बाद उन्होंने 04 माओवादियों को मार गिराया और संख्या में उनसे कई गुना अधिक होने के बावजूद, उन्होंने लगभग 60-70 माओवादियों का पीछा करना जारी रखा। इस प्रक्रिया में जेसी श्री ए. रामकृष्ण के सिर में गोली लगी, लेकिन माओवादी हमले का जवाब देने के लिए बहादुरी से लड़े। बाद में, मारे गए माओवादियों की पहचान (1) यमलापल्ली सिम्हाचलम उर्फ मुरली, जिला समिति सदस्य (डीसीएम), (2) राजेश उर्फ शिमल, जिला समिति सदस्य (डीसीएम), (3) लचा मोडिली, पार्टी सदस्य (पीएम) और (4) डेनियल उर्फ दासुरामू, पार्टी सदस्य (पीएम) के रूप में हुई और घटना स्थल से (1) एसएलआर, (2) .303 राइफलें और (1) एसबीएमएल हथियार भी बरामद किए गए।

माओवादियों ने नाला, जंगल और पहाड़ी क्षेत्र का सहारा लिया और रामगुरहा (वी) की ओर भाग गए। सहायक हमला कमांडर (एससी) 4512 श्री एम.के. नरसिम्हुडू के नेतृत्व में, एएसी 7841 आर. असिरिताला, वरिष्ठ कमांडो (एससी) 8708 श्री एम.डी. अबुबकर, जेसी 3335 आर. रमेश, कनिष्ठ कमांडो (जेसी) 32 आर. लक्षमण राव और जेसी 3600 के. गोविन्दा का सामना स्वचालित और सेमी-स्वचालित हथियारों से गोलीबारी करते रहे माओवादियों के समूह से हुआ और अपनी जान को जोखिम में डालते हुए उन्होंने उनका पीछा किया और उनमें से दो को मार गिराया। एससी मोहम्मद अबुबकर माओवादियों का पीछा करने के लिए गहरे नाले में कूद गए और माओवादियों की निरंतर गोलीबारी में घिर गए। उन्होंने वीरतापूर्वक अपने साथियों की रक्षा करते हुए अंतिम सांस ली। बाद में, मारे गए माओवादियों की पहचान (1) गम्मेली केशव राव उर्फ बिरसू, डिवीजनल समिति सचिव (डीसीएस) और (2) सिंधे किल्लो, पार्टी सदस्य (पीएम) के रूप में की गई और घटना स्थल से (1) इन्सास राइफल और (1) .303 राइफल बरामद की गई।

सहायक हमला कमांडर (एएसी) 3413 श्री पी. त्रिनाधा राव, एएसी 4615 श्री जे. ईश्वर राव, कनिष्ठ कमांडो (जेसी) 3705 वी. सुब्बा राव, जेसी 3693 पी. नागेन्द्र, जेसी 3645 के. भानु प्रसाद, जेसी 3730 के. सुरेश, जेसी 8752 डी.वी. महेश, वरिष्ठ कमांडो (एसी) 8612 टी.एस. अनिल कुमार, एससी 3431 सीएच. श्रीनिवास राव, जेसी 8782 ए. भास्कर राव और जेसी 3498 सीएच. मधुसूदन राव के साथ श्री ए. बाबूजी, आईपीएस ओएसडी के नेतृत्व में कमांडो के एक अन्य समूह को रामगुरहा (वी) की ओर भाग रहे 20-25 माओवादी मिले। उन्होंने तुरंत महसूस किया कि यदि माओवादी गांव में प्रवेश कर जाते हैं और गांव वालों के साथ मिल जाते हैं, तो उनके लिए बचना आसान हो जाएगा। उन्होंने माओवादियों की गोलीबारी और ग्रेनेड से हमलों के बीच अपनी जान को अत्यधिक जोखिम में डालकर माओवादियों का पीछा किया। माओवादियों ने पहाड़ी पर चढ़ना आरंभ कर दिया और सुरक्षित पोजीशन ले ली। ग्रेहाउंड कमांडों पर गोलीबारी की बौछार हुई और एससी श्री पी. त्रिनाधा राव गोली लगने से घायल हो गए। तब भी, एससी श्री पी. त्रिनाधा राव बिना घबराए आगे बढ़े और ग्रेहाउंड कमांडो ने असाधारण साहस और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और माओवादियों का पीछा करते हुए पहाड़ी पर चढ़ना जारी रखा। उन्होंने कवर फायर देते हुए एक-दूसरे की मदद की और धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे। उन्होंने 05 माओवादियों को मार गिराया और पहाड़ी की चोटी पर पहुंचने में सफल हुए। घना जंगल कवर और पहाड़ी की तीव्र ढलान मुख्य बाधा थे, लेकिन कमांडो ने आगे बढ़ने के लिए अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया। बाद में, मारे गए माओवादियों की पहचान (1) बकुरी वेंकट रमन उर्फ महेश, विशेष जोनल समिति सदस्य (एसजेडसीएम), (2) प्रुधवी उर्फ मुन्ना, जिला समिति सदस्य (डीसीएम), (3) बद्री क्षेत्र समिति सदस्य (एसीएम), (4) कोम्मुला सुरमा बसई, पार्टी सदस्य (पीएम) और (5) कावेरी मोदिली, पार्टी सदस्य (पीएम) के रूप में की गई और घटना स्थल से (1) एके-47 राइफल, (1) एसएलआर, (2) .303 राइफलें (1) एसबीएमएल और (1) आईईडी बरामद की गई।

इसी बीच, श्री पी.राम कृष्ण राव, सहायक निरीक्षक, पेड्डावाथुलू पीएस, सहायक हमला कमांडर (एएसी) 5049 श्री एम. नारायण राव कनिष्ठ कामंडो (जेसी) 3461 वी. सतीश कुमार, जेसी 3283 आर. अप्पाला नायडू, जेसी 3563 डी. सतीश, वरिष्ठ कमांडो (एसी) 8635 एम. रामैय्या, एससी 6435 पी. श्रीरामुलू, जेसी 3287 के. ईश्वर राव, जेसी 8713 ए. शिव शंकर के साथ श्री के. रघुराम रेड्डी, आईपीएस, ग्रुप कामंडर, ग्रेहाउंड लगभग एक किमी. तक दौड़े और पहाड़ी के दक्षिण ओर को कवर किया। माओवादी, जो ओएसडी श्री ए. बापूजी आईपीएस और एएसी श्री पी. त्रिनाधा राव और श्री जे. ईश्वर राव की आगे बढ़ रही पार्टी से बच गए थे, ने एएसी श्री एम. नारायण राव और उसके समूह पर स्वचालित हथियारों से गोलियों की बौछार करते हुए पहाड़ी की दक्षिण पूर्वी दिशा में नीचे उतरना आरंभ कर दिया। जेसी श्री डी. सतीश कुमार, एससी श्री एम. रामैय्या और श्री पी. श्री रामुलू, एससी सभी एहतियात बरतते हुए भारी गोलीबारी के बीच दक्षिण पूर्वी दिशा की ओर दौड़े। उन्होंने एके-47 और एसएलआर हथियारों से गोलीबारी करते हुए 02 माओवादियों को मार गिराया। इसी बीच, एएसी श्री एम. नारायण राव, श्री जी. अरुण किरण, सहायक निरीक्षक मुंचिंगपुट पीएस, जेसी ए. शिव शंकर और जेसी श्री के. ईश्वर राव और जेसी आर. अप्पाला नायडू एक कवर से दूसरी कवर तक दौड़े, माओवादियों का पीछा किया और जान को जबरदस्त जोखिम होने पर भी अपने सहयोगियों की मदद से 02 कैडरों को मार गिराया। बाद में, मारे गए माओवादियों की पहचान (1) गंगाधर उर्फ

प्रभाकर, विशेष जोनल समिति सदस्य (एसजेडसीएम), (2) रिहनो, जिला समिति सदस्य (डीसीएम), (3) जनीला उर्फ मालती, जिला समिति सदस्य (डीसीएम), (4) रूप्पी, पार्टी सदस्य (पीएम) के रूप में की गई और घटना स्थल से एके-47 राइफल (1), एसएलआर (1), पिस्तौल (1) और एसबीएमएल हथियार (1) बरामद किए गए।

वरिष्ठ कमांडो (एससी) 5966 श्री सीएच. जी.बी. रामचन्द्र राव एक किमी. से अधिक तक पहाड़ी की पूर्वी दिशा की ओर दौड़े और कनिष्ठ कमांडो (जेसी) 3563 डी. सतीश कुमार और जेसी 3553 डी. हरिकृष्ण के साथ हो गए। उन्होंने असाधारण नेतृत्व का प्रदर्शन किया और यह अहसास कराते हुए कि कमांडो सभी जगह मौजूद हैं, पूर्वी दिशा की ओर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे। माओवादियों ने स्वचालित गोलियों की बौछार की और कमांडो पर ग्रेनेड फैंके। जेसी श्री डी. सतीश कुमार जांघ में गोली लगने से घायल हो गए और वह अशक्त हो गए। तथापि, वे घबराए नहीं और अपने साथियों को लड़ने के लिए कहा। एससी 5966 श्री सीएच. जी.बी. रामचन्द्र राव ने अपने एक सहयोगी को घायल कमांडो की देखभाल करने का कार्य सौंपा और अपनी तथा अपने घायल साथी की रक्षा करते हुए लड़ना जारी रखा। वे उस स्थल से अकेले लड़ रहे थे, लेकिन अपनी सटीक गोलीबारी से माओवादियों को दूर रखा। उन्होंने अपनी यूबीजीएल से गोलीबारी की और 05 माओवादियों को मार गिराया तथा कई अन्य को घायल कर दिया। बाद में, मारे गए माओवादियों की पहचान (1) चमाला किस्तैय्या उर्फ दया, विशेष जोनल समिति सदस्य (एसजेडसीएम), (2) इनापार्थी दासु उर्फ मधु, जिला समिति सदस्य (डीसीएम), (3) वन्तला शांद, पार्टी सदस्य (पीएम), (4) तुबरी, पार्टी सदस्य (पीएम) और (5) जयराम किल्लो, पार्टी सदस्य (पीएम) के रूप में की गई और घटनास्थल से (क) एके-47 राइफल, (1) एसएलआर, (1) .303 राइफल, (1) पिस्तौल और (1) एसबीएमएल बरामद किए गए।

श्री राहुल देव शर्मा, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, श्री के. नारायण रेड्डी अपर पुलिस अधीक्षक, वरिष्ठ कमांडो (एसी) 6306 श्री आर. सूरी बाबू, कनिष्ठ कमांडो (जेसी) 3629 बी. बेंकटेश, एससी 3246 जी. वासु, जेसी 3499 जी. आदिनारायण और जेसी 8741 सीएच. वी. भास्कर राव वाले अन्य दल ने 04 माओवादियों को पहाड़ी के दक्षिण पूर्वी ओर एक नाले की तरफ झाड़ियों से इन्सास और .303 राइफलों से गोलीबारी करते हुए देखा। तब भी, वे अपनी जान को जोखिम होते हुए भी आगे बढ़े। उन्होंने घनी झाडियों और पेड़ों की आड़ ली और वीरतापूर्वक शत्रुओं को निरंतर उलझाए रखा। उन्होंने अत्यधिक धैर्य और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और लम्बी गोलीबारी के बाद शत्रु को मार गिराया। बाद में, मारे गए माओवादियों की पहचान (1) मोद्दम सुवर्णा राजू उर्फ किरण उर्फ रमेश, डिवीजनल समिति सचिव (डीसीएसी), (2) बोड्डू कुंदनलू उर्फ ममता, जिला समिति सदस्य (डीसीएम) और (3) लता उर्फ भारती, जिला समिति सदस्य (डीसीएम), (4) श्यामला पांगी, पार्टी सदस्य (पीएम) के रूप में की गई और घटना स्थल से (1) इन्सास राइफल, (1) .303 राइफल, (1) तमंचा और बारूदी सुरंग बरामद की गई।

इस अभियान में माओवादी अपने इतिहास में अभी तक एक ही अभियान में सर्वाधिक संख्या में हताहत हुए और उनके 3 विशेष जोनल समिति सदस्यों, 2 जिला समिति सचिवों, 8 जिला समिति सदस्यों, 1 क्षेत्र समिति सदस्य और 10 पार्टी सदस्यों सहित 24 कैडर मारे गए। इस अभियान में माओवादियों को 3 एके-47 राइफलों, 4 एसएलआर राइफलों, 2 इन्सास रइफलों, सात (7) .303 राइफलों 4 एसबीएमएल राइफलों, 2 पिस्तौलों, 01 तमंचा, 01 आईईडी और 01 बारूदी सुरंग की हानि हुई।

यह अभियान पूर्णरूपेण ग्रेहाउंड्स के कमाडों और अन्य सहभागी अधिकारियों की अदम्य भावना और साहस के कारण सफल हुआ जिन्होंने अवर्णनीय साहस और वीरता का प्रदर्शन किया। वे पूरी रात जोखिमपूर्ण क्षेत्र में पैदल चले और इसके बाद भी उनमें माओवादियों के हमले का सामना करने और शत्रु को बड़ी मात्रा में हताहत करने की शक्ति विद्यमान थी।

ग्रेहाउंड्स कमांडो माओवादी सशस्त्र संगठनों से लड़ने में हमेशा आगे रहे हैं और इस अभियान से उन्होंने माओवाद-रोधी अभियानों में शामिल सभी सुरक्षा बलों के लिए एक नया बेंचमार्क स्थापित किया है। उनके वीरतापूर्ण कार्य से इस प्रकार के कार्यों में शामिल समूचे देश के अनगिनत अधिकारियों और कर्मियों की लड़ने की भावना प्रबल हुई है और उनके मनोबल को नई ऊंचाई तक पहुंचाया है।

माओवादियों के विरूद्ध हमारी लड़ाई में यह एक ऐतिहासिक और प्रेरणादायक उपलब्धि है और इस अभियान की सफलता में योगदान करने वाले कमांडों तथा अधिकारियों ने अपनी जान को अत्यधिक जोखिम में डालकर सामान्य कर्तव्य से बढ़कर कार्य किया।

इस मुठभेड़ में उपर्युक्त पुलिस कर्मियों ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.10.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 123-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री शंकर राव (मरणोपरांत)
प्लाटून कमांडर

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

दिनांक 10 अप्रैल, 2015 को पुलिस स्टेशन पोलम पल्ली, जिला सुकमा में अस्थायी रूप से रूके प्लाटून कमांडर श्री शंकर राव को गांव पिडमेल के निकट 25 सशस्त्र सीपीआई (माओवादी) कैडरों की उपस्थिति के बारे में खुफिया जानकारी प्राप्त हुई। प्लाटून कमांडर राव ने तुरंत 48 कर्मियों वाले अपने दल को बताया, अतिरिक्त गोलाबारूद लिया और एक आक्रामक अभियान की योजना बनाई। योजना के अनुसार, प्लाटून कमांडर राव ने दिनांक 11 अप्रैल, 2015 को लगभग 02:00 बजे खेगें एवं जंगल के रास्ते अपने दल के साथ पिडमेल के लिए प्रस्थान किया।

तलाशी लेने पर, एसटीएफ दल को पिडमेल गांव के निकट माओवादियों की मौजूदगी का पता नहीं चला। दल गांव से चला और आराम करने के लिए सुबह पिडमेल के निकट एक छोटी पहाड़ी पर रूकने का निर्णय लिया। इसी बीच, माओवादियों, जो पिडमेल और डब्बाकोंता के बीच में रूके हुए थे, को पुलिस की आवाजाही की सूचना मिली और उन्होंने चुपके-चुपके पुलिस दल का पीछा किया और पहाड़ी पर पहुंचने पर एसटीएफ दल को घेरना शुरू कर दिया।

तलाशी के बाद सुरक्षा कर्मी आरवी प्वाइंट 209 के निकट रूके। प्लॉटून कमांडर राव ने कुछ संदिग्ध आवाजाही देखी और अनुकरणीय नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन करते हुए अचानक आवाजाही का कारण जानने के लिए उसी दिशा में गए। लेकिन बहादुर सिपाही को उन माओवादियों की एक गोली छाती में लगी, जो पहाड़ी को घेरने में लगे हुए थे। प्लाटून कामंडर राव ने अत्यधिक घायल होने के बाद भी शेष दल को सतर्क किया। उनके तत्काल सतर्कता से आगे और हताहत होने की संभावना को रोका जा सका क्योंकि सुरक्षा दल अस्थायी रूप से रूका हुआ था और इसलिए तुरंत कार्रवाई करने की स्थिति में नहीं था। लेकिन प्लाटून कमांडर राव के आह्वान पर, दल ने तुरंत पोजीशन ले ली और माओवादियों की अंधाधुंध गोलीबारी का जबाव दिया। प्लाटून कमांडर राव वीरतापूर्वक लड़े लेकिन कुछ देर के बाद वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

तब हेड कांस्टेबल आर.के. अतरा ने अपने आप दल की कमान संभाली। हेड कांस्टेबल आर.के. अतरा ने सूझबूझ का प्रदर्शन करते हुए माओवादियों की घात से बाहर निकलकर आगे बढ़ने का निर्णय लिया। इसके लिए, उन्होंने स्वयं यूबीजीएल से फायर किया और इस हथियार के प्रभाव से माओवादी दल तितर-बितर हो गए। तथापि, आगे बढ़ने पर दल दूसरी घात में घिर गया। लेकिन हेड कांस्टेबल आर.के. अतरा और उनके साथी माओवादियों से वीरतापूर्वक लड़े और घात से बाहर आ गए। माओवादी हमले की तीव्रता और इस हमले में शामिल माओवादियों की संख्या मात्र इस तथ्य से समझी जा सकती है कि आगे तीसरे घात की योजना बनाई गई थी। हेड कांस्टेबल आर.के. अतरा ने यूबीजीएल से फायर किया जिसके परिणामस्वरूप तीन माओवादी मारे गए और तीसरे घात को भी बुरी तरह से विफल कर दिया गया। सभी घायल पुलिस कर्मियों को सुरक्षा दल द्वारा वापस लाया गया और शहीद अधिकारी/जवानों के हथियारों के लूटने से बचाया जा सका।

इस भीषण गोलीबारी के दौरान प्लाटून कमांडर शंकर राव सहित 07 जवान शहीद हो गए और 10 जवान गोली लगने से घायल हो गए। दल लगभग 16:15 बजे कंकरलंका कैम्प पहुंचा। इस क्षेत्र में तैनाती मुख्यत: दोर्णापाल-जगरगुंडा (56 किमी.) और सुकमा-कोंटा (78 किमी.) की धुरी पर है। कंकरलंका-चिंतागुफा और भेज्जी-किस्तारम के बीच घिरा क्षेत्र जंगलों और नदी/नालों से घिरे पहाड़ी, कठिन एवं अगम्य क्षेत्र और सुरक्षा के पूर्ण अभाव के कारण धीरे-धीरे माओवादी गुरिल्ला बेस में परिवर्तित हो गया है। इस क्षेत्र में माओवादी पीएलजीए बटालियन सं. 1 मिलिट्री प्लाटून, एलओएस, एलडीएस और जनमिलिटिया आदि के साथ सक्रिय है और विगत में काफी अधिक सुरक्षा बलों को हताहत किया है।

दिनांक 16.04.2015 को, सोडी राम, करिगुंडम का जनमिलिटिया कमांडर, जो इस घटना में शामिल था, ने पुलिस स्टेशन पोलमपली में पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उसने बताया कि पिडमेल मुठभेड़ में 250 से अधिक माओवादी शामिल थे और मुठभेड़ में 35 माओवादी मारे गए थे तथा 15 घायल हुए थे। उसने आगे यह भी बताया कि माओवादी बटालियन सं. 1 के डिप्टी कमांडर सीतू और कोंटा एरिया समिति सचिव/डिवीजन समिति सदस्य (डीवीसीएम) मदकम अर्जुन मारे गए माओवादियों में शामिल थे। मारे गए सभी 35 माओवादियों के शवों को ग्रामवासियों की मदद से माओवादियों द्वारा इंदापार और पेंटापाड के निकटवर्ती जंगल क्षेत्र में ले जाया गया था और उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया था।

इस प्रकार, प्लाटून कमांडर शंकर राव के नेतृत्व में एसटीएफ कार्मिकों की एक छोटी टुकड़ी ने अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया और 250 से अधिक सशस्त्र माओवादियों से उनके बेस एरिया में वीरतापूर्वक लड़ी। सम्पूर्ण अभियान में एसटीएफ की गतिविधि युक्तिपूर्ण थी और उन्होंने भूभाग का सर्वोत्तम उपयोग किया। उन्होंने माओवादियों को अपने हथियार नहीं लूटने दिए।

अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना प्लाटून कमांडर शंकर राव गोलीबारी की दिशा में आगे बढ़े और माओवादियों को उलझाने का प्रयास किया जिनका इरादा उनके अधिक से अधिक कार्मिकों को हताहत करना था। निर्भीक साहस का विलक्षण प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने शत्रु के बलों का खात्मा करने/निष्क्रिय करने के लिए अपने बल को पोजीशन लेने के लिए सतर्क किया। इस प्रकार, प्लाटून कामंडर शंकर राव वास्तव में निश्चित मौत के सामने काफी नजदीक से भारी गोलीबारी के बीच निर्भीक साहस और असाधारण पराक्रम का प्रदर्शन किया। प्लाटून कमांडर शंकर राव और अन्य पुलिस कार्मिकों ने गोलीबारी के दौरान असाधारण पराक्रम एवं साहस का प्रदर्शन किया और कर्तव्य से बढ़कर सर्वोच्च बलिदान दिया। उन्होंने भारतीय पुलिस की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप अपने साथियों की सुरक्षा के लिए अपने आप को अत्यधिक खतरे में डाला।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री शंकर राव, प्लाटून कमांडर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.04.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 124-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अविनाश शर्मा (मरणोपरांत)
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 19.01.2013 को श्री अविनाश शर्मा को सूचना मिली कि गांव भुरभुसी के निकट कुछ नक्सलवादियों को देखा गया है। श्री अविनाश शर्मा (एसएचओ, पुलिस स्टेशन बंदे) ने तुरंत अपने उच्च अधिकारियों और बीएसएफ के अधिकारियों के साथ इस सूचना को साझा किया। दिनांक 19.01.2013 को श्री अविनाश शर्मा के नेतृत्व में एक संयुक्त अभियान आरंभ किया गया। डीईएफ और बीएसएफ का एक संयुक्त दल पुलिस स्टेशन बंदे, जिला कांकेर (छत्तीसगढ़) के गांव भुरभुसी की ओर युक्तिपूर्वक रवाना हुआ। जब अभियान दल क्षेत्र की ओर जा रहा था, तब गांव भुरभुसी के निकट पहुंचने पर, जैसे ही नक्सलियों ने पुलिस दल को देखा, उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। पुलिस दल ने भी आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की और नक्सलियों पर गोलीबारी की। जब नक्सलियों ने यह महसूस किया कि पुलिस दल उनसे मजबूत है, वे घने जंगल की ओर भाग गए। इसके बाद, पुलिस दल ने आस-पास के क्षेत्र की घेराबंदी की और उसकी तलाशी ली। पुलिस दल को दो अज्ञात महिला नक्सलियों के शव बरामद हुए।

दोनों ओर से हुई इस गोलीबारी में, पुलिस दल न केवल नक्सली गोलीबारी के प्रति अपनी रक्षा करने में सफल रहा, बल्कि एक अस्थायी नक्सली शिविर को भी नष्ट कर दिया। पुलिस दल ने 12 बोर राइफल के 06 जिंदा कारतूस, .303 राइफल के 10 जिंदा कारतूस, .315 बोर की राइफल के 18 जिंदा कारतूस, एके-47 राइफल के 3 जिंदा कारतूस, एसएलआर राइफल का एक खाली कारतूस, नक्सली वर्दी आदि बरामद किए। अज्ञात महिला नक्सलियों के बरामद किए गए दो शवों की पहचान बाद में सुमित्रा बाई (डिप्टी एलजीएस कमांडर) और सनोती बाई के रूप में की गई।

श्री अविनाश शर्मा ने स्टेशन हाउस अधिकारी (एसएचओ) के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान विशिष्ट नेतृत्व और वीरता का प्रदर्शन किया। उन्होंने अनेक सफल नक्सल-रोधी अभियानों की योजना बनाई और उनका नेतृत्व किया। दिनांक 02 फरवरी, 2015 को उप निरीक्षक अविनाश शर्मा, एसी 122 बटालियन श्री विवेक रावत और 6 बीएसएफ कार्मिकों तथा 05 डीईएफ के जवानों के एक छोटे दल के साथ मोटरसाइकिलों पर सवार होकर खुफिया जानकारी एकत्र करने के लिए गए। लगभग 1445 बजे 50-60 माओवादियों ने हवलबरस गांव के निकट दल पर घात लगाकर हमला किया और अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी जिसमें उप निरीक्षक अविनाश शर्मा और एक

सहायक कांस्टेबल गोलियां लगने से घायल हो गए। अविनाश शर्मा और घायल सहायक कांस्टेबल घायल होने के बावजूद वीरतापूवर्पक लड़े और अपने साथियों के साथ-साथ हथियारों और गोलाबारुद की रक्षा की। इस दुर्घटना में, बाद में श्री अविनाश शर्मा और एक सहायक कांस्टेबल की मृत्यु हो गई।

भुरभुसी के जंगल में दिनांक 19.01.2013 को चलाए गए नक्सल-रोधी अभियान के दौरान उप निरीक्षक अविनाश शर्मा ने अनुकरणीय नेतृत्व क्षमता, असाधारण वीरतापूर्ण कार्य और राष्ट्र के प्रति निःस्वार्थ निष्ठा का प्रदर्शन किया।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री अविनाश शर्मा, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.01.2013 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 125-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री रामेश्वर देशमुख
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 29 जनवरी, 2016 की शाम को नागेश, अरूण, सितक्का, विनोद, जितरू और मैडड एरिया समिति के 15-20 अन्य सदस्यों की उपस्थिति के बारे में एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई। अवापल्ली पुलिस स्टेशन की सीमा में बड़े पुन्नूर गांव के निकट जंगल की घेराबंदी करने और तलाशी लेने के लिए एक तलाशी अभियान की योजना बनाई गई। अपर पुलिस अधीक्षक (आपरेशन), बीजापुर की समग्र कमान में सैन्य दल को तीन अभियान दलों में विभाजित किया गया। पुलिस निरीक्षक रामेश्वर देशमुख, रमाकांत तिवारी और लक्ष्मण केवट और अभियान दल के अन्य सदस्यों को सैन्य दल कमांडर द्वारा क्षेत्र कौशल और अभियान के दौरान अपनाई जाने वाली युक्तियों के बारे में बताया गया।

सैन्य दल दिनांक 30.10.2016 को लगभग 0700 बजे बड़े पुन्नूर के जंगलों में पहुंच गया और युक्तिपूर्वक उस पहाड़ी की ओर बढ़ा जहां प्रतिबंधित माओवादी संगठन के सदस्यों के रूके होने की संभावना थी। अनेक पहाड़ियों को पार करने के बाद, सैन्य दल लक्ष्य के निकट पहुंचा और एक-दूसरे के समानांतर तीन दलों में आगे बढ़ा। खड़ी पहाड़ी पर चढ़ते समय, पुलिस दलों पर अचानक गोलियों की बौछार हुई। अपर पुलिस अधीक्षक कल्याण सलेसेला के नेतृत्व वाला मध्य सैन्य दल उन माओवादियों की भयंकर गोलीबारी के बीच आ गया, जो पहाड़ी की चोटी पर एक सुरक्षित स्थान पर तैनात थे। सैन्य दल ने तुरंत आड़ ले ली और उस दिशा का अनुमान लगाने का प्रयास किया जहां से माओवादी उन पर गोलीबारी कर रहे थे। इसी बीच, निरीक्षक रामेश्वर देशमुख के नेतृत्व वाला बायां दल भी माओवादियों की भारी गोलीबारी में आ गया।

निरीक्षक रामेश्वर देशमुख ने घातक क्षेत्र से सफलतापूर्वक बाहर आने के लिए बड़े साहस के साथ अपने सैन्य दल का बड़ी चतुराई के साथ प्रबंधन किया और युक्तिपूर्वक उस स्थल की ओर आगे बढ़े, जहां से नक्सली सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे। गोलीबारी बंद करने के लिए पार्टी कमांडर द्वारा बार-बार चेतावनी दिए जाने के बावजूद, माओवदियों के सैन्य दलों को गंभीर क्षति पहुंचाने और उनके हथियार लूटने के इरादे से सुरक्षा बलों पर गोलीबारी करना जारी रखा। सैन्य दल ने भी आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी की और उस छिपने के ठिकाने की ओर आगे बढ़े, जहां से माओवादी गोलीबारी कर रहे थे। निरीक्षक रामेश्वर देशमुख ने अपने साथियों को पुन: एकत्र किया और भारी हथियारबंद माओवादियों को निष्क्रिय करने के लिए युक्तिपूर्वक जवाबी कार्रवाई की। वास्तव में कोई कवर उपलब्ध न होने पर यह जानते हुए कि सैन्य दल पहाड़ी पर चढ़ रहा है, उन्होंने शत्रु से लड़ने और मैदान न छोड़ने के लिए जबरदस्त दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया। लगभग आधा घंटे तक दोनों ओर से गोलीबारी हुई और सुरक्षा बलों की जवाबी कार्रवाई का सामना न कर सकने पर, नक्सली उस क्षेत्र के बारे में अपनी जानकारी और घने जंगल की आड़ का लाभ उठाकर घटनास्थल से भाग गए।

जैसे ही गोलीबारी बंद हुई, मुठभेड़ स्थल के निकट तलाशी अभियान चलाया गया। तलाशी के दौरान, घटनास्थल से माओवादी वर्दी के एक पुरूष का शव बरामद हुआ, बाद में जिसकी पहचान रमस, सदस्य अवापल्ली एलओएस के रूप में की गई। आगे उस क्षेत्र की तलाशी में, जहां से माओवादी गोलीबारी कर रहे थे, मैगजीन में भरे 3 राउंड के साथ 7.56 एमएम की एक पिस्तौल, .303 कैलिबर का 01 जिंदा कारतूस, .303 कैलिबर का एक न चला हुआ राउंड और 04 खाली खोखे, 01 स्थानीय रूप से बनाया गया हैंड ग्रेनेड, एके-47 के 8 खाली खोखे, इंसास के 2 तथा कोरडेक्स तार बरामद किए गए। हथियार और गोलाबारुद के अलावा, भारी मात्रा में दवाइयां, पिट्ठू, पानी के केन, वर्दियां, मैगजीन की थैली आदि भी बरामद किए गए। इन बरामदगियों से मैडेड एरिया समिति के माओवादी नेताओं की उपस्थिति की भी पुष्टि हुई।

निरीक्षक रामेश्वर देशमुख ने उस समय बड़ी पेशेवरता और साहस का प्रदर्शन किया जब उनका दल भारी गोलीबारी में फंस गया था। जब वे स्वयं और उनके साथी घातक क्षेत्र में आ गए थे, तब उनकी त्वरित और निर्णायक कार्रवाई ने अनुकरणीय साहस और वीरता का प्रदर्शन किया। सैन्य दलों को प्रेरित करने, यथोचित जोखिम उठाने और कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने की उनकी योग्यता अनुकरणीय नेतृत्व और आत्मविश्वास को प्रदर्शित करती है। अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थिति में उनकी तीक्ष्ण अभियान संबंधी भावना ने सभी सैन्य दलों की सुरक्षा और सफलता सुनिश्चित की।

इस मुठभेड़ में श्री रामेश्वर देशमुख, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.01.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 126-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री लक्ष्मण केवट
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 08.10.2014 को लगभग 1200 बजे निरीक्षक लक्ष्मण केवट को सूचना प्राप्त हुई कि जांगला पुलिस स्टेशन की सीमा के गांव के जंगल क्षेत्र के निकट कुछ प्रमुख नक्सली नेताओं के साथ बड़ी संख्या में नक्सली देखे गए हैं। दिनांक 08.10.2014 को निरीक्षक लक्ष्मण केवट के नेतृत्व में गश्त, घेराबंदी और तलाशी के लिए डीईएफ और सीआरपीएफ का एक संयुक्त दल भेजा गया। डीईएफ और सीआरपीएफ का एक संयुक्त दल पुलिस स्टेशन जांगला, जिला बीजापुर (छत्तीसगढ़) के पोतेनार-तितोपारा, गुंडीपुर, हकबा, पेड्डाजोजर, कुडमेर और रेड्डी गांव की ओर युक्तिपूर्वक रवाना हुआ। जब अभियान बल क्षेत्र की ओर जा रहा था और गांव पोटेनार के निकट पहुंचा, तब जैसे ही नक्सलियों ने पुलिस दल को देखा उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। पुलिस दल ने भी आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की और नक्सलियों पर गोलीबारी की। निरीक्षक लक्ष्मण केवट ने निडर और साहसिक कदम उठाया और गोली चलाओ तथा आगे बढ़ो की रणनीति अपनाकर युक्तिपूर्वक आगे बढ़े और अपने साथियों से अपने पीछे आने के लिए कहा। जब नक्सलियों ने यह महसूस किया कि पुलिस दल उनसे सशक्त है, तो वे घने जंगल की ओर भाग गए। इसके बाद पुलिस दल ने आस-पास के क्षेत्र की घेराबंदी की और उसकी तलाशी ली। पुलिस दल ने तीन अज्ञात महिला नक्सलियों के शव बरामद किए, जिनके पास एक .303 मस्केट राइफल, .303 के 06 राउंड, 12 बोर की 2 राइफलें, 12 बोर के 04 राउंड, एके-47 के 08 खाली खोखे, एसएलआर के 15 खाली खोखे, इंसास के 05 खाली खोखे, 03 पिट्ठू, 10 डेटोनेटर, मेडिकल किट, नक्सली साहित्य और दैनिक उपयोग की अन्य सामग्रियां थीं।

इस कार्रवाई में निरीक्षक लक्ष्मण केवट ने संकट के समय अपने सैन्य दल को अनुकरणीय नेतृत्व प्रदान किया। जब नक्सलियों ने उनके दल पर हमला किया, तो उन्होंने अत्याधिक सूझ-बूझ और अभियान संबंधी उत्कृष्ट समझ का प्रदर्शन किया। निरीक्षक लक्ष्मण केवट अपनी जान की परवाह किए बिना लड़े। उन्होंने अपने साथियों को एक-दूसरे की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया, उनके योग्य मार्गदर्शन और नेतृत्व में पुलिस कर्मी अच्छी तरह से यह जानते हुए कि प्रत्येक कदम धातक हो सकता है, नक्सली हमले का सामना करने के लिए आगे बढ़ते रहे। राष्ट्र की सेवा में उनके अनुकरणीय साहस, वीरतापूर्ण प्रयास और अपनी जान की परवाह किए बिना शौर्य पूर्ण कार्य ने छत्तीसगढ़ पुलिस का मान-सम्मान बढ़ाया है।

इस मुठभेड़ में श्री लक्ष्मण केवट, निरीक्षक, ने उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.10.2014 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 127-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री गोरखनाथ बघेल
अपर पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 21.11.2015 को दर्भा डिवीजन समिति, मालनगिर एरिया समिति, मालनगिर एलओएस, एलडीएस और रेवाली तथा नगरगुडा जंगल क्षेत्र के बीच 24 नम्बर प्लाटून के लगभग 50 से 60 सशस्त्र सीपीआई (माओवादी) कैडरों की उपस्थिति के संबंध में एक विशिष्ट खुफिया जानकारी के आधार पर, सशस्त्र नक्सलियों को पकड़ने के लिए श्री गोरखनाथ बघेल, अपर पुलिस अधीक्षक अभियान, दांतेवाड़ा के नेतृत्व में एक अभियान शुरू किया गया।

अभियान दल में डीआरजी दंतेवाड़ा और एसटीएफ के 39 सुरक्षा कर्मी शामिल थे। किडिरास, पेरिया और रेवाली के जंगल की तलाशी लेने के बाद सैन्य दल नागरगुडा के जंगल की ओर आगे बढ़ा। दिनांक 22.11.2015 के सुबह लगभग 07:15 बजे जब सैन्य दल रेवाली और नागरगुडा के बीच में स्थित जंगल क्षेत्र में पहुंचा, तो सीपीआई (माओवादी) कैडरों ने सुरक्षा बलों को गंभीर रूप से हताहत करने और उनके हथियार लूटने के इरादे से सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी की। यद्यपि नक्सलियों ने सुरक्षा बलों पर भारी हमला किया, तथापि सैन्य दल ने वीरतापूर्वक स्थिति का सामना किया और स्थिति का सामना करने के लिए क्षेत्र कौशल और युक्ति को अपनाया। अपर पुलिस अधीक्षक गोरखनाथ बघेल ने अपने कार्मिकों को जंगल में उपलब्ध आड़ लेकर पोजीशन लेने के लिए कहा और अपनी पहचान बताते हुए सशस्त्र नक्सलियों से अंधाधुंध गोलीबारी रोकने के लिए कहा। सशस्त्र नक्सलियों ने सुरक्षा कर्मियों को गंभीर क्षति पहुंचने के इरादे से गोलीबारी बंद नहीं की और इसके विपरीत सैन्य दल पर हमला तेज कर दिया।

अपर पुलिस अधीक्षक ने अपने सैन्य दल को आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई करने और खतरे को निष्क्रिय करने के लिए नक्सली स्थल की ओर बढ़ने का आदेश दिया। अपर पुलिस अधीक्षक ने अदम्य साहस का प्रदर्शन किया और अपनी जान को जोखिम में डालकर नक्सलियों को घेरने के लिए सैन्य दल का नेतृत्व किया, जा बेहतर पोजीशन से गोलीबारी कर रहे थे। नक्सली घात को तोड़ने के बाद, सैन्य दल उस स्थल की ओर आगे बढ़ा जहां से वे सुरक्षा कर्मियों पर अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे। सैन्य दलों की युक्तिपूर्ण कार्रवाई का सामना न कर पाने के कारण सशस्त्र नक्सली अपनी पोजीशन से पीछे हट गए और घने पेड़ पौधों और पहाड़ी क्षेत्र का फायदा उठाकर घटना स्थल से भाग गए।

दोनों ओर से गोलीबारी के बाद, घटनास्थल की पूर्ण तलाशी ली गई और 04 महिला सीपीआई (माओवादी) कैडरों के शव बरामद किए गए, बाद में जिनकी पहचान (1) रमे, सदस्य, मालनगिर क्षेत्र समिति, (02) सन्नी, मालनगिर एलओएस की सदस्य, (03) मासे, मालनगिर एलओएस की सदस्य और (04) पांडे, मालनगिर एलओएस की सदस्य के रूप में की गई। घटनास्थल से एक .303 राइफल, 44 राउंड गोलाबारूद के साथ 12 बोर की दो राइफलें, 19,000/-रू. की नकदी और दैनिक उपयोग की अन्य सामग्रियां भी बरामद की गई।

इस कार्रवाई में श्री गोरखनाथ बघेल, अपर पुलिस अधीक्षक, दंतेवाड़ा ने चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में अपने सैन्य दलों को अनुकरणीय नेतृत्व प्रदान किया। जब नक्सलियों ने उनके दल पर हमला किया, तो उन्होंने अत्यधिक सूझबूझ और अभियान संबंधी उत्कृष्ट समझ का प्रदर्शन किया। श्री गोरखनाथ बघेल, अपर पुलिस अधीक्षक, दंतेवाड़ा अपनी जान की परवाह किए बिना लड़े और अपने कार्मिकों को चुनौती का सामना करने के लिए प्रेरित किया। श्री गोरखनाथ बघेल द्वारा प्रदर्शित अनुकणीय साहस और वीरतापूर्ण कार्य ने छत्तीसगढ पुलिस का मान-सम्मान बढ़ाया है।

इस मुठभेड़ में श्री गोरखनाथ बघेल, अपर पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 21.11.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 128-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री एस.के. गिरि
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 05.05.2006 को स्पेशल सेल/एनडीआर में एक सूचना प्राप्त हुई कि दिल्ली/एनसीआर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड आदि में 70 से अधिक जघन्य मामलों में शामिल एक कुख्यात, इनामी और अंतर-राज्य गैंगस्टर अयूब उर्फ लम्बरदार उर्फ आजम उर्फ मास्टर जी अपने गैंग के सदस्यों के साथ तिमारपुर, दिल्ली के क्षेत्र में डकैती डालने के लिए सोनिया विहार पुस्ता के रास्ते खतरनाक हथियारों के साथ यूपी-11 ई 3770 नम्बर वाली सफेद टाटा सूमो में दिल्ली आएगा। इस सूचना पर, एसीपी संजीव कुमार यादव के नेतृत्व में एक दल 5वां पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली पहुंचा और तदनुसार अपनी पोजीशन ले ली। रात में लगभग 10.45 बजे उक्त टाटा सूमो ट्रोनिका सिटी की ओर से आई और उसे पुलिस दल द्वारा रूकने का सिग्नल दिया गया लेकिन ड्राइवर ने बचने के लिए स्पीड बढ़ा दी जिसके परिणामस्वरूप वाहन सड़क के डिवाइडर से टकरा गया। जैसे ही वाहन सड़क के डिवाइडर से टकराया, असलम और अयूब के रूप में पहचाने गए 2 व्यक्तियों सहित वाहन में सवार 6 व्यक्ति पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए टाटा सूमो से बाहर कूद गए और बचने के लिए पश्चिम की ओर भागे। अपराधियों द्वारा चलाई गई गोलियां एसीपी संजीव और निरीक्षक एस.के. गिरि की छाती पर बुलेट प्रूफ जैकेट पर लगी तथा निरीक्षक मनोज दीक्षित, उप निरीक्षक रणवीर सिंह, उप निरीक्षक अशोक त्यागी, हेड कांस्टेबल सतीश कुमार, हेड कांस्टेबल हरीश कुमार और हेड कांस्टेबल देवेन्द्र के पास से निकल गई। एसीपी संजीव कुमार यादव और निरीक्षक मनोज दीक्षित ने तुरंत पूर्व की ओर अपनी पोजीशन ले ली जबकि निरीक्षक एस.के. गिरि और हेड कांस्टेबल हरीश कुमार ने गैंगस्टरों का सामना करने के लिए एसीपी के दायीं ओर पोजीशन ले ली। उप निरीक्षक रणवीर सिंह और हेड कांस्टेबल देवेन्द्र ने निरीक्षक एस.के. गिरि के दायीं ओर पोजीशन ले ली तथा उप निरीक्षक अशोक त्यागी और हेड कांस्टेबल सतीश कुमार ने गैंगस्टरों का सामना करने के लिए एसीपी के बायीं ओर तिरछे होकर अपनी पोजीशन ले ली। पुलिस दल ने सभी 6 अपराधियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन उन अपराधियों ने पुलिस दल पर गोलीबारी करना जारी रखा। उपर्युक्त पुलिस अधिकारियों ने उस समय असाधारण साहस का प्रदर्शन किया और पुलिस दल को हताहत होने से रोकने तथा अपराधियों को पकड़ने के इरादे से आत्मरक्षा में गोलीबारी की। दोनों ओर से लगभग 20-25 मिनट तक गोलीबारी हुई। दोनों ओर से गोलीबारी में एक अपराधी घने अंधेरे तथा घनी झाड़ियों के कारण पीछा किए जाने के बावजूद बचकर भाग गया जबकि 05 अपराधी गोलियां लगने से घायल हो गए। घायल अपराधियों को तत्काल अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें मृत लाया हुआ घोषित किया गया। अपराधियों से 9 एमएम की दो पिस्तौलें और 29 जिंदा कारतूस, .32 की एक रिवाल्वर, .32 की दो पिस्तौलें, डेटोनेटर के साथ एक जिंदा हेंड ग्रेनेड, 04 जिंदा कारतूसों के साथ 315 बोर की एक देशी पिस्तौल, एक चाकू, 01 टाटा सूमो कार और चलाए गए कारतूस आदि बरामद किए गए और पुलिस स्टेशन खजूरी खास, दिल्ली में कानून की संगत धाराओं के तहत एक मामला दर्ज किया गया। स्पेशल सेल का दल वर्ष 2006 की प्रथम तिमाही में दिल्ली/एनसीआर में सशस्त्र डकैती/लूटपाट के घटनाओं में शामिल अपराधियों के दुस्साहसी गैंग पर कार्य कर रहा था। गैंग को पकड़ना दिल्ली पुलिस के लिए एक खुली चुनौती थी। स्पेशल सेल के दल ने खुफिया जानकारी एकत्र की और अंतत: उन घटनाओं में शामिल सरधना, मेरठ, उत्तर प्रदेश के कुख्यात, इनामी और अंतर-राज्य गैंगस्टर अयूब उर्फ लम्बरदार उर्फ आजम मास्टरजी के गैंग का पता लगाने में सफल रहा।

इस मुठभेड़ में श्री एस.के. गिरि, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.05.2006 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 129-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, हरियाणा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अनिल कुमार राव, आईपीएस
पुलिस महानिरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री अनिल कुमार राव, आईपीएस, आईजीपी/हिसार रेंज के नेतृत्व में अवज्ञाकर्ता रामपाल के विरूद्ध माननीय पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय द्वारा जारी किए गए गैर-जमानती वारंटों को तामील करने के लिए हरियाणा पुलिस द्वारा अभियान 'संवेदी' आरंभ किया गया। रामपाल और उसके समर्थकों ने रामपाल को पुलिस द्वारा गिरफ्तार करने का प्रयास किए जाने के मामले में पुलिस के विरूद्ध दर्ज लड़ाई लड़ने की योजना बनाई थी। सतलोक आश्रम, बरवाला, जिला हिसार के अंदर लगभग 30,000 से 40,000 लोग थे। अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिए रामपाल द्वारा महिलाओं एवं बच्चों को मानव ढाल बनाया गया था। रामपाल को गिरफ्तार करने के पुलिस द्वारा किसी भी प्रयास को रोकने के लिए दंगा-रोधी उपस्करों, हथियारों, पेट्रोल बमों, तेजाब की थैलियों, स्लिंग शॉट और रोड़ी/पत्थरों आदि से लैस कमांडों की एक निजी सेना गठित तथा प्रशिक्षित की गई थी। बड़ी संख्या में होने वाली समानांतर क्षति को रोकने के लिए, उनके नेतृत्व में पुलिस ने एक पेशेवर तरीके से अभियान आरंभ किया। दिनांक 17 नवम्बर, 2014 तक सतलोक आश्रम की पूरी तरह घेराबंदी कर दी गई और जिला मजिस्ट्रेट, हिसार द्वारा दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 144 के तहत एक आदेश लागू किया गया। आश्रम को शांतिपूर्वक छोड़ने के लिए आश्रम के अनुयायियों को मनाने के सभी प्रयास विफल हो गए। दिनांक 18 नवम्बर, 2014 को अपराह्न लगभग 12:00 बजे आश्रम की मजबूत दीवारों के अंदर से एक नियोजित और समन्वित हमला आरंभ हुआ। श्री अनिल कुमार राव, आईपीएस ने श्री सतेन्द्र कुमार गुप्ता, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक/हिसार, श्री सुमित कुमार, एचपीएस, तत्कालीन डीसीपी/फरीदाबाद, श्री राजबीर सिंह, एचपीएस डीएसपी/बरवाला, श्री भगवान दास, डीएसपी/ सिवानी (अब डीएसपी/हिसार), निरीक्षक जीत सिंह, गुणपाल सिंह ओआरपी/एएसआई (प्रभारी, साइबर सेल, हिसार रेंज, हिसार) और अन्य पुलिस बल के साथ रामपाल के समर्थकों को चेतावनी दी, जो बंदूकों, लाठियों, तेजाब की थैलियों, मिर्च बमों और स्लिंग आदि जैसे घातक हथियारों से लैस होकर आश्रम के मुख्य द्वार के सामने खड़े हुए थे। आश्रम को खाली करने के लिए 'संवेदी' अभियान के प्रमुख श्री अनिल कुमार राव, आईपीएस, आईजीपी/हिसार रेंज, हिसार और श्री सतेन्द्र कुमार गुप्ता, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक/हिसार ने बार-बार घोषणाएं कीं। इसी बीच, समर्थकों ने अधिकारियों और कार्मिकों पर हमला किया, पत्थर फेंके, तेजाब की थैलियां फेंकी, मिर्च बमों और स्लिंग शॉट आदि का प्रयोग किया। साथ ही साथ आश्रम के अंदर से रूक-रूककर गोलीबारी हो रही थी। आश्रम से एक गोली श्री अनिल कुमार राव को निशाना बनाकर चलाई गई, लेकिन सौभाग्यवश यह गोली उन्हें नहीं लगी। श्री अनिल कुमार राव, आईपीएस के नेतृत्व में पुलिस द्वारा अपनाए गए पेशेवर दृष्टिकोण के कारण किसी भी ओर से किसी प्रकार की क्षति के बिना सम्पूर्ण अभियान सफलतापूर्वक पूरा किया गया।

अभियान के दौरान श्री सतेन्द्र कुमार गुप्ता, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, हिसार भी आश्रम के मुख्य द्वार पर उपस्थित थे। उन्होंने उक्त अभियान को पूरा करने में पुलिस दल का नेतृत्व किया। उनकी उपस्थिति के स्थान पर, अचानक रामपाल के कुछ अनुयायी अपने हाथों में मिट्टी के तेल के डिब्बे लेकर आए। उन्होंने तेल अपने शरीर पर छिड़क दिया और आत्मदाह करने के लिए अपने शरीर में आग लगा दी। यह श्री सतेन्द्र कुमार गुप्ता और उनके दल के कारण ही था कि इन अनुनायियों को बचा लिया गया और उस स्थान से उन्हें हटा दिया गया।

श्री अनिल कुमार राव और पुलिस अधीक्षक हिसार हिंसक और हमलावर भीड़ के बिलकुल नजदीक थे। हमलावरों ने उन दोनों और अन्य पुलिस बल पर हमला किया, लेकिन उन्होंने उनके उद्देश्य को विफल करने में अहम भूमिका निभाई। वे वीरतापूर्वक लड़े और आश्रम की सामने वाली दीवार और पहले गेट को तोड़ने में सफल रहे। दोनों घायल हो गए, लेकिन पुलिस के मनोबल को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपनी मेडिकल जांच भी नहीं कराई। पुलिस अधीक्षक, हिसार के सिर पर चोट लगी और उनका चश्मा तथा मोबाइल फोन टूट गए। उनके सिर से खून निकल रहा था, इसके बावजूद उन्होंने अपनी चोट और जान की परवाह नहीं की और बहादुरी से लड़े। दोनों अधिकारियों द्वारा दिखाए गए असीम साहस और असाधारण वीरता के कारण सम्पूर्ण अभियान किसी भी ओर से किसी प्रकार की क्षति के बिना सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया। उपर्युक्त के अलावा, दोनों अधिकारियों ने सफलतापूर्वक हजारों लोगों को आश्रम से सुरक्षित उनके घर पहुंचाया।

इस संबंध में, रामपाल और उसके सहयोगियों (अनुयायियों) के विरूद्ध प्रारंभ में पलिस स्टेशन बरवाला में आईपीसी की धारा 107/147/148/149/186/188/120ख/121/121क/ 122/123/224/225/307/332/342/353/436/ और आयुध अधिनियम की धारा 25, विस्फोटक सामग्री अधिनियम, 314 पीडीपीपी अधिनियम और विधि-विरूद्ध क्रिया कलाप (निवारण) अधिनियम 1967 की धारा

16/18/20/22-ग/23 के तहत एक मामला दिनांक 18.11.2014 को एफआईआर सं. 428 दर्ज किया गया था। मामले की जांच करने के लिए एक विशेष जांच दल का गठन किया गया था। जांच के दौरान, आश्रम से 18 फायर आर्म, 19 एयर गन, 45 पेट्रोल बम, एक मिर्च ग्रेनेड, 04 बुलेट प्रूफ जैकेट, 9675 लाठियां, 228 हेलमेट और 26 केन शील्ड बरामद की गई।

इस कार्रवाई में श्री अनिल कुमार राव, आईपीएस, पुलिस महानिरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.11.2014 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 130-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. साकिब बशीर वानी,
उप निरीक्षक

02. तारिक अहमद,
एसजीसीटी

03. जगजीत सिंह,
एसजीसीटी

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 24.02.2015 को शोपियां पुलिस को एक सूचना मिली कि कुछ खूंखार आतंकवादी गांव हेफ, जिला शोपियां में छिपे हुए हैं। तदनुसार, आरआर की 55वीं बटालियन और सीआरपीएफ की 14वीं बटालियन की सहायता से गांव की घेराबंदी की गई। 1700 बजे घेराबंदी करने के बाद तलाशी अभियान आरंभ किया गया। तलाशी के दौरान, अहसान पेद्दर निवासी हेफ के मकान में दो आतंकवादियों की उपास्थिति की पुष्टि हुई। सबसे पहले, लक्ष्य/निकटवर्ती मकानों के आस-पास घेराबंदी को कड़ा/मजबूत कर दिया गया और बच्चों एवं महिलाओं सहित सिविलियनों को घेराबंदी किए गए क्षेत्र से बाहर निकाला गया। अभियान को सफल बनाने के लिए, दो हमला समूह बनाए गए, पहला उप निरीक्षक साकिब बशीर वानी के साथ श्री अत्ताफ खान, एसएसपी, शोपियां के नेतृत्व में, जिसने मकान के सामने की ओर पोजीशन संभाल ली और एसजीसीटी जगजीत सिंह, कांस्टेबल तारिक अहमद सहित श्री सज्जाद अहमद शाह, एएसपी, शोपियां के नेतृत्व में दूसरे समूह ने मकान के पीछे की ओर पोजीशन ले ली। इसी बीच, आतंकवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, जिस से उन्होंने मना कर दिया और इसके बदले उन्होंने घेराबंदी को तोड़ने तथा बचकर भागने के लिए हमला समूहों पर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। तथापि, एसएसपी शोपियां और एएसपी शोपियां के नेतृत्व में हमला समूहों ने असाधारण साहस/दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और अपनी जान की परवाह किए बिना पूरे जोश के साथ जवाबी गोलीबारी की। इसके बाद हुई गोलीबारी के परिणामस्वरूप एक उग्रवादी मारा गया। तथापि, फंसे हुए अन्य उग्रवादी ने अंधेरा होने तक बलों को व्यस्त रखने के इरादे से लगातार/अंधाधुंध गोलीबारी की ताकि वह अंधेरे में बचकर निकल सके। इसी बीच, पुलिस महानिदेशक एसकेआर अनंतनाग भी स्थिति का जायजा लेने के लिए घटनास्थल पर पहुंच गए। रात्रि में भारी क्षति को रोकने के लिए, रात में अभियान को स्थगित करने और लक्षित मकान पर निगरानी रखने का निर्णय लिया गया। दिनांक 25.02.2015 की भोर में, फंसे हुए आतंकवादी से पुन: आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, जिससे उसने इंकार कर दिया और इसके बदले उसने ग्रेनेड फेंके और गोलीबारी की। तीनों पुलिस कर्मी, जो उन्हें दी गई पोजीशन पर डटे रहे, ने पूरी ताकत के साथ अंतिम हमला किया और कुछ देर बाद दूसरी ओर से गोलीबारी बंद हो गई। यह समझा गया कि जबावी गोलीबारी में आतंकवादी मारा गया होगा। तथ्यों को सुनिश्चित करने के लिए एसएसपी शोपियां के पर्यवेक्षक में पुलिस/सुरक्षा बलों का एक संयुक्त दल मकान के मुख्य प्रवेश की ओर बढ़ा, तथापि घायल आतंकवादी अचानक बाहर आ गया और ग्रेनेड फेंके और इसके बाद अंधाधुंध गोलीबारी की जिसका अभियान दल ने आत्मरक्षा में वीरतापूर्वक/समर्पण भावना के साथ जवाबी कार्रवाई की और घटनास्थल पर ही आतंकवादी को मार गिराया। बाद में, मारे

गए आतंकवादियों की पहचान जेईएम संगठन के आशिक हुसैन डार पुत्र एच. हसन डार, निवासी तुर्कवानागाम शोपियां और शबीर अहमद गनी पुत्र मोहम्मद अकरम गनी निवासी रबगाम पुलवामा के रूप में की गई। मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारुद बरामद किया गया और इस संबंध में पुलिस स्टेशन जैनपुरा में आरपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत मामला एफआईआर सं. 10/2015 दर्ज किया गया था। एसएसपी शोपियां, उपनिरीक्षक साकिब बशीर, एसजीसीटी जगजीत सिंह और कांस्टेबल तारिक अहमद ने असाधारण साहस और अभियान संबंधी योग्यता का प्रदर्शन किया जिसके परिणामस्वरूप किसी भारी क्षति के बिना अभियान को सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया। उक्त पुलिस कर्मियों ने अपनी जान की परवाह किए बिना मुठभेड़ स्थल में फंसे सिविलियनों को निकालते समय सूझबूझ का प्रदर्शन किया, यद्यपि दोनों आतंकवादियों ने सिविलियनों को सुरक्षित बाहर निकालने की प्रक्रिया को बाधित करने का भरसक प्रयास किया, तथापि उपुर्यक्त पुलिस कर्मियों ने अपना संयम खोए बिना अच्छी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया और अपने लक्ष्य में सफल हुए। मारे गए आतंकवादी अनेक आतंकवादी गतिविधियों में शामिल थे। उनके मारे जाने से आतंकी समूहों को बड़ा झटका लगा और जनता, विशेष रूप से राजनीति के कार्यकर्ताओं/पंचों एवं सरपंचों ने राहत की सांस ली।

बरामदगी:-

1.	एके-47 राइफल (क्षतिग्रस्त)	-	02
2.	एके-47 मैगजीन (क्षतिग्रस्त)	-	03
3.	यूबीजीएल	-	01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री साकिब बशीर वानी, उप निरीक्षक, तारिक अहमद, एसजीसीटी और जगजीत सिंह, एसजीसीटी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.02.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 131-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01.	तनवीर अहमद जीलानी	(वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार)	उप पुलिस अधीक्षक
02.	मोहम्मद नवाज खांडे	(वीरता के लिए पुलिस पदक)	उप पुलिस अधीक्षक
03.	इरशाद अहमद रेशी	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)	निरीक्षक
04.	सल्फी अर्शिद बांगडू	(वीरता के लिए पुलिस पदक)	उप निरीक्षक
05.	विन्नी सफाया	(वीरता के लिए पुलिस पदक)	कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 21.06.2015 को कुलगाम पुलिस को गांव रेडवानी बाला कुलगाम में आतंकवादियों की उपस्थिति के संबंध में एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई, जो कुछ विध्वंसक कार्य करने के लिए क्षेत्र में आए हुए थे। तदनुसार, एसएसपी, कुलगाम की कमान में एक पुलिस दल घटनास्थल की ओर गया और पूरी बस्ती की घेराबंदी कर दी। इसी बीच, अभियान कार्मिकों को दो दलों में विभाजित किया गया, एक निरीक्षक इरशाद अहमद सहित श्री तनवीर अहमद जीलानी, उप पुलिस अधीक्षक (आपेरशन), हातीपुरा और दूसरा उप-निरीक्षक सल्फी अर्शिद, कांस्टेबल विन्नी सफाया सहित श्री नवाज अहमद खांडे, उप पुलिस अधीक्षक, ऑपरेशन, मंजगाम के नेतृत्व में बनाया गया और तलाशी अभियान आरंभ किया गया। तलाशी के दौरान, वे उग्रवादी मुजफ्फर अहमद डार पुत्र अब्दुल रहमान डार के मकान में छिपे हुए पाए गए। लक्षित मकान के चारों ओर घेराबंदी को सुदृढ़ करने के बाद, छिपे हुए उग्रवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया,

तथापि, उन्होंने प्रस्ताव को ठुकरा दिया और भारी गोलीबारी आरंभ कर दी और इसके बाद भारी संख्या में हताहत करने और घटनास्थल से बच निकलने के लिए घेराबंदी को तोड़ने के लिए ग्रेनेड फेंके। तथापि, अग्रिम दल, विशेष रूप से श्री तनवीर अहमद जीलानी, उप पुलिस अधीक्षक (आप्स.) हातीपुरा, श्री नवाज अहमद खांडे, उप पुलिस अधीक्षक, आप्स मंजगाम, निरीक्षक इरशाद अहमद, उप निरीक्षक सल्फी अर्शिद और कांस्टेबल विन्नी सफाया ने असाधारण साहस का प्रदर्शन किया और प्रभावी रूप से जवाबी गोलीबारी की, जिससे उग्रवादी पीछे हटने पर मजबूर हो गए। उस समय, अभियान दलों की पहली प्राथमिकता लक्षित मकान/आस-पास के घरों में फंसे सिविलियनों को बाहर निकालना था। इस प्रयोजन के लिए, सामान्यत: अभियान दल ने और विशेष रूप से उपरोक्त पुलिस कर्मियों ने सूझबूझ और असाधारण साहस का प्रदर्शन किया और फंसे हुए सभी सिविलियनों को बाहर निकाला। दोनों ओर से गोलीबारी नियमित अंतराल पर पूरी रात होती रही, जिसके दौरान फंसे हुए उग्रवादियों ने घर से बच निकलने के अनेक प्रयास किए, तथापि, अभियान दल दृढ़ रहा और उन्होंने उन्हें कोई मौका नहीं दिया। उसके बाद हुई गोलीबारी लगभग बीस घंटे तक चली और एलईटी के दो खूंखार आतंकवादियों के खात्मे के साथ समाप्त हुई, बाद में, जिनकी पहचान जवीद अहमद भट निवासी रेडवानी और इदरीश अहमद नांगरू निवासी बदरू के रूप में हुई। मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में हथियार/गोला बारूद बरामद किया गया और पुलिस स्टेशन कुलगाम में आरपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत मामला एफआईआर सं. 114/2015 दर्ज किया गया है।

श्री तनवीर अहमद जीलानी, उप पुलिस अधीक्षक (आप्स.) हातीपुरा, श्री नवाज अहमद खांडे, उप पुलिस अधीक्षक (आप्स) मंजगाम, निरीक्षक इरशाद अहमद, उप निरीक्षक सल्फी अर्शिद और कांस्टेबल विन्नी सफाया द्वारा प्रदर्शित वीरतापूर्ण और साहसिक कार्य के परिणामस्वरूप दो खूंखार आतंकवादी मार गिराए गए जो काफी लंबे समय से क्षेत्र में सक्रिय थे और पुलिस कांस्टेबल जहूर अहमद डार और अनुयापी मोहम्मद रफीक मीर की हत्या सहित अनेक आपराधिक/आतंकी मामलों में शामिल थे, इसके अतिरिक्त, वे चार अन्य मामलों की एफआईआर में भी शामिल थे। मारे गए आतंकवादियों के खात्में के साथ एलईटी को बड़ा झटका लगा है।

बरामदगी:

1.	एके-47 राइफल	-	01
2.	मैगजीन एके-47 राइफल	-	01
3.	एके- 47 राउंड	-	05
4.	एसएलआर राइफल	-	01
5.	एसएलआर मैगजीन	-	01
6.	एसएलआर राउंड	-	30
7.	यूबीजीएल	-	01
8.	यूबीजीएल थ्रोअर	-	01

इस मुठभेड़ में तनवीर अहमद जीलानी, उप पुलिस अधीक्षक, मोहम्मद नवाज खांडे, उप पुलिस अधीक्षक, इरशाद अहमद रेशी, निरीक्षक, सल्फी अर्शिद बांगडू, उप निरीक्षक, विन्नी सफाया, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का द्वितीय बार/पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22.06.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 132-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. जहूर अहमद वानी,
उप निरीक्षक

02. फैसल खान,
सहायक उप निरीक्षक

03. मंजूर अहमद मीर,
सहायक उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 04.10.2015 को गांव हरिपरीगाम, अवंतीपुरा के मंजूर अहमद भट पुत्र गुलाम अहमद भट के मकान में अपने सहयोगी के साथ जेईएम अभियान प्रमुख सलीम उर्फ आदिल निवासी पाकिस्तान की उपस्थिति के बारे में पुलिस को एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई/जुटाई गई। अभियान की योजना बनाई गई और अवंतीपुरा पुलिस द्वारा लक्षित मकान के चारो ओर घेराबंदी कर दी गई। घेराबंदी करने के बाद, 03/42 आरआर और 10 पैरा को भी अभियान में शामिल किया गया।

अभियान बलों की उपस्थिति को देखकर, उग्रवादी घेराबंदी तोड़ने और घटना स्थल से भागने के लिए अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए और इसके बाद ग्रेनेड फेंकते हुए अचानक लक्षित मकान से बाहर कूद गए। तथापि, उप निरीक्षक जहूर अहमद वानी, एआरपी-115653, एएसआई फैसल खान, 113/अवंतीपुरा, एएसआई मंजूर अहमद, 213/अवंतीपुरा और दल के अन्य सदस्यों ने प्रभावी रूप से जवाबी गोलीबारी की, उग्रवादियों को पीछे हटने और दो विभिन्न स्थलों पर लक्षित मकान के अहाते की दीवार के पीछे छिपने के लिए मजबूर किया गया। इसी बीच, लक्षित मकान के परिवार के सदस्य सुरक्षा के लिए मुख्य द्वार की ओर दौड़े, तथापि, उनमें से एक सदस्य मकान के अहाते के अंदर लड़खडा कर नीचे गिर पड़ा जिसे छिपे हुए एक उग्रवादी द्वारा तुरंत बंधक बना लिया गया। पीए सिस्टम के द्वारा उग्रवादियों से आत्मसमर्पण करने और बंधक बनाए गए सदस्य को मुक्त करने के लिए कहा गया, जिसे उन्होंने ठुकरा दिया। सबसे पहले बंधक बनाए गए सिविलियन को बाहर निकालने की योजना बनाई गई, जिसके लिए दो दल गठित किए गए, पहले दल में एएसआई फैसल खान, एसजीसीटी तारिक अहमद, कांस्टेबल एम. शमीम, एसजीसीटी अरफात अहमद, कांस्टेबल शबीर अहमद, कांस्टेबल जावीद अहमद और 10 एसपीओ शामिल थे, जो अपनी जान की परवाह किए बिना बहुत ही युक्तिपूर्वक/पेशेवर तरीके से साहस तथा वीरता के साथ दीवार के पीछे की ओर पहुंचे, जहां सिविलियन को बंधक बनाकर रखा गया था। दल ने उसे निशाना बनाए बिना उग्रवादी को गोलीबारी में उलझाए रखा, क्योंकि वे यह जानते थे कि बंधक व्यक्ति को गोली लग सकती है। उग्रवादी जैसे ही दोनों ओर की गोलीबारी में उलझा, सिविलियन को दीवार के दूसरी ओर कूदने का मौका मिल गया जहां एएसआई फैसल सं. 113/एडब्ल्यूटी अपने दल के साथ पहले ही उसका इंतजार कर रहे थे। उग्रवादी भी सिविलियन को गोली मारने के लिए गुस्से में दीवार कूद गया लेकिन सतर्क पुलिस दल ने तेजी से गोली चलाकर उसे मार गिराया। दूसरी ओर, दूसरा दल जिसमें एसजीसीटी मुख्तार अहमद, कांस्टेबल मंजूर अहमद, कांस्टेबल मुख्तार अहमद, कांस्टेबल मुनीर अहमद, कांस्टेबल अमीर रसूल और 09 एसपीओ के साथ एएसआई मंजूर शामिल थे, उसी पेशेवर तरीके से छिपे हुए अन्य उग्रवादी तक पहुंचा। आमने-सामने का एक भीषण युद्ध आरंभ हो गया जो कुछ समय तक चला और दूसरी ओर से गोलीबारी बंद हो गई। यह पता लगाना मुश्किल था कि उग्रवादी जिंदा है अथवा मारा गया। तथापि, उसकी मृत्यु का पता लगाने के लिए कुछ पुलिस कर्मियों के साथ उप निरीक्षक जूहर अहमद, एएसआई मंजूर आगे बढ़ने के लिए स्वैच्छा से आगे आए। वे कुशलतापूर्वक उग्रवादियों की ओर आगे बढ़े, उग्रवादी, जिसे गोली लगी थी और जो अपने आप को मृत दिखाने का बहना कर रहा था, ने अचानक आगे बढ़ रहे दल पर ग्रेनेड फेंकने का प्रयास किया, तथापि, सतर्क दल ने गोली चलाई और उसे मार गिराया। बाद में, मारे गए उग्रवादियों की पहचान जेईएम संगठन (1) सलीम उर्फ आदिल और (2) रहमान उर्फ छोटा बर्मी निवासी पाकिस्तान के रूप में की गई। मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारुद बरामद किया गया। पुलिस स्टेशन अवंतीपुर में आरपीसी की धारा 307, आयुध अधिनियम की धारा 7/27 के तहत एक मामला एफआईआर सं. 101/2015 दर्ज है। मृत उग्रवादी दिनांक 05.12.2014 को बस स्टैंड त्राल में ग्रेनेड हमले सहित अनेक आपराधिक/आतंकवादी मामलों में शामिल थे जिसमें 05 सिविलियन मारे गए थे और 23 घायल हो गए थे। ये उग्रवादी शकील अहमद शाह और मोसिन मजीद निवासी पीरनार के अपहरण और गदपुरा त्राल में गश्ती दल पर अंधाधुंध गोलीबारी में भी शामिल थे।

बरामदगी:

1.	एके-47	-	02
2.	एके मैगजीन	-	04
3.	एके राउंड	-	80
4.	हैंड ग्रेनेड	-	01

इस मुठभेड़ में जहूर अहमद वानी, उप निरीक्षक, फैसल खान, सहायक उप निरीक्षक और मंजूर अहमद मीर, सहायक उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 04.10.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 133-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार /वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. मुमताज अहमद, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

02. जहीर अब्बास, उप पुलिस अधीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

03. देवेन्द्र सिंह, उप निरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक)

04. सोनम स्टोबगायस, एसजीसीटी (वीरता के लिए पुलिस पदक)

05. मोहम्मद हुसैन वानी, एसजीसीटी (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 28.10.2015 को श्री मुमताज अहमद, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, कुलगाम ने खांदीपोरा बुलगाम में एलईटी आतंकवादी कमांडर अबु कासिम की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट खुफिया जानकारी जुटायी, जो अपने संगठन की रणनीतियों/योजनाओं में फिर से जान फूंकने तथा भविष्य की गतिविधियां तय करने के लिए इलाके में आया था। सूचना के महत्व को ध्यान में रखते हुए योजनाबद्ध तरीके से अभियान की योजना बनाई गई और अभियान आरंभ करने के पूर्व सूचना 09-आरआर/18वीं बटालियन, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के साथ साझा की गई। अभियान में शामिल जवान वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुलगाम के पर्यवेक्षण में अनेक दिशाओं से लक्षित क्षेत्र की ओर छिपकर आगे बढ़े। पूरे गांव की अचूक घेराबंदी सुनिश्चित की गई ताकि उक्त उग्रवादी को भागने का कोई अवसर न मिल सके क्योंकि अनेक अवसरों पर वह पुलिस/सुरक्षा कार्मिकों पर वार करके घेराबंदी को तोड़ने में सफल हो चुका था।

अचूक घेराबंदी करने के बाद, तलाशी अभियान आरंभ किया गया तथा उग्रवादी के गांव खांदीपोरा के बोनपोरा मोहल्ला में होने का पता चला। लक्षित मोहल्ले से बचकर भाग निकलने वाले सारे संभावित मार्ग सील कर दिए गए और घेराबंदी क्षेत्र में फंसे आम नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकालने के कार्य को पहली प्राथमिकता दी गई। उस समय अग्रिम दल के अन्य सदस्यों, जिसमें जहीर अब्बास, उप पुलिस अधीक्षक, कुलगाम, उप निरीक्षक देवेन्द्र सिंह, एआरपी-115630, एसजीसीटी सोनम स्टोबगायस, ए आर पी-996597 और एसजीसीटी मोहम्मद हुसैन, ईएक्स के-984253 शामिल थे, सहित वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुलगाम ने सभी आम नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकालने के अनेक प्रयास किए और सफल रहे। चूंकि अंधेरा घिर रहा था, इसलिए लक्षित क्षेत्र में प्रकाश की व्यवस्था करने तथा बचकर भागने के सभी संभावित रास्तों पर कंसर्टिना तार बिछाने सहित समुचित प्रबंध किए गए। श्री मुमताज अहमद, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुलगाम द्वारा तदनुसार अभियान में शामिल जवानों को छिपे हुए आतंकवादी के प्रचालन और क्षमताओं की महत्ता के बारे में जानकारी दी गई/उन्हें अवगत कराया गया। इस बीच, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुलगाम ने एक अपनी कमान में तथा दूसरा श्री जहीर अब्बास, उप पुलिस अधीक्षक, प्रचालन, कुलगाम की कमान में दो दल बनाए ताकि अभियान को सफल बनाया जा सके। सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से छिपे हुए आतंकवादी से आत्मसमर्पण करने को कहा गया जिसने ऐसा करने से मना कर दिया और सुनियोजित तरीके से घेराबंदी तोड़ने तथा घटनास्थल से बचकर भागने के उद्देश्य से अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए तथा ग्रेनेड फेंकते हुए

बाहर निकला। तथापि, श्री मुमताज अहमद, एस एस पी कुलगाम और श्री सज्जाद अहमद, उप पुलिस अधीक्षक प्रचालन कुलगाम ने अपने दल के सदस्यों, जिसमें उप निरीक्षक देवेन्द्र सिंह, एसजीसीटी सोनम स्टोबगायस और एसजीसीटी मोहम्मद हुसैन शामिल थे, ने असाधारण धैर्य और बहादुरी का परिचय देते हुए गोलीबारी का मुंहतोड़ जवाब दिया जिसके कारण उग्रवादी पीछे हटने के लिए विवश हो गया। अंदर छिपे हुए उग्रवादी ने अचूक घेराबंदी को भेदने के लिए इस प्रकार के कई प्रयास किए लेकिन सामान्यत: अभियान में शामिल जवानों विशेषकर उपरोक्त पुलिस कार्मिकों ने अपना संतुलन बनाए रखा और अंदर छिपे हुए उग्रवादी को किसी भी तरफ से घेराबंदी तोड़ने का कोई मौका नहीं दिया। इस बीच उग्रवादी ने अपनी स्थिति दयनीय जानकर जबरदस्त गोलीबारी करते तथा ग्रेनेड फेंकते हुए बाहर निकलने का प्रयास किया लेकिन उपरोक्त पुलिस कार्मिकों की प्रभावी जवाबी कार्रवाई ने उग्रवादी को लक्षित मोहल्ले के एक मस्जिद के पीछे शरण लेने पर विवश कर दिया। उपरोक्त पुलिस कार्मिकों ने मस्जिद के पीछे छिपे उग्रवादी को ताड़ लिया तथा निर्णायक हमला बोला जिसके चलते वह उग्रवादी मारा गया जिसकी पहचान बाद में एलईटी के डिवीजनल कमांडर अब्दुल रहमान उर्फ अबु कासिम निवासी बहावलनोर पाकिस्तान के रूप में हुई। मुठभेड़-स्थल से भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद बरामद किए गए और इस संबंध में पुलिस थाना कुलगाम में धारा 307 आरपीसी, 7/27 आईए अधिनियम के तहत एक मामला एफआईआर सं. 223/2015 दर्ज है। पूरे अभियान के दौरान श्री मुमताज अहमद, एस एस पी कुलगाम, श्री जहीर अब्बास, उप पुलिस अधीक्षक प्रचालन कुलगाम, उप निरीक्षक देवेन्द्र सिंह, एसजीसीटी सोनम स्टोबगायस और एसजीसीटी मो. हुसैन द्वारा प्रदर्शित विशिष्ट/निर्णायक भूमिका उल्लेखनीय रही। इसमें केवल सटीक आसूचना संग्रहण, योजना-निर्माण, अत्यन्त कुशल रणनीतिक सूझ-बूझ/बुद्धिमता तथा प्रतिबद्धता का परिचय दिया गया था जिसके कारण बिना किसी भारी क्षति के अभियान सफलतापूर्वक संपन्न किया गया। उग्रवादी का सफाया सुरक्षा बलों के लिए एक बड़ी सफलता सिद्ध हुआ तथा राज्य में सक्रिय एलईटी संगठन के लिए भारी झटका साबित हुआ।

मृतक उग्रवादी पिछले 05 वर्षों से राज्य में सक्रिय था। वह 5 अगस्त, 2015 को बीएसएफ कानवायी पर हुए उधमपुर हमले, जिसमें सीमा सुरक्षा बल के दो जवानों की मृत्यु हो गई थी और 12 अन्य घायल हो गए थे, 7 अक्तूबर, 2015 को गुंड डाचिन बांदीपोरा में निरीक्षक मोहम्मद अल्ताफ डार की हत्या करने, हैदरपुरा श्रीनगर बाइपास पर फिदायीन हमले, जिसमें सेना के 08 जवानों की मृत्यु हो गई थी और कई अन्य घायल हो गए थे, एसकेआईएमएस के कार्यकारी निदेशक डॉ. जलालुद्दीन और उनके पीएसओ की हत्या करने, कदलाबल पंपोर के निकट बीएसएफ बस पर हमले, जिसमें उप कमांडेंट सहित छह बीएसएफ कार्मिक घायल हुए थे, गालांदेर पंपोर में पुलिस दल पर हमला करने, जिसमें दो कांस्टेबलों की मृत्यु हो गई थी, वर्ष 2013 में एसएचओ पुलिस थाना चदूरा की हत्या करने, वर्ष 2013 में 02 सीआरपीएफ कार्मिकों की हत्या करने, वर्ष 2014 में न्यायालय परिसर पुलवामा में दो एसपीओ को मारने, दिनांक 04.11.2014 को बाटापोरा टोकुना में गोलियां चलाने, कैसर मुल्लाह चदूरा में एक पुलिसकर्मी और एक सेना जवान की हत्या करने, अवनुपुरा जैनपोरा शोपिया में सीआरपीएफ कार्मिकों की हत्या करने/हथियार लूटने, नागबल जैन पोरा शोपियां में सीआरपीएफ मतदान पार्टी पर हमला करने जिसमें कई सीआरपीएफ कर्मी घायल हो गए तथा एक शिक्षक की मृत्यु हो गई, शोपियां में पुलिस दल पर हमला करने तथा श्रीनगर बाइपास पर होटल सिल्वर स्टार पर हमला करने, जिसमें दो निर्दोष लोगों की मृत्यु हो गई, सहित अनेक आतंकी/आपराधिक मामलों में संलिप्त था। वह एलईटी संगठन में भर्ती करने वालों का मुखिया था और उसने लगभग 25 स्थानीय युवाओं की एलईटी संगठन में भर्ती की थी।

बरामदगी-

1.	एके 47 राइफल	-	01
2.	मैग. ए के	-	02
3.	जिंदा राउंड	-	09

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री मुमताज अहमद, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, जहीर अब्बास, उप पुलिस अधीक्षक, देवेन्द्र सिंह, उप निरीक्षक, सोनम स्टोबगायस, एसजीसीटी और मोहम्मद हुसैन वानी, एसजीसीटी ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार / पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29.10.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 134-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार / वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. तनवीर जीलानी, पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

02. सजाद अहमद मलिक, उप पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

03. गुलजार हुसैन खान, हैड कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12.09.2015 को लगभग 1400 बजे श्रीनगर पुलिस को नमन गांव, बेगमबाग काकपोरा, पुलवामा में उग्रवादी की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार श्री तनवीर जीलानी, पुलिस अधीक्षक पी सी श्रीनगर के गहन पर्यवेक्षण में श्रीनगर पुलिस और 50 आरआर की सैन्य टुकड़ियां तत्काल घटना स्थल के लिए रवाना हो गई और समूचे गांव की घेराबंदी कर दी। अभियान को सफल बनाने के लिए, अभियान के जवानों को तीन दलों में विभाजित किया गया। सैयद माजिद मोसावी, उप पुलिस अधीक्षक पी सी श्रीनगर के नेतृत्व वाले तथा 50 आर आर की सैन्य टुकड़ियों वाले पहले दल को लक्षित क्षेत्र की बाहरी घेराबंदी करने का कार्य सौंपा गया, पी सी श्रीनगर के उप पुलिस अधीक्षक फुर्कान कादिर के नेतृत्व में दूसरे दल ने लक्षित मोहल्ले की घेराबंदी की तथा उप पुलिस अधीक्षक सज्जाद अहमद मलिक के पर्यवेक्षण में तीसरे दल, जिसमें हैड कांस्टेबल गुलजार हुसैन, ई एक्स के- 973256 शामिल थे, को मोहम्मद यूसुफ डार के लक्षित मकान की अंदरूनी घेराबंदी करने का कार्य सौंपा गया। इस बीच, छिपा हुआ उग्रवादी अभियान दल के सदस्यों की उपस्थिति भांपते हुए वहां से बचकर भागने की एक सुनिश्चित चाल के तहत अचानक बाहर निकला और अंधाधुंध गोलीबारी करने लगा। तथापि, अग्रिम दल, जिसमें उपर्युक्त पुलिसकर्मी शामिल थे, ने मुंहतोड़ जवाब देते हुए उग्रवादी का पीछा किया जिसके कारण वह पास के मक्के के खेतों में शरण लेने के लिए मजबूर हो गया। मक्के के खेत तथा आस-पास के धान के खेतों में लोगों की उपस्थिति पर गौर करते हुए जवाबी गोलीबारी रोक दी गई।

इस स्थिति में श्री तनवीर जीलानी, पुलिस अधीक्षक पी सी श्रीनगर ने दो छोटे दल बनाए, एक का नेतृत्व उप पुलिस अधीक्षक सजाद अहमद मलिक तथा दूसरे का नेतृत्व हैड कांस्टेबल गुलजार हुसैन कर रहे थे और दोनों ने सभी ओर से लक्ष्य की ओर जाना आरंभ किया। जैसे ही अग्रिम दल, जिसमें उपर्युक्त पुलिस कर्मी शामिल थे, छिपे हुए उग्रवादी की ओर बढ़े, वह बौखलाकर अंधाधुंध गोलीबारी करने लगा। तथापि, अग्रिम दलों के जवानों ने विभिन्न दिशाओं से उग्रवादी को व्यस्त किए रखा और उप पुलिस अधीक्षक सजाद अहमद मलिक, उप पुलिस अधीक्षक पी सी श्रीनगर और हैड कांस्टेबल गुलजार हुसैन सहित श्री तनवीर जीलानी पुलिस अधीक्षक, पी सी श्रीनगर रेंगते हुए उग्रवादी के समीप पहुंचे और अपने प्राणों की परवाह किए बिना निर्णायक प्रभावी हमला बोला जिसके परिणामस्वरूप उग्रवादी मारा गया, जिसकी पहचान बाद में एल ई टी संगठन के ग्रुप कमांडर इरशाद गनई उर्फ अबु अब्दुल्लाह नावीद उर्फ रहमान-उल-उमर पुत्र अब्दुल माजीद गनई निवासी लरिकिपोरा, अवंतीपोरा के रूप में हुई। मुठभेड़-स्थल से भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद बरामद किए गए तथा इस संबंध में पुलिस थाना पुलवामा में धारा 307 आरपीसी, 7/27 आयुध अधिनियम के तहत एक मामला एफ आई आर सं. 289/2015 दर्ज है। मृतक आतंकवादी पिछले पांच वर्षों से दक्षिण/मध्य कश्मीर रेंज में सक्रिय था और सुरक्षा बलों पर हमलों, भीड़-भाड़/बाजार स्थलों पर ग्रेनेड फेंकने, हथियार लूटने की घटनाओं सहित अनेक आपराधिक/आतंकी घटनाओं में संलिप्त था और क्षेत्र में संरपंचों/पंचों को धमकाने/उनके इस्तीफे के लिए जिम्मेदार था। मृतक उग्रवादी का सफाया एल ई टी संगठन के लिए बहुत बड़ा झटका, सुरक्षा बलों के लिए भारी सफलता तथा आम जनता विशेषकर मध्य/दक्षिण कश्मीर रेंज के लोगों के लिए बहुत बड़ी राहत लेकर आया।

की गई बरामदगी-

1. ए के 56 राइफल - 01 (क्षतिग्रस्त)
2. मैगजीन ए के-56 - 02 (01 क्षतिग्रस्त)
3. जिंदा राउंड - 59

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री तनवीर जीलानी, पुलिस अधीक्षक, सजाद अहमद मलिक, उप पुलिस अधीक्षक और गुलजार हुसैन खान, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12.09.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 135-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. जावेद इकबाल,
पुलिस अधीक्षक

02. राकेश पंडित,
सहायक उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 06.08.2015 को 1350 बजे पुलवामा पुलिस को गांव अस्तान मोहल्ला काकापोरा में एक उग्रवादी के मौजूद होने की सूचना प्राप्त हुई जो इलाके में आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने की योजना बना रहा था। श्री जावेद इकबाल, के पी एस पुलवामा ने और जानकारी/विशिष्ट सूचना एकत्र की और पता चला कि उग्रवादी अब्दुल माजिद सोफी पुत्र अली मोहम्मद और अर्शिद अहमद सोफी पुत्र अब्दुल गनी के साझे मालिकाना हक वाले मकान में छिपा हुआ है। इस सूचना को 50 आरआर, 182/183 बटालियन, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल को देने के बाद, एएसआई राकेश पंडित नं.252/पी, एल, 50 आरआर और 182/183 बटालियन, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की सैन्य टुकड़ियों वाले पी सी पुलवामा के एक पुलिस दल की सहायता से ए एस पी पुलवामा श्री जावेद इकबाल, के पी एस की कमान में लक्षित मोहल्ले की संयुक्त रूप से घेराबंदी की गई।

इलाके में चलाए गए तलाशी अभियान के दौरान, लक्षित मकान में छिपे हुए उग्रवादी ने घेराबंदी को तोड़ने और वहां से बचकर भाग निकलने की मंशा से पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी करना आरंभ कर दिया। तथापि, ए एस आई राकेश पंडित सहित दल के अन्य सदस्यों की सहायता से श्री जावेद इकबाल- के पी एस (ए एस पी पुलवामा) द्वारा सूझ-बूझ और असाधारण बहादुरी का परिचय दिए जाने के कारण गोलीबारी का प्रभावी तरीके से जवाब दिया जा सका जिससे मुठभेड़ आरंभ हो गई। अभियान दल के सामने जो पहली चुनौती थी, वह लक्षित मकान और पास के मकानों में फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने की थी। तदनुसार, एएसआई राकेश पंडित सहित एएसपी पुलवामा के पर्यवेक्षण वाला पुलिस दल अपनी बहुमूल्य जिंदगियों को दांव पर लगाकर फंसे सभी लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने में सफल हो गया। लोगों को बाहर निकालने की प्रक्रिया के पश्चात, उग्रवादी से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया लेकिन उसने मना कर दिया और इसके स्थान पर अंधाधुंध गोलियां चलाने लगा। चूंकि अंधेरा होने लगा था, इसलिए लक्षित इलाके में कन्सर्टिना तार डालने और रोशनी का प्रबंध करने आदि जैसे विभिन्न उपाय किए गए ताकि घेराबंदी वाले जगह से उग्रवादी के बचकर भाग निकलने के प्रत्येक प्रयास को विफल किया जा सके। तथापि, पूरी रात गोलियां चलती रहीं और इसका भरपूर जवाब दिया जाता रहा। सुबह लगभग 0400 बजे अभियान फिर से आरंभ हुआ और अंतिम हमला करने का निर्णय लिया गया। इस उद्देश्य के लिए, दो दल बनाए गए जिसमें से एक का नेतृत्व श्री जावेद इकबाल, के पी एस ए एस पी पुलवामा कर रहे थे जिसमें ए एस आई राकेश पंडित और सेना/केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की अन्य सैन्य टुकड़ियां शामिल थीं। इन दलों ने, विशेषकर पुलिस दल ने अंतिम हमला किया जिसके परिणामस्वरूप छिपा हुआ उग्रवादी, जिसकी पहचान बाद में एल ई टी संगठन के मोहम्मद अफजल शाह उर्फ तालिब पुत्र शम्सदीन शाह निवासी काकापोरा के रूप में हुई, ढ़ेर हो गया। मुठभेड़-स्थल से भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद बरामद हुए तथा इस संबंध में पुलिस थाना पुलवामा में धारा 307 आर पी सी, 7/27 आई ए अधिनियम के तहत एक मामला एफ आई आर सं. 36/2015 दर्ज है। मृतक उग्रवादी पिछले 2 वर्षों से सक्रिय था और 14 मामलों की एफ आई आर में शामिल था। इसके अतिरिक्त, वह नए युवाओं को उग्रवादी काडरों में शामिल होने के लिए प्रेरित करने का मुख्य षडयंत्रकारी भी था और वह आदिल अहमद शेरगोजरी, मोहम्मद अयूब लोन, काकपोरा, रियाज अहमद उर्फ

शीराज, मंसूर अहमद भट और आजाद अहमद लोन जैसों को आतंकवादी बनाने में सफल भी रहा था। यह मृतक उग्रवादी क्षेत्र की पंचायत के सदस्यों के लिए भी भारी खतरा था और इनमें से कइयों के इस्तीफों के पीछे उसका हाथ था। उसके खात्मे से उग्रवादी काडरों विशेष रूप से एल ई टी संगठन को भारी झटका लगा और इससे कश्मीर प्रांत विशेषकर दक्षिणी कश्मीर में सुरक्षा बलों/आम नागरिकों को काफी राहत मिली।

की गई बरामदगी-

1.	बिना बट्ट वाली राइफल (एके 56)	-	01
2.	मैगजीन (एके-56)	-	04
3.	राउंड (एके 56)	-	105
4.	ग्रेनेड	-	01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री जावेद इकबाल, पुलिस अधीक्षक और राकेश पंडित, सहायक उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 06.08.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 136-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री पंकज शर्मा,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 26.10.2015 को लगभग 1620 बजे पुलवामा पुलिस को ड्रबगाम बाला गांव में उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में विशेष खुफिया जानकारी मिली। तदनुसार 44-आर आर,182/183 बटालियन केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की सहायता से समूचे गांव की सम्मिलित रूप से घेराबंदी की गई। चार दल गठित किए गए तथा उप पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व वाले दल तथा उप निरीक्षक पंकज शर्मा ने लक्षित क्षेत्र में तलाशी आरंभ की और जब तलाशी दल अब्दुल अहमद भट के मकान के समीप पहुंचा, तब अंदर छिपे उग्रवादियों ने पीछे की खिड़की से छलांग लगा दी और अंधाधुध गोलीबारी की आड़ लेते हुए उस मकान के साथ लगे बागीचे की ओर भागे। तथापि, अग्रिम तलाशी दल, जिसमें उप पुलिस अधीक्षक और उप निरीक्षक पंकज शर्मा शामिल थे, ने असाधारण साहस का परिचय दिया और गोलीबारी का मुंहतोड़ जवाब देते हुए उग्रवादियों को घेराबंदी तोड़ने का कोई मौका नहीं दिया। एक उग्रवादी ने सेब के पेड़ के पीछे पोजीशन ली हुई थी और अग्रिम दल, जिसमें उप निरीक्षक पंकज शर्मा शामिल थे, ने उसे नजदीकी गोलीबारी में उलझा दिया जो कुछ समय तक चली और इसकी परिणति उस उग्रवादी के खात्मे के रूप में हुई।

एक अन्य उग्रवादी दूसरी दिशा से लगातार गोलीबारी कर रहा था जिसके कारण 44 आर आर के एक सेना कर्मी श्री कंकरा वी. सुब्बा रेड्डी घायल हो गए। उन्हें तत्काल सुरक्षित बाहर निकाला गया और प्राथमिक चिकित्सा/उपचार के लिए उन्हें निकट के अस्पताल ले जाया गया। उस समय यह बात पता चली कि कुछ आम नागरिक भी लक्षित/आस-पास के मकानों में अंदर फंसे हुए हैं। उप पुलिस अधीक्षक के पर्यवेक्षण वाले दल, जिसमें उप निरीक्षक पंकज शर्मा भी शामिल थे, ने फंसे लागों को सुरक्षित बाहर निकालना आरंभ कर दिया और लगातार किए गए प्रयासों से फंसे हुए सभी लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। बचाव अभियान समाप्त हो जाने के बाद, दल ने छिपे हुए उग्रवादी पर निर्णायक हमला किया और उसे मार गिराने में सफल रहा। मारे गए उग्रवादियों की पहचान बाद में एच एम संगठन के आफाकुल्ला भट पुत्र अब्दुल राशिद भट निवासी करीमाबाद पुलवामा तथा अब्दुल मनन डार पुत्र बशीर अहमद डार निवासी अमरबाग शोपियां के रूप में हुई। मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद बरामद किए गए और इस संबंध में पुलिस थाना

राजपोरा में धारा 307 आर पी सी, 7/27 आयुध अधिनियम के तहत एक मामला एफ आई आर सं. 71/2015 दर्ज है। मारे गए उग्रवादी तीन अलग-अलग जिलों में दर्ज तीन एफ आई आर सहित अनेक आपराधिक/आतंकी गतिविधियों में संलिप्त थे। उप निरीक्षक पंकज शर्मा अपनी जान की परवाह न करते हुए घेराबंदी डालने से लेकर निर्णायक हमले तक की पूरी अभियान प्रक्रिया के दौरान बहादुरी से लड़ते रहे और दोनों उग्रवादियों को ढ़ेर करने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

बरामदगी-

1.	राइफल (ए के 47)	-	01
2.	मैगजीन (ए के-56)	-	01
3.	मैगजीन ए के	-	03
4.	ए के राउंड	-	109
5.	ए के राउंड	-	05 (क्षतिग्रस्त)

इस मुठभेड़ में श्री पंकज शर्मा, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.10.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 137-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री तेवांग नामगैल,
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 30.12.2015 को लगभग 1802 बजे पुलिस अधीक्षक पुलवामा को गुसू गांव में मोहम्मद अल्ताफ भट पुत्र मोहम्मद अली भट के मकान में उग्रवादियों के मौजूद होने के बारे में विशेष जानकारी मिली जो इलाके में कुछ आतंकी कार्रवाई करने की योजना बना रहे थे। तदनुसार, पुलिस, 53-आर आर तथा 182/183 बटालियन केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अभियान से जुड़े जवान लक्षित गांव की ओर कूच कर गए और लक्षित गांव सहित समूचे इलाके की घेराबंदी कर दी। इस बीच, लक्षित मकान के पास जाने के दौरान छिपे हुए उग्रवादियों ने अभियान दल के जवानों को देखकर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी ताकि वे वहां से बचकर भाग जा सकें। तथापि, अग्रिम दल, जिसमें निरीक्षक तेवांग नामगैल, ई एक्स के-046064 शामिल थे, सूझ-बूझ का परिचय देते हुए तत्काल पोजीशन ले ली और गोलीबारी का मुंहतोड़ जवाब दिया जिससे उग्रवादियों को पीछे हटने पर विवश होना पड़ा। इस बीच, यह पता चला कि कुछ आम नागरिक लक्षित क्षेत्र में फंस गए हैं और उन्हें सुरक्षित बाहर निकालने के लिए एक दल बनाया गया, जिसमें निरीक्षण तेवांग नामगैल शामिल थे। दूसरी ओर से हो रही भारी गोलीबारी के बावजूद यह दल, अनेक प्रयासों के द्वारा वहां फंसे लागों को सुरक्षित बाहर निकालने में सफल रहा। अंधेरा होने के कारण, उग्रवादियों के अंधेरे समय के दौरान भाग जाने से रोकने के लिए सभी आवश्यक उपाय सुनिश्चित करने के बाद अभियान रोक दिया गया। अगले दिन सुबह, अंदर छिपे उग्रवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन उन्होंने इससे मना कर दिया और इसकी बजाय उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी करना और ग्रेनेड फेंकना चालू कर दिया। तथापि, अग्रिम दल, जिसमें निरीक्षक तेवांग नामगैल शामिल थे, ने पुन: असाधारण धैर्य और बहादुरी का परिचय देते हुए गोलीबारी का भरपूर जवाब दिया और भीषण गोलीबारी होने लगी। दोनों ओर से गोलियां कुछ समय तक चलती रही और इसके कारण बिना किसी भारी नुकसान और संपत्ति को क्षति पहुंचे बिना छिपे हुए उग्रवादी मार गिराए गए। मारे गए उग्रवादियों की पहचान बाद में एलईटी संगठन के जिला कमांडर मंजूर अहमद भट पुत्र अब्दुल राशिद भट निवासी अलोचीबाग साज्नबोरा पुलवामा और उकाशा उर्फ मुस्लिम भाई निवासी पाकिस्तान के रूप में हुई जो हाल ही में कुपवाडा/हंदवाडा क्षेत्र से पुलवामा जिले में पहुंचा था। मुठभेड़-स्थल से भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद बरामद किए गए और इस संबंध में पुलिस थाना पुलवामा में धारा 307 आरपीसी, 7/27 आयुध अधिनियम के तहत एक मामला एफ आई आर सं.413/2015 दर्ज

है। मारे गए उग्रवादियों की सुरक्षा बलों को काफी तलाश थी क्योंकि वे विभिन्न आपराधिक/आतंकी हमलों में संलिप्त थे और वे उधमपुर में बी एस एफ कान्वॉय पर हुए हमले से संबंधित षडयंत्र में भी शामिल थे। इन दोनों उग्रवादियों का मारा जाना एलईटी संगठन के लिए बहुत बड़ा धक्का था तथा इनकी मृत्यु कश्मीर प्रांत विशेषकर दक्षिण एवं मध्य कश्मीर रेंज में सुरक्षा बलों/आम नागरिकों के लिए बहुत बड़ी राहत थी।

की गई बरामदगी-

6.	राइफल (ए के 47)	-	02 (01 क्षतिग्रस्त)
7.	मैगजीन (ए के-47)	-	04 (02 क्षतिग्रस्त)
8.	ए के राउंड	-	66

इस मुठभेड़ में श्री तेवांग नामगैल, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.12.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 138-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अमित वर्मा,
उप पुलिस अधीक्षक

02. शकील-उर-रहमान,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13.03.2013 को बेमिना पुलिस पब्लिक स्कूल में एलईटी संगठन के दो पाकिस्तानी आतंकवादियों अर्थात् सैफ और हैदर द्वारा फिदायीन हमला किया गया। भीषण गोलीबारी के दौरान, पांच केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल कार्मिकों की मृत्यु हो गई तथा छह केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल कार्मिक और चार आम नागरिक घायल हो गए। गोलीबारी के दौरान, दोनों आतंकवादियों को भी मार गिराया गया। इस भीषण हमले के तत्काल बाद, एस एस पी श्रीनगर के पर्यवेक्षण में उप पुलिस अधीक्षक अमित वर्मा, एस जी सी जी शकील-उर-रहमान, महराज दीन एवं अन्य के साथ इस हमले के दोषियों की पहचान करने और उनके सफाये के लिए एक दल का गठन किया गया। जांच के दौरान, एक संदिग्ध मोबाइल नंबर की पहचान हुई थी जिसका बाद में असली षडयंत्र का पता लगाने के लिए विश्लेषण किया गया। इस बीच, उरी क्षेत्र से एक संदिग्ध चरित्र वाले व्यक्ति की पहचान की गई, जिसे इस घटना के पीछे माना गया था। इस संबंध में जुटायी गई जानकारी से पता चला कि एल ई टी संगठन के बशीर अहमद मीर उर्फ हारून पुत्र मीर जमान मीर निवासी उरी,बारामुला, एल ई टी संगठन के मुख्तार अहमद शाह तथा प्रदीप सिंह बाली नामक व्यक्ति इस हमले के लिए जिम्मेदार थे।

जुटायी गई खुफिया जानकारी पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई के तहत पी सी श्रीनगर के जवानों को दिनांक 13.03.2013 के सायं काल में बटमालू बाइपास पर तैनात किया गया जहां से सूचना थी कि एल ई टी संगठन का बशीर अहमद मीर उर्फ हारून निजी वाहन में किसी अज्ञात स्थान पर जाने के लिए वहां से गुजरने वाला है। जवानों ने नाका डाला तथा वाहनों और पैदल यात्रियों की तलाशी आरंभ की। कुछ समय बाद, पुलिस दल ने देखा कि निजी वाहन में यात्रा कर रहा एक यात्री जांच स्थल से गुजरते वक्त तलाशी से बचने का प्रयास कर रहा है। नाका दल तुरन्त हरकत में आया और यात्री को धर दबोचा। वहीं पर उससे सवाल-जवाब किए गए जिसमें उसने अपनी पहचान एल ई टी संगठन से संबंध बशीर अहमद मीर उर्फ हारून पुत्र मीर जमान मीर निवासी उरी बारामुला के रूप में बतायी। आगे और पूछ-ताछ के दौरान उसने बेमिना बाइपास पर हुए फिदायीन हमले की जिम्मेदारी भी स्वीकार की। उसके द्वारा किए गए खुलासे से यह

बात पता चली कि मोहम्मद जुबैर उर्फ तल्हा जरार निवासी मुल्तान, पाकिस्तान नामक एक आतंकवादी, जो फिदायीन हमले में भी शामिल था, ने उसकी सुरक्षित आवाजाही की व्यवस्था भी की थी तथा चट्टा बल श्रीनगर में अपने एक संबंधी के रिहायशी मकान में उक्त आतंकवादी को आश्रय भी दिलवाया था। तदनुसार, अभियान की योजना बनाई गई और उस दल को अग्रिम तौर पर स्थल के लिए रवाना किया गया ताकि उस लक्षित मकान की पहचान की जा सके जहां वह पाकिस्तानी आतंकवादी छिपा हुआ था।

दिनांक 14.03.2013 को, उप पुलिस अधीक्षक अमित वर्मा की अगुवाई में पी सी श्रीनगर के एक पुलिस दल, जिसकी सहायता एस जी सी टी शकील-उर-रहमान कर रहे थे, ने चट्टाबल इलाके की घेराबंदी की। उस लक्षित मकान का पता लगाया गया, जहां वह पाकिस्तानी आतंकवादी छिपा हुआ था। अधिक क्षति से बचने के लिए, पुलिस दल को दो समूहों में विभाजित किया गया, पहला दल, जिसमें उप पुलिस अधीक्षक अमित वर्मा, एस जी सी टी शकील-उर-रहमान, एवं अन्य शामिल थे, अंदरूनी घेराबंदी के लिए था तथा दूसरा दल बाहरी घेराबंदी के लिए था। 0130 बजे, पुलिस अधीक्षक पी सी श्रीनगर, जो अभियान के समग्र प्रभारी थे, ने लक्षित मकान के लोगों को बाहर निकालने तथा उसके बाद आतंकवादी को मार गिराने के लिए उप पुलिस अधीक्षक अमित वर्मा की कमान में पी सी श्रीनगर का एक छोटा दल बनाया। दल ने युक्तिपूर्वक और बहादुरी के साथ उस पुरानी घनी आबादी वाले शहर के आस-पास के मकान के लोगों और नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। सर्वप्रथम, अंदर छिपे आतंकवादी से आत्मसमर्पण का विकल्प चुनने के लिए कहा गया जिस पर उसने ध्यान नहीं दिया और अभियान बल पर गोलियां चलाने लगा। अंदरूनी घेराबंदी दल ने इसका प्रत्युत्तर दिया। इसके पश्चात् लगभग 0400 बजे मकान में घुसने की योजना बनाई गई। तथापि, जैसे ही हमला दल लक्षित मकान के समीप पहुंचा, उस पर छिपे हुए आतंकवादी ने जबरदस्त गोलीबारी की। आतंकवादी ने अभियान दल की तरफ दो ग्रेनेड भी फेंके। इस अवसर पर उप पुलिस अधीक्षक अमित वर्मा, जो अंदरूनी घेराबंदी दल के प्रभारी थे, ने मकान में आगे की ओर के साथ-साथ पीछे की ओर से मकान में प्रवेश करने के लिए दो और छोटे दल बनाए। जैसे ही दूसरे दल ने पीछे की तरफ से मकान में घुसने का प्रयास किया, छिपे हुए आतंकवादी ने खिड़की से ग्रेनेड फेंका। तत्पश्चात् अमित वर्मा के नेतृत्व वाला पहला दल रेंगते हुए खिड़की के पास पहुंच गया, जिससे आतंकवादी झुंझला गया और घेराबंदी तोड़ने और वहां से भाग निकलने के लिए अंधाधुंध गोलीबारी करने लगा। आतंकवादी के प्रयासों को देखते हुए, निरीक्षक शीतल चरक के नेतृत्व वाले दूसरे दल ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना गोलीबारी का मुंहतोड़ जवाब दिया और आतंकवादी को भागने से रोक दिया, जिसके परिणामस्वरूप आतंकवादी बौखला गया। इस मौके पर कम से कम दो मिनट तक शांति छायी रही। यह अनुमान लगाया गया कि या तो छिपे हुए आतंकवादी का गोलाबारूद खत्म हो गया है या वह और अधिक से अधिक क्षति पहुंचा कर सुरक्षित बाहर भागने का अंतिम प्रयास कर रहा है। इस अवसर पर अंदर छिपे आतंकवादी को पुन: आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया। आतंकवादी चतुराई से पुलिस बल को धोखा देने के लिए आत्मसमर्पण करने पर सहमत हो गया। तब उप पुलिस अधीक्षक अमित वर्मा एवं एस सी जी टी शकील-उर-रहमान वाला पुलिस दल हॉल में खुले में आ गया और बहादुरी के साथ आतंकवादी को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। तभी आतंकवादी अलमारी के पीछे से पुलिस दल के सामने आया और भागने के लिए खिड़की से कूद गया लेकिन पुलिस दल ने तत्काल फुर्ती दिखाते हुए हथियार और गोलाबारूद के साथ उस पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकवादी को पकड़ लिया। उप पुलिस अधीक्षक अमित वर्मा और एस जी सी टी शकील-उर-रहमान ने बहादुरी और धैर्य प्रदर्शित करके पाकिस्तानी आतंकवादी की गिरफ्तारी तथा उसके पास से भारी मात्रा में हथियारों/गोलाबारूद की बरामदगी को संभव बनाया।

बरामदगी-

1.	ए के 47	-	01
2.	मैगजीन एके-47	-	04
3.	राउंड ए के 55	-	177
4.	हैंड ग्रेनेड (ब्लू)	-	17
5.	हैंड ग्रेनेड (ग्रे)	-	19
6.	यूबीजीजी थ्रोअर	-	01
7.	यूबीजीएल ग्रेनेड शेल सिल्वर कलॅर	-	40
8.	हाई एक्सप्लोसिव बॉक्स (भरा हुआ)	-	02
9.	टाइमर (कैसियो-एफ-19 डब्ल्यू)	-	02
10.	फ्यूज कम डेटोनेटर	-	02

11.	रिमोट कंट्रोल किट	-	12
12.	मानचित्र	-	01
13.	जीपीएस जर्मन एट्रेक्स	-	03

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अमित वर्मा, उप पुलिस अधीक्षक और शकील-उर-रहमान, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.03.2013 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 139-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. मोहम्मद आरशी, आई पी एस
एस डी पी ओ

02. अजय ठाकुर,
उप निरीक्षक

03. सुबोध कुमार,
कांस्टेबल

04. जावेद अख्तर,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

विशिष्ट आसूचना जानकारी के आधार पर, पुलिस थाना-चैनपुर, जिला-गुमला (झारखंड) के अंतर्गत गांव सरगांव के निकट कार्य कर रहे माओवादियों के शिविरों की खोज करने तथा उन्हें नष्ट करने के उद्देश्य से दिनांक 12.03.2015 को एक विशेष अभियान "नेप्च्यून स्पीयर-15" आरंभ किया गया। विशेष अभियान के लिए, 209 कोबरा, झारखंड जगुआर के एक हमला दल तथा गुमला पुलिस के अधिकारियों और कार्मिकों के 4 दलों वाले संयुक्त अभियान दल को एक साथ मिलाकर अन्य हमला दलों, एक कट-ऑफ दल और दो बेस शिविरों में विभाजित किया गया।

अभियान की योजना के अनुसार, दो हमला दलों में से एक हमला दल का नेतृत्व एस डी पी ओ गुमला सह ए एस पी गुमला श्री एम. आरशी, आईपीएस के पास था, जिनके साथ उनके पुलिस अंगरक्षक सुबोध कुमार, कांस्टेबल जावेद अख्तर, पालकोट पुलिस थाने, गुमला के प्रभारी अधिकारी उप निरीक्षक अजय ठाकुर, 209 बटालियन कोबरा के चार दल और अधिकारियों और जवानों के साथ झारखंड जगुआर का एक हमला दल भी था।

यह निर्णय लिया गया कि श्री एम. आरशी, एस डी पी ओ गुमला के नेतृत्व वाला हमला दल पूर्व दिशा से गांव सरगांव के जंगल में प्रवेश करेगा। दिनांक 13.03.2015 को लगभग 0730 बजे जब हमला दल लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ रहा था, तब उसमें हमला दल के कमांडर श्री एम. आरशी, एस डी पी ओ गुमला, अपने अंगरक्षकों कांस्टेबल सुबोध कुमार, कांस्टेबल जावेद अख्तर, उप निरीक्षक अजय ठाकुर, श्री विवेकानंद सिंह, उप कमांडेंट और एस आई/जीडी लखन लाल मीना आगे-आगे बढ़ रहे थे। आगे चल रहे सदस्यों ने लक्ष्य से कुछ मीटर पूर्व एक नाले में कुछ संदिग्ध आवाजाही देखी। हमला कमांडर श्री एम. आरशी, एस डी पी ओ, गुमला ने तत्काल पूरे दल को सतर्क किया और अपने अंगरक्षकों कांस्टेबल सुबोध कुमार और कांस्टेबल जावेद अख्तर और 209 कोबरा के श्री विवेकानंद, उप कमांडेंट, उप निरीक्षक/जीडी लखन लाल मीना के साथ सुनियोजित ढंग से आगे बढ़े, लेकिन माओवादियों ने उन टुकड़ियों को अपनी ओर आते भांप

लिया और इस अग्रिम दल को आगे बढ़ने से रोकने के लिए भारी गोलीबारी करने लगे, ग्रेनेड फेंकने लगे और आई ई डी विस्फोट किया। हमला होने पर मोर्चे पर मौजूद हमला दल ने तत्काल पोजीशन ले ली और श्री एम. आरशी, एस डी पी ओ, गुमला ने माओवादियों को चेतावनी दी कि "हम पुलिस हैं, अपने हथियार फेंक दो और आत्मसमर्पण करो"। लेकिन माओवादियों ने चेतावनी को नजरअंदाज कर दिया और एल एम जी, ग्रेनेड और अन्य परिष्कृत स्वचालित हथियारों से अलग-अलग दिशाओं से मोर्चे पर मौजूद दल को निशाना बनाने लगे। हमलावार माओवादियों को एस डी पी ओ गुमला और एस आई अजय ठाकुर द्वारा लगातार और जोर-जोर से आत्मसमर्पण करने के लिए चेतावनी दी जा रही थी, लेकिन माओवादियों ने आत्मसमर्पण की इस आवाज को बिल्कुल अनसुना कर दिया तथा लक्ष्य बनाकर पुलिस दल पर गोलियां चलाते रहे। तत्पश्चात् हमला दल के कमांडर श्री एम.आरशी, एस डी पी ओ ने आत्म-रक्षा के लिए सैन्य टुकड़ी को माओवादी हमले का जवाब देने के लिए समय-समय पर गोलियां चलाने का आदेश दिया।

श्री एम. आरशी, एस डी पी ओ, ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना माओवादियों पर गोलियां चला रहे थे तथा अपनी निजी सुरक्षा को बिल्कुल ताक पर रखते हुए अभियान दल के अन्य सदस्यों की तरफ रेंगते हुए बढ़ रहे थे ताकि वे गोलीबारी के लिए साथियों को प्रोत्साहित कर सकें और उन्हें निर्देश दे सकें। श्री एम. आरशी एस डी पी ओ ने अपने अंगरक्षकों कांस्टेबल सुबोध कुमार और कांस्टेबल जावेद अख्तर और 209 कोबरा के श्री विवेकानंद, उप कमांडेंट, एस आई/जीडी लखन लाल मीना के साथ अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए माओवादियों द्वारा की जा रही गोलीबारी की दिशा में बढ़ना जारी रखा। उनकी साहसिक कार्रवाई के कारण दल के अन्य सदस्य भी प्रभावी तरीके से जवाबी कार्रवाई के लिए प्रोत्साहित हुए। श्री एम. आरशी, एस डी पी ओ, गुमला के नेतृत्व में अग्रिम दल की जवाबी गोलीबारी के कारण हमलावर माओवादियों को जबरदस्त क्षति पहुंची, माओवादियों का मनोबल टूटने से वे कमजोर पड़ने लगे और लगातार पीछे हटने लगे जिससे माओवादियों को अपनी सुरक्षित जगह से हटने पर मजबूर होना पड़ा।

जब श्री एम. आरशी, के नेतृत्व में अग्रिम दल आगे से गोलीबारी कर रहा था, तब एस आई अजय ठाकुर, अपनी दाहिनी ओर पहाड़ी पर कुछ संदिग्ध आवाजाही देखी। उन्होंने तत्काल अपने साथियों को संदिग्ध आवाजाही के बारे में सतर्क किया। एस आई अजय ठाकुर, 209 कोबरा के कर्मियों और उनकी टुकड़ियां पहाड़ी की ओर सुनियोजित ढ़ंग से बढ़ रही थीं, लेकिन जैसे ही वे पहाड़ी की ओर अग्रसर हुए पहाड़ी पर पहले से मजबूत स्थिति में मौजूद माओवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी और दल के सदस्यों को आगे से बढ़ने से रोकने के लिए आई ई डी विस्फोट करने लगे। भीषण गोलीबारी से सामना हो जाने के बावजूद, 209 कोबरा के श्री कुमार ब्रजेश, सहायक कमांडेंट, एस आई/जीडी भवानी सिंह मीणा, सी टी/जीडी वी.डी. कमलाकर सहित एस आई अजय कुमार ठाकुर, ओ सी पालकोट पुलिस थाना अचानक हुए हमले से बिना विचलित हुए बिना पहाड़ी पर आगे बढ़ना जारी रखा और साथ-साथ जवाबी कार्रवाई करते रहे। उनकी साहसिक कार्रवाई को देखते हुए दल के अन्य सदस्य भी उस दिशा में धावा बोलने के लिए प्रोत्साहित हुए और एक माओवादी को मार गिराने तथा अन्य को भाग जाने के लिए मजबूर करते हुए माओवादी हमले को विफल कर दिया। यह गोलीबारी लगभग 0900 बजे तक जारी रही और माओवादियों द्वारा की जा रही अंधाधुंध गोलीबारी और आई ई डी विस्फोट के बावजूद श्री एम. आरशी, एस डी पी ओ, गुमला की अनुकरणीय कमान में सैन्य टुकड़ियों ने माओवादियों के नापाक मंसूबों को विफल कर दिया और कई बेशकीमती प्राणों की रक्षा हो सकी।

यह पूरा अभियान अनुकरणीय ढ़ंग से निष्पादित किया गया जो सफल अभियानों के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ। लाभ की स्थिति में होने के बावजूद माओवादी आश्चर्यचकित रह गए, उन्हें विफल कर दिया गया और उन्हें अपने स्थान से हटने के लिए मजबूर कर दिया गया। वे अपने पीछे एक माओवादी के शव को छोड़कर उस स्थान से भाग खड़े हुए। तलाशी अभियान के दौरान, माओवादियों के भागने वाले रास्ते पर खून के धब्बे और रक्तस्राव की लकीर पाई गई। विश्वस्त सूत्रों ने सूचित किया कि मुठभेड़ के दौरान कुछ अन्य माओवादी भी मारे गए थे और कुछ अन्य गंभीर रूप से घायल भी हुए थे, लेकिन माओवादी घने जंगल और पहाड़ियों का लाभ उठाकर उन्हें अपने साथ ले गए। माओवादी के शव के साथ-साथ, वहां एक अमेरिकन अर्द्ध-स्वचालित राइफल (यू एस राइफल, स्प्रिंग फील्ड), 02 मैगजीन, 110 गोलियां, 01 हैंड ग्रेनेड, 01 वॉकी-टॉकी (मोटरोला) और अन्य वस्तुएं भी मिलीं। मृतक की पहचान, बाद में, सब-जोनल कमांडर भूपेश उर्फ दीपक जी के रूप में हुई। इस अभियान से माओवादियों के मनोबल तथा तैयारी को अभूतपूर्व क्षति हुई।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री मोहम्मद आरशी, आई पी एस, एस डी पी ओ, अजय ठाकुर, उप निरीक्षक, सुबोध कुमार, कांस्टेबल और जावेद अख्तर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.03.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 140-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. नितिन अंकुश माने,
सहायक पुलिस निरीक्षक

02. मल्लेश पोचम केदमवार,
हेड कांस्टेबल

03. जितेन्द्र मोतिराम मारगाये,
नायक

04. गजेन्द्र हीरजी सौन्जल,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 08.05.2016 को 1645 बजे अपर पुलिस अधीक्षक (आप्स), गढ़चिरौली को विश्वस्त सूत्रों से होरेकासा के जंगल क्षेत्र में 10 से 12 सशस्त्र नक्सलियों तथा गांव में 2-3 नक्सली काडरों की उपस्थिति के बारे में खुफिया जानकारी प्राप्त हुई। उन्होंने तत्काल अभियान की योजना बनाई तथा पी एस आई राजेश खाण्डवे की अगुवाई वाले मल्लेश कदमवार सी-60 दल को इलाके में नक्सल-रोधी अभियान चलाने का जिम्मा सौंपा। पी एस आई राजेश खाण्डवे, सी-60 दल के कमांडर मल्लेश कदमवार अपने 14 कमांडो के साथ 1730 बजे अभियान के लिए चल पड़े।

यह पुलिस दल 1830 बजे होरेकासा के जंगल में पहुंचा और तत्पश्चात योजना के मुताबिक तीन छोटे समूहों में बंट गया। उन्होंने तीन दिशाओं से गांव को घेर लिया तथा प्रत्येक गली और मकान की तलाशी लेते हुए समीप जाने लगे। जैसे ही पुलिस दल गांव के बीचों बीच स्थित एक मकान के पास पहुंचा, उस मकान से उन लोगों पर गोलियां दागी गईं। पुलिस कार्मियों ने तत्काल जमीन पर कवर लिया तथा नक्सलियों से आत्मसमर्पण करने की अपील की। मकान का तीन हिस्सा ग्रामीणों के मकानों से घिरा हुआ था जबकि चौथा हिस्सा स्थिर बांस की बाड़/दीवार से घिरा हुआ था। मकान की अवस्थिति पुलिस के लिए चुनौतीपूर्ण थी क्योंकि वहां कवर लेने तथा शत्रु पर गोलियां चलाने की कोई जगह मौजूद ही नहीं थी। इसके अलावा, शत्रु मकान की पहली मंजिल पर था और पहली मंजिल पर केवल भूतल की छत पर जाने की जगह पर लगी सीढ़ी के द्वारा ही जाया जा सकता था।

मकान में मौजूद नक्सलियों ने मकान में पहले से मौजूद दो ग्रामीणों को बंधक बना लिया। एच सी/1961 मल्लेश कदमवार और उनके दल ने गांव पाटील (गांव प्रमुख) और ग्रामीणों से अनुरोध किया कि वे नक्सली काडरों के पास पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण करने का संदेश पहुंचा दें। तथापि, मकान में मौजूद नक्सली काडरों ने गांव पाटील को लौटा दिया और उन्हें चेतावनी दी कि "यह मामला पुलिस और उनके बीच है। अच्छा होगा कि गांव वाले इस मामले में हस्तक्षेप न करें, हम पुलिस दल को इतनी आसानी से जाने नहीं देंगें। इसके पश्चात, नक्सलियों ने पुलिस दल के ऊपर भारी गोलीबारी की जिसमें कवर लेने के दौरान 1) एन पी सी/1683 जितेन्द्र मारगाये और 2) पी सी/3083 रमेश असम नामक दो पुलिस कर्मी घायल हो गए। कोई समय गंवाए बिना एच सी मल्लेश कदमवार अपनी जान जोखिम में डालकर नक्सलियों पर जवाबी गोलीबारी करते हुए आगे बढ़े, कि एन पी सी/168 जितेन्द्र मारगाये ने उन्हें कवर फायर दिया। इस मौके पर, ए पी आई नितिन माने और पी सी/830 गजेन्द्र सौन्जल भारी जोखिम उठाते हुए सीढ़ी की सहायता से दीवार पर चढ़ गए और लोहे की रॉड से खिड़की को चकनाचूर कर दिया। इसके पश्चात, उन्होंने खिड़की में बनी जगह से कमरे में दनादन गोलियां चलाईं। इसके बाद ये दोनों लोग छत पर चढ़ गए और वहां से अचानक गोलियां चलानी शुरू कर दीं (छत की कुछ टाइलों को हटाने के बाद)। यह अत्यधिक जोखिम भरा कार्य था क्योंकि वे बिना कवर के इतने नजदीक से गोलियां चला रहे थे। पी एस आई राजेश खाण्डवे ने अपर पुलिस अधीक्षक को संदेश भेजा और अतिरिक्त बल की मांग की।

यह सूचना प्राप्त होते ही अपर पुलिस अधीक्षक (आप्स.) गढ़चिरौली ने तत्काल योजना बनाई, उचित प्रकार से जवानों को जानकारी दी और अतिरिक्त जनशक्ति भेजी। तदनुसार, 2100 बजे पी सी/2279 शामराव डुग्गा पुलिस दल के साथ होरेकासा पहुंचे और दक्षिण की तरफ से मकान को घेर लिया। लगभग 2100 बजे, ए पी आई नितिन माने ने 9 जवानों के साथ मकान को उत्तर की ओर से

घेरा लिया तथा 2130 बजे 15 जवानों तथा चिकित्सकों के एक दल के साथ उप पुलिस अधीक्षक घटना-स्थल पर पहुंचे और घायल जवानों को चिकित्सीय उपचार के लिए भेज दिया जबकि नक्सली पुलिस बलों की ओर गोलियां चलाते रहे।

गांव के कुछ नक्सली समर्थकों ने चल रहे अभियान में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया और पुलिस दल के लिए एक और मुसीबत खड़ी कर दी। उप पुलिस अधीक्षक आप्स. ने अपने दल की सहयता से गोलीबारी की जगह से ग्रामीणों को सुरक्षित बाहर निकाला जाना सुनिश्चित किया। उन्होंने एक बार फिर नक्सलियों से आत्मसमर्पण करने की अपील की, लेकिन उन्होंने पुलिस दल पर गोलियां दागी। उप पुलिस अधीक्षक ने जवानों से नियंत्रित गोलीबारी करने के लिए कहा। वे और पांच अन्य जवान अपने प्राणों को दांव पर लगाकर बारूदी सुरंग रोधी वाहन को कवर के लिए मकान के समीप ले आए और नक्सलियों पर नियंत्रित गोलीबारी की नक्सलियों द्वारा की जा रही भीषण गोलीबारी के बावजूद, वे मकान की ओर बढ़े और मकान की पहली मंजिल पर जाने वाली सीढ़ी को खींच लिया। उन्होंने और उनके दल ने सबसे पहले मकान में मौजूद बंधकों को सुरक्षित बाहर निकाला। उसके पश्चात्, उन्होंने स्थिति की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए कुछ समय के लिए उन्हें आघात पहुंचाने के लिए भूतल पर सुनियोजित ढ़ंग से एक हैंड ग्रेनेड फेंका। पुलिस अधीक्षक, गढ़चिरौली ने अपर पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन को घटना-स्थल पर भेजने का निर्णय लिया। 11 कमांडो के साथ अपर पुलिस अधीक्षक बारूदी सुरंग रोधी वाहनों पर घटना-स्थल पर तत्काल पहुंचे। उन्होंने चल रहे अभियान की बागडोर अपने हाथ में ले ली। मकान में मौजूद नक्सलियों ने पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी करना जारी रखा। पुलिस के लिए मुख्य चुनौती आस-पास के मकानों में मौजूद लोगों को सुरक्षित बाहर निकालना था ताकि हताहत होने और भारी क्षति होने से बचा जा सके। अपर पुलिस अधीक्षक और उनके दल ने अपनी जानों को जोखिम में डालते हुए घटना-स्थल और आस-पास के मकानों से ग्रामीणों और नक्सल समर्थकों को सुरक्षित बाहर निकाला जाना सुनिश्चित किया। तीन कमांडों के साथ वे उत्तरी दिशा से मकान की ओर बढ़े। जब वे आगे की ओर रेंग रहे थे, तब उन्हें बिल्कुल सामने से गोलियों की बरसात का सामना करना पड़ा। ऐसी भयावह स्थिति में नक्सलियों द्वारा की जा रही गोलीबारी के सामने बिना झुके हुए उन्होंने अन्य जवानों का मनोबल बढ़ाने में मदद की तथा मकान की एक ओर बांस से बनी बाड़ तक पहुंच गए। उधर पीसी/3634 शिवा गोर्ले के साथ अपर पुलिस अधीक्षक कवर फायर की सहायता से बांस की बाड़ को हटाने में जुटे थे, उन पर नक्सलियों ने और गोलियां दागी। बांस की बाड़ को नीचे गिराने के बाद, उन्होंने पीसी/3634 शिवा गोर्ले को भूतल के दरवाजे से यू बी जी एल शेल दागने का आदेश दिया तथा पीसी/3634 शिवा गोर्ले को कवर फायर प्रदान किया उनके पीछे पुलिस कर्मियों द्वारा किए गए कवर फायर में, वे पी सी 3634/शिवा गोर्ले के साथ मकान के दरवाजे के निकट पहुंच गए और बहुत नजदीक जाकर उन्होंने गोलियां चलाई।

इस भीषण गोलीबारी के कारण मकान में आग लग गई और भूतल की छत नीचे गिरने लगी तथा जलने लगी। इसलिए, ए पी आई नितिन माने, पी सी/830 गजेन्द्र सौन्जल, अपर पुलिस अधीक्षक (आप्स.) और पी सी/3634 शिवा गोर्ले ने एकाएक अपने आपको अपनी-अपनी जगहों से हटा लिया और पोजीशन ले ली। इस बीच, नक्सली पी सी/165 अरविन्द कुमार मदावी के नेतृत्व वाले पुलिस कॅट ऑफ दल पर भारी गोलीबारी करते हुए मकान के बाहर आ गए। उसने अपनी जान को जोखिम में डालकर जवाबी गोलीबारी के द्वारा उस नक्सली पर हमला बोल दिया और उस दुर्दात नक्सली को घायल करने में सफल हो गए। परन्तु घायल होने के बावजूद वह नक्सली रात के अंधेरे में घने जंगल का फायदा उठाकर भाग गया। जब गोलीबारी पूरी तरीके से बंद हो गई, तब पुलिस दल ने ग्रामीणों की मदद से आग बुझाने के लिए हर-संभव प्रयास किया। अपर पुलिस अधीक्षक (आप्स.) ने दमकल बुलाया और जब आग पर पूरी तरह से नियंत्रण पा लिया गया, तब वे अन्य पुलिस कार्मिकों के साथ मकान के अन्दर गए। मकान की तलाशी लेने पर, एक शव, एक एके-47 राइफल, एक .303 राइफल, एके-47 राइफल के खाली खोखे और .303 राइफल पाई गई।

इस पूरे अभियान को खत्म करने में 11 घंटे लगे। नक्सल प्रभावित क्षेत्र के इतिहास में यह पहला अवसर था जब नक्सलियों और पुलिस के बीच इतनी लंबी अवधि के लिए गोलियां चली हों और वह भी गांव में। इस अभियान में पुलिस की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि आम नागरिकों या पुलिस से कोई हताहत नहीं हुआ। बंधक वाली स्थिति में 11 घंटे चले इस अभियान के कारण राजीता उर्फ साम्मा बिरजा उसेन्डी, एरिया कमेटी सेक्रेट्री चटगांव दलम नामक दुर्दात नक्सली और वरिष्ठ नक्सली काडर मारी गई। उसने विगत में गढ़चिरौली जिलों में सैकड़ों अपराध किए थे और उस पर 16 लाख का इनाम भी था।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री नितिन अंकुश माने, सहायक पुलिस निरीक्षक, मल्लेश पोचम केदमवार, हेड कांस्टेबल, जितेन्द्र मोतिराम मारगाये, नायक और गजेन्द्र हीरजी सौन्जल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 09.05.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 141-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. दत्तात्रेय भीमराव काले,
उप निरीक्षक

02. डोगे डोलू अतराम, (मरणोपरान्त)
नायक

03. स्वरूप अशोक अमरूतकर, (मरणोपरान्त)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 22.03.2015 को मुखबिर से प्राप्त गुप्त जानकारी और वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश और मार्गदर्शक अनुदेशों के अनुसार तीन दल कमांडरों अर्थात् एन पी सी/531 विनोद हिचामी, एन पी सी/2320 शंकर गोटा, एन पी सी/2276 राजेश टोपो के साथ पी एस आई दत्तात्रेय काले और पी एस आई दिलीप लोखंडे ने अपने दलों के साथ पुलिस थाना इटापल्ली के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत हिक्कर जंगल क्षेत्र में नक्सल-रोधी तलाशी अभियान आरंभ किया जो नक्सलियों का एक मजबूत गढ़ है। वे सुनियोजित ढ़ंग से दो समूहों में बँट गए और पहाड़ी एवं हिक्कर जंगल क्षेत्र में घने जंगलों वाले भू-भाग में पैदल चल रहे थे। लगभग 1650 बजे दल 1 किमी उत्तर मुसपरशी गांव की ओर बढ़ रहा था। जब पुलिस दल परलकोट नदी को पार कर रहा था तब 60 से 70 सशस्त्र नक्सलियों ने अचानक उन पर हमला कर दिया। जंगल में घात लगाकर बैठे नक्सलियों ने पुलिस दल को अपनी जद में आता देख एकाएक अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। पुलिस कार्मिकों ने चट्टानों के पीछे उपलब्ध आड़ लेते हुए जमीन पर तत्काल पोजीशन ले ली और साथ-साथ नक्सलियों की गोलीबारी का जवाब दिया।

पूर्व में भूभाग की लाभप्रद की स्थिति में होने के कारण माओवादियों द्वारा आरंभ में प्रभुत्व बनाए रखने के बावजूद, एन पी सी/2724 डोगे अतराम ने नक्सलियों की ओर गोलियां चलाई ताकि उन्हें आगे बढ़ने से रोकने के लिए दवाब बनाया जा सके और वे स्वयं नि:स्वार्थ तरीके से नक्सलियों के समूह की ओर आगे बढ़े। तथापि, बायीं ओर से अंधाधुंध गोलीबारी के कारण, एन पी सी/2724 डोगे अतराम को गोलियां लगी और वे नीचे गिर पड़े। नक्सली उन्हें तथा उनके हथियार-गोलाबारूद को ले जाने वाले ही थे, लेकिन पी सी/5589 कन्ना हिचामी ने कवर फायर दिया और घुटनों पर रेंगते हुए एन पी सी/2724 डोगे अतराम की ओर बढ़े और नक्सलियों पर गोलियां दागी तथा उन्हें रक्तरंजित कार्य करने से रोक दिया। इस मौके पर उन्हें उनके बायें कंधे पर गोली लगी। घायल होने के बावजूद उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि उनका साथी सिपाही और उसका हथियार सुरक्षित रहे।

इसके साथ, पीएसआई दत्तात्रेय काले और एनपीसी/2990 स्वरूप अमृतकर, जो दूसरी छोर पर थे, ने उन नक्सलियों पर गोलियां चलाना आरंभ किया जो बायीं ओर से दल को घेरने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन दुर्भाग्यवश दोनों ओर से हो रही गोलीबारी के दौरान एन पी सी/2990 स्वरूप अमृतकर को नक्सलियों द्वारा चलाई गई गोली लगी और वहीं उनका प्राणान्त हो गया। तथापि, पी एस आई दत्तात्रेय काले नक्सलियों की गोलीबारी के बीच आगे बढ़ते रहे और यह सुनिश्चित किया उनके दल को कम से कम क्षति हो। उस समय एन पी सी/2718 गोमजी मट्टामी ने बहादुरी के साथ कवर फायर देते हुए पी एस आई दत्तात्रेय काले की सहायता की तथा सुनियोजित ढंग से उन पहाड़ियों की ओर बढ़े जहां नक्सलियों ने पोजीशन ली हुई थी।

इस गोलीबारी के दौरान, एन पी सी/2438 याकूब पठान ने तत्काल कुछ लोगों को साथ में लिया तथा एक ओर से नक्सलियों की ओर बढ़ने लगे तथा नक्सलियों की गोलियों का बहादुरीपूर्वक सामना करते हुए अपने प्राणों को संकट में डालकर शत्रु की दिशा में बढ़ने लगे और साथ-साथ अपनी जान की परवाह न करते हुए यह सुनिश्चित किया कि उनके साथी और अधिकारी घेर लिए जाएं और सामूहिक नरसंहार न हो जाए। उपर्युक्त पुलिस कर्मी की पहल से दल के बाकी सदस्य भी प्रेरित हुए और वे भी अलग-अलग कोणों और पोजीशनों से आक्रामक होकर गोलियां चलाने लगे। इस आक्रामक रूख से नक्सलियों में भय फैल गया और वे घने जंगल और पहाड़ी भू-भाग की आड़ लेकर दूर भागने लगे। दोनों ओर से यह गोलीबारी लगभग 30 से 35 मिनट तक जारी रही।

इस प्रकार, उपर्युक्त पुलिस कर्मियों द्वारा प्रदर्शित असाधारण बहादुरी और अपने कर्तव्यों के प्रति प्रतिबद्धता ने गंभीर रूप से नक्सल प्रभावित जिलों में कार्य कर रहे अन्य पुलिस कर्मियों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री दत्तात्रेय भीमराव काले, उप निरीक्षक, स्वर्गीय डोगे डोलू अतराम, हेड कांस्टेबल और स्वर्गीय स्वरूप अशोक अमरूतकर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22.03.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 142-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. एम. राजकुमार, आई पी एस
अपर पुलिस अधीक्षक

02. प्रफुल्ल प्रभाकर कदम,
उप निरीक्षक

03. विजय रमेशराव रत्नपारखी,
उप निरीक्षक

04. प्रमोद रंगनाथ भिंगरे,
उप निरीक्षक

05. मोतीराम बक्का मदावी,
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13.06.2014 को अपर पुलिस अधीक्षक एम. राजकुमार के नेतृत्व में एक पुलिस दल का गठन किया गया। इसमें ए पी आई प्रफुल्ल कदम, ए पी आई विजय रत्नपारखी, पी एस आई प्रमोद भिंगरे, दल कमांडर ए एस आई। 1331 मोतीराम मदावी और 23 जवान, दल कमांडर प्रभुदास डुग्गा और 24 जवान शामिल थे। वे जूरी के जंगलों में पहुंचे और वाहनों से उतर गए। उसके पश्चात्, दल ने रणनीति बनाई और मंडोली, मेंधारी, पैदी और गडपल्ली के जंगलों में पैदल चलने लगे और नक्सल-रोधी अभियान आरंभ कर दिया।

दिनांक 14.06.2014 को सुबह लगभग 0900 बजे जब पुलिस दल मंदोली और पैदी के जंगलों में तलाशी ले रहा था, तभी अचानक ओलिव ग्रीन वर्दीधारी 30 से 40 सशस्त्र नक्सलियों ने पुलिस दल को मार डालने तथा उनसे आग्नेयास्त्र छीनने की मंशा से पुलिस दल के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री एम. राजकुमार, अपर पुलिस अधीक्षक (आप्स.) के अनुदेशों पर, पुलिस दल ने पास के पेड़ों और चट्टानों के पीछे पोजीशन लेकर अपना बचाव किया। तदनुसार, पुलिस दलों ने भी आत्म-रक्षा में जबाव दिया। ए पी आई प्रफुल्ल कदम के साथ श्री राजकुमार सावधानीपूर्वक नक्सलियों की ओर आगे बढ़े और साथ ही साथ नक्सलियों पर गोलियां चलाई, जवाबी कार्रवाई संबंधी उनके अथक प्रयासों और धैर्यपूर्ण समन्वय से पुलिस दलों का मनोबल बढ़ा। ए पी आई रत्नपारखी, पी एस आई भिंगरे, पार्टी कमांडर ए एस आई/1331 मोतीराम मदावी अपने जवानों सहित पूर्व दिशा से आगे बढ़े। ये जवान नक्सलियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के बावजूद तथा अपनी जानों को जोखिम में डालकर आगे बढ़ते रहे।

इस बीच, नक्सलियों के एक दल ने ताबडतोड़ गोलियां चलाकर ए पी आई रत्नपारखी, पी एस आई भिंगरे, ए एस आई/मोतीराम मदावी पर हमला किया। यह भांपते हुए कि उक्त कार्मिक घात लगाकर किए गए हमले का शिकार हो गए हैं, श्री राजकुमार, अपर पुलिस अधीक्षक ने अपनी जान की परवाह न करते हुए तत्काल उनकी मदद के लिए आगे बढ़े और नक्सलियों पर गोलियां बरसाने लगे। इस अवसर पर, ए पी आई प्रफुल्ल कदम श्री एम. राजकुमार के साथ हो लिए और वे दोनों एक साथ नक्सलियों के साथ भीषण गोलीबारी

करने लगे। इस बीच मोतीराम मदावी को भी गोली लगाई। नक्सली अपने साथियों को जोर-जोर से उनके नाम पुकार कर संबोधित कर रहे थे और एक-दूसरे को पुलिस कर्मियों को घेरने के लिए कह रहे थे। नक्सली गोलीबारी में कोई कमी नहीं आई थी।

घायल होने के बावजूद, पार्टी कमांडर ए एस आई/मोतीराम मदावी भी नक्सलियों की ओर आगे बढ़े और पूरे दमखम और प्रतिबद्धता के साथ नक्सलियों के हमले का मुकाबला किया। श्री राजकुमार ने गोलियां चलाते हुए नक्सलियों के खिलाफ चल रही लड़ाई में सक्रिय भूमिका निभाई तथा यह सुनिश्चित किया कि दल का कोई व्यक्ति हमले का शिकार न हो जाए। जब गोलियां चलनी रूक गई, तब पुलिस दल ने क्षेत्र की तलाशी ली और निम्नलिखित सामानों की बरामदगी की:

1) 9 एम एम पिस्तौल (सर्विस)-1, 2) हैंड मेड पिस्तौल-1, 3) 9 एम एम राउंड-7, 4) .303 राइफल कारतूस-1, 5) क्लेमोर माइन्स पाइप-3, 6) माइन स्टील केटल)-1, 7) जिलेटीन, 8) डेटोनेटर्स-6, 9) इनके अलावा, उन्होंने ओलिव ग्रीन वर्दीधारी एक माओवादी का शव भी बरामद किया।

मंडोली मुठभेड़ विश्वसनीय सूचना के आधार पर चलाए गए नक्सल-रोधी अभियान का परिणाम थी और यह एक रणनीति तैयार करके निष्पादित की गई थी। पुलिस दल ने असाधारण बहादुरी तथा अपने कर्तव्य के निर्वहन के प्रति सर्वश्रेष्ठ समर्पण का परिचय दिया। इसके अतिरिक्त, पूरे अभियान के दौरान उन्होंने अपने सामरिक कौशल का परिचय दिया और यह सुनिश्चित किया कि पुलिस बल वाले दल को कम से कम क्षति पहुंचे।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री एम. राजकुमार, आई पी एस, अपर पुलिस अधीक्षक, प्रफुल्ल प्रभाकर कदम, उप निरीक्षक, विजय रमेशराव रत्नपारखी, उप निरीक्षक, प्रमोद रंगनाथ भिंगरे, उप निरीक्षक और मोतीराम बक्का मदावी, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.06.2014 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 143-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. देवेन मावलीन,
निरीक्षक

02. जोस समर,
कांस्टेबल

03. ग्रोहन के. मारक,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

रोंगथोक गांव में लगभग 10 (दस) से 12 (बारह) की संख्या में प्रतिबन्धित संगठन गारो नेशनल लिबरेशन आर्मी (जी एन एल ए) के भारी मात्रा में हथियारों से लैस उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में विश्वसनीय सूत्र से मिली सूचना के आधार पर, शालांग, वेस्ट खासी हिल्स, मेघालय में स्थिति 4 एम एल पी बटालियन के उप कमांडेंट श्री बी.डी. मारक, एम पी एस द्वारा एक अभियान की योजना तैयार की गई ताकि उग्रवादियों को पकड़ने के लिए मेघालय पुलिस के स्वाट द्वारा तलाशी अभियान आरंभ किया जा सके। बी एन सी/562 जोस समर और बी एन सी/2712 ग्रोहन के. मारक सहित निरीक्षक देवेन मावलीन, सर्किल निरीक्षक, नोंगस्टोइन वाले तलाशी दल को दिनांक 2 मार्च, 2016 को लगभग 01.00 बजे रोंगथोक गांव के बाहर भेजा गया।

ग्रामीणों द्वारा पहचान लिए जाने से बचने के लिए, तलाशी दल अंधेरे में ऊबड़-खाबड़ और कठिन भू-भाग से होकर गया तथा रोंगथोक गांव पहुंचने पर संदिग्ध स्थल पर जाने से पूर्व वे जंगल-क्षेत्र में छिप गए। बी एन सी जोस समर और बी एन सी ग्रोहन के. मारक सहित निरीक्षक देवेन मावलीन की अगुवाई वाला दल लगभग 0700 बजे लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ा जहां जी एन एल ए के काडर आश्रय लिए हुए थे। यह उल्लेखनीय है कि दल के नेता ने पौ फटने तक तलाशी अभियान को रोके रखा क्योंकि पारंपरिक तरीका यही है कि प्रत्येक समय सुबह होते ही उग्रवादियों पर हमला बोला जाए। तथापि, पिछले अभियानों से यही सीख मिली है कि वे उस समय पर बेहद सतर्क और चौकस होते हैं। उपर्युक्त कारणों से, निरीक्षक देवेन मावलीन, बी एन सी/562 जोस समर और बी एन सी ग्रोहन के. मारक ने जान बूझकर तलाशी अभियान में देरी की। जब संदिग्ध स्थान लगभग 200 मीटर रह गया था, तब पुलिस दल जोड़ियों में बँट गया और आगे बढ़ने लगा। तलाशी दल को बेहद सावधानीपूर्वक और सुनियोजित ढ़ंग से आगे बढ़ना था। जैसे ही निरीक्षक देवेन मावलीन, बी एन सी जोस समर और बी एन सी ग्रोहन के. मारक आगे बढ़े, वैसे ही भारी मात्रा में हथियारों से लैस लगभग 7 से 8 जी एन एल ए काडरों ने, जो लगभग 30 मीटर की दूरी पर अनुकूल स्थिति में थे, आगे बढ़ रहे पुलिस दल पर अपने परिष्कृत हथियारों से अंधाधुंध गोलीबारी की और आगे बढ़ रहे दल को कवर लेने पर मजबूर कर दिया।

निरीक्षक देवेन मावलीन, बीएनसी जोस समर और बी एन सी ग्रोहन के मारक ने आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी द्वारा प्रत्युत्तर दिया और न केवल शत्रुओं, जो पुलिस दल पर लगातार गोलीबारी कर रहे थे, की तरफ आगे बढ़ते हुए बल्कि अपनी जानों को जोखिम में डालकर असाधारण बहादुरी और प्रतिबद्धता का परिचय दिया। इसके साथ उन्हें वहां मौजूद बच्चों और महिलाओं का भी ध्यान रखना था।

निरीक्षक देवेन मावलीन, बी एन सी/562 जोस समर और बी एन सी ग्रोहन के. मारक ने प्रतिबद्धता और दृढ़निश्चय के साथ उग्रवादियों पर गोलीबारी करना जारी रखा और अनुकरणीय साहस का परिचय दिया तथा उग्रवादियों को अपनी जान बचाकर भागने के लिए मजबूर कर दिया। भागते समय उग्रवादी दो दिशाओं में बँट गए। पुलिस दल भी दो दलों में बँट गया और भाग रहे उग्रवादियों का जमकर पीछा किया। इस कार्रवाई में, पुलिस दल पर उन भाग रहे उग्रवादियों द्वारा भीषण गोलीबारी की गई जो पहाड़ी की चोटी पर जा बैठे थे। ऐसी स्थिति में भी, दल के सदस्यों ने जबरदस्त धैर्य और प्रतिबद्धता का परिचय दिया और जवाबी गोलीबारी करते हुए आगे बढ़े। यह गोलीबारी लगभग 30 (तीस) मिनट तक जारी रही जिसमें एक उग्रवादी मारा गया। तथापि, अन्य जी एन एल ए काडर बचकर भागने में सफल हो गए और मारे गए जी एन एल ए काडर के पास से निम्नलिखित वस्तुएं बरामद हुईं:

1 (एक) ए के 56 राइफल

2 (दो) ए के 56 मैगजीन

12 (बारह) जिंदा ए के राउंड

11 (ग्यारह) ए के राइफल के खाली खोखे

1 (एक) 7.65 पिस्तौल

1 (एक) 7.65 मैगजीन

2 (दो) जिंदा 7.65 राउंड

1 (एक) हैंड हेल्ड सेट

1 (एक) मोबाइल हैंड सेट

उपर्युक्त तीनों द्वारा संकट की घड़ी और प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी जान जोखिम में डालकर प्रदर्शित दृढ़ निश्चय, असाधारण साहस, धैर्य अपने कर्तव्य के प्रति सर्वश्रेष्ठ समर्पण अत्यन्त सराहनीय है।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री देवेन मावलीन, निरीक्षक, जोस समर, कांस्टेबल और ग्रोहन के. मारक, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02.03.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 144-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. विक्टर नैंगमिंजा संगमा,
उप पुलिस अधीक्षक

02. निकचैंग सेंगा सीएच. मोमिन,
उप पुलिस अधीक्षक

03. जेस्टर ए. संगमा,
कांस्टेबल

04. मैक्डोनाल्ड थोंगनी,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13 अप्रैल, 2016 को, विश्वसनीय सूचना प्राप्त होने पर उप पुलिस अधीक्षक (पी) विक्टर एन. संगमा और उप पुलिस अधीक्षक (पी) निकचैंग सेंगा सी एच. मोमिन के नेतृत्व में अभियान की योजना बनाई गई, और वे विलियमनगर से चिचरा क्षेत्र के लिए चले और रोंगजेंग रिजर्व वन में प्रवेश कर गए। पूरे दल को तीन उप-दलों में विभाजित किया गया। जब वे घात लगाकर एक घंटे तक बैठे रहे, तब सादे कपड़ों में संदिग्ध दिख रहा एक व्यक्ति दिखाई पड़ा, जैसे ही वह संदिग्ध व्यक्ति घात वाले स्थान के निकट पहुंचा, उन्होंने उसे पकड़ लिया और उससे सवाल-जवाब किए। उसने बताया कि ए के राइफलों से लैस लगभग 10-12 उग्रवादी दिनांक 12 अप्रैल, 2016 की रात्रि में उसके घर आए थे, उसे मारा-पीटा तथा उसकी पत्नी को धमकाया और बाद में बंदूक की नोंक पर बलपूर्वक सिम कार्ड सहित एक मोबाइल फोन दिया ताकि वह पुलिस की आवाजाही के बारे में उन्हें सूचित करे। आगे और पूछताछ तथा निरीक्षण करने पर, उक्त व्यक्ति ने अपनी पहचान के तौर पर अपना नाम श्री वाल्सरंग एन. अरेंग बताया। उसी क्षण उसके मोबाइल फोन पर एक एस एम एस आया, जिसमें इलाके में पुलिस की उपस्थिति के बारे में सवाल किया गया था। आगे और पूछताछ के बाद अभियान दल ने अपना कार्य जारी रखने का निर्णय लिया। इस अवसर का उपयोग करते हुए उप पुलिस अधीक्षक (पी) निकचैंग सेंगा सीएच मोमीन ने पहल की और पकड़े गए व्यक्ति के उसी मोबाइल फोन से एस एम एस के द्वारा यह जवाब भेज दिया कि "कोई पुलिस नहीं दिखी"। तब पुलिस दल ने उस व्यक्ति को उग्रवादियों को एक मोबाइल कॉल करने और उन्हें यह सूचित करने के लिए कहा कि उसने कोई पुलिस नहीं देखी और वे सुरक्षित रूप से गांव में आ सकते हैं। 15 मिनट के बाद एक ए के राइफल के साथ दो काडर जंगल से बाहर निकले और लक्षित मकान में गए। कुछ देर बाद दो, ए के राइफलों सहित तीन अन्य काडर सामने आए। तथापि, लक्षित मकान में श्री वाल्सरंग एन. अरेंग की अनुपस्थिति से उन्हें संदेह हुआ क्योंकि वे उसे ढूंढ़ नहीं पाए थे। इसलिए उन्होंने शेष दल को सतर्क कर दिया और अपने छिपने के ठिकाने पर लौटने लगे। जब वह उग्रवादियों का दल वापस लौट रहा था, तब श्री विक्टर एन. संगमा, उप पुलिस अधीक्षक (पी) ने उन्हें पकड़ने का प्रयास किया और उग्रवादियों की ओर आगे बढ़े लेकिन उग्रवादी ने पुलिस दल को देखकर अपने परिष्कृत हथियारों से उन पर भारी गोलीबारी आरंभ कर दी। यद्यपि पुलिस दल शत्रु की भीषण गोलीबारी का सामना कर रहा था, फिर भी उन्होंने शत्रुओं पर असरदार जवाबी गोलीबारी की जो लगभग 15 मिनट तक चली। दोनों ओर से भारी गोलीबारी के बाद, उग्रवादी घने जंगलों का लाभ उठाकर घाटी में लौटने लगे। उग्रवादी गोलियां चलाते रहे तथा पुलिस दल भी जवाबी गोलीबारी करता रहा। उप पुलिस अधीक्षक (पी) विक्टर एन. संगमा और उप पुलिस अधीक्षक (पी) निकचैंग सेंगा सीएच मोमिन दोनों बी एन सी मैक्डोनाल्ड थोंगनी और बी एन सी जेस्टर ए. संगमा के साथ गोलियां चला रहे उग्रवादियों की ओर आक्रामक होकर बहादुरी के साथ बढ़े और उन पर जबरदस्त गोलीबारी की ताकि दोनों अधिकारियों अर्थात् विक्टर और निकचैंग को कवर प्रदान किया जा सके जिससे उग्रवादियों का हमला विफल हो गया। इस प्रकार पुलिस दल ने बेहद बहादुरी के साथ उग्रवादियों का मुकाबला और अंततः उग्रवादी घने जंगलों का फायदा उठाकर घटनास्थल से भाग निकले। अच्छी तरह से तलाशी लिए जाने के दौरान, हथियारों और गोलाबारूद के साथ एक उग्रवादी का शव बरामद हुआ। बाद में, उस मृतक की पहचान आगस्टीन मराक, कमांडर-इन-चीफ, एल ए ई एफ के रूप में हुई।

बरामदगी:

9.	ए के 47	-	01
10.	ए के मैगजीन	-	01
11.	ए के गोलाबारूद	-	72 राउंड
12.	मोबाइल फोन	-	03
13.	सिम कार्ड	-	10

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री विक्टर नेंगमिंजा संगमा, उप पुलिस अधीक्षक, निकचेंग सेंगा सीएच. मोमिन, उप पुलिस अधीक्षक, जेस्टर ए. संगमा, कांस्टेबल और मैक्डोनाल्ड थोंगनी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.04.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 145-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री भबानी प्रधान,
हवलदार

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

विशिष्ट आसूचना जानकारी के आधार पर, राउरकेला पुलिस, एफ/19 बटालियन सी आर पी एफ, डी वी एफ और एस ओ जी के चार दलों द्वारा दिनांक 10.11.2015 को 2300 बजे पुलिस थाना चंडीपोश और गुरूंडिया के अन्तर्गत असुरखोल पहाड़ और आस-पास के क्षेत्रों में 'सरग्रम' नामक एक संयुक्त अभियान चलाया गया। दिनांक 11.11.15 को अभियान के दौरान लगभग 0930 बजे, पुलिस थाना चंडीपोश के अंतर्गत कुलझर नाला के निकट असुरखोल पहाड़ क्षेत्र में सी ओ जी क्रैक टीम और माओवादियों के बीच गोलीबारी हुई जिसमें भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद और अन्य वस्तुओं सहित एक माओवादी का शव बरामद हुआ था।

गोलीबारी के बाद, विश्वसनीय सूत्रों से और सूचना मिली कि लगभग 03-04 माओवादियों का एक छोटा दल पुलिस थाना चंडीपोश के अंतर्गत गहमी और आस-पास के क्षेत्रों में चला गया है। आसूचना जानकारी के आधार पर, पुलिस अधीक्षक राउरकेला द्वारा दिनांक 11.11.15 को 2000 बजे से 24 घंटों के लिए काम्बिंग एवं सर्च के एक और अभियान 'सरग्रम-2' की योजना बनाई गई तथा कमांडेंट 19 बटालियन, सी आर पी एफ, राउरकेला तथा ए एस आई एन. पट्टा, पुलिस थाना चंडीपोश और हवलदार/604 भवानी प्रधान, श्री राकेश शर्मा, सहायक कमांडेंट के प्रभार में डी वी एफ सहित बी/19 के दल को गहमी के वन क्षेत्र, जो पुलिस थाना चंडीपोश के अंतर्गत ब्राहमणी नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित है, में अभियान के बारे में जानकारी दी गई/ अभियान के लिए तैनात किया गया। अभियान दल 2000 बजे चंडीपोश शिविर से रवाना हुआ तथा सुनियोजित ढंग से दल ड्रापिंग ड्रिल के जरिए जी पी एस की मदद से पैदल ब्राहमणी नदी क्षेत्र की ओर चला तथा 2130 बजे ब्राहमणी नदी को पार कर गया। नदी पार करने के बाद, दल प्वाइंट नं. 05 पर पहुंचा। नवीनतम आसूचना जानकारी के आधार पर, अभियान दल का रास्ता प्वाइंट नं. 5 से मोड़कर उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर कर दिया गया जिसकी सूचना दल के कमांडर श्री राकेश शर्मा, सहायक कमांडेंट को दी गई। तदनुसार, हवलदार भवानी प्रधान के मार्गदर्शन के सहारे अभियान दल प्वाइंट नं. 5 से उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर बढ़ा। गहमी गांव के निकट वन क्षेत्र में गहन छानबीन और खोज के दौरान मार्गदर्शक हवलदार भवानी प्रधान, डी वी एफ और स्काउट सी टी/जी डी गगनदीप सिंह और सी टी/जी डी विशाल पटेल ने जंगलों में से नदी घाट की ओर अंधेरे में आ रहे सशस्त्र माओवादियों के एक समूह को देखा। पूरे अभियान दल को सतर्क कर दिया गया। इस अवसर पर, श्री राकेश शर्मा, ए सी ने स्थिति का जायजा किया और दल को तीन उप दलों में विभाजित किया। दल 1 बायां कट ऑफ, दल 2 दायां कट ऑफ तथा तीसरा दल हमला दल था जिसमें श्री राकेश शर्मा, ए सी, सी टी/जी डी गगनदीप सिंह, सी टी/जी डी विशाल पटेल और हवलदार भवानी प्रधान, डी वी एफ शामिल थे। दल के नेता ने तत्काल सभी दलों को अपनी-अपनी पोजीशन लेने का संकेत दिया और माओवादियों

के नजदीक आने की प्रतीक्षा करने लगे। इस मौके पर सामने से आ रहे माओवादियों में से पहला सदस्य अचानक "पुलिस" चिल्लाया और अभियान दल पर अंधाधुंध गोलियां चलाने लगा। पूरा माओवादी दल, जो लगभग 08-10 के बीच रहा होगा, पुलिस दल की हत्या करने की मंशा से घातक/परिष्कृत हथियारों से अंधाधुंध गोलीबारी करने लगा। दल कमांडर और स्थानीय गाइड हवलदार भवानी प्रधान ने माओवादियों को गोलीबारी रोकने तथा आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन माओवादी रूके नहीं और वे पुलिस दल पर लगातार गोलियां चलाते रहे। अपने दल के सदस्यों तथा स्थानीय ग्रामीणों की जान और माल को होने वाले खतरे का आकलन करते हुए तथा अपनी आत्मरक्षा में अभियान दल ने नियंत्रित गोलीबारी के जरिए जवाबी कार्रवाई की, जिसमें ए सी और अभियान दल सी आर पी एफ के दो स्काउटों ने नियंत्रित गोलीबारी आरंभ की तथा हवलदार भवानी प्रधान अपनी ओर गोलियां न चलाने तथा दोनों तरफ से गोलियां चलने की संभावना से बचने के लिए दायीं और बायीं दिशा से शत्रुओं की गतिविधियों पर नजर रखने के बारे में अपने दल के सदस्यों को संकेत देने के बाद रेंगते हुए आगे बढ़ने लगे। शत्रुओं द्वारा भारी गोलीबारी के बावजूद और अपनी जान की परवाह न करते हुए श्री राकेश शर्मा, ए सी, सी टी/जी डी गगनदीप सिंह, सी टी/जी टी विशाल पटेल और डी वी एफ हवलदार भवानी प्रधान सामने से शत्रुओं से लोहा लेने के लिए रेंगते हुए आगे बढ़े, जबकि अभियान दल के अन्य सदस्य कवर फायर देने की स्थिति में मौजूद थे, जिसके परिणामस्वरूप माओवादियों के पैर उखड़ गए और वे जंगल की ओर लौटने लगे। माओवादियों द्वारा की गई गोलीबारी भीषण थी, जो संभवत: स्वचालित हथियारों से की गई थी। इस प्रकार की कार्रवाई माओवादियों ने पुलिस बल के साथ-साथ स्थानीय लोगों के मन में आतंक पैदा करने की मंशा से भी की गई थी। दोनों ओर से गोलीबारी लगभग 10 से 15 मिनट तक जारी रही और जब दोनों ओर से गोलीबारी रूकी, तब श्री राकेश शर्मा, ए सी ने अभियान दल को कवर लेने और आगे बढ़ने की रणनीति का अनुसरण करते हुए सुनियोजित ढंग से क्षेत्र की तलाशी लेने का संकेत दिया। हवलदार भवानी प्रधान के मार्गदर्शन में पुलिस दल ने क्षेत्र की तलाशी की तथा घटना-स्थल से एक वर्दीधारी माओवादी का खून से लथपथ शव, दो .303 राइफलें (मार्क-IV), दो .303 राइफल मैगजीन, .303 राइफल के 113 गोलाबारूद, एयर गन के 11 गोलाबारूद, 03 .303 चार्जर क्लिप, 01 मोटरोला मैन पैक सेट, माओवादी साहित्य और अन्य विविध सामग्रियां तथा अभियान-क्षेत्र में खून के निशान प्राप्त हुए। पुलिस की साहसिक जवाबी कार्रवाई के कारण, माओवादी दल घने जंगलों का फायदा उठाकर भाग खड़ा हुआ। इस जोखिमपूर्ण लेकिन सफल अभियान के परिणामस्वरूप संग्राम बारी (सेक्शन कमांडर) नामक सी पी आई (माओवादी) की सारांडा सब जोनल कमेटी का एक दुर्दांत काडर मारा गया। पुलिस ने घायलों, यदि कोई हो, का पता लगाने के लिए आस-पास के क्षेत्रों में खोज की लेकिन कोई घायल नहीं मिला।

हवलदार भवानी प्रधान की वीरतापूर्वक कार्रवाई:

स्थानीय गाइड और भू-भाग से अच्छी तरह से परिचित होने के कारण डी वी एफ हवलदार भवानी प्रधान ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने स्वयं हमला दल का हिस्सा बनने की इच्छा बताकर सामने से शत्रुओं से लोहा लेने में माओवादियों की दिशा में पूरे दल का मार्गदर्शन किया। हमला दल में उनकी पोजीशन एकदम बायीं ओर थी और अभियान की सफलता में उन्होंने अहम भूमिका निभायी। अभियान दल के वे एकमात्र व्यक्ति थे, जो स्थानीय भू-भाग से परिचित थे और उन्होंने अभियान के दौरान पूरे अभियान दल का मार्गदर्शन किया। वे उन लोगों में से थे जिन्होंने सर्वप्रथम माओवादियों की आवाजाही देखी और इसकी सूचना दल के नेता श्री राकेश शर्मा को दी। माओवादियों से हुई गोलीबारी के दौरान उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डाला क्योंकि वे एकदम बायीं ओर थे तथा शत्रु के भी बायीं ओर होने के कारण वे शत्रु के सबसे निकट थे और इस बात की पूरी संभावना थी कि माओवादी उन्हें घेर करके उधर से उन पर गोलियां दागते। यह उनकी सर्तकता और तत्काल प्रत्युत्तर का नतीजा था कि दल के अन्य सदस्यों के प्राणों की रक्षा हो सकी क्योंकि वे अपने लक्ष्य की ओर पहाड़ी क्षेत्र में आगे बढ़ रहे थे। डी ए एफ हवलदार भवानी प्रधान हमला दल के सबसे बायीं ओर थे और स्थिति की मांग के अनुसार आगे बढ़ते रहे। वे माओवादियों की विस्तृत स्थिति और उनकी गोलीबारी की दिशा का पता लगाने के लिए आगे की ओर बढ़ते रहे। चूंकि वह माओवादियों के सबसे निकट थे, इसलिए उन्हें दोनों पक्षों अर्थात् माओवादियों और पुलिस दल, दोनों से खतरा था। चूंकि वे अभियान दल के आधार-स्तंभ थे, इसलिए उन्होंने सदैव दल के नेता के साथ समन्वय बनाए रखा। कठिन परिस्थितियों में उनका समन्वय और उनकी बहादुरी, दोनों उल्लेखनीय रही। उनकी साहसिक कार्रवाई से न केवल एक दुर्दांत माओवादी का अंत हुआ बल्कि बाद में ग्रामीण द्वारा सूचित किए गए अनुसार, कई अन्य माओवादी भी गंभीर रूप से घायल हुए।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री भवानी प्रधान, हवलदार ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.11.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 146-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. किरण कुमार
उप-सूबेदार

02. मनोरंजन नायक
कांस्टेबल

03. उदय शंकर पात्रा
कांस्टेबल

04. धनेश्वर मुदुली
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 10/11/2015 को अनमोल के नेतृत्व में जिला-सुंदरगढ़ के पुलिस स्टेशन चंडीपोश और गुरूंडिया के अन्तर्गत असुरखोल क्षेत्र और उसके साथ लगे सीमावर्ती जंगल/गांव में लगभग 30 सशस्त्र सीपीआई (माओवादी) काडरों की आवाजाही के संबंध में एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई। सूचना के अनुसार, माओवादियों ने स्थानीय ग्रामीणों के दिमाग में भय पैदा करने तथा उन्हें अपने साथ जोड़ने के लिए पुलिस मुखबिर के नाम पर कुछ नागरिकों की हत्या करने की योजना बनाई थी। इसका मुकाबला करने के लिए डीवीएफ (जिला स्वैच्छिक बल), एसओजी (विशेष अभियान समूह) और के.रि.पु.ब. (केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल) को शामिल करते हुए तीन इकाइयों को वहां खोज एवं तलाशी अभियान चलाने के लिए तैनात किया गया। श्री किरण कुमार, उप-निरीक्षक (शस्त्र) और उनकी क्रैक टीम को भी खोज अभियान की ड्यूटी पर लगाया गया। असुरखोल जंगल के जलजला पहाड़ पर खोज अभियान के निष्पादन के समय, उस दल के स्काउट की नजर किसी समूह की संदिग्ध गतिविधि की ओर गई। तुरन्त उस दल ने पोजीशन ले ली और उन्होंने यह देखा कि वह माओवादियों का समूह था, क्योंकि उनमें से कुछ ने जैतून की तरह हरे रंग की वर्दी पहन रखी थी और उनके हाथों में हथियार थे। पुलिस दल ने इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि वह माओवादियों का ही समूह था, उस संदिग्ध समूह की पहचान को पुख्ता करने के लिए कुछ और समय तक उनके ऊपर निगाह रखी। तब तक, माओवादियों ने वहां पुलिस दल की मौजूदगी को देख लिया। पुलिस दल को देखकर, माओवादियों ने उनकी हत्या करने के इरादे से उनके ऊपर अपने स्वचालित हथियारों से गोलीबारी शुरू कर दी। सभी एहतियाती उपाय करने के बाद दल के कमांडर और सदस्यों ने माओवादियों पर चिल्लाते हुए उन्हें गोलीबारी बंद करने और आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन माओवादियों ने उनकी बात को अनसुना करते हुए पुलिस दल की ओर अंधाधुंध गोलीबारी करना जारी रखा। वहां इतनी भारी गोलाबारी हो रही थी कि पुलिस को अपनी सुरक्षा के लिए आड़ के पीछे जाना पड़ा। माओवादियों ने आधा घंटे से अधिक समय तक गोलीबारी जारी रखी। पुलिस कार्मिकों की जान को बहुत अधिक खतरा था क्योंकि संम्पूर्ण पुलिस दल माओवादियों की मारक जोन के अंदर था। ऐसे समय में, दल के नायक ने पुलिस कार्मिकों के जीवन की रक्षा के लिए कुछ करने का निर्णय लिया। दल को तीन हिस्सों में विभाजित किया गया। कांस्टेबल धनेश्वर मुदुली, कांस्टेबल मनोरंजन नायक और कांस्टेबल उदय कुमार पात्रा के साथ उप-निरीक्षक (शस्त्र) किरण कुमार को शामिल करते हुए एक हमला दल का गठन किया गया। माओवादी कैंप पर हमला करने के लिए आगे बढ़ते समय हमला दल को कवर फायर देने के लिए शेष दो दलों का गठन कट ऑफ दलों के रूप में किया गया, ताकि पुलिस कार्मिकों के जीवन की रक्षा की जा सके। एक कट ऑफ दल को बाएं किनारे को कवर करने का कार्य सौंपा गया, जबकि दूसरे कट ऑफ दल को दाहिने किनारे को कवर करने का कार्य सौंपा गया। हमला दल मध्य में था। माओवादियों द्वारा की जा रही लगातार गोलीबारी के दौरान दोनों कट ऑफ दलों ने रेंगते हुए माओवादी कैंप के बांई और दाहिनी ओर पोजीशन ले ली। सुरक्षा दल द्वारा एक बार पोजीशन ले लिए जाने के बाद, हमला दल को पुलिस दल के सदस्यों की जान बचाने के लिए आड़ से बाहर निकलना था। दोनों कट ऑफ दलों द्वारा पोजीशन ले लिए जाने के पश्चात, हमला दल अपनी आड़ से बाहर आ गया और उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बगैर और अपने सहकर्मी पुलिस कार्मिकों की जान की रक्षा करने के लिए माओवादी कैंप पर धावा बोल दिया। इन चार बहादुर कार्मिकों ने पुलिस के साथ-साथ नागरिकों के जान-माल की सुरक्षा के लिए अपनी जान की परवाह किए बगैर सर्वोच्च स्तर के शौर्य का परिचय दिया। यह राउरकेला पुलिस के इतिहास में एक बेमिसाल वीरतापूर्ण कृत्य है। लगभग आधे घंटे की गोलीबारी के बाद, माओवादियों ने गोलीबारी रोक दी और वे घने जंगल के भीतर भागने में सफल हो गए। गोलीबारी के बाद पुलिस दल ने उस क्षेत्र की तलाशी ली और उन्हें घटना स्थल से सिर एवं पैर में

जख्म के निशान तथा साथ खून के रिसाव के साथ वर्दी में एक माओवादी का शव, दो .303 राइफल, .303 राइफल की दो मैगजीनें, एसएलआर की एक मैगजीन, तीन हथगोले, किट बैग, माओवादी की वर्दी, माओवादी साहित्य, खाना पकाने के बर्तन आदि और अभियान क्षेत्र खून के धब्बे भी मिले। पुलिस की ओर से वीरतापूर्ण जवाबी कार्रवाई के कारण, माओवादी समूह वहां से घनी झाड़ियों की आड़ का लाभ उठाते हुए भाग गया। इस सफल किन्तु जोखिमपूर्ण अभियान के परिणामस्वरूप मधुसूदन तारकोट नामक सीपीआई (माओवादी) का एक सारंडा उप-जोनल समिति कमांडर को ढेर किया जा सका, जिसके ऊपर ओडिशा सरकार ने एक लाख रुपये का ईनाम घोषित कर रखा था। इसके अलावा पुलिस दल ने घायल माओवादियों, यदि कोई हो, की तलाश करने के लिए निकटवर्ती क्षेत्र की भी तलाशी ली लेकिन उन्हें वहां कोई घायल माओवादी नहीं मिला।

अभियान के दौरान पुलिस कार्मिकों ने बेहतर रणनीतिक स्थान पर डटे हुए दुश्मनों के विरुद्ध बेहद दुर्गम स्थल में अत्यंत मुश्किल भरे हालातों पर विजय पाने के लिए बहादुरी, साहस, दृढ़ निश्चय और सर्वोच्च स्तर की कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया और नागरिकों एवं पुलिस कार्मिकों के जीवन को किसी भी प्रकार की प्रासंगिक क्षति के बिना सफलता सुनिश्चित की।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री किरण कुमार, उप-सूबेदार, मनोरंजन नायक, कांस्टेबल, उदय शंकर पात्रा, कांस्टेबल और धनेश्वर मुदुली, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.11.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 147-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. प्रेमानन्द प्रधान,
कांस्टेबल

02. महादेव गहीर,
कांस्टेबल

03. हेमंत प्रधान,
कांस्टेबल

04. टुनू साहू,
सार्जेंट

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 30.04.2016 को, कोकसारा पुलिस स्टेशन की सीमा के अंतर्गत आने वाले सहजखोल रिजर्व वन क्षेत्र में सीपीआई (माओवादी) के सशस्त्र काडरों की गतिविधियों के संबंध में एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि वे स्थानीय युवाओं को प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी संगठन) से जुड़ने हेतु प्रोत्साहित करने के अलावा नागरिकों की हत्या करने, सरकारी संपत्ति को नष्ट करने आदि जैसी अनेक हिंसक गतिविधियों में शामिल होने की भी योजना बना रहे हैं। तदनुसार, प्रतिबंधित संगठन के सदस्यों को पकड़ने के लिए सार्जेंट टुनू साहू के नेतृत्व में एसओजी टीम सं. 05 को एक माओवादी-रोधी अभियान के लिए रवाना किया गया। जब यह एसओजी टीम वन क्षेत्र में पहुंची, तब माओवादियों ने अकारण उनके ऊपर स्वचालित हथियारों से अचानक गोलीबारी शुरू कर दी और किनारे से हमला कर दिया, जिससे पुलिस दल दो दिशाओं से होने वाली भारी गोलीबारी के कारण असुरक्षित स्थिति में आ गया और इसमें एसओजी के पांच कमांडो घायल हो गए। इस गोलीबारी से विचलित हुए बगैर, सार्जेंट टुनू साहू के नेतृत्व में एसओजी टीम ने संख्या में कम होने और भौगोलिक स्थलाकृति संबंधी कठिन सीमाओं के बावजूद निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना बहादुरीपूर्वक जवाब दिया। सार्जेंट टुनू साहू ने कमांडो श्री प्रेमानंद प्रधान, श्री महादेव गहीर और श्री हेमंत प्रधान के साथ मिलकर भारी गोलीबारी का सामना करते हुए बिल्कुल सामने से

बेहद जोखिमपूर्ण रूप से दुश्मनों पर धावा बोल दिया और माओवादियों को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। दूसरे छोटे दल ने, जिसमें छह कमाण्डो शामिल थे, दाहिने किनारे से जवाबी हमला किया और उन्होंने निडरतापूर्वक माओवादियों को चुनौती पेश की। दल के नायक सार्जेंट टुनू साहू और अन्य कमांडो ने अत्यधिक विपरीत परिस्थितियों का पूरे जोश एवं सामर्थ्य के साथ डटकर सामना किया और उन्होंने संख्या में अधिक एवं रणनीतिक रूप से बेहतर स्थान में डटे हुए दुश्मनों के विरुद्ध एक प्रेरणादायक मुकाबला किया। उनके इस कृत्य के परिणामस्वरूप सीपीआई माओवादी संगठन की प्रथम बटालियन की प्रथम कंपनी से संबद्ध तीन महिला माओवादी काडरों को ढेर किया जा सका और वहां से दो .303 राइफल, एक 12 बोर की बंदूक, एक 9एमएम की पिस्तौल, दो टिफिन बम, भारी संख्या में गोलाबारूद और कैंप से संबंधित अन्य सामग्रियां बरामद की गईं।

दल के नायक एवं अन्य अन्य कमाण्डो के बहादुरीपूर्ण एवं शौर्यपूर्ण कृत्य ने दुश्मनों के बीच अफरा-तफरी मचा दी, जिसमें तीन माओवादी काडर मारे गए तथा माओवादियों के घृणित इरादों को नाकाम करते हुए एक बड़ी हिंसक घटना को रोका जा सका।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री प्रेमानन्द प्रधान, कांस्टेबल, महादेव गहीर, कांस्टेबल, हेमंत प्रधान, कांस्टेबल और टुनू साहू, सार्जेंट ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.04.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 148-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. बिकाश पात्र,
उप-निरीक्षक

02. राज किशोर प्रधान,
कांस्टेबल

03. हृषिकेश जल,
कांस्टेबल

04. राम चंद्र हेंग्रम,
कांस्टेबल

05. सामंत माझी,
कांस्टेबल

06. सुरेश चंद्र हेंग्रम, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 23.01.2016 को, अंगुल-देवगढ़ सीमा के वन क्षेत्र में गणेश्वरपुर गांव के निकट आतंक फैलाने के लिए निर्दोष नागरिकों की हत्या करने जैसी हिंसक गतिविधियों की निश्चित योजनाओं के साथ पहाड़ी की चोटी पर प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) संगठन के कलिंगनगर डिवीजन के कैंप की मौजूदगी के बारे में प्राप्त खुफिया जानकारी के आधार पर, पल्लाहारा पुलिस स्टेशन के स्थानीय पुलिस प्रतिनिधि को साथ में लेकर प्रतिबंधित माओवादी काडरों को पकड़ने के लिए बिकाश पात्रा, उप निरीक्षक के नेतृत्व में एसओजी और एसआईडब्ल्यू की टीम द्वारा एक नक्सल-रोधी अभियान शुरू किया गया। घने पहाड़ी जंगल में गहन तलाशी अभियान के पश्चात, अगले दिन (24.01.2016) दोपहर में अभियान दल ने गणेश्वरपुर गांव से लगभग 5-6 कि.मी. की दूरी पर घने पहाड़ी जंगल में उस माओवादी

कैंप को देखा। अभियान दल ने युक्ति पूर्वक उन्हें पकड़ने के लिए उस कैंप की घेराबंदी करने का प्रयास किया। पुलिस बल द्वारा स्पष्ट एवं तेज आवाज में उन्हें आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया गया, जिसका कोई फायदा नहीं हुआ। इसकी बजाय, माओवादियों ने अचानक स्वचालित हथियारों से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसमें अभियान दल के तीन सदस्य घायल हो गए। वहां की स्थलाकृति की खतरनाक बनावट एवं सशस्त्र उग्रवादियों की बैचेनी को देखते हुए, यह अभियान खतरे एवं जोखिम से भरा हुआ था। लेकिन शारीरिक रूप से घायल होने और संख्या में कम होने के बावजूद उपर्युक्त पुलिस कार्मिक अपनी जान को जोखिम में डालते हुए माओवादी समूह की गोलीबारी से विचलित हुए बिना युक्तिपूर्वक आगे बढ़ते हुए उनके करीब पहुंच गए और उन्होंने निडरतापूर्वक सामने से बेहद जोखिमपूर्ण हमला करते हुए माओवादियों को जवाब दिया जिससे वे वहां से बचकर भागने पर मजबूर हो गए। दोनों ओर से लगभग 25 मिनट तक गोलीबारी जारी रही। उनके वीरतापूर्ण कृत्य के कारण, सुशील उर्फ सुनील उर्फ पी. कुमार स्वामी (सचिव, कलिंगनगर डिवीजन और राज्य समिति सदस्य) और सोनी उर्फ सिंदरी लिंगो (डिवीजनल समिति सदस्य) के रूप में पहचान किए गए दो खतरनाक माओवादी काडरों को ढ़ेर किया जा सका और वहां से एक 5.56 इंसास, एक 9एमएम कारबाइन, 18 राउंड जिंदा गोलाबारूद, 37 खाली कारतूस, मोबाइल, लैपटॉप, माओवादी साहित्य और कैंप संबंधी अन्य वस्तुएं आदि बरामद की गईं। मारे गए दोनों खतरनाक माओवादी नेताओं पर ओडिशा सरकार ने क्रमशः 20 लाख रु. और 5 लाख रु. का इनाम घोषित कर रखा था। वे पिछले एक दशक के दौरान चार जिलों में अनेक जघन्य अपराधों एवं विध्वंसक गतिविधियों में संलिप्त थे।

उपर्युक्त पुलिस कार्मिकों ने खतरनाक परिस्थितियों में अनुकरणीय निजी दिलेरी, अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प एवं कर्तव्य के प्रति असाधारण प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपने उल्लेखनीय शौर्यपूर्ण कृत्य के द्वारा उन्होंने न सिर्फ कैंप को ध्वस्त करते हुए राज्य के दो खतरनाक सशस्त्र माओवादी काडरों को ढ़ेर किया बल्कि उन्होंने आतंक का प्रभाव फैलाने के सीपीआई (माओवादी) संगठन के घातक इरादे को भी नाकाम किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री बिकाश पात्र, उप-निरीक्षक, राज किशोर प्रधान, कांस्टेबल, हृषिकेश जल, कांस्टेबल, राम चंद्र हेंग्रम, कांस्टेबल, सामंत माझी, कांस्टेबल और स्वर्गीय सुरेश चंद्र हेंग्रम, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.01.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 149-प्रेज/2017- राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. सांतनु कुमार प्रधानी
सार्जेंट

02. अमित कुमार बिस्वाल
हवलदार

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

गांव गच्छखोला के निकट सदर पुलिस स्टेशन भवानीपटना के अन्तर्गत कानामंजूर रिजर्व वन के निकट सशस्त्र माओवादियों द्वारा शिविर स्थापित करने और राज्य के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के भाग के रूप में उनके द्वारा क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों, सरकारी भवनों आदि पर हमले जैसी विध्वंसक गतिविधियों में शामिल होने तथा नागरिकों की हत्या करके वहां आतंक फैलाने का आपराधिक षड्यंत्र रचने से संबंधित एक विश्वसनीय सूचना के आधार पर दिनांक 11.02.2016 को पुलिस अधीक्षक, कालाहांडी द्वारा एक माओवाद-रोधी तलाशी अभियान की शुरूआत की गई। अभियान दल में डीवीएफ, कालाहांडी के सार्जेंट सांतनु कुमार प्रधानी और 03 कमांडो के साथ एसओजी के एसआई (ए) परमेश्वर हंसदा और 16 कमांडो शामिल थे।

जब उक्त दल दिनांक 11.02.2016 को गांव गच्छखोला के निकट सदर पुलिस स्टेशन भवानीपटना के अन्तर्गत कानामंजूर वन के निकट तलाशी अभियान का संचालन कर रहा था, तभी सशस्त्र माओवादियों के एक समूह ने उनकी हत्या करने की नीयत से अकारण पुलिस दल के ऊपर अत्याधुनिक हथियारों से अचानक अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी।

जब ग्रेनेड फेंके जाने के कारण 08 पुलिस कार्मिक छर्रे लगने से घायल हो गए, तो सार्जेंट सांतनु कुमार प्रधानी एवं अन्य कार्मिकों ने जवाबी हमला किया। संख्या में कम होने तथा दुर्गम स्थलाकृति की सीमाओं के बावजूद सार्जेंट सांतनु कुमार प्रधानी अपने अन्य सहकर्मियों के साथ अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर तथा अपने जीवन को जोखिम में डालते हुए आगे बढ़े और माओवादियों के ऊपर किनारे से जोरदार हमला शुरू कर दिया, जिससे माओवादी पीछे हटने पर मजबूर हो गए। दोनों ओर से लगभग आधे घण्टे तक गोलीबारी जारी रही।

इस अभियान में, प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) संगठन की प्रथम बटालियन की प्रथम कंपनी की मितिकी नामक एक महिला माओवादी को ढ़ेर कर दिया गया और वहां से मैगजीन के साथ एक एमके-।।। .303 राइफल, .303 राइफल के 04 गोलाबारूद, 02 डेटोनेटर, 13 थैले, माओवादी साहित्य, तार, इलेक्ट्रॉनिक एवं घरेलू उपयोग की वस्तुएं आदि बरामद की गई। सीपीआई (माओवादी) संगठन की प्रथम बटालियन के माओवादी बेहद खूंखार माने जाते हैं और उन्होंने विगत में बड़ी संख्या में पुलिस कार्मिकों की हत्या की है। जैसा कि ऊपर बताया गया है सार्जेंट सांतनु कुमार प्रधानी के अधीन पुलिस दल के सदस्यों ने अत्यधिक खूंखार माओवादी समूह द्वारा किए गए जोरदार हमले को सफलतापूर्वक निष्फल किया, जिससे पुलिस दल के सदस्यों को भी हताहत होने से बचाया गया और उस हिंसक गतिविधि को भी रोकने में सहायता मिली, जिसके निष्पादन के लिए वे इकट्ठा हुए थे।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सांतनु कुमार प्रधानी, सार्जेंट और अमित कुमार बिस्वाल, हवलदार ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.02.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 150-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. गुरनाम सिंह, कांस्टेबल (मरणोपरांत)

02. भूपिंदर सिंह
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 19 अक्टूबर, 2016 को, लगभग 2345 बजे, जब निरीक्षक भूपिंदर सिंह, सं. 050011977, सीमा चौकी बोबिया फार्वर्ड के चौकी कमांडर (एक्स 173 .बटालियन) सीमा से लगे ट्रैक पर बीपी जिप्सी में वाहन से गश्त लगा रहे थे, तभी सीमा चौकी सं. 96 के समनुरूप पाकिस्तानी भू-भाग के भीतर से अंतर्राष्ट्रीय सीमा से लगभग 100 मीटर की दूरी से उनके वाहन तथा नाका टीलों की ओर उग्रवादियों द्वारा एक आरपीजी राउंड और उसके बाद स्वचालित हथियारों से लंबी दूरी वाली धमाकेदार गोलीबारी की गई। सौभाग्यवश आरपीजी राउंड निशाने से चूक गया और वह सीमा के ट्रैक पर फट गया। उसी समय कांस्टेबल गुरनाम सिंह, सं. 110411381 ने, जो नाका टीला सं. 02 पर तैनात थे, पाकिस्तान की ओर से भारी गोलीबारी कर रहे उग्रवादियों को देख लिया और उन्होंने उग्रवादियों की ओर से हो रही सीधी एवं भारी गोलीबारी के समक्ष अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर तत्काल उनके ऊपर एलएमजी से लक्षित एवं सटीक भारी गोलीबारी शुरू कर दी। इसके परिणामस्वरूप, उग्रवादियों को प्रभावी तरीके से वहीं उलझा दिया गया। तथापि, कुछ समय बाद उग्रवादियों द्वारा बीपी वाहन पर आरपीजी का दूसरा राउंड दागा गया, जो पुनः अपने लक्षित निशाने से चूक गया और वह टीला सं. 02

के पीछे उससे लगभग 100 मीटर की दूरी पर फट गया। उसी टीले पर तैनात कांस्टेबल गुरनाम सिंह ने उस स्थिति में जवाबी कार्रवाई के लिए लड़ाई की भावना का बखूबी प्रदर्शन किया और उन्होंने उग्रवादियों पर सटीक भारी गोलीबारी शुरू कर दी। इसके परिणामस्वरूप, दो उग्रवादी गंभीर रूप से घायल हो गए और उनमें से एक आश्रय लेने के लिए मजबूर हो गया और उसने नाका के टीलों के साथ-साथ कमांडर को निशाना बनाने के स्पष्ट इरादे के साथ-साथ उस बीपी वाहन के ऊपर भी भारी गोलीबारी शुरू कर दी, जिसमें निरीक्षक भूपिंदर सिंह मौजूद थे। अपनी सैन्य टुकड़ी का प्रभावी रूप से नेतृत्व करने और इस भयानक स्थिति को संभालने के लिए निरीक्षक भूपिंदर सिंह, अपनी निजी सुरक्षा एवं जान की परवाह किए बगैर गोलियों की भारी बौछार का दिलेरीपूर्वक सामना करते हुए सूझ-बूझ के साथ टीला सं. 02 पर पहुंच गए। उन्होंने उस स्थल की पहचान करने सहित, जहां से उग्रवादी निकटवर्ती नाका टीलों को उलझाए हुए थे और वहां की समग्र स्थिति का आकलन करने के पश्चात वहां की स्थिति को नियंत्रण में लिया और टीलों पर तैनात सैनिकों को उग्रवादियों के स्थानों पर समन्वित तरीके से भारी गोलीबारी करने का निर्देश दिया। तदनुसार, उग्रवादियों के ऊपर सभी नाका टीलों से सटीक एवं प्रभावी गोलीबारी की गई, जिसके परिणामस्वरूप उग्रवादियों के घुसपैठ के घृणित इरादे को नाकाम कर दिया गया और अंततः वे अपनी जान बचाने के लिए पाकिस्तान की ओर भागने में सफल हो गए।

बाद में, एचएचटीआई की रिकॉर्डिंग और 51एमएम का रोशनी बम दाग कर उस क्षेत्र में की गई रोशनी से एक मृत/घायल उग्रवादी को घसीट कर पाकिस्तान की ओर ले जाने की पुष्टि हुई। संपूर्ण अभियान लगभग 16 मिनट तक चला, जिससे उग्रवादी गंभीर रूप से घायल हो गए और वापस भागने के लिए मजबूर हो गए।

भारतीय भू-भाग के भीतर उग्रवादियों के जबरन घुसपैठ के प्रयास के दौरान, कांस्टेबल गुरनाम सिंह ने उग्रवादियों की भारी गोलीबारी के बीच अदम्य बहादुरी का प्रदर्शन किया और घुसपैठ करने वाले उग्रवादियों पर सटीक एवं प्रभावी गोलीबारी की, जिसके परिणामस्वरूप उग्रवादी घायल हो गए/मारे गए और शेष पीछे हटने पर मजबूर हो गए। तथापि, कांस्टेबल गुरनाम सिंह, सं. 110411381, जो मुठभेड़ में दाहिनी कनपटी में गोली लगने से घायल हो गए थे और जिन्हें उपचार हेतु जीएमसी जम्मू में दाखिल करवाया गया था, की घायल होने की वजह से दिनांक 22.10.2016 को लगभग 2315 बजे मृत्यु हो गई और उन्होंने शहादत प्राप्त की।

उपर्युक्त अभियान के दौरान, निरीक्षक भूपिंदर सिंह, चौकी कमांडर, सीमा चौकी बोबिया फार्वर्ड ने भी भारी बाधाओं के बीच गोलीबारी का निर्देश देने में संपूर्ण अभियान में निर्णायक भूमिका निभाई। उग्रवादियों की भारी गोलीबारी के समक्ष अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर, उन्होंने सामने रहकर अपने दल की अगुवाई की और अत्यधिक सूझ-बूझ से प्रभावी तरीके से संपूर्ण अभियान को समन्वित किया, जिसके परिणामस्वरूप 01 उग्रवादी मारा गया/घायल हुआ और घुसपैठ के एक बड़े प्रयास को नाकाम किया जा सका।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री स्व. गुरनाम सिंह, कांस्टेबल और भूपिंदर सिंह, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक19.10.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 151-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अशोक कुमार, सहायक कमांडेंट — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

02. सतीश चंद, कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

03. तपन कुमार राज, हेड कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

04. आर. सिद्दैया, सहायक उप-निरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक का बार, मरणोपरांत)

05. रविचंद्रन एम, हेड कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक, मरणोपरांत)

06. जी.एस. अबिलाष कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक, मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीओबी जानबाई से लगभग 6 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में सरकीबांधा क्षेत्र में नक्सलियों की मौजूदगी के संबंध में मलकानगिरी पुलिस द्वारा प्रदान की गई एक सूचना के आधार पर कमांडेंट, 104 बटालियन, सीमा सुरक्षा बल द्वारा विस्तृत योजना बनाए जाने के बाद श्री राजेश टी.के. लाकड़ा, सहायक कमांडेंट/कम्पनी कमांडर, सीओबी बड़ापाड़ा, 11 अधीनस्थ अधिकारियों, 63 अन्य रैंकों, 04 सी.सु.ब. वाटर विंग के कार्मिकों और 01 ओएसएपी (कुल 81) को साथ लेकर श्री अशोक कुमार, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में सी.सु.ब. के एक अभियान दल द्वारा अभियान की शुरूआत की गई।

श्री अशोक कुमार, सहायक कमांडेंट ने 12 कार्मिकों के साथ पहली नाव में स्वयं इस अभियान का नेतृत्व किया। योजनानुसार पहली नाव में सवार अभियान दल लक्षित क्षेत्र की ओर और आगे जाने के लिए दिनांक 26 अगस्त, 2015 को लगभग 0630 बजे पलंगराईघाट पहुंच गया। घाट पर पहुंचने के तत्काल बाद और उस घाट को सुरक्षित बनाने तथा वहां उतरते समय और नाव का लंगर डालते समय एक निकटवर्ती पहाड़ी पर लाभप्रद रूप से ऊंचे स्थान में छिपे हुए नक्सलियों ने वहां एक परिष्कृत विस्फोटक उपकरण (आईईडी) से विस्फोट किया और विभिन्न दिशाओं से सी.सु.ब .के अभियान दल के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री अशोक कुमार, सहायक कमांडेंट के निर्देशों के अधीन सैन्य टुकड़ी ने तत्काल गोलीबारी का जबाव दिया और उन्होंने अपना धैर्य खोये बगैर लड़ाई लड़ी और सफलतापूर्वक नक्सलियों की घात का सामना किया। इसी बीच नक्सलियों ने अंधाधुंध गोलीबारी के बीच तीन और आईईडी का भी विस्फोट किया, जिसके कारण अभियान दल के नौ सदस्य गोलियां और छर्रे लगने से घायल हो गए।

नक्सलियों द्वारा आईईडी के विस्फोट और अंधाधुंध गोलीबारी के कारण गोलियों तथा छर्रे से गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, आईआरएलए सं. 11 216360श्री अशोक कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान के अधीन अभियान दल ने अदम्य साहस का प्रदर्शन किया और उन्होंने अपने सहकर्मियों के साथ बहादुरीपूर्वक लड़ते हुए अपने जान की परवाह किए बगैर नक्सलियों पर जवाबी हमला किया, जिसके कारण नक्सली, जोकि अधिक लाभप्रद स्थिति में थे और सीमा सुरक्षा बल की टुकड़ी से संख्या में कई गुणा अधिक थे, अपने इरादे में सफल नहीं हो सके और उनकी पराजय हुई। दूसरे दल ने भी, जो कि पहली नाव के पीछे चल रहा था, कवर फायर प्रदान किया और नक्सलियों को बांध कर रखा। सी.सु.ब. की सैन्य टुकड़ी द्वारा दृढ़ संकल्प के साथ किए गए वीरतापूर्ण मुकाबले के कारण नक्सली अपनी ओर से लगाए गए शेष चार आईईडी में विस्फोट नहीं कर सके और वे अपने हथियार लूटने के मुख्य इरादे में भी विफल होकर अपने मृत सहकर्मियों को अपने शव और घायल सहकर्मियों को साथ लेकर वहां से भाग गए।

इस वीरतापूर्ण कार्रवाई में, दुर्भाग्यवश सी.सु.ब. की 104वीं बटालियन के तीन बहादुर सैनिकों ने कर्तव्य की राह में वीरगति प्राप्त की और छह सैनिक गंभीर रूप से घायल हो गए।

दल के सदस्यों द्वारा निभाई गई भूमिकाः

(i) गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद बगैर विचलित हुए श्री अशोक कुमार, सहायक कमांडेंट ने तत्काल स्थिति का विश्लेषण किया और माओवादियों द्वारा की जा रही गोलीबारी के प्रकार एवं उसकी दिशाओं को भांपते हुए उन्होंने लाइव वायर के रूप में कार्य करते हुए सामने रहकर नेतृत्व प्रदान किया, और अपने कार्मिकों को प्रोत्साहित किया जिन्होंने माओवादियों को ढेर एवं पराजित करने के लिए उनका अनुसरण किया।

(ii) हेड कांस्टेबल (ईडी) तपन कुमार राज, सं 901110015 ने अपने जख्मों की परवाह किए बगैर नाव को सुरक्षित रूप से किनारे लगाया और अत्यधिक साहस एवं सूझ-बूझ का प्रदर्शन करते हुए माओवादियों से तब तक मुकाबला किया, जब तक कि वे वहां से भाग खड़े नहीं हुए।

(iii) कांस्टेबल सतीश चंद, सं 092543962 ने आईईडी विस्फोट/नक्सलियों की गोलीबारी के कारण अपने गंभीर जख्मों की परवाह किए बगैर प्रभावी रूप से माओवादियों को जवाब दिया और उन्हें और अधिक आईईडी विस्फोट करने से रोका।

(iv) स्व. एएसआई (जी) आर सिद्दैया, सं 870091250 ने गोली एवं छर्रे से हुए गंभीर जख्मों की परवाह किए बगैर माओवादियों पर गोलीबारी जारी रखी। उनके आक्रामक एवं साहसी कृत्य ने माओवादियों के घृणित इरादों को नाकाम कर दिया और उग्रवादी वहां से भाग गए और अंततः उन्होंने अपना सर्वोच्च बलिदान कर दिया।

(v) स्व. हेड कांस्टेबल (जीडी) रविचंद्रन एम., सं 930096229 ने अपने गंभीर जख्मों की परवाह किए बगैर आक्रामक रूप से अपने व्यक्तिगत हथियार से माओवादियों पर गोलीबारी जारी रखी ,जिसने माओवादियों के घृणित इरादों को नाकाम कर दिया और उग्रवादी वहां से भाग गए। उन्होंने स्वयं माओवादियों की भारी गोलीबारी का सामना किया और अत्यधिक साहस का प्रदर्शन करते हुए माओवादियों के साथ वीरतापूर्वक मुकाबला किया और अंततः उन्होंने अपना सर्वोच्च का बलिदान कर दिया।

(vi) स्व. कांस्टेबल (क्रू) जी.एस. अबिलाष, सं 112050032 ने अपने गंभीर जख्मों की परवाह किए बगैर माओवादियों को उलझाए रखा तथा उन्हें और अधिक आईईडी विस्फोट करने से रोका। उन्होंने स्वयं माओवादियों की भारी गोलीबारी का सामना किया और अत्यधिक साहस का प्रदर्शन करते हुए उग्रवादियों के पलायन करने तक उनके साथ वीरतापूर्वक मुकाबला किया और अंततः उन्होंने अपना सर्वोच्च बलिदान कर दिया।

की गई बरामदगीः

1.	आईईडी	:	04 (03 कि.ग्रा. प्रत्येक)
2.	छाता	:	04
3.	7.62 एमएम एसएलएफ ईएफसी	:	08
4.	7.62 एमएम एसएलआर	:	02 जिंदा राउंड
5.	एके 47 ईएफसी	:	42
6.	एके 47 गोलाबारूद	:	01 साउंड (मिसफायर)
7.	फ्लेक्सि वायर	:	75 माटर

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अशोक कुमार, सहायक कमांडेंट, सतीश चंद, कांस्टेबल, तपन कुमार राज, हेड कांस्टेबल, स्व. आर सिद्दैया, सहायक उप-निरीक्षक, स्व. रविचंद्रन एम, हेड कांस्टेबल और स्व. जी.एस. अबिलाष, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक26.08.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 152-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री जितेंद्र कुमार सिंह, (मरणोपरांत)
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 26/27 अक्टूबर, 2016 की मध्य रात्रि में लगभग 0120 बजे चपरार सेक्टर में स्थित पाकिस्तानी सीमा चौकियों, जमशेद, लाबेक, बनौट टेकरी और चपरार फार्वर्ड ने सी.सु.ब. की 127वीं बटालियन की सीमा चौकियों के एओआर, अब्दुलियन और ट्यूबवेल-5 में मुख्यतः अग्रणी ड्यूटी प्वाइंट्स (नाका टीले), सीमा चौकियों तथा निकटवर्ती नागरिक क्षेत्रों को भी निशाना बनाते हुए बगैर अचानक सशस्त्र हथियारों से अकारण भारी गोलीबारी एवं मध्यम/भारी मोर्टारों से शेलिंग शुरू कर दी। सी.सु.ब. की 127वीं बटालियन की 'डी' कंपनी के हेड कांस्टेबल जितेंद्र कुमार सिंह, सं. 910061650 ने, जो कि एक अग्रणी ड्यूटी प्वाइंट, अर्थात सीमा चौकी ट्यूबवेल-5 के

नाका टीला सं. 02 पर तैनात थे, अपने सहकर्मियों के साथ मिलकर समग्र स्थिति का जायजा लिया और उपयुक्त जवाब देने के लिए उन्होंने अपने सहकर्मियों को पाकिस्तानी अग्रणी मोर्चों/बंकरों पर गोलीबारी शुरू करने का निर्देश दिया। इसके अलावा, एचसी जितेंद्र कुमार सिंह ने उक्त ड्यूटी प्वाइंट पर लगाई गई एंटी-मटीरियल राइफल (एएमआर) के ऊपर स्वयं पोजीशन ले ली और उन्होंने सभी अग्रणी ड्यूटी प्वाइंट्स पर लगातार गोलीबारी कर रही पाकिस्तानी सीमा चौकी जमशेद के अग्रणी मोर्चों/बंकरों को निशाना बनाते हुए त्वरित जवाबी कार्रवाई की। बेहद नजदीक स्थित सर्वाधिक अग्रणी ड्यूटी प्वाइंट पर तैनात होने के कारण, दुश्मन की प्रचंड गोलीबारी के मुख्य प्रहार का सामना नाका टीला सं. 02 पर तैनात सैनिकों द्वारा किया जा रहा था। तथापि, दुश्मन की भारी गोलीबारी के बीच अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर हेड कांस्टेबल जितेंद्र कुमार सिंह ने प्रभावी तरीके से पाकिस्तान की चौकी जमशेद के अग्रणी मोर्चों/बंकरों को उलझा कर रखा और उन अग्रणी एचएमजी मोर्चों पर तैनात पाकिस्तानी रेंजरों/सैनिकों को घायल कर दिया। एचसी जितेंद्र कुमार सिंह द्वारा सटीक गोलीबारी के परिणामस्वरूप, पाकिस्तान अग्रणी मोर्चों/बंकरों से कुछ देर के लिए गोलीबारी रूक गई। तथापि, भोर के समय पाकिस्तान ने सी.सु.ब. के पोजीशनों पर पुनः भारी गोलीबारी शुरू कर दी। इसी बीच, पाकिस्तानी चौकी जमशेद के अग्रणी मोर्चों/बंकरों ने विशेष रूप से टीला सं. 02 को निशाना बनाना शुरू कर दिया, जहां एचसी जितेंद्र कुमार सिंह एएमआर के साथ तैनात थे। पाकिस्तानी गोलीबारी की तीव्रता से विचलित हुए बगैर, एचसी जितेंद्र कुमार सिंह ने प्रभावी जवाब देने के लिए एक बार पुनः अपने सहकर्मियों को प्रोत्साहित किया और उन्होंने स्वयं एएमआर से गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, पाकिस्तान की ओर से पुनः शुरू हुई इस ताजा गोलीबारी में, जिसकी प्रचंडता और अधिक थी, हेड कांस्टेबल जितेंद्र कुमार सिंह के पेट के ऊपरी हिस्से में गोली लगी, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। घातक रूप से घायल होने और शरीर से खून का अधिक रिसाव होने के बावजूद, हेड कांस्टेबल जितेंद्र कुमार सिंह ने वहां से स्वयं को तत्काल निकाले जाने की मांग किए बगैर दुश्मन को लगातार उपयुक्त जवाब देते रहे। तथापि, चौकी से बीपी बंकर वाहन से तत्काल वहां कैजुअल्टी इवैकुएशन पार्टी को भेजा गया और गंभीर रूप से घायल एचसी जितेंद्र कुमार सिंह को तत्काल वहां से निकाल कर सी.सु.ब. की 192वीं बटालियन के नजदीकी चिकित्सा जांच (एमआई) कक्ष में ले जाया गया, जहां उन्हें प्राथमिक उपचार प्रदान किया गया और फिर उन्हें वहां से 166 सेना अस्पताल (एमएच) सतवारी ले जाया गया। सेना अस्पताल, सतवारी ले जाते समय एचसी जितेंद्र कुमार सिंह ने घायल होने के कारण अपने प्राण त्याग दिए और उन्होंने उसी दिन लगभग 0940 बजे शहादत प्राप्त की। बाद में, जैसा कि आसूचना स्रोतों के माध्यम से पुष्टि हुई, पाकिस्तानी पक्ष की ओर चपरार सेक्टर में दो पाकिस्तानी सैनिकों की मौत सहित उनके अन्य जवान घायल हुए और सामान की भारी क्षति हुई।

इस कार्रवाई में स्व. श्री जितेंद्र कुमार सिंह, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.10.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 153-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. निशी कान्त,
सहायक कमांडेंट

02. खाडे नन्द किशोर मधुकरराव,
कांस्टेबल

03. शाहनवाज वाली भट्ट,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीमा सुरक्षा बल की 140वीं बटालियन छत्तीसगढ़ के एक अत्यधिक संवेदनशील नक्सल प्रभावित क्षेत्र में तैनात है और वहां की भौगोलिक स्थितियों के कारण इस यूनिट के अभियान का अधिकांश क्षेत्र कठिनाई भरा है और इस क्षेत्र में अभियानों का संचालन बेहद कठिन और अपने आप में चुनौतीपूर्ण है। गांव-केशोकोरी (पीओओ) के चारों ओर का आम क्षेत्र उपर्युक्त क्षेत्रों में से एक है, जो अपनी भौगोलिक स्थलाकृति के कारण माओवादियों की मौजूदगी के लिए बेहद बदनाम है।

दिनांक 02 फरवरी, 2016 को, उपलब्ध आसूचना के विस्तृत विश्लेषण के पश्चात केशोकोरी के क्षेत्र में श्री निशी कांत, सहायक कमांडेंट की प्रत्यक्ष कमान में सी.सु.ब. की 140वीं बटालियन के कमांडो प्लाटून तथा छत्तीसगढ़ पुलिस/एसटीएफ द्वारा एक संयुक्त अभियान शुरू किया गया, जिसमें कमांडो प्लाटून यूनिट के 04 अधीनस्थ अधिकारी, 31 अन्य रैंक और एसटीएफ/ छत्तीसगढ़ पुलिस के कार्मिक लगभग 1330 बजे युक्तिपूर्वक उस क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए और गोपीनीयता बरतते हुए लक्षित क्षेत्र की ओर रवाना हो गए।

गांव केशोकोरी के निकट पहुंचने पर, श्री निशि कांत, सहायक कमांडेंट ने जमीनी स्थिति का आकलन किया और उन्होंने क्रमश: दाहिने और बाएं किनारे से गांव की घेराबंदी करने के लिए क्रमशः अभियान दल को दो हिस्सों में अर्थात् सी.सु.ब. कमांडो प्लाटून और छत्तीसगढ़ पुलिस/एसटीएफ में विभाजित किया। गांव की घेराबंदी करते समय श्री निशी कांत, सहायक कमांडेंट अपने साथ कांस्टेबल के. नंद किशोर एम., एचसी रमेश चंद्र बुधानी और कांस्टेबल शाहनवाज वली भट को लेकर बीएसएफ कमांडो प्लाटून का नेतृत्व कर रहे थे। घेराबंदी करते समय, श्री निशि कांत, सहायक कमांडेंट ने दो सशस्त्र अज्ञात लोगों को अपनी दिशा में गांव की ओर बढ़ते हुए देखा और उन्होंने तत्काल कमांडो प्लाटून को पोजीशन लेने का आदेश देते हुए उन व्यक्तियों को नजदीक आने देने के लिए कहा ताकि उनकी पहचान की पुष्टि की जा सके। उन्होंने अपने साथ मौजूद पुलिस प्रतिनिधि से भी छत्तीसगढ़ पुलिस/एसटीएफ से इस बात की पुष्टि करने के लिए भी कहा कि क्या वे उनसे संबंधित कार्मिक हैं या अन्य व्यक्ति हैं। इसी बीच, उपयुक्त सशस्त्र व्यक्तियों ने श्री निशी कांत, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल के. नंद किशोर एम., सं.02216490 को देख लिया, जिन्होंने एक साथ लगभग 80 मीटर की दूरी पर पोजीशन ले रखी थी और उन माओवादियों ने श्री निशी कांत, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल के. नंद किशोर एम. के ऊपर तत्काल गोलीबारी शुरू कर दी। अपने ऊपर गोलीबारी होने पर उपर्युक्त अधिकारियों ने अपनी आत्मरक्षा में उक्त अज्ञात सशस्त्र व्यक्तियों के ऊपर धमाकेदार गोलीबारी की। इसके परिणामस्वरूप, दोनों माओवादी गोली लगने से घायल होकर जमीन पर गिर गए, लेकिन तत्पश्चात उनमें से एक ने उठकर अपनी पोजीशन बदलते हुए लगातार गोलीबारी जारी रखी। कम लाभप्रद पोजीशन में होने के बावजूद, श्री निशी कांत, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल के. नंद किशोर एम., सं.02216490 ने माओवादियों की गोलीबारी का प्रभावी तरीके से जवाब देना जारी रखा।

जब श्री निशी कांत, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल के. नंद किशोर एम. के ऊपर सशस्त्र माओवादी गोलीबारी कर रहे थे, तब कांस्टेबल शाहनवाज वली भट, जिन्होंने अग्रणी सेक्शन से थोड़ा पीछे पोजीशन ले रखी थी, अपनी जान की परवाह न करते हुए फौरन पोजीशन लेते हुए माओवादियों की गोलीबारी की दिशा में आगे बढ़ते हुए श्री निशी कांत, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल के. नंद किशोर एम. के साथ शामिल हो गए, जो माओवादियों की गोलीबारी का लगातार जवाब दे रहे थे। अपना स्थान बदलते समय, कांस्टेबल शाहनवाज वली भट के बाएं पैर में माओवादियों की एक गोली लग गई और खून का अत्यधिक रिसाव होने लगा, लेकिन उन्होंने अपना हौसला गंवाए बगैर माओवादियों पर लगातार जवाबी गोलीबारी करते रहे।

इस अभियान के दौरान अधिकारी ने कांस्टेबल के. नंद किशोर एम. सं.02216490 और कांस्टेबल शाहनवाज वली भट सं. 124204210 के साथ असाधारण बहादुरी, प्रशंसनीय नेतृत्व गुण, उच्च स्तर के पेशेवर नजरिये का प्रदर्शन किया, जिसके परिणामस्वरूप एक दुर्दांत माओवादी मारा गया और एक एसएलआर एवं माओवादियों से संबंधित अन्य सामग्रियां बरामद हुईं तथा अन्य माओवादी अपनी जान बचाने के लिए वहां से भागने पर मजबूर हो गए। सी.सु.ब. की 140वीं बटालियन की सैन्य टुकड़ी द्वारा एक सफल एवं परिणामोन्सुख वाले अभियान का निष्पादन किया गया और अद्वितीय अदम्य वीरतापूर्ण कार्रवाई एवं पेशेवरता का एक उदाहरण स्थापित किया गया जिससे सीमा सुरक्षा बल को सम्मान हासिल हुआ।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री निशी कान्त, सहायक कमांडेंट, खाडेनन्द किशोर मधुकरराव, कांस्टेबल और शाहनवाज वाली भट्ट, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02.02.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 154-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री सुशील कुमार, (मरणोपरांत)
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 21 अक्टूबर, 2016 से 1 नवम्बर, 2016 तक जम्मू अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर सीमा-पार गोलीबारी के दौरान, दिनांक 23/24 अक्टूबर, 2016 की मध्यरात्रि में लगभग 2315 बजे, पाकिस्तानी रेंजरों ने अचानक सी.सु.ब. की 107वीं बटालियन की सीमा चौकियों मंगराल, संगराल और खाटमरियान के दायित्व वाले क्षेत्र में मुख्य रूप से अग्रणी ड्यूटी पाइंट्स (नाका टीले), सीमा चौकियों और निकटवर्ती आम नागरिक वाले क्षेत्रों को भी अपना निशाना बनाते हुए पाकिस्तानी चौकियों पुतवाल मोर्चा, चपरार और चपरार फॉर्वर्ड से भारी स्वचालित/फ्लैट ट्रैजेक्टरी वाले हथियारों और मध्यम/भारी मोर्टारों से अकारण भारी मात्रा में गोलीबारी और शेलिंग शुरू कर दी। 127वीं बटालियन की 'जी' कंपनी के हेड कांस्टेबल सुशील कुमार, सं.920061969 अपनी पार्टी के साथ, जिसमें कांस्टेबल पुरुषोत्तम ध्रुव, सं.021445961 और कांस्टेबल धर्मवीर सिंह, सं.10255752 शामिल थे, नाका कमांडर के रूप में सीमा चौकी संगराल के नाका टीला संख्या 04 पर तैनात थे। पाकिस्तान की ओर से तीव्र एवं निशाने पर की जा रही गोलीबारी के कारण नाका टीला संख्या 04 सहित अनेक फॉर्वर्ड ड्यूटी प्वाइंट्स पाकिस्तानी एचएमजी/बीएमजी की भारी गोलीबारी की जद में आ गए और वे बुरी तरह से घिर गए। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए, नाका टीला संख्या 04 के नाका कमांडर के रूप में हेड कांस्टेबल सुशील कुमार ने समग्र स्थिति का जायजा लिया और सावधानीपूर्वक विश्लेषण के पश्चात उन्होंने यह पाया कि एचएमजी से गोलीबारी कर रहा पाकिस्तानी चौकी पुतवाल मोर्चा का एक अग्रणी मोर्चा/बंकर प्रभावी तरीके से उनके ठिकानों को घेर रहा था। हेड कांस्टेबल सुशील कुमार ने अपनी पार्टी को अपने-अपने हथियारों के द्वारा दुश्मन की अग्रणी पोजीशन पर तैनात लोगों को उलझाने का निर्देश दिया और उन्होंने स्वयं नाका प्वाइंट पर लगाए गए ऑटोमैटिक ग्रेनेड लॉन्चर (एजीएल) को संभाल लिया और उक्त अग्रणी मोर्चा/बंकर को निशाना बनाना शुरू कर दिया। हेड कांस्टेबल सुशील कुमार द्वारा दिए जा रहे सटीक जबाव के परिणामस्वरूप, पाकिस्तानी चौकी पुतवाल मोर्चा का उक्त बंकर बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया और उस बंकर के भीतर मौजूद पाकिस्तानी रेंजर/सेना कर्मी भी गंभीर रूप से घायल हो गए। तत्काल मिली इस सफलता के पश्चात रूके बगैर, हेड कांस्टेबल सुशील कुमार ने भली-भांति इस बात को जानते हुए कि इस भीषण गोलीबारी में वे दुश्मन की गोलीबारी का स्पष्ट लक्ष्य बन गए हैं और उनका जीवन खतरे में है, अपने अटल जोश के साथ दुश्मन के अन्य अग्रणी ठिकानों को लगातार उलझाए रखा। नाका टीला सं. 04 से हुई अचानक एवं प्रभावी जवाबी गोलीबारी के परिणामस्वरूप दुश्मन के लगभग सभी अग्रणी बंकरों को प्रभावी रूप से उलझा लिया गया और उन्होंने तत्काल गोलीबारी रोक दी। तथापि, एक संक्षिप अंतराल के पश्चात, पाकिस्तानी सेना कर्मियों की सहायता से पाकिस्तानी रेंजरों ने दोबारा अपना मोर्चा संभाल लिया और उन्होंने विशिष्ट रूप से नाका टीला सं. 04 को अपना निशाना बनाते हुए पुनः भारी गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, अपनी निजी सुरक्षा एवं जान की परवाह किए बगैर हेड कांस्टेबल सुशील कुमार ने दुश्मन के ठिकानों को उलझाए रखा और उन्होंने ठोस जवाब देने के लिए अपने नियंत्रणाधीन सैनिकों को भी प्रोत्साहित किया।

दोनों ओर से निरंतर हो रही भारी गोलीबारी के दौरान, दिनांक 24 अक्टूबर, 2016 को लगभग 0025 बजे, टीला सं. 04 के निकट 82 एम.एम. मोर्टार का एक सेल आकर गिरा और लूप होल के माध्यम से उसके छर्रे हेड कांस्टेबल सुशील कुमार के शरीर के ऊपरी हिस्से अर्थात् छाती/गर्दन पर लगे, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गये। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, हेड कांस्टेबल सुशील कुमार ने वहां से स्वयं को तत्काल निकाले जाने से मना कर दिया और उन्होंने दुश्मन के उन ठिकानों पर, जो अग्रणी ड्यूटी प्वाइंट्स/नाका टीलों पर प्रभावी गोलीबारी कर रहे थे, अपनी ओर से लगातार गोलीबारी जारी रखी। इस प्रक्रिया में, उन्होंने एक बार पुनः घातक प्रहार किया और पाकिस्तानी चौकी, पुतवाल मोर्चा के एक अन्य अग्रणी मोर्चा/बंकर को क्षतिग्रस्त कर दिया। इसी बीच, चौकी से बीपी बंकर वाहन में तत्काल कैजुअल्टी इवैकुएशन पार्टी को बुलाया गया और गंभीर रूप से घायल एचसी सुशील कुमार को तत्काल सी.सु.ब. की 192वीं बटालियन के नजदीकी चिकित्सा जांच (एमआई) कक्ष में ले जाया गया, जहां उन्हें प्राथमिक उपचार प्रदान किया गया और फिर उन्हें वहां से निकाल कर शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल, जम्मू ले जाया गया। तथापि, घायल होने के कारण रास्ते में ही उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए और दुर्भाग्यवश उन्हें लगभग 240230 बजे चिकित्सा अधिकारियों ने मृत लाया हुआ घोषित कर दिया। दुश्मन की भारी गोलीबारी के समक्ष एचसी सुशील कुमार द्वारा प्रदर्शित वीरतापूर्ण एवं साहसी कार्रवाई के कारण, पाकिस्तानी चौकी पुतवाल मोर्चा के दो अग्रणी मोर्चों/बंकरों को प्रभावी रूप से क्षतिग्रस्त किया जा सका और उसके साथ ही उनके अन्य कार्मिकों एवं सामानों को भी नुकसान पहुंचाया गया।

सी.सु.ब. की 127वीं बटालियन के हेड कांस्टेबल सुशील कुमार, बल सं.920061969 ने दुश्मन की भीषण गोलीबारी के बीच न केवल अदम्य साहस और दुश्मन को उपयुक्त एवं ठोस जवाब देने में आसाधारण युद्ध क्षमता का प्रदर्शन किया, बल्कि उन्होंने अपने

नियंत्रणाधीन सहकर्मियों को प्रभावी तरीके से जवाब देने के लिए भी प्रोत्साहित किया। तथापि, इस प्रक्रिया में, अपनी मातृभूमि की रक्षा करते समय उन्होंने सर्वोच्च बलिदान किया।

इस कार्रवाई में स्व. श्री सुशील कुमार, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.10.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 155-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री एन. बिनो,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 23/24 अक्टूबर, 2016 की मध्य रात्रि में पाकिस्तान ने सी.सु.ब. की 192वीं बटालियन तथा जम्मू फ्रंटियर की अन्य यूनिटों की जिम्मेवारी वाले क्षेत्रों में अकारण गोलीबारी और मोर शेलिंग शुरू कर दी और सतत् गोलीबारी/शेलिंग 01नवम्बर, 2016 तक लगातार जारी रही। इस अवधि के दौरान, अर्थात् दिनांक 27 अक्टूबर, 2016 को सं. 0216 41042कांस्टेबल एन. बिनो, कांस्टेबल जे.एस. अमित और कांस्टेबल रजत कुमार बेहरा एक सर्वाधिक असुरक्षित अग्रणी ड्यूटी प्वाइंट, अर्थात् सी.सु.ब. की 192वीं बटालियन की सीमा चौकी एस एच वे के ओपी सं. 02/नाका टीला सं. 03पर 1200 बजे से 1800 बजे तक ओपी ड्यूटी के लिए तैनात थे। यहां यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि सीमा चौकी एस एच वे के उक्त ओपी/नाका टीले को अग्रणी पोजीशनों में दुश्मन की गतिविधियों पर सीधी एवं नजदीकी नजर रखने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सीमा के काफी नजदीक बेहद सावधानीपूर्वक स्थापित किया गया है। उक्त ओपी/नाका टीला पाकिस्तानी अग्रणी बंध पर स्थित मोर्चों/बंकरों से 30 मीटर की दूरी पर स्थित है। इस प्रकार, नजर से नजर मिलाने वाली स्थिति में उक्त ओपी/नाका प्वाइंट पर बेहद नजदीक तैनात सैन्य टुकड़ी दुश्मन की सीधी गोलीबारी की स्थिति में हमेशा असुरक्षित रहती है। अतः वहां की समग्र असुरक्षा को नजर में रखते हुए और उक्त ड्यूटी प्वाइंट की समग्र गोलीबारी की क्षमता में वृद्धि करने के उद्देश्य से वहां एक 7.62 एमएम की एमएमजी भी तैनात की गई है। पाकिस्तानी रेंजरों द्वारा उक्त 7.62 एमएम वाली एमएमजी को भी खतरा माना जाता था क्योंकि वह पाकिस्तानी बंध पर स्थित उसके अधिकांश अग्रणी मोर्चों/बंकरों को प्रभावी तरीके से उलझा रहा था और पाकिस्तानी चौकी न्यू हट भी उसके निशाने पर थी।

जब सी.सु.ब. की192 वीं बटालियन के संपूर्ण क्षेत्र में लगातार गोलीबारी एवं मोर शेलिंग हो रही थी, तब लगभग 1315 बजे कांस्टेबल एन. बिनो और उनके दल ने पाकिस्तानी अग्रणी बंध के पिछले हिस्से में छिपकर आगे बढ़ रहे दो पाकिस्तानी रेंजरों को देखा, जिसमें से एक पाकिस्तानी रेंजर ने अपने कंधे पर रॉकेट लान्चर रखा हुआ था, जिनका स्पष्ट इरादा उनके ड्यूटी प्वाइंट अर्थात् ओपी सं. 02/नाका सं. 03 को नष्ट करना और वहां तैनात सी.सु.ब. के सैन्य दल को हताहत करना था। इसी बीच, दोनों रेंजर तेजी से ऊपर चढ़ते हुए पाकिस्तानी अग्रणी बंध पर आ गए और उनमें से एक के कंधे पर अभी भी रॉकेट लान्चर रखा हुआ था और उसका दूसरा सहकर्मी उसे सहायता/निर्देश दे रहा था। पाकिस्तानी रेंजरों को देखकर, कांस्टेबल एन. बिनो ने उनके घृणित इरादों को भांप लिया और उन्होंने रॉकेट लान्चर की सीधी एवं आसन्न गोलीबारी से अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर यह जानते हुए भी कि उनकी अपनी जान पर भारी खतरा मंडरा रहा है, एक साहसिक कदम उठाने का निर्णय लिया और तुरंत रॉकेट लान्चर की गोलीबारी की सीधी दिशा में 7.62 एमएम की एमएमजी से लंबी दूरी वाली 14 राउंड धमाकेदार गोलीबारी की और इसी प्रक्रिया में उन्होंने अन्य ओपी प्वाइंट को भी सतर्क कर दिया। उनकी इस सटीक गोलीबारी, युद्ध क्षमता और साहसिक कार्रवाई के फलस्वरूप, एक पाकिस्तानी रेंजर को गोली लगी और वह उसी स्थान पर गिर गया, जबकि दूसरा रेंजर भी गोली लगने से घायल हो गया। दोनों पाकिस्तानी रेंजर अग्रणी बंध और घनी झाड़ियों की आड़ का लाभ उठाते हुए तुरंत पीछे की ओर भाग गए। कांस्टेबल एन. बिनो द्वारा प्रभावी एवं सटीक गोलीबारी के कारण, अग्रणी बंध पर स्थित एक अस्थाई पाकिस्तानी ओपी प्वाइंट में भी आग लग गई, जो बाद में जल गया। बाद में, सी.सु.ब. के साथ-साथ अन्य सहयोगी

एजेंसियों की रिपोर्टों के आधार पर, इस बात की पुष्टि हुई कि इस सटीक गोलीबारी के कारण मंजूर, निवासी गांव दालूवाली निकट सियालकोट नामक 12 विंग सीआर का एक पाकिस्तानी रेंजर मारा गया और दूसरा रेंजर (जिसके नाम का पता नहीं चला) गंभीर रूप से घायल हो गया। कांस्टेबल एन. बिनो की शौर्यपूर्ण एवं साहसी कार्रवाई से न केवल अपने सहकर्मियों की जान बचाई जा सकी, बल्कि एहतियाती कार्रवाई के द्वारा दुश्मन के घृणित इरादों को भी नाकाम किया जा सका।

दुश्मन की ओर से रॉकेट लान्चर की आसन्न गोलीबारी के बीच जिसमें मामूली गलती भी उनके जीवन को खतरे में डाल सकती थी, परंतु उसके परिणामों की परवाह न करते हुए पूर्ण युद्ध क्षमता और फौलादी इरादों से उन्होंने दुश्मनों को भारी आघात पहुंचाते हुए उन्हें सीधी चुनौती दी। सी.सु.ब. की 192वीं बटालियन के 'एसपी' कंपनी के कांस्टेबल एन. बिनो, रेजिमेंट सं. 021641042 ने एक बहादुर सीमा प्रहरी होने की अपनी दिलेरी को साबित किया।

इस कार्रवाई में श्री एन. बिनो, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.10.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 156-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री बलेन हरिजन, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 16.06.2016 को 203 कोबरा को पुलिस स्टेशन-पीरटांड़, जिला-गिरिडीह, झारखंड के अन्तर्गत गांव- घटियारी, जमुआ और हेसालो के आम क्षेत्र में माओवादियों के एक समूह की मौजूदगी के बारे में स्वयं अपने स्रोतों से एक खुफिया जानकारी प्राप्त हुई। उस जानकारी के आधार पर कमांडेंट, 203 द्वारा 203 कोबरा के तीन दलों तथा राज्य पुलिस के घटक को शामिल करते हुए एक अभियान की योजना बनाई गई। उस क्षेत्र को लक्ष्य बनाने के लिए ये दल लगभग 2130 बजे पुलिस स्टेशन पीरटांड़ से रवाना हुए और वे 2330 बजे तक कंपनी बेस मधुबन पहुंच गए। वहां से ये दल तीन भिन्न दिशाओं से लक्षित क्षेत्र में इकट्ठा होने के लिए दिनांक 17.06.2016 को 0245 बजे अलग-अलग हिस्सों में रवाना हो गए। एक दल ने गांव चिरकी के निकट बस को छोड़ दिया जबकि दो अन्य दलों ने गांव पालगैंग के निकट बस को छोड़ दिया। तत्पश्चात तीनों दल पृथक मार्गों एवं दिशाओं से लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ गए।

जब एक दल अर्थात् दल संख्या 1 सावधानीपूर्वक क्षेत्र की तलाशी लेते हुए अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहा था, तभी दल के कार्मिकों ने वहां गीली भूमि पर पांव के कुछ निशान देखे। उस समय, वह दल लक्ष्य से बमुश्किल 300 मीटर पीछे था। अतिरिक्त सावधानी बरतते हुए वह दल लक्ष्य के और करीब पहुंचने लगा, लेकिन तभी अचानक माओवादियों ने उनके ऊपर भारी एवं अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। दल के कार्मिकों ने तत्काल पोजीशन ले ली और उन्होंने माओवादियों पर भारी गोलीबारी करते हुए उसका जवाब दिया। माओवादी आड़ के पीछे सुरक्षित स्थिति में थे और उनकी योजना सुरक्षा बलों को भारी संख्या में हताहत करने की थी। उनकी ओर से गोलीबारी तथा हथगोले फेंकने की मात्रा माओवादियों के इरादे को स्पष्ट कर रही थी। माओवादियों की युक्ति का मुकाबला करने तथा रणनीतिक रूप से उनके द्वारा लिए जा रहे ऊंचे स्थान के लाभ को व्यर्थ करने के लिए, यह दल छोटे हिस्सों में विभाजित हो गया और वे माओवादियों के स्थान के किनारे में फैल गए। वांछित संघटन तैयार करने के बाद दल के सदस्यों ने माओवादियों के ऊपर भारी गोलीबारी की। भारी गोलीबारी सुप्रशिक्षित दल के पराक्रम को साबित कर रही थी, जिसे देखकर माओवादी जंगल में भागने के प्रयास में पीछे हटने लगे।

इस स्थिति में, कांस्टेबल बलेन हरिजन, जो सक्रिय रूप से माओवादियों पर गोलीबारी करने का निर्देश दे रहे थे, बहादुरीपूर्वक आड़ से निकलकर बाहर आ गए और उन्होंने अपनी निजी सुरक्षा के बारे में एक पल भी सोचे बगैर भाग रहे माओवादियों के ऊपर गोलीबारी करते हुए उनका पीछा करना शुरू कर दिया। दल के कार्मिकों ने कांस्टेबल बलेन हरिजन द्वारा चलाई गई गोलियों के लगने से एक माओवादी को नीचे गिरते देखा। जल्द ही कांस्टेबल बलेन हरिजन ने अन्य माओवादियों द्वारा कवर फायर की सहायता से

माओवादियों के एक समूह को वहां से भागने की कोशिश करते हुए देखा। उन्होंने उन माओवादियों पर गोलीबारी करने का निर्णय लिया और वे अपनी यूबीजीएल को भरने के लिए घुटनों के बल बैठ गए। जब कांस्टेबल बलेन हरिजन अपनी यूबीजीएल को भर रहे थे, तभी माओवादियों द्वारा चलाई गई एक गोली ने उनके नाक के बांई ओर उनके चेहरे को भेद दिया ,जिससे वे बुरी तरह से घायल हो गए। असहनीय पीड़ा और रक्त का तेज रिसाव भी उन्हें लेटकर पोजीशन लेने और माओवादियों पर गोलीबारी करने से रोक नहीं पाया। घायल होने और आगे बढ़ने में कठिनाई महसूस करने के बावजूद, वे अपने दल को आक्रमण जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। दल के सदस्यों द्वारा निरंतर आक्रमण के कारण उस स्थान से भागने के पूर्व माओवादियों को भारी क्षति हुई। खून के भारी मात्रा में रिसाव के कारण बहादुर कांस्टेबल बलेन हरिजन, जो उस समय तक गंभीर जख्मों के बावजूद जमीन पर डटे हुए थे, अचेत हो गए। उसके बाद उन्हें वहां से निकालकर प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, पीरटांड़ ले जाया गया, जहां उन्हें मृत लाया हुआ घोषित कर दिया गया। बहादुर कांस्टेबल बलेन हरिजन ने कर्तव्य की राह पर अपना जीवन बलिदान कर दिया और शहादत प्राप्त की।

संपूर्ण अभियान के दौरान कांस्टेबल बलेन हरिजन ने असाधारण साहस एवं बहादुरी का प्रदर्शन किया। घायल होने के बावजूद बहादुर सैनिक की ओर से लगातार की गई गोलीबारी ने माओवादियों से बहादुरीपूर्वक लड़ने में उनके दल की ताकत और आत्मविश्वास में इजाफा किया। उस क्षेत्र की बाद में तलाशी में एक एसएलआर, 02 मैगजीन, 130 जिंदा राउंड और नकदी के साथ उत्तरी छोटा नागपुर के जोनल कमांडर, बेहराम हंसदा उर्फ गाजो उर्फ पंकज मांझी नामक एक माओवादी का शव बरामद किया गया।

इस मुठभेड़ में स्व. श्री बलेन हरिजन ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.06.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 157-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. पवन कुमार सिंह,
सहायक कमांडेंट

02. सोमदेव आर्य,
उप निरीक्षक

03. हरि सिंह,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

जिला-बीजापुर के बासागुडा पुलिस स्टेशन के अन्तर्गत डुअल लेंड्रा और इतवार गांव के आम क्षेत्र में माओवादियों के प्रशिक्षण शिविर की मौजूदगी के संबंध में एक विश्वसनीय आसूचना प्राप्त होने पर, लक्षित क्षेत्र में छत्तीसगढ़ पुलिस के साथ श्री हनुमान प्रसाद, डीसी और श्री पवन कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट की कमान में 204 कोबरा बटालियन द्वारा एक तलाशी एवं नष्ट करने संबंधी अभियान (एसएडीओ) की योजना बनाकर उसकी शुरूआत की गई। चूंकि शिविर के वास्तविक स्थान का पता नहीं लग सका, इसलिए 03 दिन और 02 रात के एक विस्तृत अभियान की योजना बनाई गई, जिसे माओवादी प्रशिक्षण शिविर की तलाश करके माओवादियों को पकड़ने के लिए आगे और बढ़ाकर 05 दिन और 04 रात के लिए कर दिया गया। अभियान वाला क्षेत्र कथित तौर पर माओवादियों का गढ़ समझा जाता है और वहां इस प्रकार के लंबे एवं थकाऊ अभियान की योजना/निष्पादन अपने आप में एक वास्तविक उपलब्धि थी।

इस अवसर को हाथ में लेते हुए, संयुक्त अभियान दल दिनांक 22.11.2015 को अपने बेस कैंप से रवाना हो गए। अभियान की योजना का अनुपालन करते हुए, सैन्य टुकड़ी ने माओवादी प्रशिक्षण शिविर के स्थान का पता लगाने के लिए युक्तिपूर्वक लक्षित क्षेत्र पर आधिपत्य कायम करते हुए वहां की तलाशी ली और वे दिनांक 22.11.2015, 23.11.2015 और 24.11.2015 को लक्षित क्षेत्र के जंगलों

में ठहरे। सैन्य टुकड़ी तीन दिनों तक लक्षित स्थान की तलाश करने का लगातार प्रयास कर रही थी ,लेकिन उन्हें वहां कुछ भी उल्लेखनीय नहीं मिला। यह सैन्य टुकड़ी और उनके कमांडरों का उत्साह और जोश था, जिससे उन्होंने इस अभियान को जारी रखने का निर्णय लिया।

माओवादियों के गढ़ में लम्बे समय तक ठहरना हमेशा ही जोखिमपूर्ण रहा है। उपर्युक्त के कारण इसमें निहित खतरे से बेपरवाह रहते हुए सैन्य टुकड़ी ने लगातार अपना लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास किया। इस जोखिम ने तब अपना आकार ग्रहण किया, जब दिनांक 25.11.2015 को लगभग 1730 बजे जब सैन्य टुकड़ी गांव-कुरचोली के जंगल क्षेत्र में युक्तिपूर्वक धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी ,तब वह माओवादियों के घात में फंस गई। सुरक्षा बलों को अपने घात क्षेत्र में पाकर माओवादियों ने राज्य पुलिस के दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसका आत्मरक्षा में पुलिस दल द्वारा ठोस जवाब दिया गया। इसी बीच, दल के कमांडर द्वारा 204 कोबरा की सैन्य टुकड़ी से अतिरिक्त बल की मांग की गई। उपर्युक्त निर्देश को सुनने पर, कोबरा कमांडो हरकत में आ गए और वे माओवादियों को घेरने के लिए सभी दिशाओं से परस्पर सहयोग करते हुए गोलीबारी स्थल की ओर युक्तिपूर्वक आगे बढ़ने लगे।

माओवादियों की भारी गोलीबारी और उनकी अतिसुरक्षित युक्तिपूर्ण ठिकानों से हतोत्साहित हुए बगैर, श्री पवन कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट ने असाधारण साहस एवं युक्तिपूर्ण कौशल का प्रदर्शन करते हुए माओवादी ठिकानों पर जवाबी आक्रामक हमला शुरू कर दिया। गोलियों की बौछारों के बीच, जहां कोई भी कदम घातक हो सकता था, श्री पवन कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट, एसआई (जीडी) सोमदेव आर्य और कांस्टेबल (जीडी) हरि सिंह ने बहादुरीपूर्वक माओवादियों के ऊपर हमला किया और उनके ठिकानों की ओर आगे बढ़े। गोली चलाते हुए आगे बढ़ने की विवेकपूर्ण युक्ति अपनाते हुए और अदम्य बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए, वे अपनी-अपनी जान पर गंभीर खतरा होने के बावजूद जमीन पर डटे रहे और उन्होंने माओवादियों का खात्मा करने के लिए प्रभावी गोलीबारी की। गोलीबारी लगभग एक घंटे तक जारी रही। इस असाधारण साहस और मजबूत जवाबी आक्रमण से भौंचक्का होते हुए, माओवादी घने जंगल एवं वहां की स्थलाकृति का लाभ उठाते हुए उस स्थान से भाग खड़े हुए। मुठभेड़ के बाद उस स्थान में ली गई तलाशी के दौरान, सैन्य टुकड़ी ने वहां से हथियार/गोलाबारूद, हथगोले और अन्य आपत्तिजनक सामग्रियों के साथ वर्दी में एक दुर्दान्त माओवादी का शव बरामद किया, बाद में जिसकी पहचान कुन्जम सुकाऊ, पुत्र कुन्जम सांडी के रूप में की गई।

अभियान में लगातार चौथे दिन की थकान के बावजूद, सैन्य टुकड़ी ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए तथा एक-दूसरे की रक्षा करने के लिए गोलीबारी की राह में अपने जीवन को जोखिम में डालते हुए बहादुरीपूर्वक लड़ाई लड़ी।

की गई बरामदगीः-

1.	12 बोर राइफल	:	01
2.	देशी राइफल	:	01
3.	.303 गोलाबारूद	:	07 राउंड
4.	हैंड ग्रेनेड नं. 36	:	01
5.	डेटोनेटर	:	02
6.	टिफिन बम	:	01
7.	कोरटेक्स वायर	:	200 मीटर
8.	इलेक्ट्रिक वायर	:	30 मीटर
9.	पिटठू	:	04

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री पवन कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट, सोमदेव आर्य, उप निरीक्षक और हरि सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25.11.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 158-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. नीरज कुमार,
सहायक कमांडेंट

02. किशोर लाल,
निरीक्षक

03. पवन कुमार,
कांस्टेबल

04. नैनी गोपाल मैती,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री नीरज कुमार, सहायक कमांडेंट, 168वीं बटालियन, के.रि.पु.ब. द्वारा पुलिस स्टेशन-बासागुडा, जिला-बीजापुर, छत्तीसगढ़ के अन्तर्गत माओवादियों के मजबूत गढ़ गांव-बासागुडा, चिन्नागेलूर, पेड्डागेलूर, गुंडम, कोटेगुडा, तारेम और पेगडापल्ली के जंगलों में गहन तलाशी अभियान चलाने की एक योजना बनाई गई। तदनुसार, राज्य पुलिस कार्मिकों के साथ ए/168 और विशेष कार्रवाई दल में से प्रत्येक की एक-एक प्लाटून ने दिनांक 18.08.2015 की भोर में गोपनीय तरीके से जंगल में प्रवेश किया और उन्होंने उस क्षेत्र की तलाशी शुरू की। चिन्नागेलूर, पेड्डागेलूर और गुंडम नामक गांवों में गहन तलाशी अभियान के संचालन के पश्चात, सैन्य टुकड़ी ने गांव कोटेगुडा के निकट जंगल में एक जगह आराम (एलयूपी) किया। अगले दिन, सैन्य टुकड़ी ने गांव पुशवाका और पेगडापल्ली में तलाशी का कार्य किया, लेकिन जब उन्हें माओवादियों का कोई पता नहीं चला तो उन्होंने रणनीतिक तौर पर उस क्षेत्र से अलग रास्ते से वापस लौटने की योजना बनाई।

लगभग 1730 बजे, वापस लौटते समय, जब सैन्य टुकड़ी एक पहाड़ी के निकट पहुंच रही थी, तभी वहां पहाड़ी की चोटी पर घात लगाकर छिपे हुए माओवादियों ने उनके ऊपर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। निरीक्षक किशोर लाल की कमान में आगे चल रहे सैनिकों, मुख्य रूप से कांस्टेबल पवन कुमार और कांस्टेबल नैनी गोपाल मैती ने तत्काल जवाबी कार्रवाई की और उन्होंने उपलब्ध आड़ के पीछे पोजीशन ले ली। माओवादियों की गोलीबारी का जवाब देते समय निरीक्षक किशोर लाल ने दुश्मन के स्थान और उनकी संख्या का आकलन किया और उसके बारे में अपने कमांडर श्री नीरज कुमार, सहायक कमांडेंट को सूचित किया। श्री नीरज कुमार ने रणनीतिक जवाबी हमला शुरू करने के लिए अपनी टुकड़ी को दो हिस्सों में विभाजित किया और उन्होंने दो दिशाओं से सटीक हमला शुरू करने के लिए एसआई वैभव दीक्षित को अपने दल के साथ बांई ओर से पहाड़ी की ओर बढ़ने का आदेश दिया। तत्पश्चात वे स्वयं अपनी टुकड़ी की सहायता के लिए गोलियों की बौछार के बीच आगे बढ़े। आगे पहुंचने पर, उन्होंने स्थिति का आकलन किया और माओवादियों की ओर से की जा रही गोलीबारी की मात्रा से उन्हें यह लग गया कि उनकी संख्या एक प्लाटून से अधिक नहीं थी। दुश्मन की सीमित संख्या पर विचार करते हुए, उन्होंने उनसे आमने-सामने लड़ने का निर्णय लिया और वे निरीक्षक किशोरी लाल, कांस्टेबल पवन कुमार और कांस्टेबल नैनी गोपाल मैती के साथ कवरिंग एवं सहायक गोलीबारी के भीतर रेंगते हुए आगे बढ़े। सैन्य टुकड़ी ने भी अपने कमांडरों का अनुसरण किया और दल गोली चलाते हुए आगे बढ़ने की युक्ति का प्रयोग करते हुए आगे बढ़ा।

बमुश्किल सैन्य टुकड़ी 20 मीटर आगे बढ़ी थी, तभी उनके ऊपर की जा रही गोलीबारी की मात्रा अचानक बढ़ गई और उसमें अधिक संख्या में स्वचालित हथियारों का प्रयोग किया जा रहा था। श्री नीरज कुमार को यह समझने में देर नहीं लगी कि यह उनके अनुमान से काफी बड़ी घात थी। यह माओवादियों द्वारा बिछाया गया एक जाल प्रतीत हो रहा था, जिसमें उन्होंने पहले सीमित गोलीबारी करने और बाद में सैन्य टुकड़ी के नजदीक आने पर उनके ऊपर भीषण आक्रमण करने की रणनीति बनाई थी। इस प्रकार की आकस्मिक स्थिति और औचक हमले के लिए भली-भांति तैयार रहते हुए, श्री नीरज कुमार ने एसआई वैभव दीक्षित को तेज गति से आगे बढ़कर माओवादियों पर जवाबी हमला करने का आदेश दिया। जब एसआई वैभव दीक्षित ने अपने कमांडर तथा अन्य सैनिकों की जान को गंभीर जोखिम में पाया, तब उन्होंने कांस्टेबल शोभा राम बर्मन और कांस्टेबल धीरज सिंह को अपने साथ लिया और वे तीनों लोग चारों ओर हो रही गोलियों की बौछार की परवाह किए बगैर माओवादी ठिकानों की ओर पहाड़ी के ऊपर दौड़कर चढ़ते हुए आगे बढ़ने लगे। माओवादी

ठिकानों के नजदीक पहुंचने पर, उन्होंने सुरक्षित ठिकानों में मौजूद माओवादियों के ऊपर गोले दागने के साथ-साथ भारी गोलीबारी शुरू कर दी। अपने कार्य को पूरा करने और माओवादियों को वहां से उखाड़ फेंकने के लिए, उन्होंने अपने सामने न्यूनतम आड़ में खड़े-खड़े गोला दागते हुए अपनी जान को भी जोखिम में डाल दिया। बहादुर सैनिकों की चाल तथा जवाबी हमले से भौंचक्का होते हुए, माओवादियों को अनिच्छापूर्वक लड़ाई का दूसरा मोर्चा खोलना पड़ा। जैसे ही माओवादियों की ओर से गोलीबारी की क्षमता विभाजित हुई, श्री नीरज कुमार ने कुशलतापूर्वक अपने दल को माओवादी ठिकानों की ओर भेज दिया। सैन्य टुकड़ी अंतिम प्रहार करने के लिए रेंगते हुए आगे बढ़ी, लेकिन उन्होंने यह पाया कि माओवादी अस्थाई रूप से निर्मित सुरक्षित मोर्चों के पीछे डटे हुए हैं। दुश्मनों की ओर उनकी बंदूकों की गर्जना की स्थिति में आगे एक भी कदम बढ़ाना सैन्य टुकड़ी के लिए घातक हो सकता था।

इस गतिरोध से बाहर निकलने के लिए, श्री नीरज कुमार ने सामने वाले पहले मोर्चे पर किनारे से हमला शुरू करने के लिए सहयोगियों वाले दो समूहों का गठन किया। श्री नीरज कुमार और कांस्टेबल पवन कुमार वाला पहला समूह रेंगते हुए दाहिनी ओर गया और निरीक्षक किशोर लाल तथा कांस्टेबल नैनी गोपाल मैती वाला दूसरा समूह रेंगते हुए बांई ओर गया और उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बगैर अत्यधिक साहस एवं अनुकरणीय बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए हमला करने के लिए उपयुक्त पोजीशन प्राप्त करने हेतु भारी गोलीबारी के बीच आगे बढ़ना जारी रखा। जब उन्होंने वह पोजीशन हासिल कर ली, तब वे मोर्चा पर भारी गोलीबारी करने लगे। जल्द ही माओवादियों को यह अहसास हो गया कि वे तीन दिशाओं से घेरे जा चुके हैं और उन्होंने सैन्य टुकड़ी को भयभीत करने के लिए ग्रेनेड फेंकने के साथ-साथ अपने शस्त्र भंडार में मौजूद प्रत्येक शस्त्र का प्रयोग किया, लेकिन जल्द ही उनके पांव उखड़ गए और उन्होंने एक-एक करके वहां से भागना शुरू कर दिया। जब माओवादियों की ओर से गोलीबारी की मात्रा कम हो गई और सैन्य टुकड़ियों को आगे बढ़ने के लिए कुछ स्थान मिला, तब तीनों समूह गोलीबारी और ग्रेनेड के धमाकों की परवाह किए बगैर अविचलित होकर आगे बढ़े और उन्होंने अनुकरणीय साहस एवं बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए माओवादियों के ऊपर अंतिम धावा बोल दिया। दोनों ओर से होने वाली इस नजदीकी गोलीबारी में, उन्होंने दो माओवादियों को मार गिराया जबकि अन्य माओवादी घनी झाड़ियों तथा ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति का लाभ उठाते हुए वहां से भागने लगे। सैन्य टुकड़ियों ने माओवादियों का पीछा किया, लेकिन वे भागने में सफल रहे। मुठभेड़ के पश्चात उस क्षेत्र की तलाशी ली गई और वहां से एक .303 राइफल, 33 राउंड गोलाबारूद, 3 पाइप बम, 3 बंडल तार, 26 स्पाइक, एक तीर-धनुष, गोलाबारूद की एक थैली, चार माओवादी बैनर एवं अन्य आपत्तिजनक सामग्रियों के साथ दो माओवादियों (बाद में जिनकी पहचान हेमला नंदा और सोधी विचयम के रूप में की गई) के शव बरामद किए गए।

श्री नीरज कुमार, सहायक कमांडेंट (आईआरएलए-8875), निरीक्षक किशोरी लाल, सं. 971320263 और कांस्टेबल पवन कुमार, सं. 041662782 एवं कांस्टेबल नैनी गोपाल मैती, सं. 065102605 नामक उनके सहयोगियों ने योजना बनाने के चरण से लेकर उसके सटीक निष्पादन तक इस अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जवाबी हमले के दौरान उन्होंने सामने रहकर मुकाबला किया और गैर-लाभप्रद स्थिति में होने के बावजूद उन्होंने अपना धैर्य नहीं खोया। इस भीषण गोलीबारी में उनकी बहादुरी के परिणामस्वरूप दो माओवादियों का सफाया किया जा सका।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री नीरज कुमार, सहायक कमांडेंट, किशोर लाल, निरीक्षक, पवन कुमार, कांस्टेबल, और नैनी गोपाल मैती, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.08.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 159-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. राजीव कुमार चौधरी,
कमांडेंट

02. नरेश कुमार,
सहायक कमांडेंट

03. पी.के. पांडा,
कांस्टेबल

04. एस. प्रकाश,
कांस्टेबल

05. विश्वभान सिंह,
कांस्टेबल

06. बजेश बी.,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

कश्मीर घाटी में राष्ट्रीय महत्व के दिनों को मनाना सुरक्षा बलों के लिए नई चुनौतियां पैदा करता है क्योंकि राष्ट्र-विरोधी ताकतें समारोहों में गड़बड़ी करने के भरसक प्रयास करती हैं। स्वतंत्रता दिवस, 2016 का समारोह, सुरक्षा बलों द्वारा एक "हिजबुल मुजाहिद्दीन" कमांडर के मारे जाने के परिणामस्वरूप घाटी में अत्यधिक अस्थिर और संवेदनशील कानून एवं व्यवस्था की स्थिति के कारण और अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया था। गड़बड़ियों को रोकने और उग्रवादियों के घृणित इरादों को विफल करने के लिए, श्रीनगर शहर को कड़ी निगरानी में रखा गया था।

दिनांक 15.08.2016 को, लगभग 0800 बजे, नौहट्टा चौक, श्रीनगर के नजदीक एक भवन में छिपे उग्रवादियों ने नौहट्टा चौक, श्रीनगर में तैनात 28 बटालियन के सैन्य दलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और एक भयंकर मुठभेड़ शुरू हो गई। मुठभेड़ की सूचना ऑपरेशनल रेंज और यूनिटों के सभी संबधित अधिकारियों के पास पहुंच गई जिन्होंने तुरंत प्रतिक्रिया की और वे अपने संबंधित सैन्य दलों के साथ घटना स्थल की ओर दौड़ पड़े। श्री राजीव कुमार चौधरी, कमांडेंट 28 बटालियन, श्री प्रमोद कुमार कमांडेंट-49 बटालियन और श्री राजेश कुमार 28 बटालियन के 2-आई/सी ने अन्य ऑपरेशनल कमांडरों के साथ स्थिति का विश्लेषण किया और एक जवाबी योजना के साथ उस स्थान की ओर चल पड़े, जहां उग्रवादी छिपे हुए थे। उग्रवादियों की ओर आगे बढ़ते समय, 2-आई सी ने कांस्टेबल/जीडी दिलिप दास को देखा जो बुरी तरह घायल हो गए थे। उग्रवादियों की भारी गोलीबारी के बीच, उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना उग्रवादियों पर गोलीबारी की और बहादुरी से उग्रवादियों की गोलीबारी की दिशा से उपर्युक्त घायल जवान को बाहर निकाला। इसी बीच, श्री नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का वैली क्यूएटी घटना स्थल पर पहुंचा और उग्रवादियों के बच निकलने की किसी भी संभावना को रोकने के लिए घेराबंदी को मजबूत करना शुरू कर दिया।

जब क्यूएटी सैन्य दल लक्षित भवन जहां आतंकवादी छिपे थे, के आस-पास तैनात हो रहे थे, तो उनका उग्रवादियों द्वारा भारी गोलीबारी से स्वागत किया गया। घातक खतरे से बिना डरे, श्री नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट अपने बहादुर सैन्य दलों के साथ उग्रवादियों के स्थान के निकट पहुंच गए और उनकी स्थिति का पता लगाया। जब वैली क्यूएटी सैन्य दल उग्रवादियों के साथ व्यस्त थे, तब श्री राजीव कुमार चौधरी, कमांडेंट - 28 बटा. कांस्टेबल/जीडी बजेश बी के साथ बचकर निकलने के मार्ग को अवरूद्ध करने के लिए छिपने के ठिकाने के पीछे की ओर आगे बढ़े परन्तु वे उग्रवादियों की नजर में आ गए, जिन्होंने तुरंत उन पर भारी गोलीबारी की जिसमें दोनों बहादुर सैनिक बाल-बाल बच गए, तथापि, यह उनको आगे बढ़ने से नहीं रोक सका दोनों यथोचित जोखिम उठाते हुए छिपने के ठिकाने के नजदीक पहुंच गए और उग्रवादियों के स्थान की ओर एचई-36 ग्रेनेड और फिर कई यूबीजीएल फेंके। विस्फोट से कुछ देर के लिए उग्रवादियों की गोलीबारी रूक गई और इससे दूसरी ओर के सैन्य दलों को नजदीक आने और उग्रवादियों पर गोलीबारी करने के लिए उपयुक्त पोजीशन लेने का मौका मिल गया। स्थिति का लाभ उठाते हुए, श्री प्रमोद कुमार, कमांडेंट-49 बटा. ने-2 आईसी के साथ उग्रवादियों की ओर गोलियों की तेज बौछार करते हुए उन पर हमला कर दिया। अपनी उग्र कार्रवाई से उग्रवादियों को काबू में करते समय, उन्होंने उग्रवादियों पर अंतिम प्रहार करने के लिए अपनी आड़ से बाहर आने का निर्णय लिया। वे दोनों सभी सावधानियों को ताक पर रख कर उग्रवादियों को निष्क्रिय करने के लिए गोलीबारी करने और आगे बढ़ने की रणनीति अपनाते हुए अपनी आड़ से बाहर आ गए। लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते समय, बहादुर अधिकारियों ने उग्रवादियों की नजर में आ जाने के गंभीर खतरे को नजरअंदाज करते हुए भयंकर हमला किया और एक आतंकवादी को गोली मारकर घायल कर दिया, परन्तु इस प्रक्रिया में अचानक एक गोली श्री प्रमोद कुमार, कमांडेंट की खोपड़ी में लग गई। बहादुर अधिकारी की चोट लगने से मौत हो गई, और उन्होंने शहादत प्राप्त की। अपने वीर साथी की मृत्यु के बावजूद, 2-आईसी ने अपना हौंसला नहीं छोड़ा और उग्रवादियों पर लगातार हमला करते हुए दृढ़ता से मौर्चा संभाले रखा।

जब उग्रवादी उपर्युक्त सैन्य दलों के साथ गोलीबारी में व्यस्त थे तब श्री नरेश कुमार ने कांस्टेबल पी.के. पांडा, कांस्टेबल विश्वभान सिंह और कांस्टेबल पी. प्रकाश के साथ छिपने के ठिकाने के सामने एक मकान में पोजीशन ले ली। उस समय, अजीत बाबू, उप

कमांडेंट, जो महानिरीक्षक, श्रीनगर सेक्टर के साथ मुठभेड़ स्थल पर पहुंच गए थे, ने वैली क्यूएटी का साथ दिया और उनको मजबूती प्रदान की। अब उनकी बारी थी, क्योंकि क्यूएटी सैन्य दलों ने उग्रवादियों पर भारी जवाबी गोलीबारी की। उन्हें नुकसानदायक स्थिति में पाकर, उग्रवादियों ने क्यूएटी सैन्य दलों की ओर एक ग्रेनेड फैंका जो बिल्कुल नजदीक फट गया। शीघ्र प्रतिक्रिया दिखाते हुए, सैन्य दलों ने नाजुक स्थिति से स्वयं को बचाया। उग्रवादियों के रणनीतिक ढ़ंग से लाभपूर्ण स्थिति में होने के कारण, गोलियां पूरी तरह कारगर साबित नहीं हो रही थीं। इसलिए, कांस्टेबल विश्वभान सिंह को उग्रवादियों की पोजीशन की ओर यूबीजीएल के स्टीक राउण्ड चलाने का आदेश दिया गया। इसे देखते हुए, उग्रवादियों ने कांस्टेबल/जीडी विश्वभान सिंह की यूबीजीएल से सधी हुई गोलीबारी को विफल करने के लिए अपनी गोलीबारी की दिशा उनकी ओर मोड़ दी। इस पर, श्री नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट और श्री अजीत सी. बाबू अपनी पोजीशन से आगे की ओर बढ़े और कांस्टेबल/जीडी विश्वभान सिंह को प्रभावकारी कवर फायर प्रदान किया। सैन्य दलों का प्रयास सफल साबित हुआ क्योंकि कुछ समय के पश्चात छिपने के ठिकाने से जवाबी गोलीबारी बंद हो गई। तत्पश्चात, कांस्टेबल पी.के. पांडा, कांस्टेबल एस. प्रकाश और कांस्टेबल विश्वभान सिंह वाला वैली क्यूएटी कमांडो के एक दल ने एसओजी (जम्मू एवं कश्मीर पुलिस) के साथ अपनी जान को आसन्न खतरे की परवाह किए बिना युक्तिपूर्वक उस भवन में प्रवेश किया और अपनी किसी क्षति के बिना दो विदेशी उग्रवादियों के शव के साथ बाहर निकला।

अभियान के दौरान, सैन्य दलों ने विपरीत स्थिति में सौंपे गए कार्य के प्रति अत्यधिक निष्ठा और समर्पण के साथ अतुलनीय साहस का प्रदर्शन किया। उन्होंने शीघ्र दक्ष और प्रभावकारी ढंग से कार्य को पूरा किया। जीवन के लिए चुनौतीपूर्ण स्थिति में उनकी पूर्ण निष्ठा पहल और धैर्य के परिणामस्वरूप उनकी अत्यधिक सराहना हुई और इससे बल की भी प्रतिष्ठा बढ़ी।

की गई बरामदगीः-

1.	एके-47 राइफल्स	:	02
2.	एके-47 मैगजीन	:	06
3.	एके-47 राउण्ड	:	04

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री राजीव कुमार चौधरी, कमांडेंट, नरेश कुमार, सहायक कमांडेंट, पी.के. पांडा, कांस्टेबल, एस. प्रकाश, कांस्टेबल, विश्वभान सिंह, कांस्टेबल और बजेश बी. कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.08.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 160-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री दीपु दास,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुवारती और टेकलगुरलम गांवों के सामान्य क्षेत्र में 30-40 सशस्त्र माओवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया जानकारी प्राप्त होने पर, 204 कोबरा के सैन्य दलों द्वारा पुलिस स्टेशन बासुगुडा, जिला-बीजापुर (छत्तीसगढ़) के अन्तर्गत नीलमगुट्टा, कोट्टागुडा गुंडुम, तारेम, पुवारती और टेकलगुरलम गांवों के सामान्य क्षेत्र में एक अभियान शुरू किया गया। 7 दलों वाले 204 कोबरा के दो हमला दल दिनांक 25.04.2016 को 2000 बजे दो बेस कैंपों अर्थात् सरकेगुडा और न्यू तरेम से अभियान के लिए चल पड़े। सैन्य दल घने अंधेरे में चला और शांति और विस्मय को बनाए रखते हुए अपने मार्ग में आने वाली हर बाधा को पार किया। उस क्षेत्र में विस्मय में किसी भी चूक का मतलब यह था कि सैन्य दलों की गतिविधि का पता चल जाएगा और माओवादियों को घात लगाने का एक अवसर मिल जाएगा। सैन्य दलों को न केवल बाधाओं को पार करना था, बल्कि उन माओवादियों, जो उस क्षेत्र को अपनी निगरानी में रखे हुए थे, की सतर्क

निगाहों से भी बचना था। सभी सावधानियां बरतते हुए सैन्य दल दिनांक 26.04.2016 को 0225 बजे गुंडुम और चुटवाही गांवों के निकट पहुंच गया।

गांवों पर निगरानी रखने के लिए, उप-निरीक्षक/जीडी श्रवण कुमार के नेतृत्व में एक छोटा दल जिसमें कांस्टेबल/जीडी दीपु एक स्काउट के रूप में शामिल थे, गांव के नजदीक भेजा गया, जबकि शेष सैन्य दलों ने प्रतीक्षा की। यह चाल क्षेत्र में सैन्य दलों की मौजूदगी के विस्मय को बनाए रखने के लिए चली गई। जब निगरानी दल ने गांव के नजदीक पहुंचने के लिए एक नाले को पार किया, स्काउट सं.065132291 कांस्टेबल/जीडी दीपु दास ने अपने नाइट विजन डिवाइस से गांवों के ठीक पास में स्थित जंगल के बाहरी किनारे पर एक व्यक्ति को खड़े हुए देखा। छोटे दल ने संदिग्ध दिखने वाले उस व्यक्ति को पकड़ने का निर्णय लिया और साथ-साथ ही पीछे आ रहे कमांडर को अपनी चाल के बारे में सूचित भी किया। संदिग्ध व्यक्ति एक मिनट रूकने के पश्चात आगे बढ़ा और घने जंगल में चला गया।

छोटे दल ने उसका पीछा किया और जब इसने जंगल में प्रवेश किया, तो जंगल के भीतर से उनकी ओर अंधाधुंध गोलियों की एक बौछार आई। इस प्रकार के आश्चर्यजनक और अचानक हमले के लिए तैयार उक्त दल ने जवाबी हमला किया और निकट से बंदूकों की भयंकर लड़ाई शुरू हो गई। दुर्भाग्यवश, इस नजदीकी मुठभेड़ में 204 कोबरा के स्काउट नामतः कांस्टेबल दीपु दास को गोलियां लग गई और वे घायल हो गए। गोलियां लगने के बावजूद, वे रेंगकर एक पेड़ के पीछे गए और अपनी पोजीशन ले ली तथा लगातार माओवादियों को उलझाए रखा। घने जंगल के भीतर कहीं छिपे माओवादियों पर हमला करने के लिए, दूरी को और कम करना तथा उनकी वास्तविक पोजीशन का पता लगाना अनिवार्य था। परन्तु भारी गोलीबारी के बीच मजबूत शत्रु के नजदीक जाने का कार्य जान को जोखिम में डालने वाला था। एकमात्र संभावित रास्ता शत्रु की गोलीबारी को नियंत्रित करना और कवर गोलीबारी में आगे बढ़ना था। कांस्टेबल दीपु दास ने दल में अपनी पोजीशन अर्थात् स्काउट के महत्व को महसूस किया और अपनी चोट की परवाह किए बिना कवर गोलीबारी में आगे बढ़ने का निर्णय लिया। कष्टदायक पीड़ा और सभी ओर से गोलियों की सनसनाहट में हौसला दिखाते हुए, बहादुर सैन्य कर्मी गोली चलाते हुए आगे बढ़ने की रणनीति को अपनाते हुए शत्रु की ओर बढ़ा और उन पर हमला कर दिया। उसके भयंकर हमले ने माओवादियों को पुनः अपनी रणनीति बनाने और पीछे हटने पर विवश कर दिया। बहादुर सैनिक का समर्पण और दृढ़ निश्चय ऐसा था कि जब उनको यह लगा कि वह अपने दाएं कंधे से गोलीबारी करने में सक्षम नहीं हैं, तो उन्होंने अपने बाएं कंधे का प्रयोग किया, परन्तु एक बार भी हमले को रोकने अथवा पीछे हटने के बारे में नहीं सोचा। दल के अन्य सदस्यों द्वारा पूर्ण सहायता से उनकी सधी हुई गोलीबारी के कारण घने जंगल के भीतर कहीं छिपे माओवादी गंभीर रूप से घायल होने के पश्चात अंधेरे का लाभ उठाकर भाग गए।

सैन्य दलों ने पूरी तरह से क्षेत्र की तलाशी ली और मुठभेड़ स्थल से हथियारों और विस्फोटक पदार्थों का जखीरा बरामद किया। तीन स्वदेश निर्मित राइफलें, एक पाइप बम, माओवादी यूनिफार्म के दो सेट, 50 ग्राम गन पाउडर, 50 से.मी. कोडेक्स वायर और भारी मात्रा में अन्य अभिशंसी सामग्रियां बरामद की गईं। इसके अतिरिक्त, खून के धब्बों के साथ घसीटने के निशान भी देखे गए, जो यह दर्शाता था कि कुछ माओवादी मुठभेड़ में या तो मारे गए थे अथवा गंभीर रूप से घायल हुए थे, परन्तु उस क्षेत्र से भागने में सफल हो गए।

इस मुठभेड़ में श्री दीपु दास, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.04.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 161-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. केशव कुमार मिश्रा,
सहायक कमांडेंट

02. भूमिरेड्डी श्रीनु,
कांस्टेबल

03. सुरेन्द्र बुड़ी,
कांस्टेबल

04. गुम्मिडी श्रीनिवासा राव,
कांस्टेबल

05. सुरजीत कुमार,
कांस्टेबल

06. ईफरान अली,
कांस्टेबल

07. बाबु लाल,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

आसूचना ब्यूरो द्वारा दी गई एक खुफिया जानकारी से यह संकेत मिला कि माओवादी बीजापुर शहर के नजदीक एक लक्ष्य पर हमला करने की योजना बना रहे हैं और इस उद्देश्य से 6-8 हथियारबंद काडर एक स्कॉर्पियो वाहन में शहर में आएंगे। उपर्युक्त सूचना के आधार पर, श्री मोहित गर्ग, जिला पुलिस के अपर पुलिस अधीक्षक, डीआरजी और जिला पुलिस कार्मिक, बीजापुर के साथ श्री केशव कुमार मिश्रा, सहायक कमांडेंट की कमान में डीआईजी (ऑप्स.) बीजापुर के एक छोटे कार्य दल (एसएटी) ने दिनांक 10.07.2016 को लगभग 1900 बजे आईटीआई कॉलेज, बीजापुर, छत्तीसगढ़ के नजदीक बीजापुर-तुमनार सड़क पर घात/एमसीबी (नाका) लगाया। प्रभावशाली घात के लिए. संयुक्त दलों को प्रमुख और सामरिक दृष्टि से मजबूत पोजीशनों पर रखा गया। एफ/सं. 135271161 कांस्टेबल/जीडी गुम्मिडी श्रीनिवासा राव और एफ/सं. 035033037 कांस्टेबल/जीडी बाबु लाल को कुछ डीआरजी कार्मिकों के साथ संदिग्ध लोगों के आगमन की पूर्व चेतावनी देने के लिए मुख्य घात में आगे रखा गया। जब दोनों अपने नाइट विजन डिवाइस के माध्यम से सड़क पर आवाजाही का सावधानीपूर्वक अवलोकन कर रहे थे, तब लगभग 1930 बजे, उन्होंने एक स्कॉर्पियों वाहन को अपनी ओर आते देखा। मुख्य घात दल को तत्काल वायरलेस के माध्यम से सतर्क किया गया। यह समयोचित और सुसमन्वित कार्रवाई बाद में एक सफल अभियान की धुरी साबित हुई। जब संदिग्ध वाहन को रूकने का आदेश दिया गया और उसमें सवार लोगों को उतरने के लिए कहा गया, तो वाहन में बैठे माओवादियों ने सैन्य दलों पर गोलीबारी शुरू कर दी और नाका को तोड़कर भागने का प्रयास किया। गोलियों की बौछार से सैन्य दल बाल-बाल बच गए परन्तु अचानक एक गोली जिला पुलिस के उप निरीक्षक देवेन्द्र दारू को लग गई और वे घायल हो गए।

चमत्कारिक ढंग से बच निकलने के आघात को नजरअंदाज करते हुए, सैन्य दलों ने तत्काल प्रतिक्रिया की और वाहन के सामने पोजीशन लेकर सड़क को अवरूद्ध कर दिया, हालांकि इस कृत्य से उनकी जान को गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया था। सैन्य दलों की तेज, रणनीतिक और साहसिक कार्रवाई ने माओवादियों को बचकर भागने से रोक दिया। फिर माओवादी वाहन से उतर गए, तितर-बितर हो गए और भ्रमित करने तथा संकेन्द्रित कार्रवाई से बचने के लिए सैन्य दलों पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए अलग-अलग दिशाओं में भागने लगे। श्री केशव कुमार मिश्रा, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल/जीडी भूमिरेड्डी श्रीनु और कांस्टेबल/जीडी सुरेन्द्र बुड़ी ने भाग रहे दो माओवादियों को रोक दिया। घिर जाने पर, दोनों माओवादियों ने उन पर काबू पाने और घटना स्थल से बच निकलने के लिए गोलियों की बौछार कर दी। परन्तु तीनों वीरों ने, बदले में बहादुरी से कार्रवाई की और अपनी जान की परवाह किए बिना आगे बढ़ रहे माओवादियों पर जोरदार हमला किया। दोनों तरफ से बिलकुल निकट से हुई गोलीबारी में, तीनों वीरों ने भाग रहे दोनों माओवादियों को ढेर कर दिया। इसी प्रकार, सैन्य दलों को झांसा देकर उस स्थान से भागने का प्रयास कर रहे दूसरे माओवादी का कांस्टेबल/जीडी सुरजीत कुमार और कांस्टेबल/जीडी इफरान अली से सामना हुआ। जब दोनों ने बचकर भाग रहे माओवादी को आत्मसमर्पण करने के लिए चुनौती दी, तो उसने उनको लक्ष्य बनाकर गोलीबारी शुरू कर दी। अत्यधिक साहस का प्रदर्शन करते हुए, अपनी जान को खतरे से विचलित हुए बिना और सभी पूर्व सावधानियों को ताक पर रखकर, कांस्टेबल/जीडी सुरजीत कुमार और कांस्टेबल/जीडी इफरान अली ने माओवादी की गोलीबारी का निडरतापूर्वक सामना किया और उसकी गोलियों से बचते हुए सटीक गोलीबारी से उसे ढेर कर दिया।

माओवादियों को घेरने की रणनीति प्रभावकारी ढ़ंग से कार्य कर रही थी, क्योंकि कुछ माओवादी ढेर कर दिए गए थे, तथापि कुछ माओवादी अंधेरे की आड़ में घने जंगल में छिप गए थे। इस अवसर पर, कमांडर ने अपनी रणनीतिक सूझबूझ का प्रयोग किया और बम डिटैचमेंट को पैरा इल्यूमिनेटिंग बम चलाने का आदेश दिया। बम डिटैचमेंट ने लगातार 3 पैरा बम चलाए जिससे एक माओवादी की पोजीशन का पता चल गया। तत्पश्चात, उस माओवादी जिसने एक पेड़ के पीछे पोजीशन ले रखी थी, पर लक्ष्य बनाकर गोलीबारी शुरू कर दी। देख लिए जाने और गोलीबारी का सामना होने पर, माओवादी ने बम डिटेचमेंट पर जवाबी गोलीबारी की और तुमनार की ओर भागने

का प्रयास किया, जहां कांस्टेबल/जीडी गुम्मिडी श्रीनिवासा राव और कांस्टेबल/जीडी बाबु लाल ने पहले ही पोजीशन ले रखी थी। फिर वे दोनों भाग रहे माओवादी की गोलीबारी की सीधी दिशा में आ गए जिसने बच निकलने का रास्ता बनाने के लिए उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। परन्तु, कांस्टेबल/जीडी गुम्मिडी श्रीनिवासा राव और कांस्टेबल/जीडी बाबु लाल अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बगैर अपनी कवर से बाहर आ गए और माओवादी को ढेर कर दिया। गोलीबारी बंद हो जाने पर, उस क्षेत्र की पूरी तरह तलाशी की गई, जिसके दौरान एक 9 एमएम पिस्तौल, एक स्वदेश निर्मित .315 बोर की गन, एक मजल भरी गन, एक वायरलेस सेट (चाइनीज), जिंदा राउण्ड आदि के साथ चार शव बरामद किए गए।

अभियान के दौरान, माओवादियों के कायरतापूर्ण दुस्साहस का सैन्य दलों ने साहसिक निर्णय, नि:स्वार्थ नेतृत्व, अतुलनीय बहादुरी और दल भावना से सामना किया। श्री केशव कुमार मिश्र, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व वाला दल भली भांति यह जानते हुए कि प्रत्येक कदम घातक हो सकता है, शत्रु का मुकाबला करने के लिए गोलीबारी के बीच अपनी जान को जोखिम में डालकर बहादुरी से लड़े।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री केशव कुमार मिश्रा, सहायक कमांडेंट, भूमिरेड्डी श्रीनु, कांस्टेबल, सुरेन्द्र बुड़ी, कांस्टेबल, गुम्मिडी श्रीनिवासा राव, कांस्टेबल, सुरजीत कुमार, कांस्टेबल, इफरान अली, कांस्टेबल और बाबु लाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10.07.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 162-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. सुनील खींची,
सहायक कमांडेंट

02. भानू प्रताप सिंह,
उप निरीक्षक

03. ललित कुमार,
कांस्टेबल

04. कवि चौधरी,
कांस्टेबल

05. किनू मुंदरी,
कांस्टेबल

06. रघुनाथ सरेन,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन-भेजी, सुकमा के अंतर्गत डुब्बाकोंटा और कोलाईमुडा के सामान्य क्षेत्र में 200 अन्य काडरों के साथ छत्तीसगढ़ क्षेत्र के शीर्ष माओवादी सैन्य नेताओं नामत: हिदमा, नागेश, सोनू और ऊधम सिंह (सभी पीएलजीए की पहली बटालियन से) की मौजूदगी के बारे में एक विश्वसनीय खुफिया जानकारी प्राप्त हुई। इन कुख्यात माओवादी सैन्य नेताओं ने अपनी क्रूर गतिविधियों से क्षेत्र में डरावना माहौल पैदा कर रखा है। डुब्बाकोंटा और कोलाईगुडा का क्षेत्र कथित रूप से माओवादियों का गढ़ माना जाता है और कई भयानक मुठभेड़ों का अभिसाक्षी है। उपर्युक्त मुश्किल परिस्थितियों से विचलित हुए बिना, कोबरा 208 के दलों ने इस जानकारी को आंतकी व्यक्तियों को

पकड़ने/समाप्त करने का एक दुर्लभ अवसर समझा और उपर्युक्त जानकारी के आधार पर दिनांक 18.11.2015 को 1700 बजे एक अभियान शुरू किया।

श्री सुनील खींची, सहायक कमांडेंट की समग्र कमान में कोबरा के तीन दलों ने 219 बटा. के दो दलों, 217 बटा. के एक दल और डीआरजी (जिला रिजर्व गार्ड) के दो दलों के साथ निर्दिष्ट समय पर भेजी बेस कैंप से प्रस्थान किया। अंधेरी रात और विकट भौगोलिक क्षेत्र में, इन बहादुर व्यक्तियों ने सभी बाधाओं को पार किया और शांतिपूर्वक पूर्वनिर्धारित प्रारंभिक स्थल पर पहुंचे। प्रारंभिक स्थल से सभी दल लक्षित क्षेत्र की ओर जाने के लिए अपने संबंधित मार्ग पर चल पड़े। जब दल 1 अपने निर्दिष्ट मार्ग से आगे बढ़ रहा था, तब यह स्काऊट कांस्टेबल पंकज शर्मा और कांस्टेबल शेर सिंह की अत्यधिक सजगता और विंहगम पहुंच थी कि उन्हें आसपास के क्षेत्र में कोई संदिग्ध आवाज सुनाई दी। तत्काल, उन्होंने पीछे आ रहे सैन्य दलों को सांकेतिक ढंग से सतर्क किया।

कार्तिकेयन एस., सहायक कमांडेंट, जो दल का नेतृत्व कर रहे थे और स्काऊटों के पीछे चल रहे थे, चुपचाप आगे आए, दूरबीन का प्रयोग करके वहां पर अवलोकन किया और स्थिति का जायजा लिया और लगभग 70-80 मीटर की दूरी पर स्वचालित हथियार लिए हुए कुछ वर्दीधारी माओवादी काडरों को देखा। उन्होंने तुरंत वहां की स्थिति के बारे में दल कमांडर श्री सुनील खींची, सहायक कामंडेंट जो थोड़ी दूरी पर अन्य दल के पास मौजूद थे, को अवगत कराया। तत्काल कार्रवाई के लिए जल्दबाजी किए बिना, निडर और साहसिक निर्णय लेते हुए दल कमांडर ने कार्तिकेयन एस., एसी को माओवादियों के और निकट जाने और उनकी नफरी के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त करने के लिए कहा। कार्तिकेयन एस., एसी ने आगे आने वाले खतरों का अनुमान लगाए बिना दल कमांडर के निदेश का पालन किया और तीन कांस्टेबलों के साथ माओवादियों की पोजीशन की ओर शांतिपूर्वक रेंगते हुए आगे बढ़ने लगे। चारों व्यक्ति माओवादियों की नफरी और स्थिति के संबंध में सटीक जानकारी के साथ लौटे और इसे अपने कमांडर को दे दिया। विशिष्ट सूचना के आधार पर, श्री सुनील खींची, एसी ने फिर माओवादियों को घेरने और पकड़ने के लिए डिजिटल मैप पर उस क्षेत्र की छानबीन करने की युक्ति बनाई। उन्होंने सभी संभावित बचाव मार्गों की रूपरेखा तैयार की और सभी दल कमांडरों को विशिष्ट स्थानों पर अवरोध लगाने का निर्देश दिया और अपने दल को भी एक रणनीतिक बचाव मार्ग पर तैनात कर दिया।

इसी बीच, दल को शांतिपूर्वक मैदान में डटे रहने के लिए कहा। यह एक अत्यधिक तनाव वाली स्थिति थी, जिसमें सैन्य दलों को गोपनीयता बनाए रखने के लिए अपना धैर्य बनाए रखने और सांसें रोक कर रखना था। किसी भी चूक का परिणाम सैन्य दलों और अभियान, दोनों के लिए भयानक हो सकता था। अपने उच्चकोटि के प्रशिक्षण और अनुशासन के बल पर, दल ने धैर्य के साथ लगभग 30 मिनट तक शत्रु से 50 मीटर की दूरी पर पूर्ण चुप्पी बनाए रखी।

जब सभी दलों ने अपनी-अपनी पोजीशन ले ली, तब एक दल माओवादियों के चारों ओर शिकंजा कसने के लिए आगे बढ़ा, परन्तु माओवादियों के एक संतरी ने अवांछित उपस्थिति को भांप लिया और दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। शीघ्र ही अन्य माओवादी भी सतर्क हो गए और उन्होंने भी सैन्य दलों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। माओवादियों की अचानक कार्रवाई ने दल, विशेषकर अग्रणी दल के सदस्यों की जान को गंभीर खतरा पैदा कर दिया। तथापि, अग्रणी सदस्य यद्यपि कवर के अभाव में शत्रु की बरसती हुई गोलियों के सामने थे, फिर भी उन्होंने अपने पूरे सामर्थ्य से जवाबी हमला किया और कुछ माओंवादियों को ढेर कर दिया। कोबरा सैन्य दलों की भयंकर जवाबी कार्रवाई से परास्त होकर, माओवादियों ने घने जंगल और चट्टानी क्षेत्र का लाभ उठाकर अपने घायल और मृत लोगों को लेकर उस स्थान से भागना शुरू कर दिया।

दल कमांडर श्री सुनील खींची की रणनीतिक दूरदृष्टि उस समय सच साबित हुई, जब कुछ मिनट पश्चात भगोड़े माओवादी, जिन पर दल द्वारा भयंकर हमला किया गया था, पुन: इकट्ठे हो गए और कोलाईगुडा और एंतापाड गांव के अनुमानित जंगल क्षेत्र की ओर भागने लगे। श्री सुनील खींची, सहायक कमांडेंट के दल ने पहले ही उपर्युक्त मार्ग पर अपनी पोजीशन ले रखी थी। भाग रहे माओवादियों, जो लगभग 30-40 थे, ने अपने रास्ते में सैन्य दलों की उपस्थिति को भांप कर उन पर अपने स्वचालित हथियारों से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। सैन्य दलों का पहले ही पता लग जाने और माओवादियों द्वारा चलाई जा रही गोलियों की भारी बौछार के कारण श्री सुनील खींची, एसी ने अपनी हमले की योजना में सुधार किया और उप निरीक्षक/जीडी भानु प्रताप सिंह को अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ बांयी ओर से आगे बढ़ने और माओवादियों को घेरने का निर्देश दिया। इसी बीच, वे कांस्टेबल किनू मुंदरी, कांस्टेबल रघुनाथ सरेन, कांस्टेबल कवि चौधरी और कांस्टेबल ललित कुमार के साथ चुपचाप अपनी पोजीशन से खिसक कर दांयी ओर आगे बढ़ गए। गोलियों की बौछार के बीच, जब सैन्य दल को अपनी जान के प्रति गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया था, तब बगल वाले जवानों ने अनुकरणीय साहस और हिम्मत का प्रदर्शन किया, क्योंकि वे गोली चलाते हुए आगे बढ़ने की रणनीति का प्रयोग करके चुपचाप आगे बढ़े और माओवादियों को घेरना शुरू कर दिया।

कमांडो की विस्मयकारी चाल से माओवादी हतप्रभ और अश्चर्यचकित हो गए। इस चाल का सामना करने के लिए कुछ माओवादियों ने बड़े पत्थरों के पीछे पोजीशन ले ली और एल.एम.जी. तथा अन्य अत्याधुनिक हथियारों का प्रयोग करके अपनी गोलीबारी

को तेज कर दिया। परन्तु उनकी यह चाल उप निरीक्षक भानु प्रताप सिंह को श्री सुनील खींची के दल, जो अपनी सधी हुई गोलीबारी से माओवादियों के हमले का सामना करते हुए रणनीतिक पोजीशन हासिल करने के लिए रेंगकर आगे बढ़ रहा था, को यूबीजीएल का प्रयोग करके कवर गोलीबारी प्रदान करने से नहीं रोक पाई। वांछित पोजीशन प्राप्त करने पर, दल ने तत्काल माओवादियों पर भंयकर हमला कर दिया जिसके परिणामस्वरूप कुछ माओवादी काडर मारे गए। बुरी तरह से घिर जाने पर और अपने काडरों को सैन्य दलों की गोलियों से हताहत होते हुए देखकर माओवादियों ने ऊबड़-खाबड़ भूभाग का लाभ उठाकर अपने मृत और घायल साथियों को साथ लेकर घटनास्थल से भागना शुरू कर दिया।

उस क्षेत्र की तलाशी के दौरान सैन्य दलों ने दो शव बरामद किए, जिसमें से एक शव भरमार गन के साथ एक महिला माओवादी (बाद में जिसकी पहचान आस जोगी, आई/सी सैन्य आसूचना कोंता क्षेत्र के रूप में की गई) का था और एक शव काले रंग की यूनिफार्म में एक पुरूष माओवादी (बाद में जिसकी पहचान मदकाम मुक्का उर्फ भास्कर, कमांडर कोंता एलओएस के रूप में की गई) का था, जो कोबरा पैटर्न का पाऊच पहने हुए था जिसमें दो बंदुकें और 31 राउण्ड के साथ 5.56 एमएम इंसास राइफल की दो मैगजीनें भी थीं।

दल मुठभेड़ के दौरान अपनी जान की परवाह किए बगैर निडरतापूर्वक और वीरता से लड़े। उन्होंने देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए गोलीबारी के बीच अपनी जान को जोखिम में डाल दिया। उपयुक्त कार्मिकों के बहादुरीपूर्ण कृत्य के परिणामस्वरूप कुछ खूंखार माओवादी मारे गए, जिनमें से दो माओवादियों के शव बरामद किए गए और कई अन्य घायल हो गए। यह अभियान अत्यधिक धैर्य, साहस, विश्वास, महान रणनीतिक कुशलता और उच्चकोटि के नेतृत्व एवं नियंत्रण का एक दुर्लभ उदाहरण था।

की गई बरामदगी:-

1.	12 बोर की स्वदेश निर्मित बंदूक	:	01
2.	भरमार	:	02
3.	इंसास मैगजीन	:	02
4.	जिंदा राउण्ड 5.56 एमएम	:	31
5.	5.56 एम के खाली डिब्बे	:	11
6.	12 बोर के जिंदा राउण्ड	:	13
7.	स्वदेश निर्मित ग्रेनेड	:	01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सुनील खींची, सहायक कमांडेंट, भानू प्रताप सिंह, उप निरीक्षक, ललित कुमार, कांस्टेबल, कवि चौधरी, कांस्टेबल, किनु मुंदरी, कांस्टेबल और रघुनाथ सरेन, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.11.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 163-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अशोक कुमार,
द्वितीय कमान अधिकारी

02. श्रवण कुमार,
उप निरीक्षक

03. कौशल सिंह,
कांस्टेबल

04. तपन कुमार बर्मन,
कांस्टेबल

05. राजीव रंजन,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

नाम्बी और गुंजेपाड़ा गांवों के जंगलों में 25-30 हथियारबंद माओवादियों के साथ सोमदू (एलओएस कमांडर, उसुर) और मनीला (पामेद एरिया कमेटी का डीबीसीएम) और पुलिस स्टेशन: उसुर जिला बीजापुर, छत्तीसगढ़ के अंतर्गत पौरगुडा, पुजारीकांकेर और तुमरेल गांवों के निकटवर्ती जंगल में 30-40 हथियारबंद माओवादियों के एक अन्य समूह की मौजदूगी के बारे में खुफिया जानकारी प्राप्त होने के पश्चात, 05 दिन और 04 रातों के लिए एक संयुक्त तलाशी और विध्वंसकारी अभियान की योजना बनाई गई। अभियान को अंजाम देने के लिए, श्री अशोक कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी, 204 कोबरा की समग्र कमान में 204 कोबरा, एसटीएफ, डीआरजी और स्थानीय पुलिस के सैन्य दलों का एक दल तैयार किया गया।

सभी अवसरों/चुनौतियों का आकलन करके और माओवादियों के अड्डे में प्रभावकारी ढंग से कार्रवाई करने के लिए, श्री अशोक कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी ने दल को चार हमला दलों में विभाजित किया, दल सं. 1- आवापल्ली पुलिस स्टेशन के राज्य पुलिस कर्मी, दल सं. 2- 204 कोबरा, दल सं. 3- डीआरजी और दल सं. 4-एसटीएफ। योजना के अनुसार, संयुक्त सैन्य दल दिनांक 15.07.2016 को 0400 बजे अपने बेस कैप आवापल्ली से लक्षित क्षेत्र की और चल पड़ा। पूरे दिन सैन्य दल ने उत्साहपूर्वक माओवादियों का पता लगाने का प्रयास किया, परन्तु सफल नहीं हो सके और रात को ठहरने के लिए ग्राम - टेकमेल्टा के नजदीक जंगल के क्षेत्र में एलयूपी लिया। लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, दिनांक 16.07.2016 को सुबह सैन्य दलों ने पोरगुडा गांव की ओर जंगल में छानबीन करना शुरू कर दिया। प्रमुख माओवादी प्रभुत्व वाला क्षेत्र होने के नाते, माओवादियों की घात/हमले की संभावना हमेशा बनी रहती है। अनुमानत:, माओवादियों द्वारा क्षेत्र में सैन्य दलों की उपस्थिति को भांप लिया गया था और जब सैन्य दल काम पर लगे हुए थे, तब लगभग 1330 बजे जब दल सं. 1 एक पहाड़ी पर चढ़ रहा था, तो चोटी पर स्थित माओवादियों ने उन्हें मारने और हथियार छीनने के इरादे से सैन्य दलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। तत्काल कार्रवाई करते हुए, सैन्य दलों ने तुरंत पोजीशन ले ली और आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की। दोनों तरफ से गोलीबारी के बारे में सूचना मिलने पर, श्री अशोक कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी जो दल सं. 2 का नेतृत्व कर रहे थे, हरकत में आ गए। अपनी रणनीतिक दक्षता का प्रयोग करते हुए, उन्होंने शीघ्र एक जवाबी कार्य योजना की रूपरेखा तैयार की और दल सं. 3 और 4 को माओवादियों की पोजीशन के बाएं, दाएं और पीछे की ओर से मार्ग अवरूद्ध करने का आदेश दिया। वे स्वयं दांयी ओर से माओवादियों को घेरने के लिए दल सं. 2 के साथ आगे बढ़े। जब दल सं. 2 ने पहाड़ी की चोटी पर पहुंचने के लिए आधी दूरी तय कर ली थी, तब माओवादियों ने दल सं. 1 पर भारी गोलीबारी करके अपनी पोजीशन से पीछे हटना शुरू कर दिया था। गोलीबारी की कम होती हुई आवाज को सुनकर और माओवादियों के पीछे हटने का अनुमान लगाकर, श्री अशोक कुमार तेजी से आगे बढ़े और शीघ्रता से माओवादियों की पोजीशन के नजदीक पहुंचने के प्रयास में उन्होंने उप निरीक्षक/जीडी श्रवण कुमार, कांस्टेबल/जीडी कौशल सिंह, कांस्टेबल/जीडी तपन कुमार बर्मन और कांस्टेबल/जीडी राजीव रंजन को अपने साथ लिया और अन्य लोगों को पीछे आने का आदेश दिया। जब निडर सैनिकों का छोटा समूह और आगे बढ़ा, तो उनका सामना अचानक भारी हथियारबंद माओवादियों के एक समूह से हुआ, जो अपनी घात से पीछे हट रहा था। माओवादियों ने सैन्य दलों को देखकर तुरंत उन पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और उस क्षेत्र से भागने का प्रयास किया। माओवादियों की गोलियां अपने लक्ष्य से चूक गईं। परन्तु, श्री अशोक कुमार माओवादियों को बच कर भागने देने के मूड में नहीं थे। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की अनदेखी करते हुए, उन्होंने भाग रहे माओवादियों पर गोलीबारी की और उनके पीछे दौड़ पड़े। अपने कमांडर के अदम्य साहस का अनुकरण करते हुए, सैन्य दल उनके पीछे गए और अपनी जान की परवाह किए बिना माओवादियों का पीछा किया। परन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि उस दिन भाग्य माओवादियों का साथ दे रहा था क्योंकि माओवादियों का एक अन्य समूह, जो स्वयं भी घात से पीछे हट रहा था, अचानक पीछे हटने के उसी मार्ग का अनुसरण करते हुए आ गया। इस समूह ने अपने साथियों को खतरे में देखकर सैन्य दलों पर तुरंत गोलीबारी शुरू कर दी और उनको घरेने का प्रयास किया। अन्य माओवादियों ने भी सहायता प्राप्त होने पर सैन्य दलों के घिरे हुए छोटे समूह पर गोलीबारी शुरू कर दी। श्री अशोक कुमार ने स्वयं और अपने बहादुर सैन्य दलों को माओवादियों से घिरा हुआ पाया जबकि शेष दल अभी भी कुछ दूरी पर था। परन्तु बहादुर सैन्य दल विचलित नहीं हुए। वे जवाबी हमले के लिए कवर तलाशने को गोलियों की बौछार के बीच रेंगकर गड्ढ़े में चले गए। जब एक बार सैन्य दलों ने पोजीशन ले ली, तो उन्होंने माओवादियों पर गोलियों की बौछार करते हुए जोरदार जवाबी हमला कर दिया। इस भयंकर जवाबी हमले में, सैन्य दलों ने

अपने अभीष्ट लक्ष्य पर हमला किया और अनेक माओवादी घायल हो गए जिससे माओवादियों का हौसला पस्त हो गया और उन्होंने उस स्थान से भागना शुरू कर दिया। परन्तु बहादुर सैन्य दल वहीं पर ही नहीं रूके और उन्होंने भाग रहे माओवादियों का तब तक पीछा किया जब तक कि वे जंगल की घनी झाड़ियों में गायब नहीं हो गए और अपनी गोलीबारी बंद नहीं कर दी। उसे पश्चात, श्री अशोक कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी ने सभी चार दलों को उस क्षेत्र की संपूर्ण तलाशी करने के लिए कहा, जिसके दौरान, सैन्य दलों ने विभिन्न स्थानों पर झाड़ियों से स्वदेश निर्मित बंदूकों (एसबीएमएल) के साथ माओवादियों के 4 शव बरामद किए। आगे और तलाशी के परिणामस्वरूप एक शिविर को ध्वस्त किया गया, जहां से गोलाबारूद, विस्फोटक, बम आदि जैसी भारी मात्रा में युद्ध सामग्री बरामद की गई। उस क्षेत्र में काफी अधिक खून के धब्बे भी देखे गए जो यह दर्शाता था कि कई अन्य माओवादियों को भी गोलियां लगी थीं, परन्तु वे घने जंगल और संकरे रास्तों का लाभ उठाकर भाग गए थे।

माओवादियों के गढ़ में यह अभियान एक बड़ी सफलता थी और यह श्री अशोक कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी के असाधारण नेतृत्व में अग्रणी 204 कोबरा के कार्मिकों द्वारा प्रदर्शित विलक्षण साहस के कारण संभव हुआ। श्री अशोक कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी ने अपनी जान की परवाह किए बगैर अत्यधिक सूझबूझ, उत्कृष्ट अभियान संबंधी समझ का प्रदर्शन किया और माओवादियों के विरूद्ध जवाबी आक्रमण करते समय असाधारण साहस, वीरता और अदम्य शौर्यपूर्ण कार्रवाई का प्रदर्शन किया। उप निरीक्षक/जीडी श्रवण कुमार, कांस्टेबल/जीडी कौशल सिंह, कांस्टेबल/जीडी तपन कुमार बर्मन और कांस्टेबल/जीडी राजीव रंजन ने भी असाधारण वीरता, नि:स्वार्थ दल भावना, अपनी सेवाओं के प्रति समर्पण और शौर्यपूर्ण कार्रवाई का प्रदर्शन किया जिसमें वे अपनी जान को जोखिम में डालते हुए निडरतापूर्वक आगे बढ़े और डटे हुए शत्रु पर हमला किया।

की गई बरामदगी:

1.	भरमार गन (एसबीएमएल)	:	04
2.	प्रेशर कुकर बम (5 ली.)	:	02
3.	पाइप बम	:	03
4.	टिफिन बम	:	01
5.	बैटरी	:	02
6.	लैपटॉप चार्जर (एचपी)	:	01
7.	फ्यूज वायर	:	02 मी.
8.	जिलेटिन	:	04
9.	खाली खोखे	:	32

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अशोक कुमार, द्वितीय कमान अधिकारी, श्रवण कुमार, उप निरीक्षक, कौशल सिंह, कांस्टेबल, तपन कुमार बर्मन, कांस्टेबल और राजीव रंजन, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 16.07.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 164-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. नीरज कुमार उत्तम,
सहायक कमांडेंट

02. संदीप,
उप निरीक्षक,

03. पवन कुमार,
हेड कांस्टेबल

04. सरोज कुमार माथुर,
कांस्टेबल

05. शबीर अहमद खान,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

क्षेत्र में माओवादियों की मौजूदगी के बारे में एक सूचना के आधार पर, दिनांक 16.05.2015 को पुलिस स्टेशन-बाराचट्टी जिला-गया और पुलिस स्टेशन-हंटरगंज, जिला-चतरा (झारखंड) के अंतर्गत दोआत, पिपरही, सोनदही और नारे गांवों के सामान्य क्षेत्र में 190 बटालियन, 22 बटालियन और 159 बटालियन सीआरपीएफ तथा राज्य पुलिस की सहायता में 205 कोबरा के सैन्य दलों द्वारा एक अन्तर-राज्य अभियान शुरू किया गया।

चूंकि, लक्षित क्षेत्र छुटपुट रूप से फैला हुआ था, इसलिए क्षेत्र की तलाशी के लिए आठ दल बनाए गए और प्रत्येक दल को एक विशिष्ट लक्ष्य दिया गया। ये दल चुपचाप रात के दौरान अपने बेस कैंप से निकल पड़े और सारी रात घने जंगल में चलने के बाद अगली सुबह अपने विशिष्ट लक्षित क्षेत्रों के नजदीक पहुंच गए। इसी प्रकार, श्री नीरज कुमार उत्तम, सहायक कमांडेंट की कमान वाला दल भी चुपचाप और विस्मय बनाते हुए सोनदही गांव अर्थात् अपने पहले मिलन स्थल के नजदीक पहुंच गया। जब निगरानी दल माओवादियों की मुखबिरी में बताए गए क्षेत्र में नजर रखे हुए था, तब उसने एक ग्रामीण को बड़े बर्तन के साथ गुप्त रूप से गांव के पीछे एक टीले की ओर जाते हुए देखा। थोड़ा सा अवलोकन और उस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति कमांडर के लिए माओवादियों के संदिग्ध स्थान का पता लगाने के पर्याप्त संकेत थे। घने पेड़-पौधों वाला टीला एक उपयुक्त रणनीतिक स्थान था, जिसके निकट राशन की आपूर्ति करने के लिए एक गांव था। श्री नीरज ने अपने निगरानी दल के सदस्यों को उस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति अपने मन में बैठाते हुए जंगल में अन्दर वापस जाने का आदेश दिया। संदिग्ध स्थान पर हमला करने के लिए, उन्होंने अपने सैन्य दलों को दो दलों में संगठित किया और उन्हें अपने निगरानी दल द्वारा एकत्र भौगोलिक स्थिति संबंधी जानकारी के आधार पर अवगत कराया। चूंकि, माओवादियों के स्थान का पता नहीं था, इसलिए उन्होंने निर्णय लिया कि दोनों दल अलग-अलग दिशाओं से पहाड़ी में प्रवेश करेंगे और पहाड़ी की चोटी की ओर जाएंगे। माओवादी संतरियों की नजरों से बचने के लिए पर्याप्त कवर वाले मार्गों की भी रूपरेखा तैयार की गई। उपयुक्त जानकारी देने के पश्चात, श्री नीरज और उप निरीक्षक/जीडी संदीप की कमान में एक-एक उप-दल दृढ़ निश्चय के साथ लक्ष्य की ओर आगे बढ़ा और पहाड़ी की तलहटी में पहुंच कर अलग-अलग हो गया। उस पहाड़ी पर चढ़ना, जहां शत्रु चोटी पर बैठा था और किसी भी घुसपैठिए को गोली मारने के लिए तैयार था, उनकी जान के प्रति खतरे से भरा हुआ था। फिर भी, घबराहट का कोई संकेत दिए बिना और अचानक हमले का सामना करने के लिए तैयार दोनों उप-दल तत्परता से आगे बढ़े। लगभग 0645 बजे, जैसा कि आशा थी, घने पेड़-पौधों में छिपे माओवादियों के एक संतरी ने सैन्य दल की गतिविधि को देख लिया और तत्काल उन पर अचानक एवं अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। इस प्रकार के हमले के लिए तैयार, स्काउट नामतः कांस्टेबल सरोज कुमार माथुर ने अपने स्थान पर मजबूती से डटे रह कर माओवादी पर भयंकर गोलीबारी शुरू कर दी। उनकी गोलीबारी इतनी भीषण थी कि माओवादी को अपने कवर से बाहर आने और सैन्य दलों पर गोलीबारी करने का कोई और मौका नहीं मिला। कांस्टेबल सरोज की कवरिंग गोलीबारी में, दल के सदस्य माओवादी संतरी पर हमला करने के लिए आगे बढ़े। परन्तु शीघ्र ही नजदीकी शिविर में मौजूद अन्य माओवादी बंदूक की लड़ाई में शामिल हो गए और आगे बढ़ रहे सैन्य दलों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी, कमांडर ने बदले हुए घटनाक्रम के अनुसार शीघ्र ही अपनी रणनीति पुनः तैयार की। चूंकि, भारी गोलीबारी सैन्य दलों के और आगे बढ़ने में बाधा उत्पन्न कर रही थी, इसलिए कमांडर ने उप निरीक्षक संदीप को माओवादी पर हमला करने के लिए उसकी पोजीशन की ओर बढ़ने का आदेश दिया। इसी बीच, श्री नीरज ने उप निरीक्षक संदीप के हमला शुरू करने तक माओवादियों को उलझाए रखने का निर्णय लिया। अपनी रणनीतिक ढंग से लाभकारी पोजीशन और अच्छी गोलीबारी की ताकत के बारे में आत्म विश्वास से पूर्ण माओवादियों ने मैदान नहीं छोड़ा, अपितु सुरक्षा बलों को भारी क्षति पहुंचाने की योजना बनाई। अपनी योजना को आगे बढ़ाने के लिए, माओवादियों ने सैन्य दलों को घेरना शुरू कर दिया, परन्तु यह वही क्षण था जिसकी श्री नीरज प्रतीक्षा कर रहे थे।

चूंकि, माओवादियों के स्थान का पता चल गया था, इसलिए उन्होंने अपने सैन्य दलों को उन कवर पर ग्रेनेड से भीषण गोलीबारी करने का आदेश दिया जिनके पीछे माओवादी छिपे हुए थे। इस अवसर पर, वे स्वयं कांस्टेबल सरोज के साथ अपनी जान की परवाह किए बगैर अपने कवर से बाहर आ गए और माओवादियों की पोजीशन पर एक के बाद एक ग्रेनेड फैंके। जवाबी हमला लाभदायक

साबित हुआ और कुछ माओवादी गंभीर रूप से घायल हो गए। कमांडर और उनके सैन्य दलों की साहसिक कार्रवाई ने जिसमें उन्होंने वास्तविक रूप से सीना तान कर शत्रु की गोलियों का सामना किया, माओवादियों को अपनी रणनीति पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर दिया।

परन्तु शीघ्र ही उप निरीक्षक संदीप अपने दल के साथ बन्दूकों की लड़ाई में शामिल हो गए और उन्होंने अपने साथियों नामतः हेड कांस्टेबल पवन कुमार और कांस्टेबल शबीर अहमद खान के साथ माओवादियों पर धावा बोल दिया और माओवादियों पर कहर बरपा दिया। तीनों व्यक्ति अपने ऊपर चलाई गई गोलियों की परवाह किए बिना माओवादियों की पोजीशन पर लगातार ग्रेनेड़ों से हमला करते हुए आगे बढ़े। कवर के बगैर उनके पहाड़ी पर चढ़ने और लगातार ग्रेनेडों के विस्फोट ने माओवादियों को भयभीत कर दिया। शीघ्र ही माओवादियों ने एक-दूसरे की सहायक गोलीबारी में उस क्षेत्र से भागना शुरू कर दिया। सैन्य दलों ने माओवादियों के पासे को पलट दिया और वे अब पागलों की तरह उनका पीछा कर रहे थे। उनकी बहादुरी और साहस को यह कल्पना करके बहुत सकारात्मक ढंग से महसूस किया जा सकता है कि किस प्रकार सैन्य दल साहसिक रूप से गोलियां बरसा रहे माओवादियों की ओर पहाड़ी पर दौड़ते हुए आगे बढ़ रहे थे। पीछा करने के दौरान, माओवादियों ने अपनी लाभकारी पोजीशन, घने जंगल और पहाड़ी भूभाग का फायदा उठाया और वे उस क्षेत्र से भाग गए। मुठभेड़ स्थल पर सैन्य दलों को एक महिला नक्सलवादी (बाद में जिसकी पहचान सरिता गंजू उर्फ उर्मिला, एक खूंखार माओवादी कमांडर के रूप में की गई) के शव के साथ 5.56 एम इंसास राइफल, 3 मैगजीन और जिंदा राउण्ड प्राप्त हुए। उसके पश्चात, दल ने भागने वाले माओवादियों द्वारा अपनाए गए संभावित मार्ग की तलाशी की और बड़ी मात्रा में संदिग्ध सामग्री अर्थात् दो स्वेदश निर्मित बन्दूकें, गोला-बारूद के 238 राउंड, एक रेडियों सेट, 1 वायरलेस सेट, माओवादी साहित्य, एक डेटोनेटर, एक मोबाइल सेट, एक कैन बम वायर आदि बरामद किए और खून के धब्बे यह दर्शाते थे कि मुठभेड़ में कई और माओवादी घायल हुए थे।

अपनी जान के प्रति संभावित खतरे के बावजूद, श्री नीरज कुमार उत्तम, सहायक कमांडेंट, उप निरीक्षक/जीडी संदीप, हेड कांस्टेबल पवन कुमार, कांस्टेबल सरोज कुमार माथुर और कांस्टेबल शबीर अहमद खान ने बहादुरी और अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया तथा माओवादियों पर जवाबी हमला किया। माओवादियों के पास भूभाग, विस्मय और गोलीबारी की ताकत के सभी लाभ थे, परन्तु कमांडर और उनके दल ने विलक्षण रणनीति, उत्तम दक्षता और शौर्य का प्रदर्शन किया जिसके फलस्वरूप एक माओवादी कमांडर मारा गया जबकि अन्य माओवादी गंभीर रूप से घायल हो गए और बड़ी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किया गया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री नीरज कुमार उत्तम, सहायक कमांडेंट, संदीप, उप-निरीक्षक, पवन कुमार, हेड कांस्टेबल, सरोज कुमार माथुर, कांस्टेबल, शबीर अहमद खान, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.05.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 165-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अखिलेश कुमार चौबे,
सहायक कमांडेंट

02. सुरेन्द्र कुमार पटेल,
उप निरीक्षक

03. धलविंदर सिंह,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 16.01.2016 को, पुलिस स्टेशन, गंगलूर, जिला बीजापुर (छत्तीसगढ़) के अंतर्गत ग्राम डल्ला के नजदीक 168 बटालियन सीआरपीएफ और माओवादियों के बीच कुछ देर तक गोलीबारी की एक घटना हुई। दोनों तरफ से गोलीबारी होने से सामान्य क्षेत्र में

माओवादियों को पकड़ने के लिए 204 कोबरा के श्री अखिलेश कुमार चौबे, सहायक कमांडेंट, द्वारा एक अभियान की योजना बनाई गई, जिसमें उन्होंने सर्वप्रथम माओवादियों के बच निकलने वाले संभावित मार्गों को अवरूद्ध किया और तत्पश्चात दिनांक 16.01.2016 से 18.01.2016 तक सामान्य क्षेत्र में तलाश और नष्ट करने का एक अभियान शुरू किया। अभियान के लिए, उन्होंने पुलिस स्टेशन, गंगलूर के अंतर्गत पांच गांवों अर्थात डल्ला, बादी, सुकनपल्ली, इटावर और कोरसेरमेटा को लक्ष्य बनाया।

योजना के अनुसार, श्री अखिलेश कुमार चौबे की कमान में राज्य पुलिस के एक प्रतिनिधि के साथ 204 कोबरा के तीन दल दिनांक 16.01.2016 को चुपचाप बेस कैंप, तरेम से रवाना हुए। दिनांक 16.01.2016 और 17.01.2016 को, सैन्य दलों ने उस क्षेत्र की पूर्ण तलाशी ली, परन्तु माओवादियों से कोई संपर्क नहीं हुआ। दिनांक 17.01.2016 की रात में जब सैन्य दल एलयूपी में थे, तब कमांडर को औटापल्ली, तरेम, हिदमापारा, गोटापल्ली और पेडिया गांवों के नजदीक माओवादियों की आवाजाही के बारे में एक सूचना प्राप्त हुई। सूचना प्राप्त होने पर, कमांडर ने अपनी रणनीति पुन: तैयार की और प्रत्येक दल को परस्पर सहयोग करते हुए तलाशी करने का एक अलग लक्ष्य दिया गया। भोर होते ही दल अपने लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ने लगे और जंगल की तलाशी शुरू कर दी। इसी प्रकार, श्री अखिलेश कुमार चौबे की कमान वाले दल ने हिदमापारा और गोटापल्ली गांवों के नजदीक स्थित जंगल में तलाशी शुरू कर दी।

लगभग 0915 बजे, जब श्री अखिलेश की कमान वाला दल जंगल की तलाशी करते हुए पहाड़ी पर चढ़ रहा था, तब ऊंचाई पर बैठे माओवादियों ने अचानक आईईडी से धमाका कर दिया और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। उक्त दल और विशेषकर स्काउट नामत: श्री अखिलेश, उप निरीक्षक/जीडी सुरेन्द्र कुमार पटेल और कांस्टेबल/जीडी धलविंदर सिंह की जान बाल-बाल बची, क्योंकि गोली उनकी बगल से निकल गई। सैन्य दल इस प्रकार के अचानक और आकस्मिक हमले के लिए पूरी तरह तैयार थे और इस प्रकार कोई बेशकीमती समय गंवाए बिना तुरंत हरकत में आए और अत्यधिक तीव्रता के साथ जवाबी हमला किया। निकट दूरी से एक भीषण मुठभेड़ शुरू हो गई। परिस्थिति माओवादियों के अत्यधिक अनुकूल थी, क्योंकि उन्होंने रणनीतिक रूप से लाभकारी पोजीशन ले रखी थी और इस प्रकार सैन्य दलों के जवाबी हमला करने के हर प्रयास को विफल कर रहे थे।

भू-भाग और घने जंगल की जानकारी का लाभ उठाकर सैन्य दलों को घेरने की माओवादियों की रणनीति को भांपकर, श्री अखिलेश ने अपनी चाल बदल दी और स्वयं एक ओर से हमला शुरू कर दिया। सर्वप्रथम उन्होंने अपने सैन्य दलों को माओवादियों पर जोरदार हमला करने का आदेश दिया, जिसने एक क्षण के लिए माओवादियों को बांध कर रख दिया। इस छोटे से अवसर का लाभ उठाते हुए और अपनी सुरक्षा के बारे में विचार किए बिना, श्री अखिलेश, उप निरीक्षक/जीडी सुरेन्द्र कुमार पटेल और कांस्टेबल/जीडी धलविंदर सिंह अपने कवर से बाहर आ गए और पूरी तरह से डटे हुए शत्रु के बिलकुल बगल में चले गए। इससे पहले कि माओवादी परिस्थिति का दुबारा जायजा ले पाते, इन बहादुर सैन्यकर्मियों ने उन पर बिलकुल निकट से गोलियों की बौछार कर दी। माओवादियों को लगे इस झटके से उनके बीच अफरा-तफरी फैल गई और उन्होंने पीछे हटना शुरू कर दिया, तथापि कुछ माओवादी, जो सुरक्षित रूप से कवर के पीछे डटे हुए थे, अभी भी मैदान में डटे रहे और इन बहादुर सैन्यकर्मियों पर जोरदार गोलीबारी की। यद्यपि गंभीर खतरे का सामना करते हुए सैन्य कर्मियों के भयंकर हमले ने माओवादियों की सुरक्षा को भेद दिया परन्तु कुछ अच्छी तरह से डटे हुए माओवादियों की गोलीबारी सैन्य दलों के आगे बढ़ने में बाधा पहुंचा रही थी। शत्रु की बंदूकों को शांत करने की जिम्मेदारी लेते हुए ये तीनों निडर व्यक्ति पुन: विलक्षण बहादुरी का प्रदर्शन करे हुए अपने कवर से बाहर आ गए और एक छिपे हुए माओवादी पर सधी हुई गोलीबारी की। उनकी सधी हुई गोलीबारी के परिणामस्वरूप वह माओवादी मारा गया। सैन्य दलों की निडरता से घबरा कर और यह देखकर कि भीषण हमले को और रोक पाना मुश्किल है, माओवादी हथियार और गोलाबारूद, आईईडी, पाइप बम और अन्य संदिग्ध सामग्री सहित एक काडर का शव तथा एक घायल काडर को छोड़कर मुठभेड़ स्थल से भाग गए।

की गई बरामदगी:

1.	12 बोर की राइफल	:	01
2.	पाइप बम (आईईडी)	:	01
3.	टिफिन बम	:	03
4.	एके 47 के खाली खोखे	:	05

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अखिलश कुमार चौबे, सहायक कमांडेंट, सुरेन्द्र कुमार पटेल, उप निरीक्षक, धलविंदर सिंह, कास्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18.01.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 166-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अजय कुमार, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

झारखण्ड में टरनर, पुडांग और बूढ़ापहाड़ क्षेत्र अविजित भू-भाग, अभेद्य ऊबड़-खाबड़ और सुरक्षा बलों के लिए सीमित पहुंच वाले मार्ग होने के कारण माओवादियों के लिए सुरक्षित शरण-स्थल माने जाते हैं। इस क्षेत्र में पिछले कुछ समय के दौरान उग्रवादियों और सुरक्षा बलों के बीच खूनी मुठभेड़ देखी गई हैं। इस क्षेत्र में पिछले काफी समय से सुरक्षा बल माओवादियों के विरूद्ध सतत अभियान चला रहे हैं। इसी बीच, उपर्युक्त क्षेत्रों में 80-100 हथियारबंद सदस्यों के साथ सीपीआई (माओवादी) सीसीएम अरविंद की मौजूदगी के बारे में विश्वसनीय सूत्रों से खुफिया जानकारी प्राप्त हुई, जिसकी अन्य उपलब्ध सूचना के साथ और पुष्टि की गई। तदनुसार, एक अभियान 'ट्राचंड' की योजना बनाई गई और इसे सीआरपीएफ की अन्य इकाइयों के साथ कोबरा-209 एवं 203 बटालियन के सैन्य दलों द्वारा पुलिस स्टेशन भंडारिया, जिला गढ़वा, झारखंड के अंतर्गत ग्राम झौलडेरा के वन क्षेत्र में शुरू किया गया।

योजना के अनुसार, श्री कमलेश सिंह, कमांडेंट की समग्र कमान में कोबरा 209 बटालियन के दो हमला दलों को लक्षित क्षेत्र में तलाशी और नष्ट करने के अभियान का कार्य सौंपा गया। दिनांक 09.07.2016 को सैन्य दल अपने बेस कैंप से अपने लक्षित क्षेत्र की ओर रवाना हुए और सावधानीपूर्वक आगे बढ़ते हुए, उन्होंने वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए पूर्ण विस्मय और गोपनीयता बनाए रखी। लक्ष्य के लिए अथक प्रयास करते हुए, दिनांक 11.07.2016 को लगभग 0430 बजे हमला दल लक्षित क्षेत्र की ओर अपने पूर्व निर्धारित/योजनागत मार्गों का अनुसरण करने के लिए दो दलों में विभाजित हो गया। लक्षित क्षेत्र की ओर चलते हुए सैन्य दल ग्राम-थलिया के नजदीक पहुंच गया और गांव से उत्तरी के साथ-साथ दक्षिणी पहाड़ियों को कवर कर लिया। गांव और जंगल के आस-पास की गतिविधियों को देखने के पश्चात, 209 कोबरा का दल गांव की तलाशी करने के लिए उत्तरी पहाड़ी से नीचे उतरा। जब हमला दल-1 रणनीतिक ढंग से गांव के पूर्व की ओर जा रहा था, तब स्काउट ने पहाड़ी पर लगभग 400-500 मीटर की दूरी पर कुछ संदिग्ध गतिविधि देखी और सैन्य दलों तथा कमांडर को सतर्क कर दिया। विद्यमान स्थिति को ध्यान में रखकर, जब सैन्य दलों ने चुपचात पहाड़ी की ऊपरी ढ़लान पर चढ़ना शुरू कर दिया, तब उनके सामने के पर्वत शिखर से गोलियों की बौछार आई। यह एक पूरी तरह से सुरक्षित घातक माओवादी घात थी।

दलों ने तत्काल पोजीशन ले ली और माओवादी गोलीबारी का जवाब दिया। माओवादियों की गोलीबारी से डरे बिना, सैन्य दलों ने माओवादियों की गोलीबारी का सामना करने और घात को तोड़ने के लिए बांयी और दांयी बगल को कवर करते हुए साहस के साथ ऊँचाई पर चढ़ना शुरू कर दिया। जब सैन्य दल रणनीतिक ढंग से माओवादी पोजीशन की ओर पहाड़ी पर चढ़ रहे थे और पहाड़ी की चोटी झण्डी के निकट थे, तब लगभग 1120 बजे माओवादियों ने उस स्थान के आस-पास लगाई गई आईईडी में श्रृंखलाबद्ध विस्फोट कर दिया। माओवादियों की रणनीतिक ढ़ंग से मजबूत पोजीशन, एलएमजी सहित अत्याधुनिक हथियारों का प्रयोग करते हुए उनकी भारी गोलीबारी और अब श्रृंखलाबद्ध ढंग से आईईडी विस्फोट के परिणामस्वरूप परिस्थिति उनके पक्ष में बदल रही थी। सैन्य दलों के लिए स्थिति खराब होती जा रही थी, क्योंकि फ्लैट ट्रैजेक्टरी वाले हथियारों से उनकी गोलीबारी निष्फल हो रही थी। उस समय एक साहसी और निडर कार्रवाई की आश्यकता थी।

स्थिति का जायजा लेकर और शत्रु को काबू में करने के लिए, हमला कमांडर श्री नितिन कुमार, उप कमांडेंट ने माओवादी चौकी पर जोरदार हमला करने का निर्णय लिया और अपने एक बहादुर सैन्य कर्मी एफ/सं./105161253 कांस्टेबल/जीडी अजय कुमार को निर्णायक भूमिका निभाने और पहाड़ी पर माओवादी पोजीशन की ओर एक यूबीजीएल फायर करने के लिए कहा। इस प्रकार की असाध्य स्थिति में, जहां शत्रु की गोलीबारी के सामने आ जाने का खतरा होने के कारण कोई भी चाल घातक हो सकती थी, कांस्टेबल/जीडी अजय कुमार ने बिना कुछ सोचे अवसर का लाभ उठाया और तुरंत कार्रवाई की। माओवादी पोजीशन पर यूबीजीएल से उनकी सधी हुई गोलीबारी ने माओवादियों के बीच आतंक पैदा कर दिया जिससे वे अपनी पोजीशन से पीछे हटने के लिए विवश हो गए। जब माओवादी सुरक्षित पोजीशन की ओर पीछे हटे, तो हमला कमांडर ने हमला दलों को माओवादियों का तीन दिशाओं से सामना करने का निर्देश दिया। कांस्टेबल/जीडी अजय कुमार अपने दल के साथ बांयी दिशा से आगे बढ़े। माओवादी भी स्थिति को अपने नियंत्रण से गंवाने के लिए तैयार नहीं थे, उन्होंने पुन: रणनीतिक ढंग से लाभकारी पोजीशन ले ली और सैन्य दलों पर गोलियों की भारी बौछार शुरू कर दी। लगभग 1210 बजे जब माओवादी बांयी ओर से आगे बढ़ रहे सैन्य दल पर हावी होने की कोशिश करते हुए प्रतीत हुए, तो कांस्टेबल/जीडी अजय कुमार पुन: अविजेय हस्ती के रूप में सामने आए। वे अपनी जान की परवाह किए बगैर माओवादियों पर अपनी एके-47 और यूबीजीएल के साथ

बहादुरी से गोलीबारी करते हुए आगे बढ़े और उन्हें भारी क्षति पहुंचाई। उनकी निर्भीक कार्रवाई के कारण सैन्य दलों ने दांयी और बांयी ओर से आगे बढ़ना शुरू कर दिया जिससे माओवादियों की ओर से भारी गोलीबारी किया जाना और ग्रेनेड फेंका जाना लगभग बंद हो गया।

इस प्रकार माओवादियों ने अत्यधिक आवेश में अपनी सारी गोलीबारी को कांस्टेबल/जीडी अजय कुमार की ओर मोड़ दिया, परन्तु बहादुर कांस्टेबल/जीडी अजय कुमार गरजती हुई बंदूकों और बरसती हुई गोलियों के बीच रणनीतिक ढंग से अपनी पोजीशन बदलते रहे। वे माओवादियों की पोजीशन के बिलकुल निकट पहुंच गए और यह स्थान नीचे स्थित होने एवं बिना कवर का होने के कारण वे तुलनात्मक ढंग से सुभेद्य पोजीशन में थे। निर्भीक रूप से आगे बढ़ने के दौरान, जब कांस्टेबल/जीडी अजय कुमार यूबीजीएल चलाने की कोशिश कर रहे थे, तब एक गोली उनके बाएं कंधे में लग गई परन्तु उनके साहस को नहीं डिगा पाई। अपनी जान की परवाह किए बगैर घायल कांस्टेबल/जीडी ने नि:स्वार्थ कर्तव्य निष्ठा और अदम्य वीरता के साथ लगातार अपनी पोजीशन संभाले रखी और सैन्य दलों को आगे बढ़ने और माओवादियों पर बांयी और दांयी ओर से हमला करने में सहायता की। यद्यपि सभी विषमताओं अर्थात् प्रतिकूल भू-भाग, अनुपयुक्त कवर और शत्रु की लगातार गोलीबारी ने कांस्टेबल/जीडी अजय कुमार के दृढ़निश्चय की परीक्षा ले ली थी, फिर भी उन्होंने अत्यधिक जोखिम उठाया और अपनी जान की परवाह किए बगैर अपनी सधी हुई गोलीबारी और रणनीतिक दक्षता से शत्रु का विनाश कर दिया। उस स्थान से ले जाते समय, घायल होने के कारण उनकी मृत्यु हो गई और उन्होंने शहादत प्राप्त की। उनकी शौर्यपूर्ण कार्रवाई के कारण, सैन्य दल माओवादी घात को तोड़ने में सफल हुए और उनका विनाश कर दिया। अभियान के दौरान, 209 कोबरा बटालियन के सं. 105161253 स्व. कांस्टेबल/जीडी अजय कुमार ने बहादुरी के साथ रणनीतिक दक्षता का प्रदर्शन किया और राष्ट्र तथा अपने दल के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री अजय कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.07.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 167-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. प्रवीण कुमार,
कांस्टेबल

02. भजू राम यादव,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 19 जनवरी, 2017 को, लगभग 0430 बजे पुलिस स्टेशन - हाजिन, जिला - बांदीपोरा, जम्मू एवं कश्मीर के अंतर्गत हाजिन शहर के खोसा मोहल्ले के एक मकान में छिपे एक खूंखार एलईटी आतंकवादी के बारे में बांदीपोरा के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक से एक विशिष्ट आसूचना प्राप्त हुई। सूचना के आधार पर, 45 बटालियन सीआरपीएफ, एसओजी (जम्मू एवं कश्मीर पुलिस) और 13 आरआर के संयुक्त सैन्य दलों द्वारा एक घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया गया।

भीड़-भाड़ वाला स्थान होने के कारण, जिस मकान में आतंकवादी छिपे हुए थे, उसकी वास्तविक स्थिति की पहचान नहीं की जा सकी। इसलिए, अचूक (फुल प्रूफ) घेराबंदी सुनिश्चित करने और छिपे हुए आतंकवादियों को भागने से रोकने के लिए सैन्य बलों ने एक-दूसरे से सटे 3 संदिग्ध मकानों की घेराबंदी की। 13 आरआर ने उत्तरी, पश्चिमी और दक्षिणी दिशा में भीतरी घेराबंदी की, जबकि पूर्वी दिशा को क्यूएटी 45 बटालियन सीआरपीएफ और एसओजी, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस द्वारा कवर किया गया। सी एवं डी/45 बटालियन सीआरपीएफ और सिविल पुलिस के सैन्य दलों ने आतंकवादियों के सभी बचाव मार्गों को अवरूद्ध करके बाहरी घेराबंदी की और अनियंत्रित

भीड़ के हस्तक्षेप को भी रोका, ताकि वे मुठभेड़ में आतंकवादियों के बच निकलने के अवसर को सुगम बनाने के लिए कानून और व्यवस्था की समस्या पैदा न कर सकें। जैसा कि आशा की गई थी, जब घिरे हुए आतंकवादियों के विरूद्ध अभियान के बारे में नजदीकी क्षेत्रों में खबर फैली, तो एक भारी भीड़ घटनास्थल के आस-पास एकत्र हो गई और अभियान में शामिल सैन्य दलों पर भारी पत्थरबाजी की। तथापि, सैन्य दलों ने भीड़ को दूर रखा और मजबूती से मोर्चा संभाले रखा।

प्रात:काल अर्थात 0630 बजे सैन्य दलों ने नियमों का पालन करते हुए आतंकवादियों को सुरक्षा बलों के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए एक उदघोषणा की। तथापि, संदिग्ध आतंकवादी ने इस उदघोषणा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और वह झुका नहीं। जब सैन्य दल धैर्य के साथ प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा कर रहा था, तब एक आम नागरिक के रूप में दिखने वाला और कश्मीरी फेरान पहने हुए एक व्यक्ति बिल्कुल पश्चिम में स्थित एक लक्षित मकान से बाहर निकला और उसने पूर्वी दिशा की ओर चलना शुरू कर दिया, जहां क्यूएटी 45 बटालियन सीआरपीएफ और एसओजी, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस ने पोजीशन ले रखी थी। जब वह सैन्य दलों के निकट पहुंचा, तो उसने अपने फेरान के भीतर झपट्टा मारा, अपनी एके राइफल निकाली और सैन्य दलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसमें जम्मू एवं कश्मीर पुलिस का एक कांस्टेबल घायल हो गया। सैन्य दलों के पोजीशन लेने और जवाबी कार्रवाई करने से पहले सैन्य दलों पर भारी गोलीबारी करते हुए, आतंकी तेजी से एसडीपीओ संबल के रक्षक वाहन की ओर गया। आतंकी ने एक ग्रेनेड निकाला और अधिक से अधिक सुरक्षा बलों को हताहत करने के लिए वाहन के भीतर ग्रेनेड फेंकने के लिए वाहन का पिछला दरवाजा खोलने का प्रयास किया।

उस समय तक सैन्य दलों ने पोजीशन ले ली थी और वे जवाबी कार्रवाई के लिए तैयार थे। उन्होंने नागरिकों के साथ-साथ समीप में तैनात अपने सैन्य दलों को किसी भी पारस्परिक क्षति से बचाने के लिए आतंकवादियों पर नियंत्रित गोलीबारी की। सैन्य दलों की जबरदस्त जवाबी गोलीबारी में आतंकवादी बाल-बाल बच गया क्योंकि बरसती हुई गोलियां उसके बिलकुल पास से निकल गईं। अब तक, आतंकवादी समझ चुका था कि वह सुरक्षा बलों से घिर गया है और बच निकलने का मौका नगण्य है। ऐसी विपरीत परिस्थतियों में, आतंकवादी ने घेराबंदी दल की ओर ग्रेनेड फेंकने के लिए अपना हताश पूर्ण प्रयास किया। ग्रेनेड सीआरपीएफ के कांस्टेबल/जीडी प्रवीण कुमार और कांस्टेबल/बगलर भजू राम यादव के नजदीक गिरा। तथापि, उपरोक्त व्यक्तियों की तीव्र प्रतिक्रिया और त्वरित कार्रवाई से इन दोनों की जान बच गई क्योंकि उन्होंने विस्फोट के स्थान से भलीभांति सोच-समझकर छलांग लगाई और वे चमत्कारिक ढंग से बच गए। इस स्थिति से भयभीत हुए बिना वे चमत्कारिक ढंग से बच गए। इन स्थिति से भयभीत हुए बिना और डर पर विजय पाते हुए, कांस्टेबल/जीडी प्रवीण कुमार और कांस्टेबल/बगलर भजूराम यादव ने आतंकवादी से आमने-सामने लड़ने का निर्णय लिया। यह दोनों के लिए अभी नहीं तो कभी नहीं का क्षण था। अपना धैर्य बनाए रखते हुए और विस्फोट के बाद के सदमे से उबरते हुए ये दोनों बहादुर युवक अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना और स्पष्ट तथा आसन्न खतरे के समक्ष असाधारण वीरता एवं अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए आतंकवादी की ओर झपट पड़े। उन्होंने अपनी सधी हुई गोलीबारी से आतंकवादी पर भीषण हमला किया और उसकी अगली चाल से पहले ही उसे मार गिराया।

मारे गए आतंकवादी की पहचान अबू मुसइब, एलईटी के डिवीजन कमांडर, श्रेणी ए+, एक खूंखार और अत्यधिक वांछित आतंकवादी के रूप में की गई। वह जकी उर रहमान लखवी (पाकिस्तान के एलईटी अभियान प्रमुख और 26/11 मुम्बई हमले के मास्टर माइंड) का भतीजा था। घटना स्थल से एक एके 56 असाल्ट राइफल, तीन मैगजीनें, अलग-अलग प्रकार के गोला-बारुद, ग्रेनेड और अन्य युद्ध जैसी सामग्रियां बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री प्रवीण कुमार, कांस्टेबल, भजू राम यादव, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.01.2017 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 168-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. राम किशन,
उप कमांडेंट

02. ओम प्रकाश,
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 19 जून, 2016 को लगभग 1530 बजे, जम्मू एवं कश्मीर के गांव लाडू, पुलिस स्टेशन-अवंतीपोरा, जिला पुलवामा में खाइबर मिल्क प्लांट के नजदीक लेथपोरा के बाहर आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में स्थानीय पुलिस से एक विशिष्ट खुफिया जानकारी प्राप्त होने पर, लक्षित क्षेत्र में 110 बटालियन सीआरपीएफ और एसओजी/जेकेपी के सैन्य दलों द्वारा एक संयुक्त घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया गया।

लक्षित स्थान के नजदीक पहुंचने के पश्चात, उक्त सैन्य दल दो हमला दलों में बांट दिया गया। पुलिस अधीक्षक अवंतीपोरा के नेतृत्व में और श्री रामकिशन, 110 बटा. सीआरपीएफ के उप-कमांडेंट की सहायता से प्रथम दल ने लक्षित स्थान की दक्षिणी दिशा से घेराबंदी की और श्री किशोर कुमार, कमांडेंट 110 बटालियन सीआरपीएफ की कमान में और एसओजी, पम्पोर के श्री एजाज अहमद, उप पुलिस अधीक्षक (आप्स.) की सहायता से द्वितीय दल ने लक्षित स्थान की उत्तरी दिशा से घेराबंदी की। एक बार क्षेत्र की घेराबंदी पूरी हो जाने पर, आतंकवादियों को सैन्य दलों के सामने आत्मसमर्पण करने का अवसर देने के लिए एक घोषणा की गई। तथापि, अपील की ओर कोई ध्यान न देते हुए, आतंकवादियों ने द्वितीय दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और दक्षिण की ओर चले गए, जहां प्रथम दल ने पहले ही पोजीशन ले रखी थी। पुलिस अधीक्षक, अवंतीपोरा और श्री राम किशन, उप कमांडेंट ने अपनी रणनीतिक दक्षता का प्रदर्शन करते हुए अपने सैन्य दलों को शांत रहने का निर्देश दिया। उन्होंने आतंकवादियों के अपनी ओर आने की प्रतीक्षा की। जब उन्होंने आतंकवादियों को अपनी ओर भागते हुए देखा, तो दोनों अधिकारियों ने गोलियों की बौछार करते हुए अदम्य साहस और अनुकरणीय वीरता के साथ आतंकवादियों का सामना किया। स्वयं को सुरक्षा बलों द्वारा घिरा हुआ पाकर और स्थिति की गंभीरता को महसूस करते हुए, आतंकवादी नजदीक घने बगीचे में चले गए। इसी बीच, दोनों दलों ने आतंकवादियों को भागने से रोकने के लिए घेराबंदी को मजबूत कर दिया।

दोनों तरफ से गोलीबारी के दौरान, कुछ नागरिक जो अपने खेतों में काम कर रहे थे, मुठभेड़ स्थल पर फंस गए। ऐसी नाजुक स्थिति में, कमांडेंट 110 बटालियन ने लोगों के प्रति अपने कर्त्तव्यों की प्रतिबद्धता का निर्वाह करते हुए समझदारी से काम लिया। उन्होंने हेड कांस्टेबल/जीडी ओम प्रकाश, 110 बटालियन और एसओजी, पम्पोर के साथ अपनी जान का गंभीर खतरा उठाया और सभी फंसे हुए नागरिकों को भारी दुतरफा गोलीबारी से निकालना शुरू कर दिया। वह बगीचा सघन था और आतंकवादी बलों को धोखा देने के लिए लगातार अपनी पोजीशन बदल रहे थे। जान को गंभीर और आसन्न खतरे के समक्ष एक बार भी पीछे हटे बिना, पुलिस अधीक्षक अवंतीपोरा ने श्री राम किशन, उप कमांडेंट के साथ शत्रु का डटकर सामना करने का निर्णय लिया। अनुकरणीय वीरता, अदम्य साहस और उच्चकोटि की व्यावसायिकता का प्रदर्शन करते हुए, दोनों अधिकारी भारी गोलीबारी के बीच रेंगकर आतंकवादियों की ओर गए और आतंकवादियों पर हमला किया। आतंकवादियों ने मौत को अपने इर्द-गिर्द मंडराते पाकर आगे बढ़ रहे सैन्य दलों पर गोलीबारी और तेज कर दी।

उपर्युक्त दोनों अधिकारियों की गोलीबारी से आहत होकर, आतंकवादी उस दिशा में भागे, जहां कमांडेंट 110 बटालियन ने अपने दल के साथ पोजीशन ले रखी थी। 110 बटालियन के हेड कांस्टेबल/जीडी ओम प्रकाश और एसओजी, जेएंडके पुलिस के एएसआई/जीडी इरशाद अहमद को उनकी ओर आ रहे आतंकवादियों का सामना करने का निदेश दिया गया। दोनों व्यक्तियों ने अत्यधिक नाजुक स्थिति में अपना धैर्य बनाए रखा, क्योंकि उन्होंने उपयुक्त समय आने तक लक्ष्य का इंतजार किया। जब आतंकवादी दोनों व्यक्तियों की ओर पहुंचे, तो उन्होंने महसूस किया कि उनका कार्रवाई का समय आ गया है और उन्होंने अपनी ओर आने वाले आतंकवादियों पर हमला कर दिया। विकट प्रतिकूल स्थिति में अतुलनीय वीरता, साहस और सच्ची भावना का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने उग्रवादियों पर गोलीबारी की और उनमें से एक को मार गिराया। तथापि, अन्य दो आतंकवादी नहर और घनी झाड़ियों का लाभ उठाकर भागने में सफल हो गए। मुठभेड़ के पश्चात तलाशी के दौरान सैन्य दलों द्वारा, मारे गए आतंकवादी, खुबेब उर्फ अबू कासिम निवासी पाकिस्तान, एलईटी के ए+ श्रेणी के सदस्य के शव के साथ एके-47 राइफल, दो मैगजीन और पच्चीस गोलाबरूद बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री राम किशन, उप कमांडेंट, ओम प्रकाश, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.06.2016 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 169-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. राकेश शर्मा,
सहायक कमांडेंट

02. गगनदीप सिंह,
कांस्टेबल

03. पटेल विशाल रामसिंह,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

ग्राम गाहमी, पुलिस स्टेशन चांदीपोश, जिला सुंदरगढ़ (ओडिशा) के नजदीक हथियारबंद माओवादियों की आवाजाही के बारे में एक खुफिया जानकारी प्राप्त होने पर, दिनांक 11.11.2015 को 2000 बजे 19वीं बटालियन सीआरपीएफ और राज्य पुलिस के संयुक्त सैन्य दलों द्वारा श्री राकेश शर्मा, सहायक कमांडेंट की कमान में "सरग्राम-2" नामक एक अभियान शुरू किया।

श्री राकेश शर्मा की कमान में दल गुप्त रूप से निकला और ब्राह्मणी नदी जिसे लक्षित क्षेत्र तक पहुंचने के लिए पार करना था, के किनारे पहुंच गया। माओवादियों के बारे में अपनी समझ और नदी पार करने के ऐसे संभावित स्थानों पर सामान्य तौर पर लगाई गई उनकी चेतावनी प्रणाली पर भरोसा करके कमांडर ने किसी अवांछित उपस्थिति का पता लगाने के लिए उस क्षेत्र की कुछ देर तक निगरानी की। इस प्रक्रिया के दौरान, स्काउट नामतः कांस्टेबल/जीडी गगनदीप सिंह और कांस्टेबल/जीडी विशाल पटेल, जिन्होंने मुख्य दल के 35 मीटर आगे पोजीशन ले रखी थी ने दो मानव छायाकृतियों की गतिविधि देखी जो नदी के पार जंगल से बाहर निकले और उनकी ओर आने लगे। यह सूचना कमांडर के साथ साझा की गई, जिन्होंने पूरे दल को सतर्क कर दिया और रेंगकर स्काउट की ओर गए। नाइट विजन डिवाइस के माध्यम से स्पष्ट रूप से देखने पर संदिग्ध व्यक्तियों के कंधों पर तैयार पोजीशन में लटक रहे हथियारों की पुष्टि हुई।

कार्रवाई का समय आ गया था और कमांडर और उनके साथियों ने किसी भी संभावित घटना से निपटने के लिए धैर्यपूर्वक और अपने हाथों में हथियारों को मजबूती से पकड़ कर उनकी प्रतीक्षा की। कमांडर ने पहले ही अपने साथियों को निर्देश दे दिया था कि वे सबसे पहले शत्रु को चुनौती देंगे, क्योंकि वे कोई भी गलती करके अवसर को गंवाना नहीं चाहते थे, जिसे उन्होंने घने और अंधेरे जंगल में कठिन यात्रा करने के पश्चात प्राप्त किया था। यह सुनिश्चित करने के लिए कि संदिग्ध व्यक्ति अथवा माओवादी अंधेरे और घने जंगल की आड़ में भागने न पाएं, उन्होंने उनको नदी पार कर उनके नजदीक आ जाने पर चुनौती देने की योजना बनाई थी। यद्यपि, इसमें उनकी जान को बहुत अधिक जोखिम था। नदी पार करने पर, दो संदिग्धों/माओवादियों, जो अभी भी सैन्य दलों से लगभग 40 मीटर की दूरी पर थे ने सीटी बजाई। यह संभवतः एक संकेत था और चार अन्य संदिग्ध व्यक्ति जंगल से बाहर आते हुए दिखाई दिए। इस स्थिति ने कमांडर, जो माओवादियों को चुनौती देने के लिए तैयार थे, को उलझन में डाल दिया था, क्योंकि उस समय वे अपने स्काउट की सहायता करने की स्थिति में नहीं थे और इस लिए उन्होंने अपनी योजना बदल दी। तत्पश्चात, सैन्य दलों की उपस्थिति से अनभिज्ञ दोनों संदिग्ध/माओवादी अपने बीच लगभग 10 मीटर की दूरी बनाकर उनकी दिशा में आगे बढ़े। उस परिस्थिति ने कमांडर के सामने एक चुनौती खड़ी कर दी परन्तु उन्होंने तब तक प्रतीक्षा करने का साहसिक और बहादुरीपूर्ण निर्णय लिया जब तक पीछे आने वाले संदिग्ध/माओवादी नदी पार न कर लें ताकि वे भी घात में फंस जाएं अथवा दोनों माओवादी उनके और नजदीक न आ जाएं। कांस्टेबल गगनदीप और कांस्टेबल विशाल पटेल भी अपने कमांडर की योजना समझ गए थे और उन्होंने धैर्य के साथ आदेश की प्रतीक्षा की। हथियारबंद और गोलीबारी के लिए तत्पर संदिग्ध व्यक्तियों का प्रत्येक कदम आनुपातिक रूप से सैन्य दलों की जान के खतरे को बढ़ा रहा था परन्तु बहादुर सैन्य दलों ने अपनी हिम्मत बनाए रखी और कार्रवाई की प्रतीक्षा की। अग्रणी संदिग्ध व्यक्ति सावधानीपूर्वक आगे बढ़ा और अपनी बंदूक को खतरनाक ढंग से उनकी ओर ताने हुए सैन्य दलों के बिल्कुल पास अर्थात उनसे लगभग 10 मीटर दूर पहुंच गया, परन्तु दूसरे समूह को अभी नदी पार करना शुरू करना था। जब अग्रणी संदिग्ध व्यक्ति जंगल में प्रवेश करने के लिए और आगे बढ़ा, तो उसने सैन्य दलों की अवांछित उपस्थिति को भांप लिया और एक पत्थर की आड़ लेते हुए अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। उसका साथी भी उसके साथ गोलीबारी में शामिल हो गया और सैन्य दलों पर माओवादियों की ओर से गोलियां बरसनी शुरू हो गई। कमांडर ने तत्काल गोलीबारी शुरू कर दी जिसमें उनके साथियों ने सहायता प्रदान की। निकट दूरी अर्थात् 10 मीटर से एक भीषण बन्दूक की लड़ाई शुरू हो गई। यह देखकर कि उनके स्काउट सैन्य दलों की घात में फंस गए हैं पीछे वाले माओवादियों ने भी उनकी सहायता के लिए भारी गोलीबारी शुरू कर दी। यह जानते हुए कि माओवादी अधिक देर तक नहीं टिकेंगे और अंधेरे की आड़ में भागने की कोशिश करेंगे,

श्री राकेश शर्मा कांस्टेबल गगनदीप और कांस्टेबल विशाल पटेल के साथ माओवादियों की भारी गोलीबारी के बीच रेंग कर आगे बढ़े और हमले के लिए एक उपयुक्त स्थान प्राप्त करने के लिए अपनी पोजीशन बदल ली। अपेक्षित स्थान प्राप्त कर लेने पर, इन तीनों ने सधी हुई गोलीबारी से अग्रणी माओवादी को मार गिराया।

पहले माओवादी को मारने के पश्चात, तीनों बहादुर ने फिर उसके साथी को निशाना बनाया जो कुछ दूरी पर था और सैन्य दलों पर भारी गोलीबारी कर रहा था। परन्तु, नदी के उस पार वाले माओवादियों की निरंतर गोलीबारी कमांडर और उनके साथियों को आगे बढ़ने से रोक रही थी। इसी बीच, अंधेरे और सहायक गोलीबारी का लाभ उठाकर, फंसा हुआ माओवादी भी सफल होने के लिए युक्तिपूर्वक जंगल की ओर आगे बढ़ा। श्री राकेश शर्मा ने माओवादी के इरादे को भांप लिया और यह पाया कि वह बचकर भाग निकलने के लिए काफी बेहतर स्थिति में है। उसकी योजना से निपटने के लिए, श्री राकेश शर्मा ने अपने साथियों को गोलीबारी की परवाह नहीं करने और दूसरी माओवादी की ओर बढ़ने का आदेश दिया। दोनों सैनिकों ने अपने कमांडर का अनुसरण किया और उपलब्ध पत्थरों की आड़ लेते हुए वे भाग रहे माओवादी की ओर आगे बढ़े। जब माओवादी ने देखा कि साहसी सैनिक उसके पीछे आ रहे हैं, तो वह जंगल की ओर भागा। उसे भागते हुए देखकर, श्री राकेश शर्मा और उनके साथियों ने गोलीबारी की और उसे घायल कर दिया जिसके कारण उसका हथियार उसके हाथ से गिर गया और वह घने जंगल में प्रवेश करने से पूर्व लंगड़ाकर चलता हुआ दिखाई दिया। जब नदी के पार वाले माओवादियों ने अपनी गोलीबारी बंद कर दी और उस क्षेत्र से भाग गए तो मुठभेड़ स्थल की संपूर्ण तलाशी की गई। तलाशी के दौरान मुठभेड़ स्थल से एक माओवादी का शव और दो .303 राइफलें, गोलाबारूद के 113 राउण्ड, दो मैगजीने और अन्य संदिग्ध सामग्रियां बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री राकेश शर्मा, सहायक कमांडेंट, गगनदीप सिंह, कांस्टेबल और पटेल विशाल रामसिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.11.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 170-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. विवेकानन्द सिंह,
उप कमांडेंट

02. भवानी सिंह मीणा,
उप निरीक्षक

03. लखन लाल मीणा,
उप निरीक्षक

04. वी. डी. कमलाकर,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12.03.2015 को, पुलिस स्टेशन चैनपुर, जिला-गुमला, झारखंड के अंर्तगत गांव सरगांव की सीमा पर स्थित जंगल में सेंट्रल कमेटी मेंबर अरविंद जी के नेतृत्व में सीपीआई (माओवादी) के एक गुट की मौजूदगी के बारे में एक खुफिया जानकारी प्राप्त हुई। माओवादियों को पकड़ने के लिए, "नेपच्यून स्पीयर-15" नामक कोड वाला एक अभियान शुरू किया गया, जिसमें 209 कोबरा के 04 दल 203 और 207 कोबरा का 01-01 दल, 158 बटालियन के तीन दल, झारखंड जगुआर के 04 दल और राज्य पुलिस के घटक शामिल थे। उक्त क्षेत्र को निशाना बनाने के लिए, तीन विभिन्न दिशाओं और स्थानों से तीन हमला दल शामिल किए गए और प्रत्येक को तलाशी के लिए एक विशिष्ट क्षेत्र दिया गया। इसी प्रकार, 209 कोबरा के चार दल दिनांक 12.03.2015 को 2200 बजे वाहनों में रांची से रवाना हुए और कुछ दूरी तय करने के पश्चात दिनांक 13.03.2015 को लगभग 0130 बजे ग्राम कोटम के नजदीक वाहनों को छोड़ दिया। वहां से सैन्य दल निर्धारित मार्ग से दिए गए लक्षित क्षेत्र की ओर पैदल आगे बढ़े। लक्षित क्षेत्र के नजदीक पहुंच कर, हमला दल 1 के भाग के

रूप में चार दल विभाजित हो गए और उन्होंने दो हमला समूह तैयार कर लिए। इनमें से एक समूह, जिसमें दो दल थे, बचाव मार्गों को अवरूद्ध करने के लिए लक्षित क्षेत्र के पीछे स्थित पहाड़ी की ओर गया, जबकि दो दलों वाला दूसरा समूह निडरतापूर्वक तलहटी अर्थात् लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ा। लगभग 0700 बजे, मो. अरसी, एसडीपीओ गुमला के साथ श्री विवेकानन्द, उप कमांडेंट की कमान में दो दल संभावित छिपने के ठिकाने की ओर आगे बढ़े; उन्होंने देखा कि कुछ दूरी पर एक छोटी नदी में दो संदिग्ध व्यक्ति मौजूद है। कमांडर ने तत्काल एक छोटा दल तैयार किया, जिसमें श्री बृजेश, सहायक कमांडेंट, उप निरीक्षक/जीडी भवानी लाल मीणा और कांस्टेबल/जीडी वी॰डी. कमलाकर शामिल थे और संदिग्धों को पकड़ने के लिए इसके साथ आगे बढ़े। यह दल मुश्किल से कोई 50 मीटर ही आगे बढ़ा था, जब जंगल में छिपे माओवादियों ने इस पर अचानक भारी गोलीबारी शुरू कर दी। दल ने तुरंत पोजीशन ले ली और जवाबी हमला किया। परंतु, घने पेड़-पौधों के कारण माओवादियों का स्थान और संख्या स्पष्ट नहीं थी। इसी बीच दो संदिग्ध जंगल में भाग गए और उसमें गायब हो गए। जब शत्रु ने घने पेड़-पौधों में रणनीतिक पोजीशन ले ली और अपनी इच्छानुसार गोलीबारी शुरू कर दी, तो सैन्य दलों के लिए आगे बढ़ना मुश्किल हो गया। उस अवसर पर, श्री विवेकानन्द, उप कमांडेंट ने प्रारंभिक विस्मय को दूर किया और उन्होंने अपने दल को अपनी बंदूके शांत रखने का आदेश देते हुए अपनी रणनीतिक दक्षता का प्रदर्शन किया। उसी समय, उन्होंने उप निरीक्षक/जीडी लखन लाल मीणा को, जो दो दलों के साथ पीछे थे, आगे बढ़ने और उस दिशा में भारी गोलीबारी करने का आदेश दिया, जहां से गोलीबारी आ रही थी। इसके परिणामस्वरूप, माओवादियों ने अग्रणी दल पर गोलीबारी बंद कर दी और अपनी गोलीबारी पीछे वाले दल पर केंद्रीत कर दी। बहादुर सैन्य दलों ने इस स्थिति का लाभ उठाया और अपनी अगली चाल को गुप्त रखने के लिए घने पेड़-पौधों के पीछे से रेंगकर आगे बढ़े। दूसरी ओर, उप निरीक्षक/जीडी लखन लाल मीणा ने अपने सैन्य दलों का बहादुरी से नेतृत्व किया और माओवादियों की पोजीशन की ओर उग्र, किन्तु सावधानीपूर्वक ढ़ंग से आगे बढ़े। अपनी पोजीशन की ओर सैन्य दलों को आगे बढ़ता हुआ भांप कर, माओवादियों ने अपनी सुरक्षा के लिए लगाई गई आईईडी के श्रृंखलाबद्ध विस्फोट किए। आईईडी के विस्फोट ने सैन्य दलों को आगे बढ़ने से रूकने पर मजबूर कर दिया, परन्तु तब तक कमांडर माओवादियों की सुरक्षा को तोड़ने में सफल हो गए थे और अपने निडर सैनिकों के छोटे दल के साथ रेंगकर माओवादियों के बिल्कुल निकट पहुंच गए। माओवादी पत्थरों और लकड़ियों से बने हुए सुरक्षित मोर्चों के पीछे अच्छी तरह डटे हुए थे। छोटे दल के विरुद्ध लड़ाई बहुत ज्यादा विषम थी और माओवादियों की संख्या काफी अधिक थी, परन्तु इसकी परवाह किए बिना श्री विवेकानन्द, उप कमांडेंट ने अपने दल को माओवादियों पर भारी गोलीबारी करने का आदेश दिया। भीषण हमले में कुछ माओवादी घायल हो गए और उन्हें मौर्चों के पीछे झुकते हुए देखा गया। अचानक और हतप्रथ करनेवाले हमले ने माओवादियों के आत्मविश्वास को डिगा दिया और कुछ माओवादी अपने घायल काडरों को लेकर जंगल के भीतर पीछे हटने लगे जबकि अन्य शेष माओवादियों ने सैन्य दलों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए सुरक्षित आड़ के पीछे पोजीशन बनाए रखी। माओवादियों को उनकी पोजीशन से खदेड़ने के लिए, सैन्य दलों ने भारी गोलीबारी की और कम दूरी से एक भीषण बंदूक की लड़ाई शुरू हो गई। गोलियां बहादुर सैनिकों के बिल्कुल पास से निकल रही थीं, परन्तु अडिग रहते हुए और अपनी जान की परवाह न करते हुए सैन्य दल अपने स्थान पर मजबूती से डटे रहे। गतिरोध को समाप्त करने और माओवादियों पर उनके अड्डे में ही हमला करने के लिए, श्री विवेकानन्द, उप कमांडेंट ने पुनः उप निरीक्षक/जीडी लखन लाल मीणा को अपनी दिशा से आगे बढ़ने का आदेश दिया। जब माओवादियों ने दो दिशाओं से सैन्य दलों को आगे बढ़ते हुए देखा, तो उन्होंने सैन्य दलों पर साथ-साथ गोलीबारी करते हुए एक-एक करके भागना शुरू कर दिया। माओवादियों को भागने की योजना बनाते हुए देखकर, बहादुर सैन्य दलों का छोटा दल अपनी आड़ से बाहर निकला और उन पर भयंकर गोलीबारी करते हुए आगे बढ़ा। नजदीकी आमने-सामने की बंदूकों की लड़ाई में बिना किसी आड़ के बहादुर दल ने एक माओवादी को मार गिराया, जबकि अन्य को घायल कर दिया। इस निर्भीक और साहसिक कार्रवाई ने माओवादियों को हतप्रभ कर दिया और वे उस क्षेत्र से भाग गए। दल ने कुछ दूरी तक माओवादियों का पीछा किया, परन्तु माओवादियों घने जंगल का लाभ उठाकर भाग गए।

उपर्युक्त अधिकारियों और कार्मिकों द्वारा प्रदर्शित अत्याधिक वीरतापूर्ण कार्रवाई से न केवल लड़ाई की दिशा बदल गई और एक माओवादी को मार गिराया गया, बल्कि इससे सैन्य दलों को उनकी घात में फंसने से भी बचाया जा सका। रणनीतिक ढंग से तैनात और सुरक्षित बचाव के साथ लाभपूर्ण पोजीशन लिए हुए माओवादियों पर जवाबी हमला किया गया और गंभीर रूप से घायल होने के पश्चात वे भागने पर मजबूर हो गए। क्षेत्र की तलाशी लेने पर, एक माओवादी के शव के साथ 01 यूएसए निर्मित स्प्रिंग फील्ड राइफल, एक वाकी टाकी सेट, 112 गोलाबारूद, 18 इलेक्ट्रोनिक डेटोनेटर, 10 नॉन-इलेक्ट्रोनिक डेटोनेटर और विविध प्रकार की अन्य सामग्रियां बरामद की गईं।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री विवेकानन्द सिंह, उप कमांडेंट, भवानी सिंह मीणा, उप निरीक्षक, लखन लाल मीणा, उप निरीक्षक और वी॰डी. कमलाकर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.03.2015 से दिया जाएगा।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August 2017

No. 108-Pres/2017—The President is pleased to award the President's Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Delhi Fire Service :—

i) Shri Hari Singh Meena (Posthumous)
Leading Fireman

ii) Shri Hari Om (Posthumous)
Leading Fireman

2. On 24.02.2017 at 05.35 hrs, a call was received at Delhi Fire Service Control Room that a fire broke out in the Chatkora Food and Snacker at Shop No. 15, H-Block, Lal Market, Vikaspuri, New Delhi. Immediately two Fire Tenders under the leadership of Sub Officer, Shri Raj Singh rushed to the spot. After reaching on the spot the crew found that the huge flames are coming out from the shop and the shutter found locked from outside. Crowd informed that 04 Nos. of LPG Cylinders, Refrigerator, Cooking Oil, Wooden Serving counter etc. may be involved in fire. Fire was spreading rapidly due to leakage of LPG. The crew immediately started fire fighting operation. Leading Fireman Shri Hari Singh Meena and Shri Hari Om dared to reach near to the burning shop without caring tot the leaping out flames and presence of explosive gas. They started breaking the shutter with the available tools. Fire Operator Shri Naveen and Shri Ravinder were protecting them with the charged hose line. During the operation, a blast occurred inside the shop resulting in ripping of shutter owing to blast waves. The crew members namely Leading Fireman Hari Singh Meena and Hari Om, Fire Operator Naveen and Ravinder received severe burn injuries. Leading Fireman Shri Hari Singh Meena was taken to Park Hospital, Keshopur where the Doctor declared him brought dead. Leading Fireman Shri Hari Om, Fire Operator Shri Naveen and Fire Operator Shri Ravinder were taken to DDU Hospital, Hari Nagar where Shri Hari Om was given life saving treatment but could not be revived and died. Fire Operator Shri Naveen and Ravinder Kumar were discharged from the hospital after treatment.

3. Leading Fireman, Shri Hari Singh Meena and Shri Hari Om, thus displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

4. These awards are made for gallantry under Rule 3 (i) of the Rules governing the award of President's Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under rule 5 (a) w.e.f. 24.02.2017

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 109-Pres/2017—The President is pleased to award the President's Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Delhi Fire Service :—

i) Shri Sunil Kumar (Posthumous)
Fireman

ii) Shri Manjeet Singh (Posthumous)
Fire Operator

2. On 28.09.16 at 16.45 hrs, a call was received at Delhi Fire Service Control Room that a fire broke out in the factory premises located at C-389, Narela Industrial Area, Delhi. Immediately 05 Fire Tenders along with crew from Bhorgarh, Narela and Rohini Fire Stations under the leadership of Station Officer Shri Sumit Kumar rushed to the spot. On arrival, crew observed that the factory comprised of basement, ground plus three upper floors used for manufacturing plastic plates/glasses with huge storage of raw materials and finished goods is in fire. The Officer-in-charge immediately declared the fire as "Medium category" and started fire fighting operation. During the fire fighting, the crew heard that two persons are trapped in fire. To trace and rescue the trapped persons, two teams comprising of Sub Officer Shri Tej Pal, Fireman Shri Sunil Kumar, Fireman Shri Anoop Singh and Fire Operator Shri Manjeet Singh were instructed to enter inside the building with the charged hose line. Both the teams, fully aware of the risk involved due to the high temperature and smoke, entered into the building without caring to their lives and started fire fighting and rescue operation.

3. At around 2200 hrs, two huge blasts took place in the building that led to collapse of structure. Crew members working inside the building were perished under the rubble of the hot building materials. Sub-officer Shri Tej Pal and Fireman Anoop Singh found with severe burn injuries. Fire Operator Shri Manjeet Singh and Fireman Shri Sunil Kumar found missing. Their bodies were extricated from the debris on 1st October, 2016.

4. Fireman, Shri Sunil Kumar and Fire Operator Shri Manjeet Singh thus displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

5. These awards are made for gallantry under Rule 3 (i) of the Rules governing the award of President's Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under rule 5 (a) w.e.f. 28.09.2016

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 110 -Pres/2017—The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Delhi Fire Service :—

i) Shri Naveen
Fire Operator

ii) Shri Ravinder Kumar
Fire Operator

2. On 24.02.2017 at 05.35 hrs, a call was received at Delhi Fire Service Control Room that a fire broke out in the Chatkora Food and Snacker at Shop No. 15, H-Block, Lal Market, Vikaspuri, New Delhi. Immediately two Fire Tenders under the leadership of Sub Officer, Shri Raj Singh rushed to the spot. After reaching on the spot the crew found that the huge flames are coming out from the shop and the shutter found locked from outside. Crowd informed that 04 Nos. of LPG Cylinders, Refrigerator, Cooking Oil, Wooden Serving counter etc. may be involved in fire. Fire was spreading rapidly due to leakage of LPG. The crew immediately started fire fighting operation. Leading Fireman Shri Hari Singh Meena and Shri Hari Om dared to reach near to the burning shop without caring tot the leaping out flames and presence of explosive gas. They started breaking the shutter with the available tools. Fire Operator Shri Naveen and Shri Ravinder were protecting them with the charged hose line. During the operation, a blast occurred inside the shop resulting in ripping of shutter owing to blast waves. The crew members namely Leading Fireman Hari Singh Meena and Hari Om, Fire Operator Naveen and Ravinder received severe burn injuries. Leading Fireman Shri Hari Singh Meena was taken to Park Hospital, Keshopur where the Doctor declared him brought dead. Leading Fireman Shri Hari Om, Fire Operator Shri Naveen and Fire Operator Shri Ravinder were taken to DDU Hospital, Hari Nagar where Shri Hari Om was given life saving treatment but could not be revived and died. Fire Operator Shri Naveen and Ravinder Kumar were discharged from the hospital after treatment.

3. Fire Operator, Shri Naveen and Shri Ravinder Kumar thus displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

4. These awards are made for gallantry under Rule 3 (i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under rule 5 (a) w.e.f. 24.02.2017

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 111 -Pres/2017—The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Delhi Fire Service :—

i) Shri Tej Pal
Sub – Officer

ii) Shri Anoop Singh
Fireman

2. On 28.09.16 at 16.45 hrs, a call was received at Delhi Fire Service Control Room that a fire broke out in the factory premises located at C-389, Narela Industrial Area, Delhi. Immediately 05 Fire Tenders along with crew from Bhorgarh, Narela and Rohini Fire Stations under the leadership of Station Officer Shri Sumit Kumar rushed to the spot. On arrival, crew observed that the factory comprised of basement, ground plus three upper floors used for manufacturing plastic plates/glasses with huge storage of raw materials and finished goods is in fire. The Officer-in-charge immediately declared the fire as "Medium category" and started fire fighting operation. During the fire fighting, the crew heard that two persons are trapped in fire. To trace and rescue the trapped persons, two teams comprising of Sub Officer Shri Tej Pal, Fireman Shri Sunil Kumar, Fireman Shri Anoop Singh and Fire Operator Shri Manjeet Singh were instructed to enter inside the building with the charged hose line. Both the teams, fully aware of the risk involved due to the high temperature and smoke, entered into the building without caring to their lives and started fire fighting and rescue operation.

3. At around 2200 hrs, two huge blasts took place in the building that led to collapse of structure. Crew members working inside the building were perished under the rubble of the hot building materials. Sub-officer Shri Tej Pal and Fireman Anoop Singh found with severe burn injuries. Fire Operator Shri Manjeet Singh and Fireman Shri Sunil Kumar found missing. Their bodies were extricated from the debris on 1st October, 2016.

4. Sub-Officer Shri Tej Pal and Fireman Shri Anoop Singh thus displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, leadership, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

5. These awards are made for gallantry under Rule 3 (i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under rule 5 (a) w.e.f. 28.09.2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 112-Pres/2017—The President is pleased to award the President's Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Fire Service Officers of CAD, Pulgaon, Ministry of Defence :—

1.	Shri Balu Pandurag Pakhare Leading Hand Fire	(Posthumous)
2.	Shri Amit Mahadeorao Dandekar Fire Engine Driver	(Posthumous)
3.	Shri Amol Vasantrao Yesankar Fire Engine Driver	(Posthumous)
4.	Shri Liladhar Bapuraoji Chopade Fireman	(Posthumous)
5.	Shri Dharmendra Kumar Yadav Fireman	(Posthumous)
6.	Shri Krishan Kumar Fireman	(Posthumous)
7.	Shri Pramod Mahadeorao Meshram Fireman	(Posthumous)
8.	Shri Navjot Singh Fireman	(Posthumous)
9.	Shri Kuldeep Singh Fireman	(Posthumous)
10.	Shri Amit Puniya Fireman	(Posthumous)
11.	Shri Arvind Kumar Fireman	(Posthumous)
12.	Shri Dhanraj Prabhakar Meshram Fireman	(Posthumous)
13.	Shri Shekhar Gangadhar Balaskar Fireman	(Posthumous)

2. On 31.05.2016 at 0050 hrs, a Sentry found smoke emanating from the general area of Delta Sub-Depot in the explosives area and raised alarm. Security Junior Commissioned Officer rushed to Delta Sub-Depot with a Truck Fire Fighting. Immediately, Leading Hand Fire Shri Balupandurag Pakhare along with crew members started water spraying operation at the Explosive Store House Number 192 from the central approach. Leading Hand Fire Shri Balupandurag Pakhare and all crew members were fully aware of the hazards of United Nation Hazard Division 1.1 category ammunition stored in the location. Shri Balupandurag Pakhare led his team with self-example and assisted the crew to lay delivery hoses and directed to spray the water at multiple axes. Due to decreased water level in the tank he mobilized the crew to Static Water Tank Number 102 for continuous supply of water. At about 0120 hrs, there was a concurrent detonation of 134 Metric Tonnes of explosives which killed 19 including Leading Hand Fire, 02 Fire Engine Driver and 10 Firemen. Due to their untiring efforts and energizing spirit in watering the smoking store house and the area in front of the store house, saved 14 explosive storage locations in the vicinity, safeguarded depot from a great catastrophe and also saved thousands of lives.

3. Leading Hand Fire, Shri Balu Pandurag Pakhare, Fire Engine Driver, Shri Amit Mahadeorao Dandekar, and Shri Amol Vasantrao Yesankar, Fireman, Shri Liladhar Bapuraoji Chopade, Shri Dharmendra Kumar Yadav, Shri Krishan Kumar, Shri Pramod Mahadeorao Meshram, Shri Navjot Singh, Shri Kuldeep Singh, Shri Amit Puniya, Shri Arvind Kumar, Shri Dhanraj Prabhakar Meshram, and Shri Shekhar Gangadhar Balaskar, thus displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

4. These awards are made for gallantry under Rule 3 (i) of the Rules governing the award of President's Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under rule 5 (a) w.e.f. 31.05.2016

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 113-Pres/2017—The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Fire Service Officers of CAD, Pulgaon, Ministry of Defence :—

1. Shri Chandu Dada Parate
   Station Officer
2. Shri Kishor Motilal Sahu
   Leading Hand Fire
3. Shri Swapnil Ramesh Khurge
   Fire Engine Driver
4. Shri Ram Namdeorao Wankar
   Fireman
5. Shri Satish Shalikram Gavhalkar
   Fireman
6. Shri Rajendra Gangaram Mahajan
   Fireman
7. Shri Santosh Babosa Patil
   Fireman
8. Shri Pradip Kumar
   Fireman
9. Shri Deepak Arjun Shinde
   Fireman

2. On 31.05.2016 at 0050 hrs, a Sentry found smoke from the general area of Delta Sub-Depot in the explosives area and raised alarm. Security Junior Commissioned Officer rushed to Delta Sub-Depot with a Truck Fire Fighting (TFF). Immediately, Leading Hand Fire, Shri Balupandurag Pakhare along with crew members started water spraying operation at the Explosive Store Number 192 from the central approach. All crew members were fully aware of the hazards of United Nation Hazard Division 1.1 category ammunition stored in the location. Shri Pakhare led his team with self-example and assisted the crew to lay delivery hoses and directed to spray the water at multiple axes. At about 0120 hrs, there was a concurrent detonation of 134 Metric Tonnes of explosives which killed 19 including Leading Hand Fire, 02 Fire Engine Driver and 10 Firemen.

3. On hearing the sound of blast, Station Officer Shri Chandu Dada Parate voluntarily reported back on duty from off duty at Main Fire Station and rushed towards the site and took charge of fire fighting and rescue operation. Fire spread to the circular area of around 850 metre diameter, which was threatening 20 Explosive Store Houses (ESH) of 450 MT capacity spread in an area of 600 acres. Under such adverse circumstances, Shri Chandu Dada Parate took complete control of balance TFFs and motivated his team to save vulnerable ESHs. Truck Fire Fighting with crew members deployed in ESH No. 189, 191, 193, 194, 195, 196, 198 and 203. He led his team with self-example and assisted the firemen to contained the fire and ensure there were no secondary fire. He along with other crew members without caring to their lives, saved depot from further damages, and secured man and material till the fire was completely put off.

4. Station Officer, Shri Chandu Dada Parate, Leading Hand Fire, Shri Kishor Motilal Sahu, Fire Engine Driver, Shri Swapnil Ramesh Khurge, Fireman, Shri Ram Namdeorao Wankar, Shri Satish Shalikram Gavhalkar, Shri Rajendra Gangaram Mahajan, Shri Santosh Babosa Patil, Shri Pradip Kumar and Shri Deepak Arjun Shinde, thus displayed conspicuous gallantry, unparalleled dedication, exemplary courage, leadership, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

5. These awards are made for gallantry under Rule 3 (i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under rule 5 (a) w.e.f. 31.05.2016

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 114-Pres/2017 —The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Maharashtra Fire Service :—

1. Shri Deepak Bhatu Gaikwad
   Sub-Officer

2. Shri Devidas Dattatraya Ingale
Driver

3. Shri Hemant Baburao Belgaonkar
Fireman

4. Shri Shivaji Laxman Khulage
Fireman

5. Shri Shivaji Fakira Fugat
Fireman

6. Shri Avainash Subhash Sonawane
Fireman

7. Shri Balasaheb Popat Lahange
Fireman

2. On 12.07.2016 at 1600 hrs, a devastating flash flood reported in Khadak-Sukene Tal, Dindori, Nashik due to incessant torrential rains and release of 31,800 Cusecs water from Palkhed Dam. Six Fishermen got stranded on earthen Island 200 meters away from river banks. Immediately the rescue team under the leadership of Sub- officer Shri Deepak Bhatu Gaikwad rushed to the spot. After reaching to the spot they saw six fishermen trapped on the Island. It was impossible to rescue them in the turbulent and high current water flow of the river. The rescue team without caring to their lives approached the Island with the help of boat and through roaring turbulent water. The rescue team dexterously first went down by using of ropes. With great difficulties and by using ropes and boat and putting their own lives into great danger, they successfully reached to the Island and rescued all the six fishermen safely.

3. At 21.30 hrs the crew again received an information that three persons are trapped 40 KMs away from same river at Kundewadi, Tal, Niphad. Once again they saved three lives by using the above techniques with the help of army.

4. Sub-Officer, Shri Deepak Bhatu Gaikwad, Driver, Shri Devidas Dattatraya Ingale, Fireman, Shri Hemant Baburao Belgaonkar, Shri Shivaji Laxman Khulage, Shri Shivaji Fakira Fugat, Shri Avainash Subhash Sonawane and Shri Balasaheb Popat Lahange, thus displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

5. These awards are made for gallantry under Rule 3 (i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under rule 5 (a) w.e.f. 12.07.2016

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 115-Pres/2017—The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Telangana State Disaster Response and Fire Services Department :—

Shri Arjun Hamilpur
Fireman

2. On 30.09.2016 at 08.15 hrs, a call was received in control room about the fire incident at Magnaquest, Plot No. 523 & 524, Road No. 12, Banajra Hills, Hyderabad. Immediately, Fireman Shri Arjun Hamilpur along with the crew rushed to the spot. After reaching they found two floors on fire and dense smoke in the building. It is informed to the crew that two employees are trapped inside the building. Fully aware of the risk involved in the operation Fireman Shri Arjun Hamilpur dared to enter inside the building to search the trapped persons. Negotiating the floors in search of trapped persons while withstanding the fire, bearing the heat radiation, known risk of backdraft and climbing the stairs in zero visibility, Shri Arjun Hamilpur continued search & rescue operation and finally locate two persons and rescued them one by one. During the search and rescue operation, Shri Arjun Hamilpur Fireman sustained injuries, exposed to excessive heat and radiation.

3. Fireman, Shri Arjun Hamilpur thus displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

4. These awards are made for gallantry under Rule 3 (i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under rule 5 (a) w.e.f. 30.09.2016

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 116-Pres/2017—The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Telangana State Disaster Response and Fire Services Department :—

Shri Sudhakar Veeragoni
Fireman

2. On 15.08.2016 at 12.30 hrs, parents made a hue and cry to save their drowning son at Irikigudem Ghat, Krishna River, Nalgonda District, Telangana. Immediately Fireman, Shri Sudhakar Veeragoni, who was on standby duty, jumped into the river with a lifebuoy and rope without giving second thought to the high current of water flow, turbulence and crocodile zone downstream. The boy was swept away and disappeared. Fireman, Shri Sudhakar carried out search and rescue operation endangering his own life. As the boy was no longer visible, he went further deep into the water and rescued the boy alive.

3. Fireman, Shri Sudhakar Veeragoni thus displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

4. These awards are made for gallantry under Rule 3 (i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under rule 5 (a) w.e.f. 15.08.2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 117-Pres/2017—The President is pleased on the occasion of the Independence Day, 2017 to award the President's Fire Service Medal for Distinguished Service to the undermentioned officers :—

1. SHRI ABDUR RAHMAN
   SR. STATION OFFICER
   ASSAM

2. SHRI VIPIN KENTAL
   CHIEF FIRE OFFICER
   DELHI

3. SHRI MADAN LAL THAKUR
   STATION FIRE OFFICER
   HIMACHAL PRADESH

4. SHRI P. MURALEEDHARAN
   STATION OFFICER
   KERALA

5. SHRI RAJKISHORE JENA
   STATION OFFICER
   ODISHA

6. SHRI SURESH KUMAR BARIK
   LEADING FIREMAN
   ODISHA

7. SHRI NARHARI ROUT
   DEPUTY COMMANDANT (FIRE)
   C.I.S.F., M.H.A.

8. SHRI SANAT KUMAR MAJUMDAR
   ASST. SUB-INSEPCTOR (FIRE)
   C.I.S.F., M.H.A.

9. SHRI NEERAJ SHARMA
   GENERAL MANAGER (FS)
   ONGC, M/O PET. & N. GAS

2. These awards are made under Rule 3 (ii) of the rules governing the award of President's Fire Service Medal for Distinguished Service.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 118-Pres/2017—The President is pleased on the occasion of the Independence Day, 2017 to award the Fire Service Medal for Meritorious Service to the undermentioned officers :—

1. SHRI K. YOUSUF
PC (DRIVER)
ANDAMAN & NICOBAR

2. SHRI BALAKRISHNA LOHAR
PC (FIREMAN)
ANDAMAN & NICOBAR

3. SHRI KIRON SALOI
SUB-OFFICER
ASSAM

4. SHRI BIMAL CHANDRA DAS
LEADING FIREMAN
ASSAM

5. SHRI SHASHIBHUSHAN SINGH
SUB-OFFICER
BIHAR

6. SHRI ARVIND PRASAD
SUB-OFFICER
BIHAR

7. SHRI ASHOK KUMAR SINGH
LEADING FIREMAN
BIHAR

8. SHRI NIYAZAHMED BADRUDDIN FADRA
STATION FIRE OFFICER
DAMAN & DIU

9. SHRI RAJBIR SINGH
SUB-OFFICER
DELHI

10. SHRI HARISH CHAND
LEADING FIREMAN
DELHI

11. SHRI RAJESH KUMAR
ASST. WIRELESS OFFICER
DELHI

12. SHRI RAM GOPAL THAKUR
SUB FIRE OFFICER
HIMACHAL PRADESH

13. SHRI JASOL RAM
LEADING FIREMAN
HIMACHAL PRADESH

14. SHRI RAJENDRA RAM
SUB-OFFICER
JHARKHAND

15. SHRI BHAGWAN OJHA
SUB-OFFICER
JHARKHAND

16. SHRI RAMESH SOMASAMUDRA
DISTT. FIRE OFFICER
KARNATAKA

17. SHRI VENKATARAMANA MOGERA
FIRE STATION OFFICER
KARNATAKA

18. SHRI VENKATASWAMY
ASST. FIRE STATION OFFICER
KARNATAKA

19. SHRI REVANASIDDESHWARA S.M.
LEADING FIREMAN
KARNATAKA

20. SHRI RAJAN V.N.
STATION OFFICER
KERALA

21. SHRI SASI K.S.
DRIVER MECHANIC
KERALA

22. SHRI KRISHNAN. S.
FIREMAN
KERALA

23. SHRI K.T. CHANDRAN
FIREMAN DRIVER CUM PUMP OPERATOR
KERALA

24. SHRI KHARGESWAR BORO
INSPECTOR
MEGHALAYA

25. SHRI SYRMAN RYNGHANG
FIREMAN
MEGHALAYA

26. SHRI BASANTA KUMAR SAMAL
STATION OFFICER
ODISHA

27. SHRI BIBEKANANDA MALLICK
LEADING FIREMAN
ODISHA

28. SHRI BALAKRISHNA SAMAL
DRIVER HAVILDAR
ODISHA

29. SHRI GANESH PRASAD NANDA
FIREMAN
ODISHA

30. SHRI JIT BAHADUR GURUNG
ASSTT. SUB FIRE OFFICER
SIKKIM

31. SHRI BALAKRISHNA PILLAI PRADIPKUMAR
DISTRICT OFFICER
TAMIL NADU

32. SHRI NAGALINGAM SAKTHIVEL
STATION OFFICER
TAMIL NADU

33. SHRI SANTHIAGO LAWRANCE INICO
LEADING FIREMAN
TAMIL NADU

34. SHRI VAITHIYALINGAM MUTHUVEL
FIREMAN DRIVER
TAMIL NADU

35. SHRI RAJU
STATION FIRE OFFICER
TELANGANA

36. SHRI VENKATESWARLU KANDIMALLA
DRIVER OPERATOR
TELANGANA

37. SHRI MAHIPAL SINGH BHANDARI
SUB-OFFICER
TRIPURA

38. SHRI MRIDUL KANTI NATH
LEADING FIREMAN
TRIPURA

39. SHRI MANIK LAL SHARMA
FIRE STATION OFFICER
UTTARAKHAND

40. SHRI HARISH GIRI
FIRE STATION OFFICER
UTTARAKHAND

41. SHRI MILAN NAG
DIVISIONAL FIRE OFFICER
WEST BENGAL

42. SHRI MD. HUSSAIN KHAN
FIRE OPERATOR
WEST BENGAL

43. SHRI SHIBU CHANDRA DAS
FIRE OPERATOR
EST BENGAL

44. SHRI DAWA TSHERING TAMANG
FIRE OPERATOR
WEST BENGAL

45. SHRI GURMUKH SINGH
SUB-INSPECTOR (FIRE)
C.I.S.F., M.H.A.

46. SHRI TRINATH BHOI
HEAD CONSTABLE (FIRE)
C.I.S.F., M.H.A.

47. SHRI JAI KISHAN SHARMA
CHIEF FIREMAN, ONGC
M/O PET. & N. GAS

48. SHRI GADADHAR TALUKDAR
FIRE ENGINE OPERATOR- II, OIL
M/O PET. & N. GAS

49. SHRI DULEN BORAH
TECH. ASSTT. (F&S)
NUMALIGARH REFINERY LTD.
M/O PET. & N. GAS

50. SHRI HARESH BORAH
TECH. ASSTT. (F&S)
NUMALIGARH REFINERY LTD.
M/O PET. & N. GAS

2. These awards are made under Rule 3 (ii) of the rules governing the award of Fire Service Medal for Meritorious Service.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 119-Pres/2017—The President is pleased on the occasion of the Independence Day, 2017 to award the President's Home Guards & Civil Defence Medal for Distinguished Service to the undermentioned officers :—

1. SHRI LAKHI RAM BORDOLOI
DEPUTY DIRECTOR OF CIVIL DEFENCE & DEPUTY COMMANDANT GENERAL OF HOME GUARDS
ASSAM

2. SHRI SHEKHAR NARAYAN BORWANKER
DISTRICT COMMANDANT
CHHATISGARH

3. SHRI KALAM SINGH JHOUTA
COMMANDANT
HIMACHAL PRADESH

4. SHRI RAMESH
DEPUTY COMMANDANT
KARNATAKA

2. These awards are made under Rule 3 (ii) of the rules governing the award of Home Guards & Civil Defence Medal for Distinguished Service.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 120-Pres/2017—The President is pleased on the occasion of the Independence Day, 2017 to award the Home Guards & Civil Defence Medal for Meritorious Service to the undermentioned officers :—

1. SHRI NABAJYOTI BORAH
SENIOR STAFF OFFICER
ASSAM

2. SHRI MUKUT ALI
SUBEDAR
ASSAM

3. SHRI INDER MOHAN SINGLA
PLATOON COMMANDER
CHANDIGARH

4. SHRI DAVINDER SINGH
PLATOON SERGEANT
CHANDIGARH

5. SHRI RAMANUGRAHA WISHWKARMA
HAV. STOREMEN
CHATTISGARH

6. SHRI CHUMAN LAL NAMDEV
NAIK
CHATTISGARH

7. SHRI DHARAM DAS SAHU
HAVALDAR
CHATTISGARH

8. SHRI NAROTTAM LAL NETAM
NAYAK (HG)
CHATTISGARH

9. SHRI HIMMATKUMAR DAYALBHAI PATEL
HOME GUARD
DAMAN & DIU

10. SHRI DINA NATH YADAV
INSTRUCTOR (CD)
DELHI

11. SHRI RAMESHWAR PRANSHANKER VYAS
TRAINED INSTRUCTOR
GUJARAT

12. SHRI BABUBHAI DEVRAJBHAI ZADAFIYA
CHIEF WARDEN
GUJARAT

13. SHRI DEVENDRA ISHWARLAL PATEL
DIVISIONAL COMMANDER
GUJARAT

14. SHRI ROHITKUMAR JAYNTILAL BRAHMBHATT
COMPANY COMMANDER
GUJARAT

15. SHRI HARILAL GORDHANBHAI KALARIA
HEAD CLERK
GUJARAT

16. SHRI KISHORSINH VIJAYSINH CHUDASAMA
CENTER COMMANDER
GUJARAT

17. SHRI KHODABHAI PATHUBHAI VEN
HAVALDAR
GUJARAT

18. SHRI RAKESH KUMAR BHARDWAJ
DIVISIONAL COMMANDANT
HIMACHAL PRADESH

19. SHRI SURESHA NAND SHARMA
COMPANY COMMANDER
HIMACHAL PRADESH

20. SMT. RANJANA
PLATOON COMMANDER
HIMACHAL PRADESH

21. SHRI HARDYAL SINGH THAKUR
HOME GUARD
HIMACHAL PRADESH

22. SHRI K.V. MANJUNATH
SECTION LEADER
KARNATAKA

23. SHRI B.K. BASAVALINGA
PLATOON COMMANDER
KARNATAKA

24. DR. H.J. CHANDRAKANTHA
SENIOR PLATOON COMMANDER
KARNATAKA

25. SHRI P.T. BASAVARAJAPPA
SARGEANT
KARNATAKA

26. SHRI L. SOKENDRO SINGH
SUBEDAR (HG)
MANIPUR

27. SHRI HOLWING JALONG
HAVILDAR
MEGHALAYA

28. SHRI RESTERWEL MUKTIEH
NAIK
MEGHALAYA

29. SHRI APURBA MARAK
LANCE NAIK
MEGHALAYA

30. SHRI PRATAP KUMAR PARIDA
CIVIL DEFENCE VOLUNTEER
ODISHA

31. MS. MANJULATA HOTTA
LADY HOME GUARD
ODISHA

32. SMT. BASANTI SINHA
LADY HOME GUARD
ODISHA

33. SHRI SUJIT DIGAL
PLATOON COMMANDER (HG)
ODISHA

34. SHRI NIRANJAN DEHURY
HOME GUARD
ODISHA

35. SHRI PARAMJIT SINGH
COMPANY COMMANDER
PUNJAB

36. SHRI SUKHRAJ SINGH
COMPANY COMMANDER
PUNJAB

37. SHRI TR. P. DURAI SINGH
COMPANY COMMANDER
TAMIL NADU

38. TR. K. PANNEERSELVAM
COMPANY COMMANDER
TAMIL NADU

39. SMT. M. KAVITHA
PLATOON COMMANDER
TAMIL NADU

40. SHRI TR. C. THUYAMANI
ASSISTANT PLATOON COMMANDER
TAMIL NADU

41. SHRI TR. R. KALAIVASAN
ASSISTANT SECTION LEADER
TAMIL NADU

42. SHRI BABUL CHAKRABORTY
HOME GUARD
TRIPURA

43. SHRI PREMANANDA BHOWMIK
HOME GUARD
TRIPURA

44. SHRI VINOD KUMAR RATRA
DIVISIONAL WARDEN
UTTAR PRADESH

45. SHRI SUNIL KUMAR YADAV
DIVISIONAL WARDEN
UTTAR PRADESH

46. SHRI RAVI SHANKAR DWIVEDI
I.C.O. CIVIL DEFENCE
UTTAR PRADESH

47. SHRI AMITABH SRIVASTAVA
SR. STAFF OFFICER
UTTARAKHAND

48. SHRI SAHAJAN GAZI
HOME GUARD
WEST BENGAL

49. SHRI PALAN CHANDRA MONDAL
HOME GUARD
WEST BENGAL

50. SHRI ASHOK KUMAR BARVE
JR. DEMONSTRATOR
NCDC, MHA

2. These awards are made under Rule 3 (ii) of the rules governing the award of Home Guards & Civil Defence Medal for Meritorious Service.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

The 9th November 2017

No. 121-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. B. Balaji Naik
Senior Commando

02 B. Narasimha Reddy
Junior Commando

03. P. Mallesh
Junior Commando

04. K. Harikrishna
Junior Commando

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the exchange of fire that took place at Ramgurha village under Chitrakonda PS limits of Malkangiri District in Odisha State on 24th and 25-10-2016, the CPI Maoists suffered a crippling blow and lost (26) of their important cadres. The Grey Hounds parties started retreating in the intervening night of 26/27-10-2016. They trekked for (10) KMs through highly inhospitable and treacherous terrain riddled with land mines and possible ambushes by the Maoist cadres under the cover of darkness and reached the outskirts of Sirilimetta village under Munchingput PS limits of Visakhapatnam Rural District of Andhra Pradesh by 3.30 am.

A group of Maoists with the intention to wreak vengeance on the Grey Hounds parties which were retreating, laid ambush in the outskirts of Sirilimetta village. The Maoists who were anticipating the movement of Police parties suddenly opened fire on sighting them. The Grey Hounds parties immediately retaliated and tactfully wriggled out of the killing zone and countered the ambush. The Maoists realized that they were on the back-foot and started fleeing the area under the cover of darkness. The Grey Hounds parties pursued the Maoists undeterred by darkness and treacherous nature of the terrain. When they reached the forest area between Damaguda and Ramgurha villages after trekking for another (7) KM in pursuit of the enemy, the Maoists once again opened fire at the Grey Hounds party. The Grey Hounds Commandos without caring for their lives pressed on and chased the Maoists. They faced heavy and continuous firing and yet were undaunted, encouraged each other and proceeded tactically taking cover of the available ground features and trees.

Senior Commando (SC) 7456 Sri B. Balaji Naik, Junior Commando (JC) 3444, B. Naraismha Reddy, JC 3716 P. Mallesh and JC 4487 K. Hari Krishna exhibited tremendous courage in the face of incessant fire from the Maoists and chased them taking extreme risk to their lives. The Maoists climbed up a hillock and unleashed an avalanche of fire against the Grey Hounds party. But, the Commandos exhibited extraordinary courage and determination and continued to climb the hillock while chasing the Maoists taking all tactical precautions. SC Sri B. Balaji Naik led the party from the front. The Commandos supported one another and made determined progress while giving cover fire to facilitate movement. The thick forest cover and steep slope of the hillock were a major deterrent but the Commandos acted with exemplary grit in making advance. They displayed tremendous team spirit which is the hallmark of a successful operation.

After fierce gun battle, they neutralized (2) Maoists and recovered (1) SLR rifle and (1) .303 rifle and (2) Hand Grenades. The deceased Maoists were later identified as Gowtham, Area Committee Member (ACM), hailing from Chhattisgarh State and Naresh, Party Member (PM) belonging to Odisha State. This Exchange of Fire coming in the aftermath Ramgurha (v) EoF further demoralized the Maoist cadres and boosted the morale of the security forces.

In this encounter, S/Shri B. Balaji Naik, Senior Commando, B. Narasimha Reddy, Junior Commando, P. Mallesh, Junior Commando and K. Harikrishna, Junior Commando displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/10/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 122-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Andhra Pradesh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Md. Abubakar (Posthumously)
Senior Commando

02. J. Eswara Rao
Asst. Assault Commander

03. V. Subba Rao
Junior Commando

04. K. Bhanu Prasad
Junior Commando

05. P. Nagendra
Junior Commando

06. P. Rama Krishna Rao
Sub Inspector

07. D. Satheesh Kumar
Junior Commando

08. M. Ramaiah
Senior Commando

09. P. Sreeramulu
Senior Commando

10. M. Narayana Rao
Asst. Assault Commander

11. V. Arun Kiran
Sub Inspector

12. A. Shiva Shankar
Junior Commando

13. K. Eswara Rao
Junior Commando

14. R. Appala Naidu
Junior Commando

15. D. Hari Kiran
Junior Commando

16. B. Appala Naidu
Asst. Assault Commander

17. Y. Anji
Junior Commando

18. V. Shiva Prasad
Senior Commando

19. A. Rama Krishna
Junior Commando

20. V. Satheesh Kumar
Junior Commando

21. Tirumala Setti Anil Kumar
Senior Commando

22. D.V. Mahesh
Junior Commando

23. K. Suresh
Junior Commando

24. M.K. Narasimhudu
Asst. Assault Commander

25. P. Durga Prasad
Junior Commando

26. B. Satish
Junior Commando

27. R. Lakshmana Rao
Junior Commando

28. R. Ramesh
Junior Commando

29. R. Asiritata
Asst. Assault Commander

30. K. Govinda
Junior Commandop

31. K. Raghuram Reddy, IPS
Superintendent of Police

32. Rahul Dev Sharma, IPS
Superintendent of Police

33. A Babujee, IPS
Addl. Superintendent of Police

34. K. Narayana Reddy
Addl. Superintendent of Police

35. A Bhaskara Rao
Junior Commando

36. Ch. Srinivasa Rao
Senior Commando

37. Ch. Madhusudhana Rao
Junior Commando

38. E. Sivanarayana
Senior Commando

39. K. Chiranjeevi
Junior Commando

40. R. Durga Rao
Junior Commando

41. K. Dora Babu
Junior Commando

42. P Simhachalam
Junior Commando

43. S. Mehar Vasu
Junior Commando

44. R. Suri Babu
Senior Commando

45. G Adinarayana
Junior Commando

46. G Vasu
Senior Commando

47. B. Venkatesh
Junior Commando

48. Ch.V. Bhaskara Rao
Junior Commando

Statement of service for which the decoration has been awarded

On credible information that Maoists were gathering in large number including their top leaders from Andhra Odisha Border Special Zonal Committee (AOBSZC) in the cut-off area of Andhra Odisha Border (AOB) with intention to commit violent actions against the State, three Assault Units of Grey Hounds with representatives of local Police and Special Intelligence Branch (SIB) were deployed for operations on 23.10.2016 in the evening. Odisha Police deployed cut-off parties on the western side of the Balimela Reservoir. The teams trekked cross country through very difficult and inhospitable terrain covering highly Maoist infested villages for more than 26 Km throughout the night, braving land mines and possible ambushes by the Maoist patrolling teams and Armed Militia and reached the outskirts of Ramagurha (v) on 24.10.2016 by about 6 am. There, they divided themselves into small sub-units and advanced further as assault and cut off groups.

A group of Commandos led by Deputy Assault Commander (DAC) Sri K.Rama Rao consisting of Assistant Assault Commander (AAC) 5098 B.Appala Naidu, Junior Commando (JC) 3666 Y. Anji, Senior Commando (SC) 3375 V. Siva Prasad, JC 3703 B.Sathish, JC 3681 P. Simhachalam, JC 3547 K. Chiranjeevi, JC 3689 Meher Vasu, SC 8650 E. Sivanarayana, JC 3568 ARama Krishna, JC 3626 K. Dorababu, JC 3586 R. Durga Rao and JC 3297 P. Durga Prasad and other commandos were searching the hilly landscape on the northern side of Ramagurha (v). At about 0600 hrs, they found some tents and suspicious movement of persons in the forest area and approached the location making tactical movements. However, they were sighted by the Maoist sentries and were fired upon with automatic and semi-automatic weapons. Though, they came under heavy and incessant fire, the Grey Hounds Team advanced without caring for their life and approached the enemy location. They neutralized (4) Maoists after a fierce gun battle and continued to chase about 60 -70 Maoists though outnumbered manifold. JC Sri A. Ramakrishna received a pellet injury on his head in the process but fought valiantly in retaliating the Maoist attack. Later, the deceased Maoists were identified as (1) Yamalapalli Simhachalam @ Murali, District Committee Member (DCM), (2) Rajesh @ Bhimal, District Committee Member (DCM) (3) Lacha Modili, Party Member (PM) and (4) Daniel @ Dasuramu, Party Member (PM) and (I) SLR, (2) .303 rifles and (1) SBML weapons were also recovered from the scene.

The Maoists took cover of a Nala, forest and the hilly terrain and ran towards Ramagurha (V). Under the leadership of Assistant Assault Commander (AAC) 4512 Sri M.K.Narsimhudu, AAC 7841 R. Asiritata:. Senior Commando (SC) 8708 Sri MD Abubakar, JC 3335 R.Ramesh, Junior Commando (JC) 32`..R.Lalcshrnana Rao and JC 3600 K.Govinda faced a group of Maoists firing with automatic and semi automatic weapons and at great risk to their lives chased them and neutralized two of them. SC Md. Abubakar jumped into a deep Nala in order to chase the Maoists and was pinned down by incessant fire from the Maoists. He breathed his last while valiantly defending his colleagues. Later, the neutralized Maoists were identified as (1) Gammeli Kesava Rao @ Birsu, Divisional Committee Secretary (DCS) and (2) Sindhe Killo, Party Member (PM), (1) 1NSAS rifle and (1) .303 rifle weapons were recovered from the scene.

Another group of Commandos led by Sri A. Babujee, IPS OSD along with Assistant Assault Commander (AAC) 3413 Sri P.Trinadha Rao, AAC 4615 Sri J.Eswara Rao, Junior Commando (JC) 3705 V.Subba Rao, JC 3693 P.Nagendra, JC 3645 K.Bhanti Prasad, JC 3730 K.Suresh, JC 8752 D.V.Mahes, Senior Commando (SC) 8612 T.S.Anil Kumar, SC 3431 Ch.Srinivasa Rao, JC 8782 A.Bhaskara Rao and JC 3498 Ch.Madhusudhana Rao found 20-25 Maoists running towards Ramagurha (v). They immediately realized that it would be easy for the Maoists to escape if they entered the village and mixed with the villagers. They chased the Maoists at great risk to their own lives while coming under burst fire and grenade attacks from the Maoists. The Maoists started climbing the hillock and assumed dominant position. The Grey Hounds Commandos came under an avalanche of fire and AAC Sri P.Trinadha Rao received bullet injuries. Even then, AAC Sri P.Trinadha Rao forged ahead undeterred and the Grey Hounds Commandos exhibited extraordinary courage and determination and continued to climb the hillock while chasing the Maoists. They supported each other giving cover fire and made progress little by little. They neutralized (5) Maoists and were successful in reaching the top of the hillock. The thick forest cover and steep slope of the hillock were a major deterrent but the Commandos acted with exemplary grit in making advance. Later the neutralized Maoists were identified as (I) Bakuri Venkata Ramana @ Umesh, ,Special Zonal Committee Member (SZCM), (2) Prudhvi @ Munna, District Committee Member (DCM) (3) Budri, Area Committee Member (ACM) (4) Kommula Surma Basai, Party Member (PM) and (5) Kaveri Modili, Party Member (PM) and (1) AK-47 rifle, (1) SLR, (2) .303 rifles, (I) SBML and (1) IED were recovered from the scene.

Meanwhile, Sri K.Raghuram Reddy, IPS, Group Commander, GreyHounds, along with Sri P.Ramakrishna Rao, SI, Peddabayulu PS, Assistant Assault Commander: (AAC) 5049 Sri M.Narayana Rao Junior Commando (JC) 3461 V.Satheesh Kumar, JC 3283 R.Appala Naidu, JC 3563 D.Satheesh, Senior Commando (SC) 8635 M.Ramaiah, SC 6435 P.Sriramulu, JC 3287 K.Eswara Rao, JC 8713 A.Siva Shankar ran for almost 1 Km and covered the southern side of the hillock. The Maoists who escaped from the advancing party of OSD, Sri A.Bapujee, IPS., and AACs Sri P.Trinadha Rao and Sri J.Eswara Rao started climbing down on the south eastern side of the hillock while raining bullets with automatic weapons on AAC Sri M.Narayana Rao and his group. JC Sri D.Satheesh Kumar, SC Sri M.Ramaiah and Sri P.Sreeramulu ran towards the south eastern side while coming under heavy fire taking all precautions. They neutralized (2) Maoists firing with AK-47 and SLR weapons. In the meanwhile, AAC Sri M. Narayana Rao, Sri V.Arun Kiran, SI Munchingput PS, JC A. Shiva Shankar and JC Sri K. Eswara Rao and JC R. Appala Naidu ran from cover to cover, chased the Maoists and neutralized (2) cadres at tremendous life risk with the help of their associates. Later, the neutralized Maoists were identified as (I) Gangadhar @ Prabhakar, Special Zonal Committee Member (SZCM), (2) Rhino, District Committee Member (DCM), (3) Janeela @ Malathi, District Committee Member (DCM), (4) Ruppi, Party Member (PM), and (1) AK-47 rifle, (1) SLR, (1) Pistol and (1) SBML weapons were recovered from the scene.

Senior Commando (SC) 5966 Sri Ch.G.V. Ramachandra Rao ran towards eastern side of the hillock for more than one KM and joined Junior Commando (JC) 3563 D. Satheesh Kumar and JC 3553 D. Hari Kiran. He exhibited exceptional leadership qualities, moved from place to place on the eastern side giving the impression that the Commandos were everywhere. The Maoists rained automatic fire and threw grenades at the Commandos. JC Sri D. Satheesh Kumar received a bullet injury in his thigh and was incapacitated. However, he was undeterred and exhorted his colleagues to fight. SC 5966 Sri Ch.G.V. Ramachandra Rao entrusted the care of the injured Commando to one of his colleagues and continued to fight defending himself and his injured colleague. He was alone fighting from the location but kept the Maoists at bay with his accurate firing. He fired from his UBGL and neutralized (5) Maoists and caused injuries to several others. Later the neutralized Maoists were identified as (I) Chamala Kistaiah @ Daya, Special Zonal Committee Member (SZCM) (2) Inaparthi Dasu @ Madhu, District Committee Member (DCM), (3) Vanthala Shand, Party Member (PM), (4) Tubri, Party Member (PM), and (5) Jayaram Killo, Party Member (PM) and weapons viz., (1) AK-47 rifle, (1) SLR, (1) .303 rifle, (1) Pistol and (1) SBML were recovered from the scene.

Another party consisting of Sri Rahul Dev Sharma, IPS, Supdt. of Police, Sri K.Narayana Reddy, Add1. SP, Senior Commando (SC) 6306 Sri R. Suri Babu, Junior Commando (JC) 3629 B. Venkatesh, SC 3246 G. Vasu, JC 3499 G. Adinarayana and JC 8741 Ch.V.Bhaskara Rao noticed (4) Maoists firing with INSAS and .303 rifles from under the bushes by the side of a Nala on the southeastern side of the hillock. Even then, they advanced forward at great risk to their lives. They took cover of the thick bushes and trees and continuously engaged the enemy valiantly. They exhibited tremendous grit and determination and neutralized the enemy after a long exchange of fire'. Later the neutralized Maoists were identified as (1) Geddam Suvarna Raju @ Kiran @ Ramesh, Divisional Committee Secretary (DCS) (2) Boddu Kundanalu @ Mamatha, District Committee Member (DCM), and (3) Latha @ Bharathi, District Committee Member (DCM), (4) Shyamala Pangi, Party Member (PM) and weapons (1) INSAS rifle, (1) .303 rifles, (1) Tapancha and (1) Land Mine were recovered from the scene.

In this operation, the Maoists suffered the highest number of casualties ever in a single operation in their history and lost (24) cadres including (3) Special Zonal Committee Members, (2) District Committee Secretaries, (8) District Committee Members, (I) Area Committee Members and (10) Party/Members. The Maoists lost (3) AK-47 rifles, (4) SLR rifles, (2) INSAS rifles, (7) .303 rifles, (4) SBML rifles, (2) Pistols, (1) Tapancha, (1) IED and (1) Land Mine in this operation.

The success of this operation was entirely due to the indomitable spirit and courage of the Grey Hounds Commandos and other participating officers who exhibited indescribable courage and bravery. They trekked in treacherous terrain for the whole night and then had the energy to face the Maoist onslaught and inflict huge casualties to the enemy side.

The Grey Hounds Commandos have always been at the fore-front of fighting the Maoist armed formations and with this operation, they set a new bench mark for all the security forces engaged in anti-Maoist operations. Their act of valor uplifted the fighting spirit of innumerable officers and men all over the Country engaged in similar work and boosted their morale to new heights. This is a historical and inspiring achievement in our fight against the Maoists and the Commandos and officers who contributed to the success of this operation acted beyond the normal call of duty at tremendous risk to their lives.

In this encounter, the above named police personnel displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/10/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 123-Pres/2017—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Chhattisgarh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Shankar Rao (Posthumously)
Platoon Commander

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 10th April 2015, Platoon Commander Shri Shankar Rao, temporarily camping at police Station Polampalli, District Sukma got an intelligence input about the presence of 25 armed CPI (Maoist) cadres near village Pidmel. Platoon Commander Rao, immediately briefed his team of 49 personnel, took extra ammunition & planned an offensive operation. As per plan, PC Rao left with his team for operation on 11th April 2015 at around 02:00 hours, taking a cross country route to Pidmel.

On conducting search, STF team did not find Maoists presence near village Pidmel. The team, left the village and decided to halt on a small hillock near Pidmel in the morning for a break. Meanwhile, Maoists, who were camping in between Pidmel & Dabbakonta got information of police movement, stealthy followed the police party and on reaching the hillock, started encircling the STF party.

After the search the security personnel halted near RV point. 209. Platoon Commander Rao noticed some suspicious movement and exhibiting exemplary leadership qualities moved in that direction to ascertain the cause of the sudden movement. But the brave leader was hit on the chest by a bullet from the Maoists who were in the process of encircling the hillock. Platoon Commander Rao even after being mortally wounded alerted the rest of the party. His prompt alertness was able to curtail further casualties that could have happened as the security party was temporarily halting and therefore not in position for quick action. But after Platoon Commander Rao's call, the party immediately took position and retaliated against the indiscriminate fire of the Maoists. Platoon Commander Rao put up a valiant fight but succumbed to his injuries after sometime.

Head Constable R.K. Atra suo moto took command of the party. HC R.K. Atra showing great presence of mind decided to move ahead by breaking through the Maoist ambush. For this, he himself fired with UBGL and the impact of this area weapon succeeded in scattering the Maoists party. However, moving ahead the party was caught in a second ambush. But HC R.K. Atra and his men valiantly fought the Maoists and come out of the ambush. The intensity of the Maoist attack and the number of Maoists involved in this attack can be understood by the sheer fact that a third ambush was planted ahead. HC R.K. Atra fired the UBGL cel: which resulted in the death of three Maoists and the third ambush also failed miserably. All the injured police personnel were brought back by the security party and the arms of the martyred officer/jawans could not be looted.

During this fierce gun battle 07 Jawans, including PC Shankar Rao, got martyred & 10 Jawans sustained bullet injuries. The party reached Kankerlanka camp at about 16:15 hrs. Deployment in the area mainly exists along. Dornapal-Jagargunda (56km) & Sukma-Konta (78km) axis. The area encircled in between Kankerlanka-Chintagufa and Bhejji-Kistaram has gradually converted into Maoists guerilla base area due to complete security vacuum & hilly tough inaccessible terrain abreast with jungles and river/rivulets. Maoist PLGA Bn No. 1 along with military platoon. LOS, LGS and janmilitia etc. is active in the area and has inflicted significant casualties to the SFs in the past.

On 16.04.2015, Sodi Rama, Janmilitia Commander of Karrigundam. who was involved in the incident surrendered before police at PS Polampali. He revealed that more than 250 Maoists were involved in Pidmel encounter and that 35

Maoists were killed & 15 got injured in the encounter. He further told that Maoists Bn. No. 1 Dy. commander Situ & Konta Area Committes Secretary/Division Committee Member (DVCM) Madkam Arjun were among the killed Maoists. Dead bodies of all 35 Maoists were taken to the nearby jungle areas of Endapar and pentapad by the Maoists with the help of villagers and cremated.

Thus, a small contingent of STF personnel under the leadership of PC Shankar Rao exhibited exemplary courage & fought bravely with more than 250 armed Maoists in their base area. STF's movement throughout the operation, was tactical and they made best use of the terrain. They did not allow the Maoists to loot their weapons.

With utter disregard to his personal safety, PC Shankar Rao moved in the direction of fire and tried to engage the Maoists who intended to cause heavy casualties to his men. In a rare display of dauntless courage, he alerted the force to take position to eliminate/neutralize the enemy forces. Thus very rightly PC Shankar Rao displayed dauntless courage and extraordinary valour under heavy fire from close quarters in face of certain death. Platoon Commander Shankar Rao and other Police personal displayed exceptional valour, audacity in face of fire and made the supreme sacrifice beyond the call of duty. They placed themselves in extreme danger for safely of their colleagues in the highest traditions of Indian police.

In this encounter, late Shankar Rao, Platoon Commander displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/04/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 124-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Chhattisgarh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Avinash Sharma (Posthumously)
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 19/01/2013, Shri Avinash Sharma received information that some naxalites were seen near village Bhurbhusi. Shri Avinash Sharma (SHO of Police Station Bande) immediately shared the information with his superior officers and BSF officers. On 19.01.2013 a joint operation was launched under the leadership of Shri Avinash Sharma. A joint party comprising of DEF and BSF set off tactically towards village Bhurbhusi of PS Bande distt. Kanker (C.G.). When the operational force were moving towards the area and on arriving near village Bhurbhusi, as soon as the naxalites saw the police party, they started indiscriminate firing. The police party also retaliated in self defence and fired on the naxalites. When naxalites realised that the police party was stronger than them, they ran away towards the dense forest. After this, the police party cordoned and searched the surrounding area. The Police party recovered bodies of two dead unknown female naxalites.

In this exchange of fire, police party not only succeeded in defending themselves against the naxal firing but also destroyed a temporary naxal camp. The Police Party recovered 06 live cartridges of 12 bore rifle, 10 live cartridges of .303 rifle, 18 live cartridges of .315 bore rifle, 3 live cartridges of AK-47 rifle, 01 blank cartridge of SLR rifle, naxal uniforms etc. Of the recovered two dead bodies of unknown female naxalites, they were later identified as Sumitra Bai (Deputy LGS Commander) and Sanoti Bai.

Shri Avinash Sharma showed exceptional leadership and bravery during his tenure as Station House Officer (SHO) . He planned and lead many successful Anti Naxal operations. On 2nd Feb 2015, SI Avinash Sharma along with AC 122 BN Shri Vivek Rawat and small team of 6 BSF personnel and 5 DEF Jawan went for intelligence collection on Motor Cycles. At about 1445 hrs 50-60 Maoists ambushed the party near Hawalbaras village and started indiscriminate firing in which Sub Inspector Avinsh Sharma and one Assistant Constable sustained bullet injuries. Sub Inspector, Avinash Sharma and injured Assistant Constable in spite of being injured fought bravely and defended their men as well as arms and ammunitions. In this incident SI Avinash Sharma and One Assistant Constable later succumbed to the injuries.

During the anti naxalite operation conducted on 19-01-2013 in Bhurbhusi forest Sub Inspector Avinash Sharma exhibited exemplary leadership qualities, extra ordinary gallant act and selfless devotion towards the nation.

In this encounter, late Shri Avinash Sharma, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/01/2013.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 125-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Chhattisgarh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Rameshwar Deshmukh
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

A reliable input was received in the evening of 29th January 2016 about the presence of Nagesh, Arun, Sitakka, Vinod, Jitru and 15-20 other members of Madded Area Committee. A search operation was planned to cordon and search the jungles near the Bade Punnur village in the Awapalli Police Station limits. The troops were divided into three operational teams under the overall command of Addl SP (Operations), Bijapur. Inspectors of Police Rameshwar Deshmukh, Ramakant Tiwari and Laxman Kevat and other members of the operational team was briefed by the troop commander about the field crafts and tactics to be followed during the operation.

The troops reached the jungles of Bade Punnur at around 0700 hrs on 30-10-2016 and tactfully advanced towards the hillock, where the members of the banned maoist formations were suspected to be camping. After crossing a series of hills, the troops reached closer to the target and moved in three parties parallel to each other. While ascending a steep hill, there was a sudden burst of fire upon the police parties. The troops in the midlle flank led by Additional SP Kalyan Elesela came under severe firing from the Maoists, who were positioned on a dominating feature in the hill top. The troops immediately took cover and tried to assess the direction from where the Maoists where firing upon them. Meanwhile, the party on the left flank led by Inspector Rameshwar Deshmukh also came under heavy fire from Maoists.

Inspector Rameshwar Deshmukh maneuvered his troops with great courage to successfully came out of the killing zone and tactfully advanced towards the location from where the naxalites were indiscriminately firing upon the security forces. In spite of repeated warning from the party commander to stop firing, the Maoists continued to fire upon the security forces with an intention to cause serious damage to the troops and loot their weapon. In self defense the troops also opened retaliation firing and advanced towards the hide out from where the Maoists were firing. Inspector Rameshwar Deshmukh regrouped his men and tactfully retaliated in order to neutralize the heavily armed Maoists. With virtually no cover available, owing to the fact that troops were ascending the hill, he exhibited tremendous determination to fight back the enemy and not yield the ground. The exchange of fire continued for about half an hour and not able to withstand the retaliation action of the security forces, the naxalites fled the scene taking advantage of their familiarity with the terrain and the cover of thick jungles.

As the firing ceased, a search operation was carried out near the spot of the encounter. During the search, a male dead body in Maoist uniform was found from the sport, who was later identified as Ramsu, Member Awapalli LOS. Further search of the area from where the Maoists fired, yielded one 7.56mm pistol with 3 rounds loaded in the magazine, 1 live round of .303 caliber, 1 misfired round and 4 fired cases of .303 caliber, 1 local made hand grenade, 8 fired cases of AK 47, 2 of INSAS and cordex wire were recovered. Apart from the arms and ammunition, huge quantities of medicine, pittus, water cans, uniforms, magazine pouch etc were also recovered. The recoveries established the presence of Maoist leaders of Madded Area Committee.

Inspector Rameshwar Deshmukh displayed great professionalism and courage when his party came under heavy firing. His swift and decisive response when he himself and his men came under the killing zone demonstrated exemplary courage and gallantry. His ability to motivate the troops, calculated risk taking and completing the task successfully demonstrates exemplary leadership and self-confidence. His sharp operational sense under great adversity ensured the safety and success of all the troops.

In this encounter, Shri Rameshwar Deshmukh, Inspector, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/01/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 126-Pres/2017-The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Chhattisgarh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Laxman Kewat
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 08.10.2014 at about 1200 hrs, Inspector Laxman Kewat received information that a large number of naxalites alongwith some prominent naxal leader were seen near village forest area of Jangla Police Station limits. A joint team of DEF and CRPF was sent for patrolling, cordon and search operation under the leadership of Inspector Laxman Kewat on 08.10.2014. A joint party comprising of DEF and CRPF set off tactically towards village Potenar-Titopara, Gundipur, Hakwa, Peddajojer, Kudmer and Reddy of PS Jangla, distt. Bijapur (C.G.). When the operational force were moving towards the area and on arriving near village Potenar, as soon as the naxalites saw the police party, they started indiscriminate firing. The police party also retaliated in self defence and fired on the naxalites. Inspector Laxman Kewat took the bold and courageous step and tactfully moved forward by adopting fire and move tactics and asked his men to follow him. When naxalites realised that the police party was stronger than them, they ran away towards the dense forest. After this, the police party cordoned and searched the surroundings area. The Police party recovered bodies of three dead unknown female naxalites, carrying one .303 musket rifle, 06 rounds of .303, 02 nos. 12 bore rifle, 04 nos. 12 bore rounds, 08 nos. empty cases of AK-47, 15 nos. empty cases of SLR, 05 empty cases of INSAS, 03 pitthus, 10 detonators, medical kit, naxalite literature and other daily use items.

In this action, Inspector Laxman Kewat provided exemplary leadership to his troops at the hour of crisis. When his party was attacked by naxals, he exhibited great presence of mind and superb operational sense. Inspector Laxman Kewat fought without caring for his life. He motivated his men to defend each other, under his able guidance and leadership, the police personnel kept moving forward to counter the naxal attack, knowing fully well that every step could have been fatal. The exemplary courage, lion hearted effort and gallant action without caring his life, in service of the Nation has brought laurels to the Chhattisgarh Police.

In this encounter, Shri Laxman Kewat, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/10/2014.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 127-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Chhattisgarh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Gorakhnath Baghel
Addl. Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 21.11.2015, based on a specific intelligence information regarding presence of around 50 to 60 armed CPI (Maoist) cadres belonging to Darbha Division Committee, Malangir Area Committee, Malangir LOS, LGS and 24 no. Platoon between Rewali and Nagarguda forest area, an operation was launched under the command of Shri Gorakhnath Baghel, Additional SP Operations, Dantewada to apprehend the armed naxalites.

The operational team comprised of 39 security personnel from DRG Dantewada and STF. The troops advanced towards the jungle of Nagarguda after searching forest of Kidiras, Periaya and Rewali. In the morning of 22.11.2015 at around 07:15 hrs, when the troops reached the jungle area in between Rewali and Nagarguda, CPI (Maoist) cadres indiscriminately fired upon the security forces, with an intention to cause severe casualities to the police personnel and loot their weapons. Although the naxals mounted a massive attack on the security forces, the troops bravely faced the situation and followed the field craft and tactics to counter the situation. Additional SP Gorakhnath Baghel instructed his men to take position with the available cover in the forest and by disclosing his identity warned the armed naxalites to stop insdicriminate firing. The armed naxalites with an intention to inflicit severe damage to security personnel didn't stop the firing and in turn scaled up the attack on the troops.

Additional SP ordered his troops to retaliate in self defence and advance towards the naxal location to neutralize the threat. The additional SP exhibited conspicuous courage and by risking his own life, led the troops to cordon the naxals, who were firing from a dominating position. After breaking the naxal ambush, the troops tactfully advanced up to the location from where they were indiscriminately firing upon the security personnel. Not able to withstand the tactful action of the troops, the armed naxals retreated from their position and by taking advantage of dense foliage and hilly tracts fleed away from the spot.

After the exchange of fire, thorough search of the spot was conducted and 04 dead bodies of female CPI (Maoist) cadres were recovered, who were later identified as (01) Rame, Member of Malangir Area Committee, (02) Sanni, Member of Malangir LOS, (03) Maase, Member of Malangir LOS and (04) Pande, Member of Malangir LOS. One .303 rifle, two 12 bore rifles with 44 rounds of ammunition, Cash of Rs. 19,000/-, and other daily use items were also recovered from the spot.

In this action Shri Gorakhnath Baghel, ASP Dantewada provided exemplary leadership to his troops during the challenging situation. When his party was attacked by naxals he exhibited great presence of mind and superb operational sense. Shri Gorakhnath Baghel, ASP Dantewada fought without caring for his own life and motivated his men to face the challenge. The exemplary courage and gallant act exhibited by Shri Gorakhnath Baghel, has brought laurels to the Chhattisgarh Police.

In this encounter, Shri Gorakhnath Baghel, Addl. Superintendent of Police, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21/11/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 128-Pres/2017-The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Delhi Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri S.K. Giri
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 05.05.2006 an information received in Special Cell/NDR that a notorious, rewarded & Inter-state gangster Ayub @ Lambardar @ Azam @ Masterji, involved in over 70 heinous cases in Delhi/NCR, Uttar Pradesh, Uttranachal etc along with his gang members would come in Delhi in a white Tata Sumo No. UP-I I E-3770 with deadly weapons via Sonia Vihar Pushta to commit dacoity in the area of Timarpur Delhi. On this input, a team led by ACP Sanjeev Kumar Yadav reached at 5th Pusta Sonia Vihar, Delhi and took their position accordingly. At about 10.45 p.m. the said Tata Sumo arrived from Tronica city side and it was signaled to stop by the police party but the driver of' the car accelerated speed to escape resulted-in the vehicle collided with road divider. No sooner did, the vehicle collided with the divider, 6 occupants of the vehicle including 2 occupants identified as Aslam and Ayub jumped from Tata Sumo by opening indiscriminate firing on police party and rushed towards West side to escape. The bullets fired by the desperados hit to the chest of bullet proof jackets of ACP Sanjeev and Inspr S.K.Giri and also passed close to Insp. Manoj Dixit. SI Ranbir Singh. SI Ashok Tyagi, HC Satish Kumar, HC Harish Kumâr and HC Devender. Immediately ACP Sanjeev Kurnar Yadav and Inspector Manoj Dixit took their position towards East side whereas Inspector S.K. Giri and HC Harish Kumar to the right of ACP to confronting with gangsters. SI Ranbir Singh and HC Devender took their position to the right of Inspector S .K Giri and SI Ashok Tyagi HC Satish Kumar took their position diagonally in the left of ACP to confront with gangsters. The police team challenged all 6 desperados to surrender but the desperados continued firing on the police party. The above police officers showed exceptional courage at that moment and with the apprehension to avert casualties of police party and apprehended criminals, fired in self-defence. The cross-fining from both sides continued for about 20-25 minutes. In cross-firing, one criminal managed to escape despite chase due to heavy darkness and dense bushes while 5 criminals sustained bullet injuries. The injured criminals were immediately shifted to hospital wherein they were declared brought dead. Two 9 MM Pistols & 29 live cartridges, one .32 Revolver, two .32 Pistols, one live Hand Grenade with detonator. one Country made Pistol of .315 bore with 4 live cartridges. 1- knife, 1 Tata Sumo car and fired cartridges etc were recovered from the desperados and a case under relevant sections of law was lodged at P.S. Khajuri Khas, Delhi. The team of Special Cell was working on a desperate gang of criminals involved in spates of armed dacoities/robberies in Delhi/NCR in first quarter of year 2006. It was an open challenge for Police to nab the gang. The team of Special Cell collected intelligence and finally succeeded to trace the gang of notorious, rewarded & Inter-state gangster Ayub @ Lambardar @ Azam Masterji of Sardhana, Meerut UP involved in those incidents.

In this encounter, Shri S.K. Giri, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/05/2006.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 129-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Haryana Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Anil Kumar Rao, IPS
Inspector General of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

'Operation Samvedi' was launched by the Haryana Police to execute the non-bailable warrants issued by the Hon'ble Punjab and Haryana High Court against contemnor Rampal under the leadership of Shri Anil Kumar Rao, IPS, IGP/Hisar Range, Hisar. Rampal and his supporters had planned to pitch a battle against the police in case any attempt made by the police to arrest Rampal. There were about 30,000 to 40,000 people inside Satlok Ashram' Barwala, district Hisar. The women and children were made human shield by Rampal to evade his arrest. A private army of commandos equipped with anti-riot gears, firearms, petrol bombs, acid-pouches, sling-shots and pebbles/stones etc was raised and trained to prevent any attempt by police to arrest Rampal. Keeping in mind the likelihood of large collateral damage, the police under his leadership, undertook the operation in a professional manner. The 'Satlok Ashram was completely cordoned off by 17th Nov. 2014 and an order under section 144 of the Criminal Procedure Code was promulgated by the District Magistrate, Hisar. All efforts to persuade the Ashram followers to leave the Ashram peacefully failed. On 18th Nov. 2014, at around 12:00 P.M., a planned and co-ordinate attacks began from within the fortified walls of the Ashram. Shri Anil Kumar Rao, IPS along with Shri Satender Kumar Gupta,IPS, SP/Hisar, Shri Sumit Kumar, HPS, the then DCP/Faridabad, Shri Rajbir Singh, HPS, DSP/Barwala, Shri Bhagwan Dass, DSP/Siwani (now DSP/Hisar) Inspector Jeet Singh, Gunpal Singh ORP/ASI (lncharge Cyber Cell, Hisar Range, Hisar) and other police force warned the followers of Rampal who were standing in front of the main gate of the ashram armed with deadly weapons like guns, lathis, acid pouches, chilly bombs and slings etc. Repeated announcements were made by Shri Anil Kumar Rao, IPS, IGP/Hisar Range, Hisar, Head of Operation "SAMVEDI" and Shri Satender Kumar Gupta, IPS, SP/Hisar to the followers to vacate the Ashram. In the meantime, the followers attacked on police officers and men pelted stones, threw acid pouches, used chilly bombs and sling shots etc.There was intermittent firing from inside the Ashram simultaneously. One gunshot was fired from the Ashram aiming Shri Anil Kumar Rao but fortunately it did not hit him. The whole operation was successfully accomplished without any loss of life from any side due to professional approach adopted by police under the leadership of Shri Anil Kurpar Rao, IPS.

Shri Satender Kumar Gupta, IPS, Superintendent of Police, Hisar was also present at the main gate of the Ashram during the operation. He led the police party in accomplishing the said operation. At the place of their presence, few followers of Rampal suddenly came having canes of kerosene oil in their hands. They poured the kerosene oil on their body and lit fire upon their body in order to commit self-immolation. It was due to the efforts of Shri Satender Kumar Gupta and his team that these followers were saved and removed from the place.

Shri Anil Kumar Rao and SP Hisar were very near to the violent and attacking mob. The attackers had attacked both of them and other police force but they played a great role in order to fail their aim. They have given a valiant fight and were able to break the front boundary and first gate of Ashram. Both of them had sustained injuries but keeping in view the morale of police they also did not get themselves medically examined. SP, Hisar sustained injury on his head and his spectacles and mobile phone were broken. Blood was oozing from his head despite that he did not care for his injuries and life and fought bravely. Because of immense courage and conspicuous gallantry shown by both the officers, the whole operation was accomplished successfully without any loss of life from any side. Apart from the above, both the officers successfully removed the thousands of people safely from the Ashram to their homes.

In this regard, the case FIR No. 428 dated 18.11.2014 was registered initially under sections 107/147/148/149/186/188/120B/121/121A/122/123/224/225/307/332/342/353/436 of IPC and section 25 of Arms Act, Explosives Substances Act, 3/4 PDPP Act and Sections 16/18/20/22-C/23 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 PS Barwala against Rampal and his aides (followers). A Special Investigation Team was constituted to investigate the above said case. During the course of investigation, 18 fire arms, 19 Air guns, 45 Petrol Bombs, One Chilli Grenade, 04 Bullet proof jackets, 9675 lathies, 228 helmets and 26 cane shields were recovered from the Ashram.

In this action, Shri Anil Kumar Rao, IPS, Inspector General of Police, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/11/2014.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 130-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Saqib Bashir Wani
Sub Inspector

02 Tariq Ahmad
SGCT

03. Jagjit Singh
SGCT

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 24/02/2015, Shopian Police, received an information that some dreaded terrorists are hiding in Village Heff District Shopian. Accordingly, the village was cordoned off with the assistance of 55 Bn RR & 14th Bn CRPF. After laying the cordon at 1700 hours search operation was started. During search process, presence of two terrorists in the house of Ahsan Padder R/o Heff was confirmed. At the first instance, cordon around the target/adjacent houses was tightened/strengthened and civilians including Children & women were evacuated out of the cordoned area. In order to make the operation successful, two assault groups were formed, first led by Shri Attaf Khan, SSP Shopian including SI Saqib Bashir which took position on the front side of the house while as second group led by Shri Sajjad Ahmad Shah, ASP Shopian including Sgct Jagjit Singh, Ct Tariq Ahmad took position on rear side of the house. In the meantime, terrorists were asked to surrender which they declined and in response started indiscriminate firing on assault groups to break the cordon and escape. However assault groups, led by SSP Shopian and ASP Shopian exhibited extra ordinary courage/determination and retaliated the fire in full volume without caring for their own lives. The ensuing gun battle resulted in elimination of one militant. However, other holed-up militant fired continuously/indiscriminately with the intention to keep the forces busy till dusk so that he could manage his escape under the cover of darkness. In the meantime, DIG of Police SKR Anantnag also arrived on spot to take stock of the situation. In order to avoid collateral damage during night hours, it was decided to suspend the operation for the night and maintain vigil around the target house. On the first light of 25-02-2015, the holed-up militant was again asked to surrender which he rejected and instead hurled grenades followed by firing. The above three police personnel, remained steadfast at their assigned positions, launched final assault with full strength and after a while firing from other side stopped. It was believed that the terrorist may have died in retaliatory fire. To ascertain the facts, a joint party of Police/SFs, under the supervision of SSP Shopian approached the main entrance of the house, however the injured terrorist suddenly came out & hurled grenades, followed by indiscriminate fire to which the operational party retaliated bravely/dedicatedly in self defense and eliminated the terrorist on spot. The slain terrorists were later identified as Ashiq Hussain Dar S/o GH Hassan Dar R/o Turkawanagam Shopian & Shabir Ahmad Ganie S/o Mohd Akram Ganie R/o Rabgam Pulwama of JeM outfit. A huge cache of arms/ammunition was recovered from the encounter site and case FIR No. 10/2015 U/S 307 RPC,7/27 A. Act was registered in PS Zainapora in this regard. SSP Shopian, ASP Shopian, SI Saqib Bashir, Sgct Jagjeet Singh and Const. Tariq Ahmad, exhibited extra ordinary courage and operational ability which resulted in completion of the successful operation without any collateral damage. The above police personnel, displayed presence of mind while evacuating the civilians, trapped in encounter area without caring for their lives. Although both the terrorists had tried their best to disrupt the evacuation process, the above police personnel without losing their cool, exhibited good application of mind and succeeded in their goal. The slain terrorists were involved in many terrorist activities. Their elimination gave a shocking jolt to terrorist groups and public heaved a sigh of relief in general and political activists/Panchs & Sarpanchs in particular.

Recovery:

1.	Rifle AK- 47 (damaged)	-	02 Nos.
2.	Mag AK-47 (damaged)	-	03 Nos.
3.	UBGL	-	01 No.

In this encounter, S/Shri Saqib Bashir Wani, Sub Inspector, Tariq Ahmad SGCT and Jagjit Singh, SGCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/02/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 131-Pres/2017—The President is pleased to award the 2nd Bar to Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Tanweer Ahmed Jeelani Dy. Superintendent of Police	(2nd Bar to PMG)
02	Mohd Nawaz Khandey Dy. Superintendent of Police	(PMG)
03.	Irshad Ahmad Reshi Inspector	(1st Bar to PMG)
04	Salfie Arshid Bangroo Sub Inspector	(PMG)
05.	Vinny Safaya Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 21.06.2015, Police Kulgam received a specific information regarding presence of terrorists in village Redwani Bala Kulgam, who had arrived in the area to carry out some subversive activity. Accordingly, a Police team under the command SSP Kulgam, rushed to the spot and cordoned the entire hamlet. In the meantime, operational men were divided into two teams one headed by Shri Tanweer Ahmed Jeelani-DYSP (Ops) Hatipora including Inspr. Irshad Ahmad, and another led by Shri Nawaz Ahmad Khanday, Dy.SP OPS Manzgam including S.I Salfie Arshid, Ct. Vinny Safaya & search operation was started. During search, militants were found hiding in the house of Muzaffar Ahmad Dar S/o Abdul Rehman Dar. After strengthening the cordon around target house, hidden militants were asked to surrender, however, they declined the offer and resorted to heavy fire followed by grenade lobbing so as to inflict collateral casualties and break the cordon to escape from the scene. However, advance parties particullarly Shri Tanweer Ahmed Jeelani-DY.SP (Ops) Hatipora, Shri Nawaz Ahmad Khanday, Dy.SP OPS Manzgam, Inspr. Irshad Ahmad, S.I Salfie Arshid, and Ct. Vinny Safaya, exhibited extra ordinary courage and retaliated the fire effectively which forced the militants to retreat. At that stage, first priority of the operational teams was to evacuate the civilians, trapped in the target house/adjacent houses. For the purpose operational teams in general and above police personnel in particular, showed presence of mind and extra ordinary courage and evacuated all the trapped civilians. The exchange of fire continued throughout the night at regular intervals, during which holed-up militants made several attempts to escape from the house, however operational party remained firm and did not provide any chance to them. The ensuing gun battle lasted for about twenty hours and culminated with the elimination of two hard core terrorists of LeT identified as Javeed Ahmad Bhat R/o Redwani and Idrees Ahmad Nangroo R/O Badroo. A huge cache of arms/ammunition was recovered from the encounter site and case FIR No. 114/2015 U/S 307 RPC, 7/27 A. Act has been registered in P/S Kulgam.

The gallant and courageous action exhibited by Shri Tanweer Ahmed Jeelani-DY. SP (Ops) Hatipora, Shri Nawaz Ahmad Khanday, Dy.SP OPS Manzgam, Inspr. Irshad Ahmad, , S.I, Salfie Arshid, and Ct. Vinny Safaya, led to the elimination of these two hardcore militants who were active in the area, for pretty long time and were involved in number of criminal/tenor cases including killings of Police Constable Zahoor Ahmad Dar and follower Mohd Rafiq Mir, besides, they were also involved in four other case FIRs. With the elimination of slain terrorists, LeT received a tremendous set back.

Recovery:

1.	AK 47 rifle	:	01 No.
2.	Magazine AK 47	:	01 No.
3.	AK 47 rounds	:	05 Nos.
4.	SLR Rifle	:	01 No.
5.	SLR Magazine	:	01 No.

6.	SLR rounds	:	30 Nos.
7.	UBGL	:	01 No.
8.	UBGL thrower	:	01 No.

In this encounter, S/Shri Tanweer Ahmed Jeelani, Dy. Superintendent of Police, Mohd Nawaz Khandey, Dy. Superintendent of Police, Irshad Ahmad Reshi, Inspector, Salfie Arshid Bangroo, Sub Inspector and Vinny Safayale, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 2nd Bar to Police Medal/ 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22/06/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 132-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Zahoor Ahmad Wani
Sub Inspector

02. Faisal Khan
Assistant Sub Inspector

03. Manzoor Ahmad Mir
Assistant Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 04-10-2015, a specific information was received/developed by Police regarding presence of JeM operational Chief Saleem @ Aadil R/o Pak alongwith an associate, in the house of Manzoor Ahmad Bhat S/o Gh. Ahmad Bhat of village Hariparigam Awantipora. The operation was planned and cordon established around target house at 1600 hrs by Police Awantipora. After establishing the cordon, 03/42 RR and 10 Para were also inducted in the operation.

On noticing the presence of operational forces, militants, all of a sudden jumped out of the target house, firing indiscriminately followed by grenade lobbing to break the cordon and escape from the scene. However, SI Zahoor Ahmad Wani, ARP-115653, ASI Faisal Khan, 113/Awt, ASI Manzoor Ahmad, 213/Awt, and other team members, retaliated the fire effectively, forced militants to retreat and hide behind the compound wall of target house at two different locations. In the meantime, family members of target house rushed out towards the main gate for safety, however one of them stumbled and fell down inside the house compound who was instantly taken as hostage by one of hidden militant. The militants, through PA system were asked to surrender & set hostage member free which they declined. It was planned to evacuate the hostage civilian first, for which two parties were constituted one comprising upon ASI Faisal Khan, Sgct Tariq Ahmad, Ct. M. Shameem, Sgct Arfat Ahmad, Ct. Shabir Ahmad, Ct. Javid Ahmad and 10 SPOs, who without caring for their lives, very tactfully/professionally with courage & bravery managed to reach rear side of the wall where the civilian was kept hostage. The party engaged the militant in firing without targeting him owing to the fact that hostage person may get hit. As the militant got engaged in cross firing, the civilian got an opportunity to leap to other side of the wall where ASI Faisal along with his party was already waiting for him. The militant in a fit of rage also jumped the wall to shoot the civilian but was eliminated by the vigilant police party by responding with quick fire. On the other hand, another hidden militant was approached by second party comprising of ASI Manzoor along with Sgct Mukhtar Ahmad, Ct. Manzoor Ahmad, Ct. Mukhtar Ahmad, Ct. Muneer Ahmad, Ct. Amir Rasool and 09 SPOs, in the same professional manner. A fierce face to face gun battle started which lasted for some time & fire from the other end stopped. It was difficult to ascertain whether the militant was dead or alive, however, SI Zahoor Ahmad, ASI Manzoor with some police men volunteered to go ahead to ascertain his death. They moved towards the militants in a skillful manner, militant who had sustained bullet injuries and was pretending to be dead, abruptly tried to lob grenade towards the approaching party, however the vigilant party fired and eliminated him. The slain militants were later identified as (1) Saleem @ Aadil and (2) Rehman @ Chota Burmi R/o Pak of JeM outfit. A huge cache of arms/ammunition was recovered from encounter site and case FIR No.101/2015 U/S 307 RPC, 7/27 A.Act stands registered in P/S Awantipora. The Slain militants were involved in various criminal/terror cases including grenade attack at Bus stand Tral on 05-12-2014 in which 05 civilians died and 23 got injured. The militants were also involved in kidnapping of Shakeel Ahmad Shah and Mousin Majid R/O Peernar, and indiscriminately firing on a patrolling party at Gadpora Tral.

Recovery:

1.	AK 47	:	02 Nos.
2.	AK Mag	:	04 Nos.
3.	AK Rounds	:	80 Nos.
4.	Hand grenade	:	01 No.

In this encounter, S/Shri Zahoor Ahmad Wani, Sub Inspector, Faisal Khan, Assistant Sub Inspector and Manzoor Ahmad Mir, Assistant Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 04/10/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 133-Pres/2017—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Mumtaz Ahmed Superintendent of Police	(1st Bar to PMG)
02.	Zaheer Abbas Dy. Superintendent of Police	(1st Bar to PMG)
03.	Davinder Singh Sub Inspector	(PMG)
04.	Sonam Stobgais SGCT	(PMG)
05.	Mohd Hussain Wani SGCT	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 28.10.2015, Shri Mumtaz Ahmed, SSP Kulgam generated a specific intelligence regarding presence of LeT terrorist commander Abu Qasim in village Khandipora Kulgam, who had arrived in the area to revive strategies/plans of his outfit and to chalk out future activities. Operation was planned strategically, keeping in view the significance of the information and before launching the operation, information was shared with 09-RR/18th Battalion CRPF. Operational men, under the supervision of SSP Kulgam, moved covertly towards target area through multiple directions. Chink proof cordon of entire hamlet was established to ensure that said militant may not be provided any chance to escape, as he had several times managed his escape from cordons even after inflicting casualties to police/SFs.

After laid down of unyielding cordon, search operation was started and location of militant was ascertained in Bonpora Mohalla of village Khandipora. All possible escape routes of the target Mohalla were sealed and first priority was given to evacuation process of civilians, trapped in cordoned area. At that time, SSP Kulgam alongwith other team members of advance party which include Shri Zaheer Abbas, DYSP Ops Kulgam, SI Davinder Singh, ARP-115630, Sgct. Sonam Stobgais, ARP-996597 and Sgct. Mohd Hussain, EXK-984253 made several attempts and succeeded in evacuation of all civilians. As it was getting dark, proper arrangements including illumination of the target area and laid down of concertina wire on all possible escape routes were made. Operational men were accordingly briefed/sensitized by Shri Mumtaz Ahmad, SSP Kulgam regarding importance of the operational and capabilities of trapped terrorist. In the meantime, SSP Kulgam constituted two teams, one under his command and second under the command of Shri Zaheer Abass, Dy. SP operation Kulgam for result oriented operation. Hidden terrorist through Public Adress System was asked to surrender which he declined and under proper planning came out with indiscriminate firing and grenade lobbing in order to break the cordon and escape from the scene. However, Shri Mumtaz Ahmad, SSP Kulgam and Shri Sajad Ahmad, Dy. SP operation Kulgam alongwith their team members which included SI Davinder Singh, Sgct. Sonam Stobgais, and Sgct. Mohd Hussain, exhibited extra ordinary courage and bravery and retaliated the fire effectively which forced the militant to retreat. The holed up militant made several such attempts to create a chink in the unyielding cordon but operational men in general and the above police personnel in particular kept their nerves and did not provide any chance to holed up militant to break the cordon from

any of the side. In the meantime militant sensing noose around his neck, made an attempt with full volume of firing and grenade lobbing and came out, but with effective retaliation by above police personnel, militant was forced to take shelter behind mosque of target Mohalla. The above police personnel pinpointed the hidden militant behind mosque and made a final assault which resulted in elimination of terrorist later identified as Abdul Rehman @ Abu Oasim R/o Bahawalnor Pakistan Div Commander of LeT. A huge cache of arms/ammunition was recovered from encounter site and case FIR No.223/2015 U/S 307 RPC, 7/27 I.A Act, stands registered in P/S Kulgam in this regard.The exceptional/instrumental role, exhibited by Shri Mumtaz Ahmad, SSP Kulgam, Shri Zaheer Abbas, Dy SP operation Kulgam, SI Davinder Singh, Sgct. Sonam Stobgais, and Sgct. Mohd Hussain during the entire operation was remarkable. It was only immaculate intelligence generation, planning, extreme presence of tactical acumen/mind, and determination which led to successful operation without any collateral damage. The elimination of militant was great success to SFs and a big jolt to LeT outfit in the State.

The slain militant was active in the state since last 05 years. He was involved in a number of terror/criminal cases including Udhampur attack on the BSF Convey on 5th of August 2015 in which two BSF Jawans lost their lives and 12 others sustained injuries, killing of Inspector Mohd Altaf Dar at Gund Dachin Bandipora on 7th of Oct 2015, fidayeen attack at Hayderpora Srinager Bypass in which 08 Army Jawans lost their lives and several others sustained injuries, killing of Dr. Jalal ud Di, Ex. Director of SKIMS and his PSO, attack on BSF Bus near Kadlabal Pampore in which six BSF personnel including Dy. Commandant sustained injuries, attack on police party at Galander Pampore in which two constables got killed, killing of SHO P/S Chadoora in year 2013, killing of 02 CRPF personnel in the year 2013, killing of two SPOs at Court Complex Pulwama in year 2014, in firing at Batapora Tokuna on 04/11/2014, killing of one policeman and one Army Jawan at Qaiser Mullah Chadoora, killing/weapon snatching of CRPF personnel at Awnuoora Zainpora Shopian, attack on CRPF election party at Nagbal Zain Pora Shopian in which several CRPF personal were injured and one teacher was killed, attack on police party at Shopian and attack on Hotel Silver Star at Bypass Srinagar in which two innocent civilians were killed . He was the main recruiter and recruited about 25 local youth into Let outfit.

Recoveries made :—

1.	AK 47 rifle	-	01 No.
2.	Mag AK	-	02 Nos.
3.	Live round	-	09 Nos.

In this encounter, S/Shri Mumtaz Ahmed, Senior Superintendent of Police, Zaheer Abbas, Dy. Superintendent of Police, Davinder Singh, Sub Inspector, Sonam Stobgais, SGCT and Mohd Hussain Wani, SGCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29/10/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 134-Pres/2017—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Tanveer Jeelani Superintendent of Police	(1st Bar to PMG)
02.	Sajad Ahmad Malik Dy. Superintendent of Police	(PMG)
03.	Gulzar Hussain Khan Head Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12.09.2015 at about 1400 hours, Police Srinagar received a specific information about presence of Militant in village Naman, Begambagh Kakpora, Pulwama. Accordingly Police Srinagar and troops of 50 RR under the close supervision of Shri Tanveer Jillani,, SP, PC Srinagar immediately rushed to the spot and cordon off the entire hamlet. For result oriented operation, the operational men were divided into three teams. First team headed by Syed Majid Mosavi, Dy.SP PC Srinagar and troops of 50 RR, was tasked to lay outer cordon of the targeted area, second team headed by DySP, Furqan

Qadir of PC Srinagar cordoned the target Mohalla and the third party under the supervision of Dy. SP Sajad Ahmad Malik included HC Gulzar Hussain, EXK-973256 was tasked to lay inner cordon of the target house belonging to Mohammad Yousuf Dar. In the meantime, hidden militant on noticing the presence of the operational men under proper plan to escape from the scene, came out suddenly and started indiscriminate firing. However, advance party which included the above police personnel, chased the militant with effective retaliation, which forced him to take shelter in nearby maize fields. Keeping in view the presence of civilians in the maize field and in adjacent paddy fields, retaliation fire was stopped.

At the stage, Shri Tanveer Jellani SP PC Srinagar constituted two small parties, one headed by. DySP Sajad Ahmad Malik and another by HC Gulzar Hussain and started to Zero the target from all directions. As soon as advance parties which included the above police personnel started to proceed towards holdup militants, he out of frustration started indiscriminate firing. However, men of advance parties kept militant busy from different directions and Shri Tanveer Jeelani SP, PC Srinagar alongwith DySP Sajad Ahmad Malik, Dy.SP PC Srinagar and HC Gulzar Hussain, crawled closer to militant and made final assault effectively without caring for their personal lives which resulted in elimination of the militant later identified as Irshad Ganai @ Abu Abdullah Naveed @ Rehman-ul-Umar S/o Ab. Majeed Ganai R/o Larikipora, Awantipora Group Commander of Let outfit. A huge cache of arms/ammunition was recovered from encounter site and case FIR No. 289/2015 U/S 307 RPC, 7/25 A. Act stands registered in P/S Pulwama in this regard. The slain terrorist was active in South/Central Kashmir Ranges for last five years and was involved in various criminal/terror incidents including attacks on SFs, grenade lobbing at crowded/market places, weapon snatching incidents and was responsible for threatening/resignation of Sarpanchs/Panchs in the area. The elimination of slain militant was a big jolt to Let outfit, great success for security forces and was a big sigh of relief for general public, particularly in Central/South Kashmir Ranges.

Recoveries made :—

1.	AK 56 rifle	:	01 No. damaged
2.	Magazine AK-56	:	02 Nos. (01 damaged)
3.	Live rounds	:	59 Nos.

In this encounter, S/Shri Tanveer Jeelani, Superintendent of Police, Sajad Ahmad Malik, Dy. Superintendent of Police and Gulzar Hussain Khan, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/09/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 135-Pres/2017—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Javaid Iqbal
Superintendent of Police

02. Rakesh Pandita
Assistant Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 06-08-2015 at 1350 hours, Police Pulwama received information about the presence of a militant at village Astan Mohalla Kakapora who was planning to carry out terror activities in the area. Information was further developed/specified by Shri Javaid Iqbal-KPS ASP Pulwama and it was ascertained that militant is hiding in the jointly owned house of Abdul Majid Sofi S/o Ali Mohd and Arshid Ahmed Sofi S/o Abdul Gani. After sharing the information with 50 RR, 182/183 Bns CRPF, joint cordon of the target Mohalla was established under the command of ASP Pulwama Shri Javaid Iqbal, KPS assisted by a police party from PC Pulwama which included ASI Rakesh Pandita No. 252/PL, troops of 50 RR and 182/183 Bns CRPF.

During, search operation of the area, the militant hiding in the target house started indiscriminate firing on the police party in order to break the cordon and escape from the scene. However, due to presence of mind and extra ordinary courage, exhibited by Shri Javaid Iqbal-KPS (ASP Pulwama) assisted by other team members including ASI Rakesh Pandita, fire was retaliated effectively which triggered an encounter. The first challenge for the operational party was to evacuate civilians, trapped in the target house and in adjoining houses. Accordingly, a Police team under the supervision of ASP Pulwama

including ASI Rakesh Pandita who without caring for their precious lives, succeeded in evacuating all the trapped civilians. After evacuation process, militant was asked to surrender, which he declined and instead fired indiscriminately. As it got dark, several measures like laying down of concertina wire and illuminating of target area etc. were taken so as to foil every attempt of militant to escape from the cordoned area. However, firing continued throughout the night and same was retaliated with full volume. In the morning at about 0400 hours, operation was re-started and it was decided to launch a final assault. For the purpose, two teams were constituted one headed by Shri Javaid Iqbal, KPS ASP Pulwama included ASI Rakesh Pandita and another troops of Army/CRPF. These teams, particularly the police team started the final assault which resulted in elimination of holed up militant later identified as Mohd Afzal Shah @ Talib S/O Shamsdin Shah R/o Kakapora of LeT outfit. A huge cache of arms/ammunition was recovered from the encounter site and case FIR No.36/2015 U/S 307 RPC, 7/27 I. A. Act stands registered in Police Station Pulwama in this regard. The slain militant was active for last 2 years and was involved in 14 case FIRs. Furthermore, slain was mastermind in motivating the new youth to join the militant ranks, he succeeded in motivating terrorists like Adil Ahmed Shergojri, Mohd Ayoub Lone Kakpora, Reyaz Ahmed @ Sheeraz, Mansor Ahmed Bhat and Azad Ahmed Lone. Slain was also a big threat for Panchayat members of the area and was responsible for resignation of many of them. His elimination was a huge setback to militant cadres particularly for LeT outfit and was a great relief for security forces/civilians in Kashmir province particularly in south Kashmir.

Recoveries made :—

1.	Rifle (AK 56) without Butt	:	01 No.
2.	Mag (AK 56)	:	04 Nos.
3.	Rounds (AK-56)	:	105 Nos.
4.	Grenade	:	01 No.

In this encounter, S/Shri Javaid Iqbal, Superintendent of Police and Rakesh Pandita, Assistant Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 06/08/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 136-Pres/2017—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Pankaj Sharma
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 26/10/2015 at about 1620 hours, a specific intelligence was generated by Police Pulwama regarding presence of militants in village Drubgam Bala. Accordingly joint cordon around the entire hamlet was established with assistance of 44-RR, 182/183 Battalions CRPF, four teams were constituted and the team headed by Dy.SP and S.I Pankaj Sharma started search of the target area and the search party reached near the house of Abdul Ahad Bhat. Militants hiding inside jumped from the rear window and under the cover of indiscriminate firing ran towards the orchards, adjacent to said house. However, advance search party which included Dy.SP and S.I Pankaj Sharma, exhibited extra ordinary courage and retaliated the fire effectively, thereby provided no chance to militants to break the cordon. One militant took position behind an apple tree and advance party which included SI Pankaj Sharma engaged him in close fire fight which lasted for some time and culminated with the elimination of that militant.

Another militant was continuously firing from another direction due to which one Army personnel of 44-RR Shri Kankara V.Subba Reddy sustained injuries. He was immediately evacuated and shifted to the nearest medical establishment for first aid/treatment. By that time, it was noticed that some civilians were also got trapped in the target/adjoining houses. The team under the supervision of Dy. SP which also included S.I Pankaj Sharma started evacuation of trapped civilians and by repeated attempts all the trapped civilians were evacuated. After completion of rescue operation, the team made a final assault on hidden militant and succeeded in eliminating him. The slain militants were later identified as Aafaqullah Bhat S/O Ab Rashid Bhat R/O Karimabad Pulwama and Abdul Manan Dar S/O Bashir Ahmad Dar R/O Amerbough Shopian of HM outfit. A huge cache of arms/ammunition was recovered from encounter site and case FIR No.71/2015 U/S 307 RPC, 7/27 A. Act stands registered in P/S Rajpora in this regard. The slain militants were involved in number of criminal/terror activities including three FIRs registered in three different districts. S.I Pankaj Sharma fought bravely without caring for his personal life during the whole encounter process right from laying of cordon to final assault and took front in elimination of both the militants.

Recovery:

1.	Rifle (AK-47)	:	01 No.
2.	Rifle (AK-56)	:	01 No.
3.	Mag AK	:	03 Nos.
4.	AK rounds	:	109 Nos.
5.	AK rounds	:	05 Nos. (damaged)

In this encounter, Shri Pankaj Sharma, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/10/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 137-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Tsewang Namgail
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 30/12/2015, at about 1802 hours, SP Pulwama received a specific information regarding presence of militants in the house of Mohd Altaf Bhat S/o Mohd Ali Bhat of village Gusoo, who were planning to carry out some terror activity in the area. Accordingly, operational men of Police, 53-RR and 182/183 Battalions of CRPF rushed to the target village and laid cordon of entire hamlet including target village. In the meantime, while zeroing the target house, hidden militants on noticing the presence of operational men started indiscriminate firing in order to escape from the scene. However, advance party which included Inspr. Tsewang Namgail, EXK-046064 exhibiting presence of mind, quickly took positions, retaliated the fire with full volume which forced the militants to retreat. In the meantime, it was observed that some civilians got trapped in target area and for their evacuation, a team which included Insp Tsewang Namgail was constituted. The team despite heavy firing from other side, succeeded in evacuation of trapped civilians in various attempts. The operation was suspended, owing to darkness after ensuring all required measures for checking militant escape during dark hours. Next day in wee hours, holed-up militants were asked to surrendered, but they denied the offer instead started indiscriminate firing and hurled grenades, however, advance party which include Inspr. Tsewang Namgail, again exhibited extra ordinary courage and bravery and retaliated the fire with full volume in fierce gun battle. The gun battle lasted for some time and culminated with elimination of holed up militants without any collateral damage and loss of property. The slain militants were later identified as Manzoor Ahmed Bhat District Commander of LeT outfit S/o Abdul Rashid Bhat R/o Alochibagh Sajnboora Pulwama and Ukasha @ Muslim Bhai R/O Pakistan who was recently accessed in district Pulwama from Kupwara/Handwara area. A huge cache of arms ammunition was recovered from encounter site and case FIR No.413/2015 U/S 307 RPC, 7/27 A. Act stands registered in Police Station Pulwama.The slain militants were most wanted by security forces, as they were involved in various criminal/terror attacks and were also involved in the conspiracy of BSF Convoy attack at Udhampur. The elimination of duo was a huge setback to LeT outfit and a relief for security forces/civilians in Kashmir province particularly in South and Central Kashmir ranges.

Recoveries made :—

1.	Rifle (AK-47)	:	02 No. (one damaged)
2.	Mag AK 47	:	04 Nos. (02 damaged)
3.	AK Rounds	:	66 Nos.

In this encounter, Shri Tsewang Namgail, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/12/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 138-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Amit Verma
Dy. Superintendent of Police

02. Shakil-Ur-Rahman
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13.03.2013, a fidayeen attack was carried out by two Pakistani terrorists namely Saif and Haider of LeT outfit at Bemina Police Public School. During the fierce gun battle, five CRPF personnel lost their lives, six CRPF personnel and four civilians were injured. During the gun battle, both the terrorists were also eliminated. Immediately, after this gruesome attack, a special team of Police Component Srinagar under the supervision of SSP Srinagar including Dy.SP Amit Verma, Sgct. Shakil-ur-Rahman, and others was constituted to identify and subsequently neutralize the culprits behind this attack. During investigation, a suspicious mobile number was identified which was subsequently analyzed to unearth the real conspiracy. Meanwhile, a shabby character hailing from Uri area, who was believed to be behind this incident was identified. Inputs generated in this regard revealed that Bashir Ahmad Mir @ Haroon S/O Mir Zaman Mir R/O Uri, Baramulla of LeT outfit with the assistance of one Mukhtar Ahmad Shah and Pradeep Singh Bali of LeT outfit were responsible for this attack.

In the follow up action to intelligence input generated, men from PC Srinagar were deputed to Batamaloo bye-pass in the evening of 13/03/2013 where it was reported that Bashir Ahmad Mir @ Haroon of LeT outfit was to travel towards some unknown place in a private vehicle. The men laid a NAKA and started searching vehicles and pedestrians. After some time, Police party noticed that one passenger travelling in a private vehicle while passing through checking point tried to avoid search. The NAKA party acted swiftly and caught hold of the passenger. He was put on spot questioning during which he disclosed his identity as Bashir Ahmad Mir @ Haroon S/O Mir Zaman Mir R/O Uri Baramulla, affiliated with LeT outfit. During further interrogation, he accepted responsibility of Fedayeen attack carried out a Bemina Bye-pass. Upon his disclosure, it came to surface that one terrorist namely Mohammad Zubair @ Talha Zarrar R/O Multan Pakistan, who was also a part of Fedayeen attack made his safe passage and has been provided shelter by the said terrorist in the residential house of one of his relative at Chattabal Srinagar. Accordingly, an operation was planned and a party was dispatched to the location in advance to identify the target house where the said Pakistani terrorist was hiding.

On 14.03.2013, a Police team from PC Srinagar led by Dy. SP Amit Verma assisted by SGCT Shakil-ur-Rahman laid a secret cordon in Chattabal area. Target house was spotted where the above said Pakistani terrorist was hiding. To avoid any collateral damage, the police party was divided into two groups, one group comprising of Dy.SP Amit Verma, Inspr. Sgct. Shakil-ur-rahman and others for laying the inner cordon and second group laid down outer cordon. At 0130 hours, SP PC Srinagar who was the overall incharge of the operation formed a small team of PC Srinagar under the command of Dy.SP Amit Verma for evacuation of the inmates of the target house and subsequently elimination of the terrorist. The team very tactfully and bravely evacuated the inmates and civilians from adjoining houses of old densely inhabited city. In the first instance, the holed up terrorist was asked to opt for surrender, which he ignored and opened fire on operational party. The inner cordon party retaliated. After this at around 0400 hours intervention of the house was planned. However, as the intervention party reached near the target house, it came under heavy volume of fire from the hiding terrorist. Terrorist also lobbed two grenades towards the operational party. At this stage, Dy.SP Amit Verma, who was the Incharge of the inner cordon party constituted two more small teams to enter the house from front side as well as from rear side. As the second party tried to enter the house from the rear side, the holed up terrorist lobbed grenade from a window. Then first party headed by Amit Verma, crawled nearer to the window which frustrated the terrorist who started firing indiscriminately in an attempt to break the cordon and runaway. Noticing the attempts of terrorist, second party headed by Inspr. Sheetal Charak retaliated fire effectively without caring for their personal lives and did not allow the terrorist to flee, with the result the terrorist got frustrated. At this stage silence was noticed for at least two minutes. It was guessed that either the ammunition of holed terrorist has finished or he is trying to make final attempt to make safe passage with more and more collateral damage. At this stage, a call of surrender was given to the holed terrorist again. The terrorist in a clever move agreed for surrender, only to give slip to the police party. The police party including Dy.SP Amit Verma, and Sgct. Shakil-ur-Rahman came openly in the hall and bravely asked the terrorist for surrender. The terrorist came in front of Police party from behind the wardrobe and jumped out of a window to escape but the police party reacted swiftly and apprehended a Pakistani trained terrorist alongwith weapon and live ammunition. The bravery and courage shown by Dy.SP Amit Verma and Sgct. Shakil-ur-Rahman in making the apprehension of Pakistani terrorist possible and recovery of huge quantity of Arms/Ammunition from his possession.

Recovery:

1.	AK 47-	:	01 No.
2.	Mag AK 47	:	04 Nos.
3.	Rds AK 55	:	177 Nos.
4.	Hand grenade(Blue)	:	17 Nos.
5.	Hand grenade(grey)	:	19 Nos.
6.	UBGG thrower	:	01 No.
7.	UBGL grenade shell silver colour	:	40 Nos.
8.	High explosive box (filled)	:	02 Nos.
9.	Timer (casio-F-19W)	:	02 Nos.
10.	Fuse cum detonator	:	02 Nos.
11.	Remote control kit	:	12 Nos.
12.	Map	:	01 No.
13.	GPS German ETREX	:	03 Nos.

In this encounter, S/Shri Amit Verma, Dy. Superintendent of Police and Shakil-Ur-Rahman, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/03/2013.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 139-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jharkhand Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Md. Arshi, IPS
SDPO

02. Ajay Thakur
Sub Inspector

03. Subodh Kumar
Constable

04. Javed Akhtar
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on specific intelligence input, a special Ops "NEPTUNE SPEAR-15" was launched on 12/03/2015 with an objective to search and destroy Maoists camps functioning near village Sargaon, under PS- Chainpur, Distt- Gumla (Jharkhand). For the special Ops, a joint ops party involving 4 teams of 209 CoBRA, one Assault Group of Jharkhand Jaguar and the officers and personnel of Gumla Police were desolved to form other strike Teams, One Cut-Off Team and Two Base Camps.

As per Operation Plan, out of the two Strike teams, One Strike team was under the Leadership of SDPO, Gumla cum ASP Gumla Mr. M. Arshi, IPS accompanying with his Bodyguards CT Subodh Kumar, Ct Javed Akhtar and Sub Inspector Ajay Thakur officer in charge, Palkot Police Station, Gumla along with four teams of 209 battalion Cobra and one Assault Group of Jharkhand Jaguar with officer and jawans.

It was decided that Strike Team led by Mr M. Arshi, SDPO, Gumla would enter forest of village Sargaon from East direction. On 13/3/2015 at about 0730 hrs, when the Strike Team was approaching the target area, with in the Strike Team its commander Mr M. Arshi SDPO Gumla with his bodyguards Ct Subodh Kumar, Ct Javed Akhtar, SI Ajay Thakur and Mr. Vivekanand Singh, Deputy Commandant, SI/GD Lakhan Lal Meena, moving in the front and were few yards ahead of rest of the Team. These members at the front observed some suspicious movement in a nallah just few meters before the

target. The Strike Commander Mr M. Arshi SDPO Gumla immediately alerted the whole party and advanced ahead tactically along with his bodyguards Ct Subodh Kumar and Ct Javed Akhtar and Mr. Vivekanand, Deputy Commandant, SI/GD-Lakhan Lal Meena of 209 CoBRA, but the Maoists sensing the movement of the troops in their direction, opened heavy volume of fire, hurled Grenades and exploded IEDs to deter advance of this front Team. On attack Strike Team at the front immediately took position and Mr M. Arshi SDPO Gumla warned Maoists that "We are Police, drop weapons and surrender" but the Maoist did not deter by the warning and kept targeting team from different directions with LMG, Grenade and other sophisticated automatic weapons. The attacking Maoist were repeatedly and loudly warned to surrender by SDPO Gumla and SI Ajay Thakur but the Maoists did not lend their ear to the call of surrender and carried on targeted firing at police force. Then in the self defense Strike Team Commander Mr M. Arshi SDPO Gumla ordered troops to open fire at intervals to repulse the Maoist attack.

Mr M. Arshi SDPO Gumla without caring for personal safety was firing at Maoists and was crawling to other operation team members to encourage and directing them about firing. Mr M. Arshi alongwith his bodyguards Ct Subodh Kumar and Ct Javed Akhtar and Mr. Vivekanand, Deputy Commandant, SI/GD- Lakhan Lal Meena of 209 CoBRA, exhibiting exemplary courage continued to advance in the direction of coming fire from Maoists side. Due to their audacious action, the other team members were also encouraged to retaliate effectively. The retaliatory firing by front team under leadership of Mr M. Arshi caused severe damage to attacking Maoists, deteriorated morale of Maoist weakened them and made them receded continuously thus forcing the Maoists to dislocate from the defended location held by them.

While the Front Team under the leadership of Mr M. Arshi was engaged in fire at the front, SI Ajay Thakur, OC Palkot PS observed some suspicious movement on the hillock on his right side. He immediately alerted his team about the suspicious movement. SI Ajay Thakur, with his troops advanced tactically towards the hillock along with 209 CoBRA personnel but as soon as they started negotiating the hill, the Maoists holding defended position on the hillock resorted to incessant fire and IED explosion to deter their advance. Despite coming under hostile fire, SI Ajay Thakur, along with 209 CoBRA personnel undeterred by the sudden attack, continued negotiating the hillock and retaliated effectively. Due to their daredevil action the other team members were also encouraged to charge in the direction and repulse the maoist attack by neutralizing one Maoist and forcing others to flee. The firing continued till about 0900 hrs and despite incessant firing and IED explosions by the Maoists, the troops under exemplary command of Mr M. Arshi SDPO Gumla foiled the nefarious attempt of Maoists and saved many precious lives.

The entire operation was executed in an exemplary manner which is an epitome in the annals of successful operations. The Maoists, who were in advantageous position, were taken by surprise, repulsed and compelled to abandon their position. They escaped from their location leaving behind 01 dead body of Maoist. During the search operation, blood spots and blood trails were also found towards escape route of Maoists. It was informed by the reliable sources that few other Maoists were killed and few were critically injured during encounter but they were carried by Maoists taking advantage of dense forest and hills. Along with the dead body of Maoist an American Semi - Automatic Rifle(US Rifle, Springfield), 02 Magazines, 110 bullets, 01 Hand Grenade, 01 walky-talky (Motorola) and other items were found. The deceased was later identified as Sub-Zonal Commander Bhupesh @ Deepak Jee. The operation inflicted an unprecedented damage on the morale and preparation of Maoists.

In this encounter, S/Shri Md. Arshi, IPS, SDPO, Ajay Thakur, Sub Inspector, Subodh Kumar, Constable and Javed Akhtar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/03/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 140-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Maharashtra Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Nitin Ankush Mane
Asst. Police Inspector

02. Mallesh Pocham Kedamwar
Head Constable

03. Jitendra Motiram Maragaye
Naik

04. Gajendra Hirji Saunjal
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 08/05/2016, at 1645hrs, Addl SP (Ops.), Gadchiroli received intelligence from reliable sources about the presence of 10 to 12 armed naxalites in the forest area of Horrekasa and also presence of 2-3 naxal cadres in the village. He immediately planned an operation and tasked Mallesh Kedamwar C-60 party led by PSI Rajesh Khandwe to conduct anti naxal operation in the area. PSI Rajesh Khandwe, C-60 Party commander Mallesh Kedamwar along with his 14 commandos set out for the operation at 1730 hrs.

The police party reached the forest of Horrekasa at 1830 hrs and then it split into three small groups as per the plan. They surrounded the village from three directions and began to close in searching through every lane and house. As the police parties approached a house situated at the middle of the village, suddenly a volley of fire was shot at them from a house. The police personnel immediately took cover on the ground and appealed the naxalties for surrender. Three sides of the house were surrounded by homes of villagers and the fourth side was surrounded by fixed bamboo fencing/wall. The location of the house was challenging to the police since there was hardly any place to take cover and fire at the enemy. Moreover, the enemy was at the 1st floor of the house and the 1st floor was accessible only through a ladder fixed at the opening on the roof of ground floor.

The naxals in the house took hostage of two villagers already present in the house. HC/1961 Mallesh Kedamwar and his team requested Gaon Patil (village Pramukh) and villagers to give a message to naxal cadres to surrender before police. However, the naxal cadres present in the house sent the Gaon Patil back and warned them that, "the issue is between police and us. villagers better not interfere in the matter, we are not going to let go the police party so easily. Thereafter, the naxalites opened intense fire upon the police party in which two policemen namely NPC/1683 Jitendra Margaye and PC/3083 Ramesh Asam were injured. HC Mallesh Kedamwar, without wasting time, putting his life at risk, rushed ahead and opened counter fire at the naxalites, while NPC/1693 Jitendra Margaye gave him cover fire. At this time, API Nitin Mane and PC/830 Gajendra Saunjal taking high risk climbed the wall with the help of a ladder and smashed the window with an iron rod. Thereafter, they opened rapid fire into the room through the open window space. Then the duo climbed onto the roof top and opened burst fire from there (after having dislodged some roof-top tiles). This was extremely risky maneuver since they fired from a very close range without cover. PSI Rajesh Khandwe passed message to Addl. SP and requested for additional force.

Addl. SP(Ops) Gadchiroli, upon receipt of such information, immediately chalked out a plan, suitably briefed the men and sent additional manpower. Accordingly, at 2100 hrs, PC/2279 Shamrao Dugga along with the police party reached Horrekasa and flanked the house from southern side. At around 2100 hrs, API Nitin Mane along with 9 men flanked the house from northern side and at 2130 hrs, Dy SP, along with 15 men and a team of doctors reached the place of incident and sent the injured men for medical treatment while the naxalites kept firing at the direction of police parties.

Some naxal supporters in the village started interfering the ongoing operation and created further trouble for the police party. Dy. SP (Ops) with the help of his team ensured the evacuation of villagers from the firing spot. He once again appealed naxalites to surrender but they opened fire on police party. Dy.SP, asked the men to resort to control fire. He along with five other men risking their lives, brought the mine protected vehicle close to the house for the cover and opened controlled fire at the naxalites. Despite the heavy-fire from naxalites, he then marched up to the house and-pulled out the staircase leading to the first floor of the house. He and his team first evacuated the two hostages in the house. Thereafter, he tactically whirled a hand grenade at the ground floor causing them to setback for a while considering the gravity of the situation, Superintendent of Police, Gadchiroli decided to send Add1. SP Operations to the spot. Addl. SP along with 11 commandos rushed to the spot by mine protected vehicles. He assumed the leadership of the ongoing operation. Naxalites in the house continued to fire indiscriminately at police party. Main challenge for the police was to evacuate the civilians in the neighboring houses so as to avoid casualties and collateral damage. Addl. SP and his team putting their life at risk-ensured safe evacuation of villagers and naxal supporters from the spot and surrounding houses. Along with three commandos, he approached the house from northern side. As he was crawling forward, he faced volley of fire. Just in front of him. Without yielding to the fire opened by the naxalites, in such a frightful situation, he helped other men in maintaining their morale and reached up to the bamboo fencing put up at one side of the house. Addl. SP along with PC/3634 Shiva Gorle was engaged in dislodging the bamboo fencing with the help of cover fire, another volley of bullets were fired at them by the naxalties. After bringing down the bamboo fencing, he order Shiva Gone to fire an UBGL shell through the door of ground floor and gave cover fire to Shiva Gone. Then under the cover fire opened by the policemen behind him, he along with PC/3634 Shiva Gone reached up to the door of the house and opened fire from a close range.

Because of this heavy exchange of fire, the house was -caught in a fire; roof of the ground floor started falling down and began to burn. Hence, API Nitin Mane, PC/830 Gajendra Saunjal, Addl. SP (Ops.) and Shiva Gorle they all at once distanced themselves from their spots and took position. In the meantime, the naxalite came out of the house opening heavy fire upon the police cut off party lead by PC/165 Arvindkumar Madavi. He risking his life, attacked this naxalite by opening counter fire and he succeeded in injuring the hardcore naxalite. But, despite sustaining injury, the naxalite fled away taking cover of forest in the darkness of night. When the firing completely subsided, the police party with the help of villagers made an all-out effort for extinguishing the fire. Addl. SP (Ops) called for the fire brigade and when the fire was completely

brought under control, he along with other policemen entered the house. Upon searching the house, one burnt dead body, one AK-47 rifle, one .303 rifle, empty cases of AK47 rifle & .303 rifle were found.

The entire operation took 11 hours to finish. In the history of naxal affected area, this is the first time where exchange of fire between naxals and police continued for such a long duration, that too in the village. The greatest achievement of the police in this Operation is that there was not a single casualty of either civilians or police. The 11 hour long hostage situation like operation resulted in eliminating hardcore naxalite and senior naxal cadre named Rajita @ Samma Birja Usendi, Area Committee Secretary, Chatgaon Dalam. She had committed hundreds of crime in Gadchiroli district in the past and had a reward of Rs. 16 lacs on her head.

In this encounter, S/Shri Nitin Ankush Mane, Asst. Police Inspector, Mallesh Pocham Kedamwar, Head Constable, Jitendra Motiram Maragaye, Naik and Gajendra Hirji Saunjal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 09/05/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 141-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Maharashtra Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Dattatray Bhimrao Kale
Sub Inspector

02. Doge Dolu Atram (Posthumously)
Naik

03. Swarup Ashok Amrutkar (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 22/03/2015 based on a secret information received from the informant and as per orders and guiding instruction of seniors, PSI Dattatray Kale and PSI Dilip Lokhande along with three party commanders namely, NPC/531 Vinod Hichami, NPC/2320 Shankar Gota, NPC/2276 Rajesh Topo with their teams launched an anti-naxal search operation in the Hikker forest area, in the jurisdiction of Police Station Etapalli which is a strong hold of Naxalites. They tactically divided in two groups and traversing through the hilly and thickly forested terrain of Hikker forest area on foot. At about 1650 hrs, the parties were moving towards Musparshi Village-1 KM North. While the Police Party was crossing the river Parlkota, they were suddenly attacked by 60 to 70 armed naxalites. The naxalites who were laid an ambush in the forest, at once opened indiscriminate fire on finding the police team in the killing zone. The police personnel immediately took position on the ground taking available cover behind the rocks and simultaneously retaliated the fire of naxalites.

In spite of initial domination by naxals due to prior advantageous positions of terrain, NPC/2724 Doge Atram opened fire towards Naxalites to pressurize them to restrain from moving forward and selflessly advanced towards the group of naxals. However, due to indiscriminate fire from left side NPC Doge Atram was hit by bullets and fell down. The naxalites were about to whisk him and his arm-ammunition away, but PC/5589 Kanna Hichami started giving cover fire and proceeded towards NPC Doge Atram crawling on his knees and fired upon naxalites and held them up from doing a gory act. At that movement, he received bullet shot injury on his left shoulder. Despite being injured, he ensured that his fellow soldier and his weaponry is saved.

Simultaneously, PSI Dattatray Kale and NPC/2990 Swaroop Amrutkar, who were on the other flank, opened fire towards naxals who were trying to encircle the party from left side, but unfortunately during the exchange of gun fire NPC Swarop Amrutkar was hit by a bullet fired by naxalite and he collapsed there. However, PSI Dattatray Kale continued advancing amidst firing by Naxals and ensured that the damage to his party is minimized. At that time NPC/2718 Gomji Mattami bravely supported PSI Dattatray Kale by giving cover fire and moved ahead tactically towards the hills where the naxals were positioned.

During this firing, NPC/2438 Yakub Pathan, immediately took a section of men and began to proceed towards the naxalites from one side and braving the bullets fired by naxalites, continued to advance at the direction of enemy by putting

his own life in peril and simultaneously without, caring for his own life so that his fellow-men and officers are not encircled and massacred. Initiative taken by the above police personnel motivated the fellow party men and they also began to fire aggressively from different angles and positions. This aggression created panic among the naxalite and they began to flee towards the far side taking cover of dense forest and hilly terrain. The exchange of gun fire continued for about 30 to 35 minutes.

Thus, the extra-ordinary courage and dedication towards their duties, as displayed by the above police personnel have set an example to other police personnel working in the highly naxal infested district.

In this encounter, S/Shri Dattatray Bhimrao Kale, Sub Inspector, Late Doge Dolu Atram, Naik and Late Swarup Ashok Amrutkar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22/03/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 142-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Maharashtra Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. M. Rajkumar, IPS
Addl. Superintendent of Police

02. Parfull Prabhakar Kadam
Sub Inspector

03. Vijay Rameshrao Ratnaparkhi
Sub Inspector

04. Pramod Rangnath Bhingare
Sub Inspector

05. Motiram Bakka Madavi
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13/06/2014, under the leadership of the Addl. SP M. Rajkumar police team was formed. It comprised API Parfull Kadam, API Vijay Ratnaparkhi, PSI Pramod Bhingare, party commander ASI/1331 Motiram Madavi and 23 men, party commander Prabhudas Dugga and 24 men. They reached the forest of Zuri and then discarded the vehicles. Thereafter, the team chalked strategy and proceeded on foot into the forest of Mandoli, Mendhari, Paidi and Gadpalli and began conduction anti-naxal operation.

On 14/06/2014 in the morning at around 0900 hrs. the police party was combing through the forest of Mandoli and Paidi, 30 to 40 armed naxalites clothed in olive green uniforms suddenly opened indiscriminate fire upon the police party with an intention of killing police party and to snatch their fire arms. At the instruction of Shri. M. Rajkumar, Addl. S. P. (Ops.), the police party shielded themselves behind trees and rocks near by taking position. Accordingly police parties also retaliated in self defense, Shri. Rajkumar along with API Parfull Kadam cautiously moved towards the naxalites and at the same time opened fire at the direction of naxalites, through their relentless efforts and courageous co-ordination of the counter moves boosted the morale of the police parties. While API Ratnaparkhi, PSI Bhingare, party commander ASI/1331 Motiram Madavi along with his men advanced from eastern side. These men kept advancing despite heavy firing by the naxalites and risked their lives.

In the meanwhile, a section of naxalites attacked API Ratnaparkhi, PSI Bhingare, ASI Motiram Madavi by opening a volley of bullets. Realizing that above personnel were trapped in an ambush, Shri. Rajkumar, Addl. S. P. rapidly advanced to their help without caring his life and bombarded the naxalites with bullets. At this point, API Parfull Kadam joined Shri. M. Rajkumar and combined they engaged the naxals in a fierce gun battle. In the meanwhile Motiram Madavi also sustained bullet injury. The naxalites were addressing their accomplices loudly by names and asking one another to surround the policemen. There was no let up in naxal firing.

Despite sustaining injury, party commander AS1 Motiram Madavi also made advances in the direction of Naxalites and encountered the naxalite attack with full zeal and dedication. Through the firing, Shri. Rajkumar, personally took active

role in the battle against Naxalites and ensured that nobody in the party is left vulnerable to attack. After the firing stopped, the police party conducted a search of the area and recovered the following :—

1) 9mm Pistol (Service)-1, 2) Hand made Pistol-1, 3) 9mm rounds-7, 4) .303 rifle Cartridges-1, 5)Claymore Mines Pipe-3, 6) Mine (Steel Kettle) 1, 7) Gelatines, 8) Detonators-6, and 9) Naxal Dangri. In addition to these, they recovered one dead body of Naxalite clothed in olive green uniform.

The Mandoli encounter was the result of an anti-naxal operation launched on the basis of reliable information and it was proceeded by chalking of strategy. The police party shown very extraordinary courage and highest degree of professionalism in the discharge of their duty. Apart from this, throughout the operation they exhibited their tactical skills and ensured minimum causality on the party of police force.

In this encounter, S/Shri M. Rajkumar, IPS, Addl. Superintendent of Police, Parfull Prabhakar Kadam, Sub Inspector, Vijay Rameshrao Ratnaparkhi, Sub Inspector, Pramod Rangnath Bhingare, Sub Inspector and Motiram Bakka Madavi, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/06/2014.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 143-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Meghalaya Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Deven Mawlein
Inspector

02. Jose Sumer
Constable

03. Grohon K Marak
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on reliable source information about the presence of heavily armed militants belonging to banned outfit Garo National Liberation Army (GNLA) numbering about 10(ten) to 12(twelve) at Rongthok village, an operation plan was drawn by Shri B D. Marak, MPS, Deputy Commandant, 4th MLP Bn, camped Shallang, West Khasi Hills, Meghalaya to launch a search operation by the SWAT of Meghalaya police to apprehend the militants. The search team comprising of Inspector Deven Mawlein, Circle Inspector, Nongstoin along with BNC/562. Jose Sumer and BNC/2712. Grohon K Marak was sent to the outskirts of the Rongthok village at about 01.00 hrs on 2nd March, 2016.

To avoid detection by the villagers, the search team negotiated the undulating and unfriendly terrain in the pitch of darkness and on reaching Rongthok village, they hid themselves in the forested area before reaching the suspected place. The team led by Inspector Deven Mawlein, along with BNC Jose Sumer and BNC. Grohon K Marak proceeded towards the target area at around 0700 hrs where GNLA cadres were taking shelter. It is to be noted that the team leader has delayed the search operation unto day light because it is the traditional method to hit the militants every time during first light. However it is learnt from the previous operations that they are extremely alert and vigilant at that time. Due to the above stated reasons, Inspector Deven Mawlein, BNC Jose Sumer and BNC Grohon K. Marak purposely delayed the search operation. When the suspected area was approximately about 200 metres, the police team split into buddy pairs and advanced. The search team had to move very carefully and tactically. As Inspector Deven Mawlein, BNC Jose Sumer and BNC Grohon K Marak moved forward, about 7 to 8 heavily armed GNLA cadres who were at a dominating distance of about 30 metres, opened indiscriminate fire upon the approaching police team from their sophisticated weapons and forced the approaching team to take cover.

Inspector Deven Mawlein, BNC Jose Sumer and BNC Grohon K. Marak retaliated by counter firing in self defense and exhibited extraordinary courage and determination by not only advancing forward towards the hints who were continuously firing at the police team but also by risking their lives. Simultaneously they also had to take care many children and women who were present.

Inspector Deven Mawlein, BNC Jose Sumer and BNC Grohon K Marak continued to fire with grit and determination at the continuously firing militants, exhibiting conspicuous courage and forced the militants to run for their lives. While on the run, the militant got scattered into two directions. The police team also split into two teams and made a hot pursuit of the fleeing militants. In the process, the Police Team again came under heavy firing from those fleeing militants who had positioned themselves on a hill top. Even in such a situation, they showed grit and determination and advanced by opening counter fire. The firing lasted for about 30(thirty) minutes which resulted in the death of one militant. However, other GNLA cadres managed to escape and recovered the following items from the slain GNLA cadre :—

1(one) AK 56 series rifle

2(two) AK magazines

12(twelve) live AK ammunition

11 (eleven) empty cases of AK rifle

1(one)7.65 pistol

1 (one) 7.65 magazine

2 (two) live 7.65 ammunition

1(one) hand held set

1(one) mobile handset

The unwavering determination, extraordinary courage, grit, devotion to their duties of the high order displayed by the three of them even in the verge of gravest danger and life threatening situation endangering their very lives is commendable.

In this encounter, S/Shri Deven Mawlein, Inspector, Jose Sumer, Constable and Grohon K Marak, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/03/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 144-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Meghalaya Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Victor Nengminza Sangma
Dy. Superintendent of Police

02. Nikcheng Senga Ch. Momin
Dy. Superintendent of Police

03. Jester A Sangma
Constable

04. Macdonald Thongni
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13th April, 2016, on receipt of reliable information, the operation was made under the leadership of Dy.SP(P) Victor N Sangma and Dy.SP(P) Shri Nikcheng Senga Ch Momin proceeded to Chichra area from Williamnagar and inducted at Rongjeng Reserve Forest. The whole team was divided into three sub teams. As they waited in ambush for an hour, one suspicious looking person in civil dress appeared as the suspected person came very near to the ambush site they caught him and questioned him, he revealed that around 10 - 12 militants with AK rifles came to his house at night on 12th April 2016, beat him up and threatened his wife and later gave him a mobile phone with SIM card forcefully at gun point to inform them about police movement. On further questioning and inspection, the inspect person identified himself as Shri Walsrang N Arengh. At that moment, an SMS on his mobile phone was received asking about the presence of police in the area. On further questioning, the Operation team decided to continue to pursue their task. Using this opportunity, Dy.SP(P) Nikcheng

Senga Ch Momin initiated and gave a reply to the SMS from the same mobile of the apprehended person by saying, 'Didn't see any police. Then, the police team told to make a mobile call to the militants and inform them that he did not see any police and they could come to the village safely. After 15 minutes two cadres with one AK rifle came out from the jungle and went to the targeted house. After a while, another three cadres having two AKs arrived at the scene. However, absence of Shri Walsrang N Arengh in the targeted house made them suspicious as they could not find him. So they must have alerted the remaining group and were returning back to their hideout. As the retreating groups of militants were going back again, team led by Shri Victor N Sangma Dy. SP(P) tried to apprehend them and moved forward towards the militants, but the militant on seeing the police team, opened fired upon them heavily with their sophisticated weapons. Even though the team was under heavy fire from the enemy, they retaliated effectively against the enemy in the exchange of fire which lasted for about 15 minutes. After a heavy exchange of fire the militants started to retreat to the valley taking the advantage of thick jungle. The militants kept on firing and the police teams retaliated the fire. Both Dy. SP(P) Victor N Sangma and Dy. SP(P) Nikcheng Senga Ch Momin along with BNC Macdonald Thongni and BNC Jester A Sangma gallantly charged towards the firing militants and fired heavily upon them to give cover for both the officers i.e. Victor and Nikcheng which thwarted the attack of the militants. Thus the police team fought gallantly against the militants and militants finally disappeared from the scene taking advantage of thick forest. During thorough search, one dead militant with arms and ammunitions were recovered. Later identified the dead body as that of Augustine Marak, Commander-In-Chief of LAEF.

Recovery:

1.	AK-47	:	01 No.
2.	AK Magazine	:	01 No.
3.	AK Ammunition	:	72 Rounds
4.	Mobile phone	:	03 Nos.
5.	SIM cards	:	10 Nos.

In this encounter, S/Shri Victor Nengminza Sangma, Dy. Superintendent of Police, Nikcheng Senga Ch. Momin, Dy. Superintendent of Police, Jester A Sangma, Constable and Macdonald Thongni, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/04/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 145-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Odisha Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Bhabani Pradhan
Havildar

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on specific intelligence input, a joint operation namely 'SARGRAM' was conducted in the area of Asurkhol Pahar and adjoining area under PS Chandiposh and Gurundia w.e.f. 2300 hrs on 10.11.15, by four parties of Rourkela Police, F/19 Bn CRPF, DVF and SOG. During the operation on 11.11.15 at about 0930 hrs, exchange of fire took place between SOG Crack Team and Maoists in the area of Asurkhol Pahar near Kuljhar Nala under PS Chandiposh in which one dead body of Maoist along with huge cache of arms/ammunition and other articles were recovered.

After exchange of fire, further information was received from reliable sources that one splinter Maoist group numbering around 03-04 have moved to Gahami and adjoining area under PS Chandiposh. Based on intelligence input, another operation 'SARGRAM-2' Combing & Search w.e.f. 2000 hrs, 11.11.15 for 24 hrs was planned by the SP Rourkela and Commandant 19 Bn CRPF, Rourkela and a party of B/19 along with ASI, PS Chandiposh and Hav/604 Bhabani Pradhan, DVF u/c Sh Rakesh Sharma, Asstt Comdt was detailed/briefed for operation in the jungle area of Gahami which is situated Western side of Brahmani River U/PS Chandiposh. The operation party left Chandiposh Camp at 2000 hrs and after tactically carrying out the dropping drill the party moved further towards the Brahmani River area on foot with the help of GPS and crossed Brahmani River by 2130 hrs. After crossing the river, party reached at Point No. 05. Based on the latest intelligence input, the route of ops party was diverted towards North-West direction from Point No-5, which was communicated to the Party Commander Shri Rakesh Sharma, AC. Accordingly, the ops party guided by Hav Bhabani Pradhan, moved towards

North-West direction from Point No-5. During Combing and Search in jungle area nearby village Gahami, the guide Hav Bhabani Pradhan, DVF and scouts CT/GD Gangandeep Singh and CT/GD Vishal Patel detected a group of Maoists in dark with arms coming towards the river ghat amidst jungle. The entire ops party was made alert. At this Shri Rakesh Sharma, AC assessed the situation and formed three parties within the team. Party 1 was Left cut-off, Party 2 was Right Cut-off and 3rd Party was Assault Party consisting of Shri Rakesh Sharma, AC, CT/GD Gangandeep Singh, CT/GD Vishal Patel and Hav Bhabani Pradhan, DVF. Team leader immediately signaled the parties to take respective position and wait for the Maoists to come within identifiable distance. At this, the first member of the Maoists coming from the front suddenly shouted "Police" and opened indiscriminate fire on the ops party. The whole Maoist group probably 08-10, started indiscriminate fire by lethal/sophisticated weapons with intention to kill the Police Force. The party commander and the local guide Hav Bhabani Pradhan insisted the Maoists to stop firing and surrender, but the Maoists did not stop and they continued to fire towards police party. Assessing the imminent danger to the life and property of own party members and local villagers, and in the right to self defense, the ops party retaliated with controlled fire in which AC and two scouts of the CRPF ops party opened restrained fire and Hav Bhabani Pradhan moved ahead by crawling after signaling the own party members not to fire towards his direction and watch for the activities of enemies from right and left direction to avoid probability of cross firing. In spite of heavy fire by enemies and without caring for their own lives, Shri Rakesh Sharma, AC, CT/GD Gagandeep Singh, CT/GD Vishal Patel and DVF Hav Bhabani Pradhan crawled ahead to take on the enemies from the front while rest of the ops party members were in position to give cover fire, as a result of which Maoists could not hold the ground and started retreating towards the jungle. The firing from the Maoists side was intensive, probably by automatic weapons. Such act of the Maoists was with intention to strike terror in the mind of the Police Force as well as of the general public of the locality. The exchange of fire continued for about 10 to 15 minutes and when firing stopped from both sides Shri Rakesh Sharma, AC signaled ops party to tactically search the area using cover and move tactics. The Police Team guided by Hav Bhabani Pradhan conducted Search in the area and could find one Maoist in Uniform lying dead with profuse bleeding, 02 nos. of .303 rifles (Mark-IV), 02 nos. of .303 rifle Magazines, 113 nos. ammunitions of .303 rifle, 11 nos. Air gun ammunitions, 03 nos. of .303 charger clip, 01 no of Motorola man pack set, Maoists literature and other miscellaneous items etc. at the spot and also blood stains in the Operation area. Because of gallant retaliation from police, the Maoist group escaped under the cover of thick forest. The successful yet risky operation resulted in the neutralization of one hardcore cadre of Saranda Sub Zonal Committee of CPI (Maoist) namely, Sangram Bari (Section Commander), the police party searched the nearby area to find out the injured if any but no injured was found.

Gallant Action by Hav Bhabani Pradhan:

DVF Hav Bhabani Pradhan being the local guide and well acquainted with the terrain who guided the whole team towards the direction of the Maoists to take on the enemies from the front, volunteered to be the part Assault Team. His position in the Assault team was in the extreme left and played a vital role in the success of operation. It was he, who was familiar with the local terrain and guided the entire ops team during the course of operation. He was the one who could notice the movement of the Maoists first and intimated the same to the team leader Shri Rakesh Sharma. During the course of the exchange of fire with Maoists, he risked his life as he was in the extreme left position and was closest to the enemy as the position of the enemy was towards left and there were chances that Maoist might corner him and fire on him from that side. It was due to his alertness and quick response that the lives of other team members were saved as he was navigating in the hilly terrain in pursuance of their goal. DVF Hav Bhabani Pradhan was in extreme left position of the assault group and marched according to the demand of the situation. He advanced further to observe detailed positions of Maoists and their firing direction. As he was nearer to the Maoists, he had more risk from both sides i.e. Maoists and police party. Since, he was pivot of the operation party and was constantly coordinating with the team leader. But his coordination as well as bravery was remarkable at the time of hardship. Due to his valor act not only one dreaded Maoist was eliminated but others also suffered serious injuries as informed by villagers later.

In this encounter, Shri Bhabani Pradhan, Havildar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/11/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 146-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Odisha Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Kiran Kumar
Dy. Subedar

02. Manoranjan Nayak
Constable

03. Uday Sankar Patra
Constable

04. Dhaneswar Muduli
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 10/11/2015, a reliable input regarding the movement of around 30 armed CPI (Maoist) in the area of Asurkhol and adjoining border jungle/village area under PS Chandiposh & Gurundia, Dist- Sundargarh under the leadership of Anmol was received. As per input, the Maoist had plan to kill some of the civilians in the name of police informer to create terror in the mind of the local villagers and bring the locals to their fold. To counter the same, three units consisting of DVF (District Voluntary Force), SOG (Special Operation Group) & CRPF (Central Reserve Police Force) were deployed to conduct combing and search operation. Sri Kiran Kumar, SI (Arms) and his Crack Team was also deputed for Combing Operation duty. While performing Combing Operation on Jaljala Pahad of Asurkhol Forest, the scout of the Team detected a suspicious movement of some group. The team took position and observed that it was the Maoists group as some of them were in Olive Green uniform and holding Arms. The police party observed further to be doubly sure about the identity of the suspicious group for some times to be sure that it was a Maoist group. By that time, the Maoist noticed the presence of police party. Seeing the police party, the Maoists started firing from their automatic weapon with intention to kill the police party. After taking all precautionary measures, the party commander and members shouted to stop firing and surrender but Maoist didn't listen and continued firing towards police party indiscriminately. The firing was so heavy that the police had to take cover to protect themselves. The Maoist kept on firing for more than half an hour. The risk to life of police personnel was very high. Entire team was under the killing zone of the Maoist. At this point of time, the team leader decided to do something to protect the lives of the police personnel. Team was divided into three parts. One team consisting of SI (A) Kiran Kumar along with CT Dhaneswar Muduli, CT Manoranjan Nayak and CT Udaya Kumar Patra formed the Assault team. Rest two team formed the Cut Off teams to give the cover fire to the Asasult team when they advance to attack the Maoist camp in order to save the lives of police personnel. One of the Cut off teams was assigned the task to cover the left flank and other cut off team was assigned the task to cover the right flank. The Assault Team was in the center. During continued firing by the Maoist, the two cut off teams, crawled and took position to the left and right of the Maoist camp. Once the team took the position, the Assault Team was to come out of cover to save the lives of the police team. After taking of the position by two Cut off teams, the Assault Team came out of the cover and attacked the Maoist camp without caring about their own lives and to protect the lives of their colleague police personnel. These four brave hearts showed gallant act of highest order without caring about their own lives to protect the lives and property of police as well as civilian. It is one of the rarest acts of gallant in the history of Rourkela Police. After about half an hour of the gun battle, the Maoists stopped firing and managed to escape into the deep forest. After the firing, the Police Team conducted search in the area and could find one Maoist in uniform lying dead with injuries on his head and leg with profuse bleeding, 2 nos. of .303 rifle, 2 magazines of .303 rifle and one magazine of SLR, 3 nos of hand grenades, kit bags, uniform of the Maoist, Maoist literature etc. at the spot and also bloodstains in the operation area. Because of gallant retaliation from police, the Maoist group escaped under the cover of thick foliage. The successful yet risky operation resulted in the neutralization of one Saranda Sub Zonal Committee Commander of CPI (Maoist) namely, Madhusudan Tarkot on whom the government of Odisha had declared award of Rs one-lakh. Further, the police party searched in the nearby area to find out the injured if any but no injured was found.

During the operation, police personnel have displayed bravery, courage, determination and devotion to duty of highest order to overcome extreme adversities in the extremely difficult terrain against a positional better placed adversary and ensured success without any collateral damage to the lives of civilians and police personnel.

In this encounter, S/Shri Kiran Kumar, Dy. Subedar, Manoranjan Nayak, Constable, Uday Sankar Patra, Constable and Dhaneswar Muduli, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/11/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 147-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Odisha Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Premananda Pradhan
Constable

02. Mahadev Gahir
Constable

03. Hemanta Pradhan
Constable

04. Tunu Sahoo
Sergeant

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 30.04.2016, a reliable information was received regarding activities of armed cadres of CPI (Maoist) in the Sahajkhol Reserve Forest Area under Koksara PS limits that they, apart from motivating local youths to join the banned CPI (Maoist organisation) were also planning to indulge in various violent activities like killing of civilians, destruction of Govt. property etc. Accordingly, SOG team No 5 under leadership of Sergeant Tunu Sahoo was sent for an anti-maoist operation to apprehend the members of the banned organisation. When the SOG team reached the forest area, the maoists resorted to sudden unprovoked firing from automatic weapons and mounted a flanking attack, making the police team vulnerable to heavy fire from two directions causing injuries to five SOG commandos. Unwavered by the firing, the SOG team under the leadership of Sergeant Tunu Sahoo retaliated valiantly despite numerical disadvantage and severe terrain limitations with total disregard to personal safety, Sergeant Tunu Sahoo along with commandos Sri Premananda Pradhan. Sri Mahadev Gahir and Sri Hemanta Pradhan charged the enemy in a very risky frontal attack braving heavy fire and forced the maoists to retreat. Another small team consisting of six commandos countered by a flanking attack from the right side and fearlessly took on the maoists. The team leader Sergeant Tunu Sahoo and other commandos rose to the occasion against over whelming odds and put on an inspiring fight against a numerically superior and tactically better placed enemy. Their acts led to the death of 3 lady maoist cadres belonging to 1st company of 1st Battalion of CPI Maoists and recovery of two .303" Rifles, one 12 bore gun, one 9mm pistol, two tiffin bombs, large numbers of ammunition and other camp items.

The brave and valiant acts of the team leader and other commandos wrecked havoc in the enemy lines, neutralized three maoist cadres and also thwarted the evil designs of the Maoists and prevented a major violent incident.

In this encounter, S/Shri Premananda Pradhan, Constable, Mahadev Gahir, Constable, Hemanta Pradhan, Constable and Tunu Sahoo, Sergeant displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/04/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 148-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Odisha Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Bikash Patra
Sub Inspector

02. Raj Kishore Pradhan
Constable

03. Hrushikesh Jal
Constable

04. Ram Chandra Hembram
Constable

05. Samanta Majhi
Constable

06. Suresh Chandra Hembram (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 23.01.2016, on intelligence input of presence of camp of Kalinganagar Division of banned CPI (Maoists) at hill top near Ganeswarpur village on the Angul-Deogarh border forest area having definite plans of violent activities like killing

innocent civilians to spread terror, an anti-naxal operation was launched by the team of SOG and SIW under the leadership of Bikash Patra, SI to apprehend the banned Maoist cadres accompanied by local police representative of Pallahara PS. After a thorough combing operation in dense hilly forest, next day (24.01.2016) afternoon, the operational team located Maoist camp at dense hilly forest around 5-6 kms away from village Ganeswarpur. The operational team attempted to cordon off the camp tactically to apprehend them. The direction of the police team to them to surrender in clear and loud voice was to no avail. Rather the Maoist started sudden and indiscriminate fire from automatic weapons in which three members of the operational team sustained injuries. Given the treacherous lay out of the terrain and desperation of the armed extremists, the operation was fraught with risk and danger. But the above police personnel despite bodily injury and numerical disadvantage, tactically moved forward close to Maoist group unwavered to their firing putting their lives at risk and retaliated the Maoist fearlessly in a very risky frontal attack forcing them to escape. The exchange of fire continued for about 25 minutes. Because of their gallant action, two dreaded Maoist cadres identified as Sushil @ Sunil @ P.Kumar Swamy (Secretary, Kalinganagar Division and State Committee Member) and Sony @ Sindri Lingo (Divisional Committee Member) were neutralised with recovery of one 5.56 INSAS, one 9mm Carbine, 18 rounds live ammunition, 37 empty cartridges, mobile, laptop, Maoist literature and other camp articles etc. Both dreaded deceased Maoist leaders carried rewards of Rs. 20 lakhs and Rs. 5 lakhs respectively as declared by Govt. of Odisha. They were involved in many heinous crimes and disruptive activities in four districts during last one decade.

Being a harm's way, the above police personnel displayed exemplary courage, indomitable spirit & determination and extraordinary commitment to their duty. By their remarkable gallant action, they not only neutralised two dreaded armed Maoist cadres of the State with busting of camp but also foiled the pernicious design of the CPI (Maoist) to spread tentacles of terror.

In this encounter, S/Shri Bikash Patra, Sub Inspector, Raj Kishore Pradhan, Constable, Hrushikesh Jal, Constable, Ram Chandra Hembram, Constable, Samanta Majhi, Constable and Late Suresh Chandra Hembram, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/01/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 149-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Odisha Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Santanu Kumar Pradhani
Sergeant

02. Amit Kumar Biswal
Havildar

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 11.02.1016, an anti-maoist search operation was launched by S.P, Kalahandi based on a reliable information that a group of armed Maoists are camping near Kanamanjur Reserve Forest under Sadar PS Bhawanipatna near village Gachhkhola and criminally conspiring to create terror in the locality by killing civilians and by indulging in disruptions activities like attack on vital installations govt. buildings, etc in the area as a part of their war against the State. The team comprised of Sgt, Santanu Kumar Pradhani & 03 commandos of DVF, Kalahandi with SI, (A) Parameswar Hansda & 16 commandos of SOG.

While the said team was conducting search operation in the forest area near Kanamanjur forest under Sadar PS Bhawanipatna near village Gachhkhola on 11.02.2016, a group of armed Maoists came across and suddenly opened unprovoked and indiscriminate fire from sophisticated weapons at the police team with intention to kill them.

After eight police personnel sustained splinter injuries due to throwing of grenades, Sgct. Santanu Kumar Pradhani and others retaliated by counter attack. Sgct. Santanu Kumar Pradhani, alongwith others moved forward risking their lives and launched a massive flanking attack disregarding their personal safety despite the numerical disadvantage and severe terrain limitations forcing the maoists to retreat. The exchange of fire continued for half an hour.

In this operation a female maoist named Mitiki of 1st Company of 1st Battalion of banned CPI(Maoist) organization was neutralized and one MK-Ill .303" rifle with Magazine, 04 nos. of .303 rifle ammunition, 2 nos of Detonators, 13 nos. of

haver sacks, Maoist literature, wire, electronic and household articles etc. were recovered. The maoists of 1st Battalion of CPI (Maoist) organisation are considered to be very ferocious and have killed large numbers of police personnel in the past. The members of Police team under Sgct. Santanu Kumar Pradhani as cited above successfully neutralized an audacious attack by the most ferocious maoist group which also prevented causalities from police side and also helped in preventing the violent act, the execution for which they had assembled.

In this encounter, S/Shri Santanu Kumar Pradhani, Sergeant and Amit Kumar Biswal, Havildar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/02/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 150-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Border Security Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Gurnam Singh (Posthumously)
Constable

02. Bhupinder Singh
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 19 Oct'2016 at about 2345 hrs, while No. 050011977 lnsp Bhupinder Singh, Post Comdr of BOP Bobiya Fwd (ex 173 Bn) was carrying out Vehicle patrolling in a BP Gypsy along the Border track, one RPG round followed with several long bursts of Automatic weapons fired by militants towards his Vehicle and Naka Mounds from a distance approx. 100 Mtrs from the IB inside Pak territory corresponding to BP No 96. Fortunately, the RPG round missed the target and exploded on the Border track. Meanwhile No. 110411381 Const Gurnam Singh who was deployed at Naka Mound No. 02, spotted the militants firing heavily from Pakistan side and without caring for his personal safety in face of direct & heavy militant firing, immediately resorted to heavy volume of aimed & accurate LMG fire on them. As a result, the militants were effectively pinned down. However, after some time another round of RPG fired by militants on the BP vehicle cover, but again it missed the intended target and exploded at approx 100 Mtrs behind Mound No 02. Const Gurnam Singh deployed at the same mound, displayed immense combat sense to retaliate the situation and resorted to heavy volume of accurate fire on the militants. Resultantly, two militants got grievously wounded and one of them forced to take shelter and started heavy volume of fire on Naka mounds as well as on the BP vehicle in which Inspr Bhupinder Singh was present with the apparent intention of targeting the Commander. In order to lead his troops effectively and handle the fierce situation, Inspr Bhupinder Singh without caring of his personal safety & life, tactically made his way to mound No. 02 braving heavy barrage of bullets. After taking stock of overall situation including identification of the spot from where the militants were engaging the adjoining Naka Mounds, he took control of the over all situation and directed troops deployed on the mounds to bring down heavy volume of fire in a coordinated manner on the militants' position. Accordingly, precise & effective coordinated fire was brought down by all the Naka Mounds on the militants, as a result the militants' ill design of infiltration has been foiled and ultimately they managed to flee away towards Pak side in order to save their lives.

Later, it was confirmed from the HHTI recording and illumination of area by firing 51 mm Illu bomb, the body of one of the dead/injured militant dragged away towards Pak side. The entire operation lasted for around 16 minutes, caused serious injuries to the militants forcing them to flee back.

During the attempt by the militants for forced infiltration inside Indian territory, Ct Gurnam Singh displayed conspicuous bravery under heavy militant firing and resorted to precise & effective fire on infiltrating militants, as a result militants were injured/killed and the remaining were forced to retreat back. However, Ct Gurnam Singh, who sustained bullet injuries on his right temple in the encounters and admitted in GMC Jammu, for treatment, unfortunately, succumbed to the injuries on 22/10/2016 at about 2315 hrs and attained martyrdom.

During the aforesaid operation, lnsp Bhupinder Singh, Post Comdr BOP Bobiya Fwd also played a pivotal role in the whole operation in directing fire efforts under heavy odds. Without caring for his personal safety in the face of heavy militant firing, he led from the front and with the sheer presence of mind, coordinated the whole Ops effectively, which resulted in killing/injury of 01 militant and foiling of a major forced infiltration bid.

In this encounter, S/Shri Late Gurnam Singh, Constable and Bhupinder Singh, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/10/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 151-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Border Security Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Ashok Kumar Assistant Commandant	(PMG)
02.	Satish Chand Constable	(PMG)
03.	Tapan Kumar Raj Head Constable	(PMG)
04.	R. Siddaiah Assistant Sub Inspector	(1st Bar to PMG, Posthumously)
05.	Ravichandran M Head Constable	(PMG Posthumously)
06.	G.S. Abilash Constable	(PMG Posthumously)

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on an information provided by the Police, Malkangiri regarding Naxal presence in area Sarkibandha, about 6 Kms South-East of COB Janbai; an operation, after detailed planning by Commandant 104 Bn BSF, was launched by a BSF Ops party led by Shri Ashok Kumar, Assistant Commandant, alongwith Shri Rajesh T K Lakra, Assistant Commandant/Company Comdr, COB Badapada, 11 SOs, 63 ORs, 04 BSF Water Wing pers and 01 OSAP rep (total - 81).

Shri Ashok Kumar, AC, himself led the operation in the first boat with 12 pers. The Ops party of first boat, as planned, reached Palangraighat at about 0630 hrs on 26 Aug 2015 for further move to target area. Immediately on reaching at the Ghat; and while disembarking and anchoring the Boat to secure the Ghat; the Naxals hiding at an advantageously located higher position on adjacent hillock, detonated an Improvised Explosive Device (IED) and started indiscriminate firing on the BSF Ops party from multiple directions. BSF troops under the direction of Shri Ashok Kumar, Asstt. Comdt, immediately retaliated the fire and fought without losing their nerves and successfully countered the ambush of Naxals. In the mean time, the Naxals also initiated three more IEDs in conjunction with indiscriminate fire due to which nine members of BSF Ops party sustained bullet and splinter injuries.

Despite having sustained grievous bullet and splinter injuries caused by the IED blast and indiscriminate firing by Naxals; the party under the command of IRLA No. 11216360 Shri. Ashok Kumar, Assistant Commandant, displayed indomitable courage and fought valiantly alongwith comrades and counter-ambushed the Naxals without caring for their safety due to which the Naxals who were in a most advantageous position and also outnumbered BSF troops many times could not succeed in their design and were beaten back. The second party which was tailing the first boat also provided cover fire and pinned down the Naxals. Due to the determined gallant fight put up by BSF troops, the Naxals could not initiate remaining four IEDs planted by them, fled with their dead and walking wounded and also failed to loot the weapons which were their main intention.

In the valiant action, unfortunately three brave soldiers of 104 Bn BSF attained martyrdom and six soldiers sustained grievous injuries in the line of duty.

The role played by members of the party:

(i) Critically injured but undeterred Sh Ashok Kumar, AC, instantly analysed the situation and sensed type and directions of maoist firing, acted as live wire, led from the front and motivated men who followed to neutralize and defeat the maoists.

(ii) No. 901110015 Head Constable (ED) Tapan Kumar Raj unmindful of his injuries, guided the boat to safety and displaying great courage and presence of mind valiantly fought with Maoists till they fled .

(iii) No. 092543962 Constable Satish Chand unmindful of grievous injury to his person due to IED blast/naxal fire, retaliated effectively at Maoists injuring and preventing them from triggering more IEDs.

(iv) No. 870091250 late ASI(G) R Siddaiah, despite the grievous bullet and splinter injuries to him, kept firing on the Maoists. His aggressive and courageous act foiled the nefarious designs of Maoists and made the ultras flee and ultimately made supreme sacrifice. (v)A grievously injured and undeterred No. 930096229 Late Head Constable (GD) Ravichandran M kept on firing from personal weapon towards Maoists aggressively which foiled the nefarious acts of Maoists and made the ultras to flee. He exposed himself to intense fire of Maoists and displayed great courage and valiantly fought with the Maoists and ultimately made supreme sacrifice.

(vi) No. 112050032 Late Constable (Crew) G S Abilash, unmindful of grievous injury sustained, engaged the Maoists and stopped them from triggering more IEDs. He exposed himself to intense fire of Maoists and displayed great courage and valiantly fought till the ultras fled and ultimately made supreme sacrifice.

Recovery:

1.	IEDs	:	04 Nos. (03 kg each)
2.	Umbrellas	:	04 Nos.
3.	7.62 mm SLF EFCs	:	08 No.s
4.	7.62 mm SLR	:	02 No. live round
5.	AK-47 EFCs	:	42 Nos.
6.	AK 47 Amn	:	01 round (misfire)
7	Flexible wire	:	75 mtrs.

In this encounter, S/Shri Ashok Kumar, Assistant Commandant, Satish Chand, Constable, Tapan Kumar Raj, Head Constable, Late R. Siddaiah, Assistant Sub Inspector, Late Ravichandran M, Head Constable and Late G.S. Abilash, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/08/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 152-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Border Security Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Jitender Kumar Singh (Posthumously
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the night intervening of 26/27th Oct'2016 at about 0120 hrs, Pak Posts Jamshed, Labaik, Banout Tekri & chaprar Fwd in Chaprar Sector suddenly started unprovoked heavy volume of firing with Automatic weapons and shelling by Medium/Heavy Mortars in AOR of BOPS, Abdulian & Tubewell - 5 of 127 Bn BSF, mainly targeting the forward duty points (Naka Mounds), BOPS and also the adjoining civilian areas. No. 910061650 Head Constable Jitender Kumar Singh of 'D' Coy, 127 Bn BSF who was deployed at one of the forward duty points i.e. Naka Mound No. 02 of BOP Tubewell-5 along with his fellowmen, took stock of the overall situation and directed his fellowmen to take position and start firing on the Pak forward Morchs/Bunkers to give befitting reply. Further, HC Jitender Kumar Singh, himself, took position on the Anti-Material Rifle (AMR) deployed at the said duty point and promptly retaliated in an effective manner, targeting the forward Morchas/Bunkers of Pak Post Jamshed which were firing relentlessly at all the forward duty points. Being positioned at a closely located forward most duty point; the main brunt of the intense enemy fire was being faced by the troops deployed at Naka mound 2. However, with scant regard to his personal safety under intense enemy fire, Head Constable Jitender Kumar Singh effectively pinned down the forward Morchas/Bunkers of Pak Post Jamshed and injured the Pak Rangers/Army personnel deployed at those forward HMG Morchas. Consequent upon the accurate firing by HC Jitender Kumar Singh, the fire from Pak forward Morchas/Bunkers stopped for some time. However, during the early morning hours, Pakistan once again resorted to heavy volume of fire on BSF positions. Meanwhile, the forward Morchas/Bunkers of Pak post Jamshed started specifically targeting Mound No. 02 at which HC Jitender Kumar Singh was deployed with the AMR. Undeterred by

the intensity of Pak firing, HC Jitender Kumar Singh once again motivated his fellowmen to retaliate effectively and himself started firing from the AMR. However, in the renewed firing from Pak side which was much more fierce in intensity, Head Constable Jitender Kumar Singh sustained grievous bullet injury in his upper stomach region. Despite being fatally wounded & profuse bleeding, Head Constable Jitender Kumar Singh kept giving befitting reply to the enemy continuously without asking for immediate evacuation. However, immediate casualty evacuation party was sent from the post in BP Bunker Vehicle and the grievously wounded brave HC Jitender Kumar Singh was promptly evacuated to the nearby MI Room of 192 Bn BSF, where he was provided with the first aid and was further evacuated to 166 MH Satwari. Enroute to the Army Hospital Satwari, HC Jitender Kumar Singh succumbed to the injuries and attained Martyrdom on the same day at about 0940 hrs. Later on, as confirmed through int sources, Pak side had suffered heavy injury/losses of men and material including killing of two Pak Soldiers in the Chaprar sector.

In this action Late Shri Jitender Kumar Singh, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/10/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 153-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Border Security Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Nishi Kant
Assistant Commandant

02. Khade Nand Kishore Madhukarrao
Constable

03. Shahnawaz Wali Bhat
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

140 BN, BSF is deployed in one of the most hyper sensitive Naxal affected areas of Chhattisgarh, major portion of area of operation of the unit is extremely difficult due to its geographical characteristics and conducting operations in this area is extremely challenging in itself "A hard nut to crack". The general surrounding area of Village- Keshokori (POO) is one of the above area which is extremely notorious for presence of Maoists due to its geographical design.

On 2nd Feb' 2016, a joint ops by Commando Platoon of 140 Bn BSF and CGP/STF was launched after detailed analysis of available input under direct command of Shri Nishi Kant, AC in the area of Keshkori wherein SOs-04, ORs-31 of Unit Commando Platoon and STF/CGP left for target area at about 1330 hrs tactically maneuvering the terrain and maintaining surprise.

On reaching close to the village Keshokori, Shri Nishi Kant, AC anticipated ground situation and divided Ops party in two groups i.e BSF Commando Platoon and CGP/STF to cordon off the village from right and left flank respectively. While cordoning off the Village, Shri Nishi Kant, AC was leading the BSF Commando Platoon along with CT Khade Nand Kishor M, HC Ramesh Chandra Budhani and CT Shahanwaz Wali Bhat. While cordoning, Shri Nishi Kant, AC observed two armed unknown persons approaching towards the village in their direction, he immediately ordered Commando platoon to take position and asked them to allow these persons to come closer so that their identity could be confirmed. He also asked Police rep present with him to confirm from STF/CGP whether above personnel belongs to them or otherwise. Meanwhile, above armed persons saw Shri Nishi Kant, AC and No. 02216490 CT K Nand Kishor M who were in position together at about 80 mtr distance and Maoists immediately opened fire on Shri Nishi Kant, AC and Ct K Nand Kishor M. On being fired upon, above officials opened burst fire on above armed unknown persons in their self defence. Resultantly, both the Maoist sustained bullet injuries and fell on ground but subsequently one of them got up and continued firing by changing his position. Shri Nishi Kant, AC and CT K Nand Kishor M kept on effectively retaliating the fire upon Maoists despite being at less advantageous position.

When Shri Nishi Kant, AC and CT K Nand Kishor M were fired upon by armed Maoist, CT Shahnawaz Wali Bhat who had taken position slightly behind from leading section immediately positioned and moved forward in the direction of Maoists, fire with utter disregard and joined Shri Nishi Kant, AC and CT K Nand Kishor M who were continuously

retaliating the Maoist's fire. While shifting his location, one of the bullets fired by Maoists hit CT Shahnawaz Wali Bhat's left foot and started bleeding profusely, but he did not lose courage and continuously kept on retaliating the Maoists fire.

The officer showed outstanding bravery, commendable leadership traits, high standard of professional approach along with CT Khade Nand Kishor M. and No.124204210 CT Shahnawaz Wali Bhat during the operation which resulted in killing of one Hardcore Maoist, recovery of SLR and other maoists related items and compelled other Maoists to flee away to save their lives. A successful and result-oriented operation was executed by the troops of 140 BN BSF and an example of unparalleled conspicuous gallant action, and professionalism which brought laurels to the Border Security Force was set by them.

In this encounter, S/Shri Nishi Kant, Assistant Commandant, Khade Nand Kishore Madhukarrao, Constable and Shahnawaz Wali Bhat, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/02/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 154-Pres/2017-The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Border Security Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sushil Kumar (Posthumously)
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

During the Cross Border Firing on Jammu IB from 21 Oct 2016 to 01 Nov 2016, in the intervening night of 23/24 Oct 2016 at about 2315 hrs, Pakistani Rangers suddenly started heavy volume of unprovoked firing and shelling with heavy automatic/flat trajectory weapons and medium/heavy Mortars from Pak Posts, Putwal Morcha, Chaprar & Chaprar Fwd in the AoR of BOPs Mangral, Sangral and Khatmarian of 127 Bn, mainly targeting the forward duty points (Naka Mounds), BOPs and also the adjoining Civilian areas. No. 920061969 Head Constable Sushil Kumar of 'G' Coy, 127 Bn was deployed at Naka Mound No. 04 of BOP Sangral as Naka Commander along with his party comprising Ct Purshottam Dhruv & Ct Dharambir Singh. Due to intense and concentrated firing from Pak side, a number of forward duty points incl Naka Mound No. 4, came under heavy fire of Pak HMGs/BMGs and were badly pinned down. On sensing the gravity of situation, Head Constable Sushil Kumar, as Naka Comdr of Naka Mound no 4, took stock of the overall situation and on careful analysis, appreciated that one of the forward Morchas/Bunkers of Pak Post Putwal Morcha, firing with HMG was effectively pinning down own positions. Head Constable Sushil Kumar directed his party to engage the forward enemy positions by their personal weapons and he himself took over the charge on the Automatic Grenade Launcher (AGL), deployed at the Naka Point and started targeting the said forward Morcha/Bunker. As a result of pinpoint retaliation by Head Constable Sushil Kumar, the said bunker of Pak Post Putwal Morcha was badly damaged and fatal injuries were also inflicted on the Pak Rangers/Army personnel inside said bunker. Not stopping at the immediate success, Head Constable Sushil Kumar continued with his resolute fervor in engaging other forward enemy positions knowing fully well that in view of his fierce firing, he had become obvious target of the enemy fire and his life was in danger. As a result of the sudden and effective retaliation from Naka Mound No. 4, almost all the forward enemy bunkers were effectively pinned down and immediately stopped the fire. However, after a brief hiatus, the Pak Rangers supported by Pak Army personnel resisted their positions and again started firing heavily, specifically targeting Naka Mound no 4. However, with utter disregard to his personal safety & life, Head Constable Sushil Kumar kept on engaging the enemy positions and also encouraged his under command troops to respond in hard hitting manner.

During the continued heavy exchange of fire, at about 0025 hours on 24 Oct 2016, an 82 mm Mortar shell landed near the Mound No. 4 and its splinters hit Head Constable Sushil Kumar through the loop hole and injured him grievously on his upper body i.e. on chest/neck area. Despite being grievously wounded, Head Constable Sushil Kumar refused for immediate evacuation and kept on firing relentlessly at the enemy positions which were bringing down effective fire on forward duty points/Naka Mounds. In the process, once again he dealt the lethal blow and damaged another forward morcha/Bunker of Pak Post, Putwal Morcha. Meanwhile, casualty evacuation party was immediately called from the post in BP Bunker Vehicle and the grievously wounded HC Sushil Kumar was promptly evacuated to the nearby MI Room of 192 Bn BSF, where he was provided with the first aid and was further evacuated to Govt. Medical College & Hospital, Jammu. However, he succumbed to his injures enroute and was unfortunately declared as brought dead by the medical authorities at about 240230 hours. Due to the gallant and daring action displayed by HC Sushil Kumar in the face of heavy enemy fire, two of the forward Morchas/Bunkers of Pak Post Putwal Morcha were effectively destroyed besides causing other damages to men & material.

Head Constable Sushil Kumar of 127 Bn, BSF not only displayed tremendous courage under fierce enemy fire & extraordinary combat audacity in giving befitting & hard hitting response to the enemy but also motivated his under command & fellowmen to retaliate effectively. However, in the process, he made supreme sacrifice while defending the motherland.

In this action Late Shri Sushil Kumar, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/10/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 155-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Border Security Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri N. Bino
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Pakistan started unprovoked firing Mor shelling across the IB on night intervening 23/24 Oct 2016 in AOR of 192 Bn BSF & other units of Ftr Jammu and continued unabated firing/shelling up to 01 Nov. 2016. During this period i.e. on 27 Oct 2016, No. 021641042 Ct N Bino, Ct J S Amit and Ct Rajath Kumar Behra were deployed for OP duty from 1200-1800 hrs at one of the most vulnerable forward duty points i.e OP No. 02/Naka Mound No. 03 of BOP S H Way, 192 Bn BSF. The said OP/Naka mound of BOP S H Way has been sited very carefully in close proximity to the IB for keeping a direct & close observation on enemy activities in the forward positions. The said OP/Naka mound is located at a distance of 30 mtrs, as from the Morchas/Bunkers on Pak forward bundh. As such, being closely deployed in almost an eyeball to eyeball situation, the troops deployed at the said OP/Naka Point always remain vulnerable to direct enemy fire. Thus keeping in view the overall vulnerability and in order to increase the overall fire power of the said duty point, a 7.62 mm MMG has also been deployed. The said 7.62 mm MMG was also considered as a threat by the Pak Rangers as it was effectively engaging most of the forward Morchas/Bunkers on Pak Bundh and Pak Post New Hut was also on its target hit.

When unabated firing & Mor shelling was going on in entire area of 192 Bn BSF, at about 1315 hrs, Ct N Bino and his party observed two Pak Rangers moving stealthily at the rear side of the Pak forward Bundh along with a Rocket Launcher mounted on shoulder of one of the Pak Rangers, with an apparent intention of destroying their duty point i.e the OP No 2/Naka No 3 and also to inflict casualties to the deployed BSF troops. Meanwhile, both the Rangers quickly climbed up and appeared on Pak forward Bundh with the Rocket Launcher still mounted on the shoulder of one of them and the other supporting/directing him. On noticing the Pak Rangers, Ct N Bino, understood their evil intentions and with scant regard to his personal safety from the direct and imminent fire of Rocket Launcher; decided to take a bold initiative knowing fully well that an imminent threat was looming large over his own life and promptly fired a long burst of 14 rounds from 7.62 mm MMG in the face of direct RL firing and in the process also alerted other OP points. As a result of his accurate firing, combat audacity and bold action, one Pak Ranger was shot & fell down on spot whereas the other one also sustained bullet injuries. Both the Rangers instantly slid backwards taking advantage of the cover of the forward Bundh & dense vegetation. Due to effective and accurate firing by Ct N Bino, a temporary Pak OP point located at the Forward Bundh also caught fire and subsequently got burnt. Later, on the basis of the int reports from BSF as well as reports from the other sister agencie, it was confirmed that one Pak Ranger namely Manzoor r/o village Daluwali near Sialkot of 12 Wing CR was killed and other one was grievously injured due to accurate fire. The gallant and daring action by Ct N Bino not only saved the life of his fellowmen but also neutralized the ill design of enemy by pre-emptive action.

The sheer combat audacity, steel nerves under imminent RL firing from enemy side wherein a slightest mistake could have put his own life into risk but undeterred by the consequences, he challenged the enemy directly by giving hard hitting blow to them. Regt No 021641042 Constable N Bino of 'SP' Coy,192 Bn BSF has proved his mettle of being a gallant Border man.

In this action Shri N. Bino, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/10/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 156-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Balen Harizan (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

An intelligence input was received on 16/06/2016, through own sources, by 203 CoBRA about the presence of a group of maoists in the general area of villages Ghatiari, Jamua and Hesalo, U/PS Pirtand, Dist: Giridih, Jharkhand. Based on the information, an operation was planned by Commandant 203 involving three teams of 203 CoBRA and State Police component. To target the area, teams left PS Pirtand at around 2130 Hrs and reached at the company base Madhuban by 2330 Hrs. From there, the teams left in a staggered way at 0245 hrs on 17/06/2016 to converge at the target from three different directions. One of the teams debussed near village Chirki while the other two teams debussed near village Palgang. The three teams then moved towards the target adopting different routes and directions.

As one of the teams i.e. team no. 1 was moving toward their target while carefully searching the region, the team personnel observed some footprints on a wet land. At that time, the team was barely 300 metres short of the target. Growing extra cautious, the team inched closer to the target but all of a sudden maoists started heavy and indiscriminate fire on the team. The team personnel immediately took positions and retaliated the fire by firing heavily on the maoists. The Maoists were securely entrenched behind covers and had plans to inflict heavy casualty on the Security Forces. The amount of fire and lobbing of grenades were making the intentions of the Maoists clear. To counter the tactics and negate the advantage of strategic height which the Maoists were enjoying, the team got divided into small groups and stretched to the flanks of Maoists. On gaining the desired formation, the team members fired heavily at the Maoists. The heavy firing was proving the might of the well trained team, seeing which the Maoists began retreating in a bid to escape into the jungles.

At this juncture, Ct Balen Harizan who was actively directing his fire on the maoists bravely came out of his cover and without any second thought about his personal safety, started chasing the fleeing maoists while simultaneously firing on them. The team personnel saw a maoist falling down after being hit by the bullets fired by Ct Balen Harizan. Soon enough, Ct Balen Harizan saw a group of maoists trying to escape aided by cover fire from other maoists. He decided to take a shot at these maoists and took kneeling position to load his UBGL. While Ct Balen Harizan was loading his UBGL, a bullet fired by maoists pierced his face under left side of nose and gravely injured him. Even the excruciating pain and profuse bleeding did not deter him from taking up lying position and firing on the maoists. Despite sustaining injuries and finding it difficult to move ahead, he kept encouraging his team to carry on the assault. The continuous assault by the team members inflicted severe loss to the Maoists before their fleeing from the place. Due to heavy bleeding, brave Ct Balen Harizan who till then had held his ground in spite of the grave injuries, he had suffered fell unconscious. He was subsequently evacuated to PHC Pirtand where he was declared brought dead. Brave Ct. Balen Harizan sacrificed his life in the line of duty and attained martyrdom.

During the whole operation, Ct Balen Harizan displayed exceptional courage and bravery. Consistent fire from the brave trooper even after injury added strength and confidence to his team to fight the maoists bravely. In subsequent search of the region, dead body of a maoist namely Behram Hansda alias Gajo alias Pankaj Manjhi, Zonal Commander of North Chotta Nagpur was recovered with one SLR, 02 magazines, 130 live rounds and cash.

In this encounter Late Shri Balen Harizan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/06/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

———————

No. 157-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Pawan Kumar Singh
Assistant Commandant

02. Somdev Arya
Sub Inspector

03. Hari Singh
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receipt of credible intelligence regarding presence of Maoist's training camp in the general area of villages Dual Lendra and Etwar under Police Station Basaguda, District- Bijapur, a Searth And Destroy Operation (SADO) was planned and launched by 204 CoBRA Bn under the command of Sh Hanuman Prasad, DC and Sh Pawan Kumar Singh, AC along with the Chhattisgarh Police in the target area. Since exact location of the camp could not be ascertained, an exhaustive operation for 03 days and 02 nights was planned, which was further extended to 05 days and 04 nights to locate the Maoist training camp and nab the Maoists. The area of operation is allegedly considered to be a Maoist bastion and planning/executing such a long and exhaustive operation was in itself a real feat.

Taking this opportunity on the hand, joint operational parties left the base camp on 22/11/2015. Following the ops planning, troops tactically dominated/searched the target area to locate the Maoist training camp and halted in the jungles of the target area on 22/11/2015, 23/11/2015 and 24/11/2015. Troops were continuously striving to locate the target for 03 days, but found nothing notable. It was the zeal and enthusiasm of the troops and their Commanders that they decided to continue the operation.

Staying for a long time in the core Maoist-infested area has always been perilous. Ignoring the threat involved due to above, troops continually endeavoured for their target. The peril took its shape when on 25/11/2015 at around 1730 hrs, as the troops were tactically wending through the jungle area of village Kurcholi, got trapped in the Maoists ambush. Finding the security forces in their ambush zone, Maoists started indiscriminate fire on the party of State Police, which was well retaliated by the party in self-defence. Meanwhile, the party commander asked for reinforcement from 204 CoBRA troops. On hearing the above, the CoBRA commandos swung into the action and moved tactically towards the firing spot in mutual support from all sides to encircle the Maoists.

Undaunted by the extensive fire of Maoists and their fortified tactical positions, Sh. Pawan Kumar Singh, AC displaying extraordinary courage and tactical acumen, launched a counter offensive assault on Maoist positions. Amidst raining bullets where any move could have been fatal, Shri Pawan Kumar Singh, AC, SI(GD) Somdev Arya and CT(GD) Hari Singh gallantly attacked the Maoists and advanced towards their positions. Adopting sensible fire and move tactics and exhibiting conspicuous bravery, they firmly held their ground in spite of grave threat to their lives and put effective fire to neutralise the Maoists. Firing continued for about an hour. Taken aback by this extraordinary courage and strong counter-offensive, Maoists fled away taking advantage of thick forest and terrain. During post encounter search, troops recovered dead body of one hardcore Maoist in uniform, later identified as Kunjam Sukau S/O Kunjam 'Sandi, along with arms/ammunitions, hand grenade and other incriminating items.

Despite lassitude of the 4th continuous day of operation, the troops fought valiantly putting their lives in the line of fire for their objective and to. defend one another.

Recoveries made :—

1.	12 Bore rifle	:	01 No.
2.	Country made rifle	:	01 No.
3.	.303 Amns	:	07 Rds.
4.	Hand Grenade No. 36	:	01 No.
5.	Detonator	:	02 Nos.
6.	Tiffin Bomb	:	01 No.
7.	Cortex wire	:	200 Mtrs.
8.	Electric wire	:	30 Mtrs.
9.	Pithu	:	04 Nos.

In this encounter, S/Shri Pawan Kumar Singh, Assistant Commandant, Somdev Arya, Sub Inspector and Hari Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25/11/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 158-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Niraj Kumar
Assistant Commandant

02. Kishore Lal
Inspector

03. Pawan Kumar
Constable

04. Naini Gopal Maiti
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

An operation to conduct massive combing in the jungles of villages Basaguda, Chinnagelur, Peddagelur, Gundam, Koteguda, Tarrem and Pegdapalli, a maoist stronghold, under PS Basaguda, District Bijapur, Chhattisgarh, was planned by Shri Niraj Kumar, Asst. Comdt., 168 Bn. CRPF. Accordingly, one platoon each of A/168 and Special Action Team along with State Police personnel stealthily entered in the jungle in the wee hours of the morning of 18/08/2015 and started combing the area. After conducting a massive search of the villages i.e. Chinnagelur, Peddagelur and Gundam, the troops took LUP in the jungle near village Koteguda. Next day, the troops conducted search of the villages Pushwaka and Pegdapalli but when contact with the Maoists was not established they planned to withdraw from the area adopting a strategically different route.

At about 1730 hrs., while withdrawing, when the troops were negotiating a hillock, the Maoists hiding in an ambush at the top opened heavy fire at them. The leading troops mainly Constable Pawan Kumar and Constable Nani Gopal Maity under command Inspector Kishore Lal immediately retaliated and took positions behind available covers. Inspector Kishore Lal, while retorting to the fire of the Maoists, assessed the location of enemy and its strength and conveyed the same to his commander Sh Niraj Kumar, Asst. Comdt. To launch a strategic counter-attack, Shri Niraj divided his troops into two and ordered SI Vaibhav Dixit to advance to the hillock from left along with his team to further launch a concerted two directional attack. Thereafter, he himself advanced ahead under incessant rain of bullets in support of his troops. On reaching at the front, he assessed the situation and with the amount of fire coming at them could make out that the Maoists were not more than a platoon in strength. Considering the limited strength of the enemy, he decided to take them head-on and along with Inspector Kishore Lal, Ct Pawan Kumar and Ct Nani Gopal Maity, crawled ahead under covering and supportive fire. The troops too followed their commanders and the team moved ahead using tactics of fire and move.

Hardly had the troops advanced 20 meters when the amount of fire coming at them, suddenly with increased use of automatic weapons. Shri Niraj took no time to understand that it was a much-much bigger ambush than he had anticipated. It seemed a ploy of the Maoists to first employ limited fire power and when the troops reach close to them, a fierce assault be launched. Well prepared for such a contingency and surprise attack, Shri Niraj ordered SI Vaibhav Dixit to hurry his advance and counter-attack the Maoists. As SI Vaibhav Dixit found his Commander and other troops under grave threat of their lives, he took along Constable Sobha Ram Barman and Constable Dhiraj Singh and the three literally ran uphill towards the Maoists positions without caring for the bullets being flying all around. On reaching close to the Maoists positions, they opened heavy fire coupled with firing of grenades at the safely entrenched Maoists. To accomplish their task and to uproot the Maoists, they even took the risk of their own lives by firing grenades from standing position with minimal cover at front. Surprised by the move of brave troops and the counter-attack, the Maoists had to unwillingly open a second battle front. As the fire power of the Maoists got divided, Sh. Niraj manoeuvred his team towards the Maoists positions. The troops crawled ahead for final assault but found that the Maoists were well entrenched behind temporarily built secured Morchas. Any further move towards the enemy with its gun blazing would have been detrimental to the troops.

To overcome the stalemate, Sh. Niraj formed two buddy groups to launch a flanking attack at the first Morcha in front. The first group of Shri Niraj and Ct Pawan Kumar crawled towards the right and the second group of Inspector Kishore Lal and Ct Naini Gopal Maiti crawled towards the left without caring for their lives, displaying great courage and conspicuous gallant the groups continued their movement under heavy bullets to gain an appropriate position to attack. Once they gained the position, they opened heavy fire at the Morcha. The Maoists soon realised that they have been cornered from three directions and used every weapon of their armoury coupled with lobbing of grenades to intimidate the troops but soon gave up and began to flee one by one. As the fire from the Maoists side decreased and the troops gained some space to advance, the three groups advanced undeterred without caring for the fire and grenade blasts displaying exemplary courage and bravery and launched the final assault on Maoists. In the ensuing close gun-fight, they shot down two Maoists while others began fleeing taking advantage of thick vegetation and undulating terrain. The troops chased the Maoists but they

managed to flee. The area was searched after the encounter and two dead bodies of Maoists (later identified as of Hemla Nanda and Sodhi Vichyam) with one .303 Rifle, 33 rounds of ammunitions, 3 pipe bombs, 3 bundles of wire, 26 numbers of spikes, 1 Bow and Arrow, 1 ammunition pouch, 4 numbers of maoist banners and other incriminating items were recovered. It was later confirmed that in this fierce encounter, some other Maoists had also sustained injuries but they managed to flee from the spot.

Shri Niraj Kumar, Assistant Commandant (IRLA-8875), No. 971320263 Inspector Kishore Lal and their buddies namely No. 041662782 Constable Pawan Kumar and No. 065102605 Constable Naini Gopal Maiti played vital role in the operation right from the planning state to the perfect execution. They fought from the front during the counter-attack and despite being in the disadvantageous positions did not lose the composure. In the fierce gun-fight their bravery resulted in the neutralization of two Maoists.

In this encounter, S/Shri Niraj Kumar, Assistant Commandant, Kishore Lal, Inspector, Pawan Kumar, Constable and Naini Gopal Maiti, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/08/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 159-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Rajeev Kumar Chaudhary
Commandant

02. Naresh Kumar
Assistant Commandant

03. P.K. Panda
Constable

04. S. Prakash
Constable

05. Vishwabhan Singh
Constable

06. Bajesh B
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Observing the days of National importance in the Kashmir Valley brings new challenges to the Security Forces as the anti-national forces make all out efforts to disrupt the celebrations. The celebration of Independence Day'2016, turned out to be more challenging due to highly volatile and vulnerable Law & Order situation in the Valley in the aftermath of the killing of a "Hizbul Mujahedeen" Commander by SFs. To ward off disruptions and thwart the nefarious designs of militants, Srinagar city was kept under strict vigil.

On 15/08/2016, at about 0800 hours, militants, holed up in a building near Nowhatta Chowk, Srinagar, opened indiscriminate fire upon the troops of 28 Bn deployed at Nowhatta Chowk, Srinagar and a fierce encounter ensued. The information of the encounter reached all the concerned officers of the operational range and the units who reacted promptly and rushed towards the incident site along with their respective troops. Shri Rajeev Kumar Chaudhary, Comdt-28Bn, Shri Pramod Kumar, Comdt.-49Bn and Shri Rajesh Kumar, 2-I/C of 28 Bn along with other operational commanders analysed the situation and with a counter planning moved towards the area where militants were holed up. While advancing towards militants, 2-IC, saw CT/GD Dilip Das who was severely injured. Amidst the heavy firing by the militants, he, showing utter disregard to his life fired on the militants and daringly evacuated above injured jawan from the firing line of militants. Meanwhile, Valley QAT of CRPF U/C Sh. Naresh Kumar, AC reached the incident spot and started strengthening the cordon to prevent any possible escape of the militants.

QAT troops were welcomed with the heavy volume of fire by the militants while they were getting deployed around the target building where militants were holed up. Undeterred by the mortal threats, Sh. Naresh Kumar, AC, with his brave

troopers reached close to militant's position and located their position. While Valley QAT troops were engaged with militants, Shri Rajeev Kumar Chaudhary, Comdt.-28 Bn with CT/GD Bajesh. B, tactically moved towards the rear side of the hideout to block the escape route but were caught in the eyes of militants, who, in no time, inflicted a burst fire upon them which missed the duo brave troopers by a whisker, however, this could not deter them to move forward. The duo taking a calculated risk, reached near the hideout and lobbed HE-36 Grenades followed by the bunch of UBGLs on militant's position. The blast suppressed the fire of militants for a while and allowed the troops on another side to get closer and occupy an appropriate position to fire upon the militants. Taking advantage of the situation, Shri Pramod Kumar, Comdt. 49 Bn along with 2-IC stormed the militants imposing rapid fire of bullets towards them. While dominating the militants through their ferocious action, they decided to move out of their cover to give the militants the final blow. The duo, throwing all precautions into the air, came out of their covers, adopting fire & move tactics to neutralize the militants. While zeroing in towards the target, the valiant officers ignoring the grave risk of being noticed by the militants attacked fiercely and inflicted bullet injuries to one of the militants but in the process, one stray bullet pierced the skull of Shri Pramod Kumar, Comdt. The brave officer succumbed to his injuries and attained martyrdom. Despite, the fall of his brave fellow comrade, 2-IC did not lose his nerves and held the ground firmly by continuing the attack on militants.

While militants were engaged in firing with above troops, Sh. Naresh Kumar with Constable P K Panda, Constable Vishwabhan Singh and Constable S. Prakash took the position in a building in front of the hideout. At that time, Sh. Ajith Babu, DC, who also reached the encounter site along with IG Srinagar Sector, joined Valley QAT and strengthened them. Now it was their turn, as the QAT troops inflicted heavy retaliatory fire on the militants. Finding them in the baleful situation, militants lobbed a grenade towards the QAT troops which blasted in the close vicinity. Displaying their quick reflexes, troops saved themselves from the volatile situation. Due to the tactical advantageous position of the militants, bullets were not proving their worth. Hence, Constable Vishwabhan Singh was ordered to fire UBGL rounds precisely on the militant's position. Seeing this, the militants diverted their fire towards CT/GD Vishwabhan Singh to thwart his aimed fire from UBGL. Thereon, Shri Naresh Kumar, AC & Shri Ajith C Babu, moved ahead of their position and provided effective cover fire to CT/GD Vishwabhan Singh. The efforts of troops proved its worth as retaliatory fire stopped from the hideout after a while. Thereafter, a team of Valley QAT commandos comprising of Constable P.K Panda, Constable S. Prakash and Constable Vishwabhan Singh along with SOG (J&K Police) ignoring the impending threat to their lives, tactically entered the building and came out with the dead bodies of two foreign militants without any collateral damage.

During the operation, troops displayed unparalleled valor with utmost devotion and dedication towards the assigned task in adverse condition. They accomplished the task quickly, efficiently and effectively. Their unrelenting loyalty, initiative and perseverance in a life-threatening situation brought them wide acclaim and laurels to the Force.

Recoveries made :—

1.	AK- 47 rifles	:	02 Nos.
2.	AK- 47 Magazine	:	06 Nos.
3.	AK- 47 rounds	:	04 Nos.

In this encounter, S/Shri Rajeev Kumar Chaudhary, Commandant, Naresh Kumar, Assistant Commandant, P.K. Panda, Constable, S. Prakash, Constable, Vishwabhan Singh, Constable and Bajesh B, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/08/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 160-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Dipu Das
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receipt of intelligence input about presence of 30-40 armed maoists in general area of villages Puvarti and Tekalgurlam, an operation was launched in the general area of villages Nilamgutta, Kottaguda, Gundum, Tarem, Puvarti and Tekalgurlam under PS Basuguda, Distt.-Bijapur (Chhattisgarh) by troops of 204 CoBRA. Two Strikes of 204 CoBRA

comprising of 7 teams left for the operation on 25/04/2016 at 2000 Hours from two base camps i.e. Sarkeguda and New Tarem. The troops navigated in pitch darkness and negotiated every obstacle that came their way maintaining silence and surprise. Any breach of surprise in the area meant exposure of movement of troops and an opportunity for the maoists to lay ambushes. Not only did the troops have to clear the obstacles but also had to avoid the vigilant lookouts of the maoists who keep the area under their surveillance. Taking all precautions, the troops reached close to villages Gundam and Chutwahi on 26/04/2016 by 0225 hours.

To keep surveillance over the villages, a small team under command SI/GD Shravan Kumar, which had CT/GD Dipu Das as a scout, was sent close to the village, while the rest of the troops waited. The move was initiated to maintain the surprise of the troop's presence in the area. As the reconnaissance team had just crossed a Nallah to reach close to the village, the scout namely No. 065132291 CT/GD Dipu Das, through his night vision, observed a person standing at the fringe of the jungle just adjacent to the villages. The small team decided to catch that suspicious looking person while simultaneously informing the commander at rear about their move. The suspicious person after halting for a minute moved further ahead and entered the thick jungle.

The small team followed him and as it entered the jungle, a volley of indiscriminate fire came at them from inside the jungle. Prepared for such a surprise and sudden attack, the team retaliated and a fierce gunfight ensued at a close distance. Unfortunately in the close encounter, the scout namely CT Dipu Das of 204 CoBRA got hit by bullets and sustained injuries. Despite receiving bullets, he crawled bravely behind a tree, took his position and continued the engagement with the maoists. To attack the maoists hiding somewhere inside the thick jungle, it was imperative to further narrow down the distance and locate their exact position. But the task of getting closer to a well entrenched enemy under heavy gun fire entailed risk of life. The only possible way was to subdue the enemy fire and advance under cover fire. CT Dipu Das realized the importance of his position in the team i.e. scout and opted to advance under cover fire ignoring his injuries. Under excruciating pain and daring the whizzing bullets all around, the brave trooper advanced towards the enemy adopting tactics of fire and move and launched an attack. His ferocious attack forced the maoists to re-plan their strategy and make a retreat. The dedication and determination of the brave trooper was such that when he found that he was unable to fire from his right shoulder, used his left shoulder but not once thought of stopping his attack or withdraw. Due to his precise fire duly supported by other team members, the maoists hiding somewhere inside the thick jungle fled away taking advantage of darkness but not before sustaining severe injuries.

Troops searched the area thoroughly and recovered huge cache of arms and explosives from encounter site. Three Country Made Rifles, One Pipebomb, two set of maoist uniform, 50gms Gun Powder, 50cms Codex Wire and huge amount of other incriminating items were recovered. Further dragging marks with blood stains were also noticed, which indicated that some maoists must had been either killed or got severely injured during the encounter but managed to flee from the area.

In this encounter, Shri Dipu Das, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/04/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 161-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Keshaw Kumar Mishra
Assistant Commandant

02. Bhumireddi Srinu
Constable

03. Surendra Budi
Constable

04. Gummidi Sriniwas Rao
Constable

05. Surjeet Kumar
Constable

06. Ifran Ali
Constable

07. Babu Lal
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

An intelligence input given by I.B. indicated that Maoists were planning to attack a target near Bijapur town and for the purpose, 6-8 armed cadres would come in the town in a Scorpio vehicle. Based on the above information, a Small Action Team(SAT) of DIG (Ops) Bijapur under command Shri Keshaw Kumar Mishra, A.C. along with Shri Mohit Garg, Addl. SP of District Police, DRG and personnel from District police, Bijapur laid an Ambush/MCP (Naka) on Bijapur - Tumnar road near ITI College, Bijapur, Chhattisgarh on 10/7/2016 at around 1900 hrs. For an effective ambush, the joint teams were placed at dominating and tactically strong positions. F/No. 135271161 CT/GD Gummidi Sriniwas Rao and F/No. 035033037 CT/GD Babu Lal along with some DRG personnel were placed ahead of the main ambush to forewarn the arrival of suspects. As the duo was cautiously observing the movements along the road through their Night Vision Device, at around 1930 hrs, they noticed a Scorpio vehicle approaching towards them. The main ambush party was immediately alerted through wireless. This timely and well coordinated action later-on proved to be the pivot of a successful operation. As the suspected vehicle was ordered to stop and the occupants asked to disembark, the Maoists sitting in the vehicle opened fire at the troops and tried to break through the Naka. The hail of bullets missed the troops by a whisker but for a stray bullet which hit Sub-Inspector Devendra Darru of District Police, leaving him injured.

Shrugging off the shock of miraculous escape, the troops reacted promptly and blocked the road by taking positions in front of the vehicle, though the act posed serious threat to their lives. The swift, strategic and courageous move of the troops prevented the escape of the Maoists. The Maoists then got off the vehicle, got scattered and started fleeing in different directions, while firing indiscriminately at the troops, to disorient and avert a concentrated action. Two of the fleeing Maoists were intercepted by Shri Keshaw Kumar Mishra, Asstt. Comdt., CT/GD Bhumireddi Srinu and CT/GD Surendra Budi. On getting cornered, the two Maoists showered rain of bullets to get over them and escape from the site. But, the valiant trio, in turn, responded bravely and showing utter disregard to their lives, attacked fiercely on the approaching Maoists. In a fierce exchange of fire, at a close quarter, the valiant trio neutralized both the fleeing Maoists. Likewise, another Maoist attempting to dodge the troops and flee from the area was confronted by CT/GD Surjeet Kumar and CT/GD Han Ali. As the duo challenged the fleeing Maoist to surrender, he opened fire aiming at them. Displaying raw courage, undeterred to the threat to their lives and throwing all precautions into air, CT/GD Surjeet Kumar and CT/GD Irfan Ali boldly faced the fire of the Maoist and after parrying his bullets, neutralized him with the precise fire.

The strategy of encircling the Maoists was working effectively as few of the Maoists had been neutralized; however, some of the Maoists had got hid in the dense woods under the cover of darkness. At that juncture, the Commander, applied his tactical acumen and ordered the bomb detachment to fire Para illuminating bombs. The bomb detachment fired 3 consecutive Para bombs which exposed the position of a Maoist. The bomb detachment then opened concentrated fire at the Maoist who had positioned himself behind a tree. On getting exposed and receiving the fire, the Maoist then fired back at bomb detachment and tried to flee towards Tumnar, where CT/GD Gummidi Sriniwas Rao and CT/GD Babu Lal had already taken positions. The duo then came in direct line of fire of the fleeing Maoist, who, inflicted heavy volume of fire upon them to create a pass to escape. But, CT/GD Gummidi Sriniwas Rao and CT/GD Babu Lal, without caring for their personal safety, moved out of their covers and neutralized the Maoist. Once the firing was stopped, area was thoroughly searched during which four dead bodies of Maoists along with one 9mm Pistol, one country made .315 bore gun, one Muzzle loaded gun, one wireless set (Chinese), live rounds etc. were recovered.

During the operation, the dastardly misadventure of the Maoists was countered with the courageous decision making, selfless leadership, unparalleled bravery and team spirit by the troops. The party under the command of Shri Keshaw Kumar Mishra, Asstt. Comdt. fought valiantly, by putting their lives in the line of fire, to counter the enemy attack knowingly well that every step could have been fatal.

In this encounter, S/Shri Keshaw Kumar Mishra, Assistant Commandant, Bhumireddi Srinu, Constable, Surendra Budi, Constable, Gummidi Sriniwas Rao, Constable, Surjeet Kumar, Constable, Ifran Ali, Constable and Babu Lal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/07/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 162-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Sunil Khinchi
Assistant Commandant

02. Bhanu Pratap Singh
Sub Inspector

03. Lalit Kumar
Constable

04. Kavi Chaudhary
Constable

05. Kinu Mundri
Constable

06. Raghunath Saren
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

A reliable intelligence input was received regarding the presence of top maoist military leaders of the Chhattisgarh region namely Hidma, Nagesh, Sonu and Udham Singh (all from the 1st Bn. of PLGA) along with other 200 cadres in the general area of Dubbakonta and Kolaiguda, under PS-Bheji, Sukma. These arrant maoist military leaders have created ghastly environment in the region by their cruel activities. The area of Dubbakonta and Kolaiguda is allegedly considered to be a maoist citadel and is deponent to number of fierce encounters. Undaunted to the above difficult conditions, teams of 208 CoBRA took this input as a rare opportunity to nab/eliminate the terror figures and based on the above input planned and launched an operation at 1700 hrs on 18/11/2015.

The three CoBRA teams under the overall command of Shri Sunil Khinchi, AC along with two teams of 219 Bn, one team of 217 Bn and two teams of DRG (District Reserve Guards) left Bheji base camp on specified time. In a dusky night and through formidable geographical terrain, the bravehearts negotiated all the obstacles and navigated to a pre decided launching point stilly. From the launching point, all the teams took their respective routes to the target area. While Team 1 was marching through its designated route, it was the unwinking consciousness and hawk-eye approach of scouts CT Pankaj Sharma and CT Sher Singh, as they overheard some suspicious sound in near vicinity. Immediately, they allusively alerted the troops at back.

Karthikeyan S, AC, who was leading the team and wending behind scouts, came forward stealthily, observed and assessed the situation using binocular and sighted a gathering of some uniformed maoist cadres at a distance of approx 70-80 meter having automatic weapons. He immediately conveyed the situation to the party commander Shri Sunil Khinchi, AC who was available with another team at a distance. Without hotfooting for an immediate action, in a bold and courageous decision, the party commander asked Karthikeyan S, AC to move closer to maoists positions and pluck specific information about their strength. Karthikeyan S, AC, without reckoning for subsequent risks adhered to the direction of the party commander and crawled stilly towards the maoists position along with three Constables. The four returned with the precise information on the strength and location of the maoists and passed it on to their commander. Based on the specific information, Shri Sunil Khinchi, AC then planned stratagem by exploring the area on digital map to encircle and nab the maoists. He chalked out all likely escape routes and directed all team commanders to place the cut-offs on specific points while placing his team also at a strategic escape route.

Meanwhile, he ordered team to mutely clutch the ground. It was a high voltage circumstance, in which the troops had to hold their nerves and breathe to maintain the secrecy. Any slipup may have resulted in a disastrous outcome both for the troops and the operation. To their high standards of training and discipline, team patiently maintained absolute silence at a distance of 50 meters from the enemy for about 30 minutes.

As all the teams occupied their respective positions, one team moved ahead to tighten the noose around the maoists but a sentry of the maoists sensed the unwanted presence and opened indiscriminate fire at it. Soon other maoists also got alerted and they also opened heavy fire at the troops. The sudden move of the maoists brought the team under grave threat to life especially the lead team members. However, the lead members though were exposed to raining bullets of the enemy in absence of any cover, yet retaliated with their full capacity and neutralized few maoists. Beaten by the fierce retaliation from the CoBRA troops, the maoists started fleeing from the spot toting their injured and dead by taking advantage of thick jungle and rocky terrain.

The strategic foresight of the Party commander Shri Sunil Khinchi got shaped into reality when after few minutes, fugitive maoists, who were ferociously attacked by the team, regrouped and started fleeing towards anticipated jungle area of village Kolaiguda and Entapad. Team of Sh Sunil Khinchi, AC had already taken its position on the above route. Fleeing maoists, who were around 30-40 in numbers, on sensing the presence of troops on their way opened indiscriminate fire from their automatic weapons on them. Due to the early detection of troops and heavy shower of bullets being fired by the maoists, Sunil Khinchi, AC improvised his plan of attack and directed SI/GD Bhanu Pratap Singh to move from left flank along with his section and encircle the maoists. Meanwhile, he along with CT Kinu Mundri, CT Raghunath Saren, CT Kavi Chaudhary and CT Lalit Kumar surreptitiously slipped from their positions and moved to the right flank. Amidst torrent of bullets, where troops were exposed to grave risk of their lives, the men at flanks displayed exemplary courage and mettle, as they moved ahead stealthy using fire and move tactics and started encircling the maoists.

The astounding move of Commandos left the maoists stunned and surprised. To counter the move, some of the maoists took positions behind big boulders and intensified their fire by using LMG and other sophisticated weapons. But the move did not deter SI Bhanu Pratap Singh to give covering fire using UBGL to the party of Shri Sunil Khinchi which was crawling ahead to occupy strategic positions while countering the attack of the maoists by their precise fire. On gaining the desired positions, the party then launched a fierce attack at the maoists while resulted in killing of some maoist cadres. Feeling badly pounded and seeing their cadres falling to the bullets of troops, the maoists started fleeing from the spot toting their dead and injured taking advantage of rugged terrain.

During search of the area, troops recovered two dead bodies, one of a female maoist cadre with Bharmar gun (later identified as Aas Jogi, I/C Military Intelligence Konta Area) and one male maoist in black uniform (later identified as Madkam Mukka @ Bhaskar, Commander Konta LOS) wearing CoBRA pattern pouch with two guns and two magazines of 5.56 mm INSAS rifle containing 31 rounds.

The teams fought fearlessly and valiantly during the encounter without caring for their lives. They placed their lives in the line of fire to defend the sovereignty of the Nation. This valorous act of above mentioned personnel resulted in killing of some dreaded maoists, out of which dead bodies of two maoists were recovered, and injuries to many more. The operation was a rare example of tremendous grit, courage, confidence, great tactical acumen and high order of command & control.

Recoveries made :—

1.	Country made gun 12 Bore	:	01 No.
2.	Bharmer	:	02 Nos.
3.	INSAS magazine	:	02 Nos.
4.	Live rounds 5.56.MM	:	31 Nos.
5.	Empty case of 5.56 mm	:	11 Nos.
6.	12 Bore live round	:	13 Nos.
7.	Country made grenade	:	01 No.

In this encounter, S/Shri Sunil Khinchi, Assistant Commandant, Bhanu Pratap Singh, Sub Inspector, Lalit Kumar, Constable, Kavi Chaudhary, Constable, Kinu Mundri, Constable and Raghunath Saren, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/11/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 163-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Ashok Kumar
Second-in-Command

02. Shravan Kumar
Sub Inspector

03. Kaushal Singh
Constable

04. Tapan Kumar Barman
Constable

05. Rajiv Ranjan
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

After receiving intelligence inputs about presence of Somdu (LOS Commander, Usur) and Manila (DVCM of Pamed Area Committee) along with 25-30 armed Maoists in the jungles of villages Nambi and Gunjepara and another group of 30-40 armed Maoists in the jungle adjacent to villages Paurguda, Pujarikanker and Tumrel, under PS :—Usur Dist: Bijapur, Chhattisgarh, a joint Search and Destroy Operation for 05 days and 04 nights was planned. To execute the operation, a team consisting of troops from 204 CoBRA, STF ,DRG and local police was formed under over all command of Shri Ashok Kumar, 2-IC, 204 CoBRA.

Weighing all the opportunities/threats and to operate effectively in the Maoists den, Shri Ashok Kumar, 2-IC divided the team into four strike parties, Party No. 1- State Police of Awapalli PS, Party No. 2- 204 CoBRA, Party No. 3 - DRG and Party No. 4- STF. As per the plan, joint troops left their base camp Awapalli at 0400 hrs on 15/07/2016 towards the target area. Throughout the day, troops strived ardently to locate the Maoists but couldn't succeed and took LUP in the jungle area near village- Tekmetla for night halt. Focusing the target, on 16/07/2016 at first brightening, troops started combing the jungle towards village Paurguda. Being the core Maoist dominated area; eventuality of Maoist ambush/attacks always prevails. Presumptively, presence of troops in the area was sensed by the Maoist and while troops were on the task, at around 1330 hrs, as the Party No. 1 was negotiating a hill, Maoists perched on the top opened indiscriminate fire on the troops with intention to kill and snatch the weapons. Acting promptly, troops immediately took position and retaliated in self-defense.

On getting the information about exchange of fire, Shri Ashok Kumar, 2-IC who was leading the Party No. 2, swung into the action. Using his tactical acumen, he instantly chalked out a counter action plan and ordered Party No. 3 and 4 to lay cut off from left, right & rear side of Maoists position. He himself with Party No. 2 moved ahead to encircle the Maoists from right side. By the time, the Party No. 2 had covered half of the distance to reach to the hilltop, the Maoists had begun to withdraw from their positions after firing heavily at Party No. 1. On hearing the decreasing volume of gunfire and anticipating the withdrawal of the Maoists, Shri Ashok Kumar hurried his advance and in an attempt to reach closer to the Maoists positions at the earliest, he took along SI/GD Shravan Kumar, CT/GD Kaushal Singh, CT/GD Tapan Kr Barman and CT/GD Rajiv Ranjan with him while ordering others to follow. As the small group of intrepid soldiers moved further ahead, they suddenly came across a group of heavily armed Maoists withdrawing from their ambush. The Maoists on noticing the troops, immediately opened indiscriminate fire at them and tried to flee from the area. The bullets of the Maoists just missed its target. But, Shri Ashok Kumar was in no mood to let Maoists escape. Displaying utter disregard to his personnel safety, he fired at the fleeing Maoists and ran after them. Emulating the raw courage of their commander, troops followed him and chased the Maoists without caring for their lives. But, the luck seemed to favor the Maoists that day as another group of Maoist which was also withdrawing from the ambush accidently followed at the same route of withdrawal. This group on seeing their comrades in danger immediately opened fire at the troops and tried to encircle them. The other Maoists, on getting the support, also began firing at the beleaguered small group of troopers. Shri Ashok Kumar soon found himself and his valiant troopers encircled by the Maoists with rest of the team still at a distance. But the valiant troopers did not falter. They crawled their way to a pit amid the rain of bullets to find a cover for counter attack. Once the troops occupied the position, they direly counter attacked the Maoists by showering bullets upon them. In this fierce counter attack, troops hit their intended targets and a number of Maoists got injured which sag the morale of the Maoists and they began to flee from the spot. But the valiant troopers did not stop there and chased the fleeing Maoists till they got disappeared in the thick bushes of the jungle and stopped their fire. Thereafter, Shri Ashok Kumar, 2-I/C, asked all the four parties to carry out a thorough search of the area, during which, troops recovered 4 dead bodies of the Maoists from the bushes at different places along with Country Made Gun (SBML)-04 Nos. Further search resulted in busting of a camp from where heavy warlike stores like ammunitions, explosives, bombs etc were recovered. Lots of blood stains were also noticed in the area indicating that many more Maoists were also hit by bullets but managed to flee taking advantage of thick forest and gorges.

The operation was a grand success in the heartland of the Maoists and it was made possible because of the extraordinary courage shown by the personnel of 204 CoBRA on forefront under the extra ordinary leadership of Shri Ashok Kumar, 2IC. Shri Ashok Kumar, 2IC displayed great presence of mind, superb operational sense without caring for his life and exhibited extraordinary courage, bravery and conspicuous gallant action while launching the counter offensive against the Maoists. SI/GD Shravan Kumar, CT/GD Kaushal Singh, CT/GD Tapan Kumar Barman and CT/GD Rajiv Ranjan have also shown extraordinary bravery, selfless team spirit, dedication towards their duties and gallant action in which they fearlessly moved forward risking their lives and attacked the entrenched enemy.

Recoveries made :—

1.	Bharmar Gun (SBML)	:	04 Nos.
2.	Pressure Cooker Bomb (5lter)	:	02 Nos.
3.	Pipe Bomb	:	03 Nos.
4.	Tiffin Bomb	:	01 No
5.	Battery	:	02 Nos.
6.	Laptop Charger (HP)	:	01 No
7.	Fuse Wire	:	02 mtr.
8.	Gelatine	:	04 Nos.
9.	Empty case	:	32 Nos.

In this encounter, S/Shri Ashok Kumar, Second-in-Command, Shravan Kumar, Sub Inspector, Kaushal Singh, Constable, Tapan Kumar Barman, Constable and Rajiv Ranjan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16/07/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 164-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Neeraj Kumar Uttam
Assistant Commandant

02. Sandeep
Sub Inspector

03. Pawan Kumar
Head Constable

04. Saroj Kumar Mathur
Constable

05. Shabir Ahmad Khan
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on an input about presence of maoists in the area, an Inter-State operation was launched by troops of 205 CoBRA duly supported by troops of 190 Bn, 22 Bn and 159 Bn CRPF and state police in the general area of villages Doat, Piparahi, Sondahi and Nare U/PS-Barachatti, Distt-Gaya & U/PS- Hunterganj, Distt. - Chatra (Jharkhand) on 16/05/2015.

As the target area was sparsely spread, eight teams were formed to comb the area and each team was given a specific target. The teams surreptitiously left their base camps during night and after navigating in dense forest for the whole night, reached closer to their specific target areas the next morning. Like-wise, the team under command of Shri Neeraj Kumar Uttam, Asst. Comdt. also reached near village Sondahi i.e. their first rendezvous maintaining the stealth and surprise. As the surveillance team was keeping an eye over the area for a tell-tale sign of the maoists, it noticed a villager with a big utensil suspiciously moving towards a hill-lock at the back of the village. This slight observation and the topography of the area were enough signs for the Commander to make out the suspected location of the maoists. The hill-lock with dense vegetation was an appropriate tactical location with a village nearby to maintain the supply of ration. Shri Neeraj ordered his surveillance team members to withdraw deeper in jungle while imprinting the topography of the area in their minds.

To launch an attack at the suspected place, he organized his troops into two teams and briefed them based on the topographical knowledge, his surveillance team had collected. As the location of the maoists was not known, he decided that

both teams would enter the hill from two different directions and move uphill towards the top. The routes which had sufficient covers to evade the eyes of the maoist sentries were also chalked out. After proper briefing, two sub-teams each under command of Shri Neeraj and SI/GD Sandeep moved towards the target with a resolute and after reaching at the base of the hill, got divided. Moving uphill, with the enemy perched on top and ready to shoot at any intruder, was fraught with danger to their lives. Nevertheless, the two sub-teams without showing any sign of nervousness and ready to counter a surprise attack, moved ahead with alacrity. At around 0645 hrs, as expected, a sentry of the maoists hiding behind dense vegetation noticed the movement of troops and immediately opened sudden and indiscriminate fire at them. Ready for such an attack, the scout namely Constable Saroj Kumar Mathur opened fierce fire at the maoist while remaining firm on his ground. His fire was so fierce that the maoist did not get any further chance to move out of his cover and fire at the troops. Under the covering fire of Ct Saroj, the team members moved ahead to attack the maoist sentry. But soon the other maoists present in the nearby camp joined the gun battle and opened heavy fire at the advancing troops. The commander quickly reshaped his strategy adapting to change of events. As the intense fire was obstructing any further movement of the troops, the Commander ordered SI Sandeep to move towards his position and launch an attack at the maoists. Meanwhile, Shri Neeraj decided to keep engaging the maoists till SI Sandeep launches an attack. The maoists confident of their tactically advantageous position and good fire power did not leave the ground but planned to inflict major loss to the security forces. In furtherance to their plan, the maoists began to encircle the troops, but this was the moment, Shri Neeraj was waiting for.

As the location of the maoists got disclosed, he ordered his troops to open fierce fire coupled with firing of grenades at the covers behind which the maoists were hiding. At this juncture, he himself moved out of his cover, without caring for his life, alongwith Ct Saroj and launched successive grenades at the maoists positions. The counter-offence proved fruitful and some maoists sustained severe injuries. The bold move of the Commander and his troops, wherein they literally faced the bullets of the enemy with their bare chest, forced the maoist to re-think their strategy.

But soon enough SI Sandeep joined the gun-fight with his team and he charged at the maoists with his buddies namely HC Pawan Kumar and Constable Shabir Ahmad Khan and wreaked havoc at the maoists. The three moved ahead firing successive grenades at the maoists positions without caring for the bullets fired at them. Their uphill advance in the absence of covers and blasting of successive grenades made the maoists shudder for their lives. Soon the maoists began to flee from the area under supportive fire of each other. The troops had turned the tables on the maoists and were now hysterically chasing them. Their bravado and heroics could be very positively felt on imagining as to how troops would have almost ran uphill towards the maoists who were spraying bullets haphazardously. During chase, the maoists took benefit of their advantageous positions, dense forest, and hilly terrain and fled from the area. In the place of encounter, the troops spotted dead body of a lady naxal (later identified as of Sarita Ganju @ Urmila, a deadly maoist commander with 5.56 mm INSAS Rifle, 3 magazines and live rounds. Thereafter the team searched' along the expected route taken by fleeing maoists and recovered a large number of incriminating items i.e. two country made guns, 238 rounds of ammunitions, one radio set, 1 wireless set, maoist literatures, one detonator, one mobile set, one cane bomb wires etc. and blood stains suggesting that a lot more number of maoists had suffered injuries in the encounter.

Despite imminent threat to their lives, Shri Neeraj Kumar Uttam, Asst. Comdt., SI/GD Sandeep, Head Constable Pawan Kumar, Constable Saroj Kumar Mathur and Constable Shabir Ahmad Khan displayed bravery & exemplary courage and counter-attacked the maoists. The maoists had all the advantage of terrain, surprise and fire-power, but the Commander and his team displayed a rare show of tactics, proficient acumen and valour resulting in neutralization of a maoist commander while inflicting severe injuries to other maoists and recovery of huge arms and ammunitions.

In this encounter, S/Shri Neeraj Kumar Uttam, Assistant Commandant, Sandeep, Sub Inspector, Pawan Kumar, Head Constable, Saroj Kumar Mathur, Constable and Shabir Ahmad Khan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/05/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 165-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Akhilesh Kumar Chaubey
Assistant Commandant

02. Surendra Kumar Patel
Sub Inspector

03. Dhalwinder Singh
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 16/01/2016, a brief exchange of fire took place between troops of 168 Bn. CRPF and maoists near village Dalla, U/PS Gangaloor, Distrist Bijapur (Chhatisgarh). The exchange of fire confirmed the presence of maoists in the general area. To trap the maoists, an operation was planned by Shri Akhilesh Kumar Chaubey, Asst. Comdt., of 204 CoBRA wherein he first zeroed on the probable escape route of the maoists and then launched a Search and Destroy Operation in the general area from 16/01/2016 to 18/01/2016. For the operation, he targeted five villages i.e Dalla, Badi, Sukanpalli, Itawar and Korsermeta all under PS Gangaloor.

As per the plan, three teams of 204 CoBRA along with a State Police representative under the command of Shri Akhilesh Kumar Chaubey surreptitiously moved out from the base camp Tarren on 16/01/2016. On 16/01/2016 and 17/01/2016, troops conducted thorough search of the area but no contact with the maoists was established. On 17/01/2016 night, when the troops were in LUP, the commander received an information about the movement of maoists near villages Autapalli, Tarrem, Hidmapara, Gotapalli and Pediya. On receipt of information, the commander reshaped his strategy and each team was given a different target to comb while being in mutual support. As the first light fell on earth, the teams moved towards their target areas and began combing the jungles. Like-wise team under command Shri Akhilesh Kumar Chaubey began combing the jungle near villages Hidmapara and Gotapalli.

At about 0915 hrs, as a team being commanded by Shri Akhilesh was moving uphill combing the jungle, the maoists perched at a height suddenly blasted an IED followed by indiscriminate fire. The team and especially the scouts namely Shri Akhilesh, SI/GD Surendra Kumar Patel and CT/GD Dhalwinder Singh had a narrow escape of their lives as bullets just missed them by a whisker. The troops were well prepared for such a sudden and surprise attack and thus without losing any of the precious moment, flung into action and retaliated with full intensity. A fierce encounter at a close distance ensued. The situation was highly skewed in favour of the maoists as they were holding tactically advantageous positions and were thus thwarting every attempt of the troops to launch a counter attack.

Being aware of maoists tactics of encircling the troops by taking advantage of familiarity of terrain and dense jungle, Shri Akhilesh pre-empted his move and instead launched a flanking attack himself. At first, he ordered his troops to fire fiercely at the maoists which forced the maoists to pin down for a moment. Taking advantage of this small window of opportunity and without giving a second thought to their safety, Shri Akhilesh, SI/GD Surender Kumar Patel and CT/GD Dhalwinder Singh came out of their covers and moved close to the flank of the well entrenched enemy. Before the maoists could regain the stock of the situation, these brave troopers rained bullets on them from close quarter. This setback to the maoist spread panic in their ranks and they began to retreat; however some of the maoists who were safely entrenched behind secured covers still held the ground and fired intensely at these brave troopers. Though the formidable attack by the troopers in the face of grave risk had breached the defence of the maoists but the fire from some of the well entrenched maoists was hindering the further advance of the troops. Taking the responsibility of silencing the guns of the enemy, the three dare-devils again in a rare show of bravery moved out of their covers and launched a concentrated fire at one of the hold up maoists. Their concentrated fire resulted in killing of the maoist. Shaken by the audacity of the troops and finding it hard to sustain the onslaught anymore, the maoists fled from the encounter site leaving behind the dead body of one of the cadres, one injured cadre alongwith arms and ammunition, IED, pipe bomb and other incriminating items.

Recoveries made :—

1.	12 Bore rifle	:	01 No.
2.	Pipe bomb (IED)	:	01 No.
3.	Tiffin bomb	:	03 Nos.
4.	Empty case of A.K.47	:	05 Nos.

In this encounter, S/Shri Akhilesh Kumar Chaubey, Assistant Commandant, Surendra Kumar Patel, Sub Inspector and Dhalwinder Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/01/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 166-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Ajay Kumar (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

In Jharkhand, Turner, Pundag and Burha Pahar areas are considered as safe haven for the Maoists being the insurmountable terrain, impermeable shag and limited approachable routes for the security forces. The area has witnessed a number of ensanguined encounters between the ultras and security forces over a period of time. Security forces are continuously engaged in operations against the Maoists in this area since long. Meanwhile, intelligence input regarding the presence of CPI (Maoist) CCM Arvind with 80-100 armed members in the above areas was received through reliable sources which were further corroborated with other available information. Accordingly, an Operation TRACHAND' was planned and launched in the forest area of the village- Jhauldera U/P.S. Bhandaria, Distt- Garhwa, Jharkhand by the troops of CoBRA-209 & 203 Bn with other CRPF units.

As per the plan, two strike team of CoBRA 209 Bn under the overall command of Shri Kamlesh Singh, Comdt were assigned the task of search and destroy operation in the target area. Troops started for their target area on 09/07/2016 from their base camp and while advancing cautiously, they maintained utmost surprise and secrecy to achieve the desired outcome. While ceaselessly endeavouring for the target, on 11/07/2016 at about 0430 hrs, the strike bifurcated in two parties to follow their predefined/planned routes towards the target area. Cruising towards the target area, troops reached the vicinity of village- Thalia and covered the northern as well as southern hillocks from the village. After observing the activities around the village and forest around, one team of 209 CoBRA descended the northern hillock to search the village. As strike- 1 was moving tactically towards the east of the village, scout noticed some suspicious movement at a distance of about 400-500 meter uphill and alerted the troops and commander. Keeping the prevailing situation in mind, troops surreptitiously started ascending the upward gradient of the hillock when a spurt of bullets came upon them from atop of the fore ridge. It was a well fortified deadly Maoist ambush.

The teams immediately took the position and retaliated the Maoists firing. Undaunted to the Maoists firing, troops mightily started advancing towards the height with covering the left and the right flank to counter the Maoists firing and break their ambush. While troops were tactically advancing uphill towards the Maoist position and close to hill top "Jhandi", at around 1120 hrs, Maoists triggered series of IEDs planted around the axis. The strategically fortified location of Maoists, their heavy firing using sophisticated weapons including LMG and now the IED blasts in series, were turning the situation into their favour. Things were getting worse for the troops as their firing from flat trajectory weapons were going into vain. A bold and fearless act was the need of the hour.

Taking stock of the situation and to overpower the enemy, strike commander Shri Nitin Kumar, DC decided to launch an intensive attack on Maoist post and one of his brave trooper No.-105161253 CT/GD Ajay Kumar for playing a decisive role to fire UBGL uphill on Maoist position. In such incurable situation where any move could have been fatal being the risk of exposure to enemy fire, CT/GD Ajay Kumar without a second thought grabbed the opportunity and swung into action. His concentrated fire of UBGL on Maoist position created panic amongst the Maoists, forcing them to retract from their positions. As the Maoists moved back to safer position, strike commander directed the strike teams to counter Maoists from three directions. CT/GD Ajay Kumar moved from left direction with his team. The Maoists were also not ready to let the situation go away from their control, they again occupied the tactically advantageous position and opened the heavy torrent of bullets upon the troops. At around 1210 hrs, when the Maoists again seemed to be trying to dominate the troops moving from the left flank, CT/GD Ajay Kumar again emerged as the unconquerable entity. He, without caring for his life, moved ahead, firing gallantly with his A.K-47 and UBGL on Maoists, inflicted huge damage to them. Due to his audacious action, the troops started advancing ahead, from the right & left flank, which had almost stopped heavy firing, hurling of grenades from the Maoists.

Thus the Maoists, under utter distraught, diverted their whole fire on CT/GD Ajay Kumar but brave CT/GD Ajay Kumar kept manoeuvring his positions tactically, amidst roaring guns and flying bullets. He got very close to the Maoists' position and was in a relatively vulnerable position being depressed location & little cover. During his intrepid advance, when CT/GD Ajay Kumar was trying to fire UBGL, a bullet pierced through his left shoulder but could not affect his guts. Showing utter disregard for his life, the injured CT/GD Ajay Kumar with selfless devotion to duty and with raw bravery continued to hold his position and helped the troops to advance and mount left and right flank attack on Maoists. Despite all the odds viz. unfavourable terrain, improper cover and incessant enemy fire had tested the resolution of CT/GD Ajay Kumar; he took the highest degree of risk and without caring for his life decimated the enemy through his precised firing and tactical acumen. While being evacuated, he succumbed to his injury and achieved martyrdom. Because of his gallant action troops could break Maoists ambush and left them devastated. During the operation, No. 105161253 Late CT/GD Ajay Kumar of 209 CoBRA Bn displayed tactical acumen with chivalry and made supreme sacrifice for the nation and his team.

In this encounter, Late Shri Ajay Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/07/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 167-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Praveen Kumar
Constable

02. Bhaju Ram Yadav
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 19 Jan 2017, at about 0430 hrs, a specific intelligence about a dreaded LeT terrorist, hiding in a house in Khosa Mohalla of Hajin town, under PS - Hajin, Distt- Bandipora, J&K, was received from SSP Bandipora. Based on the input, a cordon and search operation was launched by the joint troops of 45 Bn CRPF, SOG (JKP) and 13 RR.

Being a crowded locality, the exact location of the house in which the terrorist was hiding could not be identified. Therefore, in order to ensure a full proof cordon and prevent slipping out of hidden terrorists, the forces encircled 3 suspected houses adjacent to each other. 13 RR laid the inner cordon on the Northern, Western and Southern side, whereas the Eastern side was covered by QAT 45 Bn CRPF and SOG, JKP. Troops of C & D/45 Bn CRPF and the civil police placed the outer cordon, plugging all escape routes for the terrorist and also to prevent the intervention of the unruly mob, lest they create a law and order problem to facilitate the escape, opportunity to the terrorists in the melee. As expected, when the news spread in the nearby areas about the operation against the holed up terrorist, a large mob gathered around the site and resorted to heavy stone pelting on the troops engaged in the operation. However, the troops kept the mob at bay and held the ground firmly.

At first light i.e. around 0630 hrs, troops, obeying the rules, made an announcement to the terrorists to surrender before the SFs. Albeit, the suspected terrorist paid no heed to the announcement and did not relent. As the troops waited patiently for a response, a person. Posing as a civilian and attired in a Kashmiri pheran, emerged out of one of the target houses situated on the extreme West and started moving towards the eastern direction where QAT 45 Bn CRPF and SOG, JKP had taken positions. As he inched closer to the troops, he pounced inside his pheran, picked out his AK rifle and opened indiscriminate fire on the troops, injuring a Constable of the JKP. While firing heavily on the troops, the terrorist swiftly moved towards the Rakshak vehicle of SDPO Sumbal, before the troops could position themselves and retaliate. The terrorist picked out a grenade and tried to open the rear door of the vehicle to throw the grenade inside the vehicle causing maximum. casualties to SFs.

By the time troops had already taken the position and were ready for counter action. They attacked the terrorists with controlled fire to avoid any collateral damages to civilians as well as own troops deployed in the close vicinity. The terrorist had a narrow escape in the strong retaliatory fire from the troops as the flying bullets missed him by a whisker. Hitherto, the terrorist had realized that he has been thickened by the SFs and chances for escape were feeble. In such odds, the terrorist made his desperate attempt to lob the grenade towards the cordon party. The grenade landed close to CT/GD Praveen Kumar and CT Bhaju Ram Yadav of CRPF. However, the sharp reflection and quick movement of the above, duo saved their life as they took a well-calculated leap away from the place of explosion; escaping miraculously. Undaunted to the situation and conquering the fear, CT/GD Praveen Kumar and CT Bhaju Ram Yadav decided to take heads on with the terrorist. It was now or never moment for the duo. Holding their nerves and vanquishing post-explosion trauma, both the brave young men unmindful of their personal safety and exhibiting raw courage with extraordinary bravery in the face of clear and imminent threat, dashed towards the terrorist. They attacked fiercely on the terrorist with their precise firing and neutralized him before he could take the further move.

The slain terrorist was identified as Abu Musaib; Division Commander of LeT, Category A+', a dreaded and most wanted terrorist. He is the nephew of Zaki Ur Rehman Lakhvi (LeT operational chief of Pakistan and the mastermind behind the 26/11 Mumbai attack). One AK 56 assault rifle, three magazines, assorted ammunitions, grenades and other war like stores were recovered from the incident site.

In this encounter, S/Shri Praveen Kumar,Constale and Bhaju Ram Yadav, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/01/2017.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 168-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Ram Kishan
Deputy Commandant

02. Om Prakash
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 19 June 2016 at about 1530 hrs, on receipt of a specific intelligence input from the local police about the presence of terrorists on the outskirts of Lethpora, near Khyber Milk Plant, in village Ladoo, PS-Awantipora, Distt - Pulwama, J & K, a joint cordon and search operation was launched by the troops of 110 Bn CRPF and SOG/JKP in the target area.

After reaching in the proximity of the target location, the party was divided into two strike teams. The first team led by SP Awantipora and assisted by Shri Ram Kishan, Dy Comdt of 110 Bn CRPF, laid the cordon from the southern side of the target location and the second team commanded by Shri Kishore Kumar, Comdt 110 Bn, CRPF and assisted by Shri Ajaz Ahmad, Dy SP (Ops) of SOG Pampore, laid the cordon from the northern side of the target location. Once the cordon of the area was completed, an announcement was made to give an opportunity to the terrorists to surrender before the troops. However, paying no heed to the appeal, terrorists opened indiscriminate fire on the second team and rushed southwards where the first team had already taken the position. SP Awantipora and Shri Ram Kishan, Dy Comdt, displaying their tactical acumen directed their troops to remain calm. They waited for the terrorists to move towards them. Once they spotted the terrorists rushing in their direction, both the officers displaying raw courage and exemplary bravery shattered with a barrage of bullets & faced the terrorists. Finding them cornered by the SFs and sensing the gravity of the situation, the terrorists took refuge in the nearby dense orchard. Meanwhile, both the teams closed in to tighten the cordon to prevent the terrorists from slipping out.

During the exchange of fire, few civilians who were working in their fields got entrapped at the encounter site. In such a critical situation, Comdt 110 Bn obeying his commitment for the duties towards the people, acted sensible. He along with HC/GD Om Prakash of 110 Bn and SOG Pampore took the grave risk to their lives and evacuated all the trapped civilians to safety amidst heavy cross-firing. Thereafter, the parties opened heavy fire on the terrorists from both sides. The orchard was dense and the terrorists were constantly changing their positions to trick the forces. Not the ones to beat a retreat in the face of grave and imminent threat to life, SP Awantipora along with Shri Ram Kishan, Dy Comdt decided to take the bull by the horns. Displaying exemplary valour, sheer grit and highest degree of professionalism, both the officers crawled towards the terrorists amid the heavy firing and charged at the terrorists. The terrorists, sensing the death lurking round the corner, intensified the firing on approaching troops.

Thrashed by the firing of above duos, the terrorists ran towards the direction where Comdt 110 Bn with his team were positioned. HC/GD Om Prakash of 110 Bn and ASI/GD Irshad Ahmad of SOG, J & K Police were directed to take on the approaching terrorists. The duo, held their nerves in most volatile situation as they waited for the target till the appropriate time. Once the militants approached towards the duo, they, sensing that their moment of action had arrived, charged on the approaching terrorists. Exhibiting unparalleled valour, nerves of steel and true character in the face of grave adversity they fired upon the militants and neutralised one of them. However, the other two terrorists managed to slip out taking advantage of the canal and thick vegetation. During the post encounter search dead body of the slain terrorist, Khubaib @ Abu Qasim r/o Pakistan, A+ category of LeT with one AK-47 Rifle, two Mag. and twenty five numbers ammunitions were recovered by the troops.

In this encounter, S/Shri Ram Kishan, Deputy Commandant and Om Prakash, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/06/2016.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 169-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Rakesh Sharma
Assistant Commandant

02. Gagandeep Singh
Constable

03. Patel Vishal Ramsing
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On an intelligence input about movement of armed Maoists near village Gahami,PS Chandiposh, Distt. Sundargarh (Odisha), an operation namely SARGRAM-2' was launched by joint troops of 19 Bn CRPF and State Police at 2000 hrs on 11-11-2015 under the command of Shri Rakesh Sharma, Assistant Commandant.

The team under command Shri Rakesh Sharma, navigated surreptitiously and reached on the bank of Brahmani River which was required to be crossed to reach the target area. Relying on his understanding of the maoists and their warning system generally placed at such likely places of river crossings, the Commander kept the area under surveillance for some time to detect any unwanted presence. During the process, the scouts namely CT/GD Gagandeep Singh and CT/GD Vishal Patel, positioned at 35 meters ahead of the main party, observed movement of two human silhouettes who came out of the jungle across the river and headed towards them. The information was shared with the Commander who alerted the whole party and crawled to the scouts. A clear view through the Night Vision Device confirmed the weapons slung in ready positions on the shoulders of the suspects.

The time for action had come and the Commander and his buddies waited with bated breath and weapons firmly held in their hands for any eventuality. The Commander had already instructed his buddies that he would be the first to challenge the enemy as he did not want to lose the opportunity, by committing any mistake, which he had gained after a difficult navigation in dense and dark jungle. To ensure that the suspected persons or maoists do not flee under cover of darkness and thick jungle, he had planned to challenge them once they cross the river and come close to them, though it involved a greater risk to their lives. On crossing the river, the two suspects/maoists that were still at a distance of around 40 meters from the troops made a whistling sound. It was probably a signal and four more suspects were seen coming out of the woods. The situation had put the Commander, who was ready to challenge the maoists, in a fix as at that time he was not in a position to strengthen his scouts and thus changed his plan. The two suspects/maoists, ignorant of the presence of troops, then moved towards their direction maintaining a gap of around 10 meters between themselves. The situation posed a challenge to the Commander but he took a bold and brave decision to wait until either the following suspects/maoists crossed the river, so that they could also be trapped in the ambush, or the two maoists come too close to them. Constable Gagandeep Singh and Constable Vishal Patel too understood the plan of their Commander and waited patiently for the orders. Every step taken by the armed and ready to fire suspects was proportionally increasing the threat to the lives of the troops but the brave troops held to their nerves and breathe and waited for the action. The leading suspect moved cautiously and came just too close i.e around 10 meters to the troops with his gun dangerously pointing at them but the second group was yet to start crossing the river.

As the leading suspect moved further ahead to enter the jungle, he sensed the unwanted presence of troops and opened indiscriminate fire while taking cover of a boulder. His buddy too joined him in fire and an intense fire from the maoists' came pouring in at the troops. The Commander immediately opened fire which was supported by his buddies. A fierce gun battle at the close distance i.e. 10 metres ensued. The maoists at rear seeing that their scouts had got trapped in the ambush of the troops also opened heavy fire in their support. Knowing that the maoists would not stay for long 'and would try to flee under cover of darkness, Shri Rakesh Sharma along with Constable Gagandeep and Constable Vishal Patel crawled under the heavy fire of maoists and changed their positions to gain- a suitable attacking., place. On gaining the required angle, the three in a concentrated fire gunned down the leading maoist.

After gunning down the first maoist, the three daredevils then targeted his buddy who was at a distance and firing heavily at the troops. But, the incessant fire of the maoists who were across the river was hindering the advance of the Commander and his buddies. Meanwhile, taking the advantage of darkness and supportive fire, the trapped maoist also advanced tactically towards the forest to make good his escape. To counter his plan, Shri Rakesh Sharma ordered his buddies not to care for the fire and advance towards the second maoist. Both the troopers followed their Commander and taking cover of available boulders, they advanced towards the fleeing maoist. As the maoist noticed that the courageous troopers are after him, he made a dash towards the forest. Seeing him flee, Shri Rakesh Sharma and his buddies fired and injured him due to which his weapon fell from his hand and he was seen limping before entering the thick forest. As the maoists across the river stopped their fire and fled from the area, the encounter site was thoroughly searched. During the search, dead body of a maoist with two .303 Rifles, 113 rounds of amns, two magazines and other incriminating items were recovered from the encounter site.

In this encounter, S/Shri Rakesh Sharma, Assistant Commandant, Gagandeep Singh, Constable and Patel Vishal Ramsing, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/11/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 170-Pres/2017—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Vivekanand Singh
Deputy Commandant

02. Bhavanee Singh Meena
Sub Inspector

03. Lakhan Lal Meena
Sub Inspector

04. V.D. Kamalakar
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12/03/2015, an Intelligence input about presence of a group of CPI (Maoist) led by Central Committee Member Arvind Jee in the forest bordering village-Sargaon under P.S. Chainpur, Distt :— Gumla, Jharkhand was received. To nab the maoists, an operation code named "Neptune Spear-15" was launched which involved 04 teams of 209 CoBRA, 02 teams each of 203 and 207 CoBRA, 03 teams of 158 Bn, 04 teams of Jharkhand Jaguar and State Police component. To target the area, three strikes were inducted from three different directions and locations with each given a specific area to search. Likewise four teams of 209 CoBRA moved from Ranchi on 12/03/2015 at 2200 hrs in vehicles and after covering some distance, left the vehicles near village Kotam on 13/03/2015 at about 0130 hrs. From there, the troops moved on foot towards the given target area along the planned route. On reaching close to the target area, the four teams as part of Strike 1, got divided and formed two strike groups. One of the groups consisting of two teams moved towards the hillock located at the back of target area to block the escape routes while another group consisting of two teams advanced fearlessly towards the foothills i.e. the target area. At around 0700 hrs, as the two teams under the command of Shri Vivekanand, Dy. Comdt. along with Md. Arsi, SDPO Gumla advanced towards the probable hideout; they noticed the presence of two suspicious persons in a stream at a distance. The commander immediately formed a small team comprising of Shri Kumar Brajesh, Asst. Comdt., SI/GD Bhavanee Lal Meena and CT/GD V D Kamlakar and advanced with it to nab the suspects. Hardly had the team moved some fifty meters ahead, when the maoists hiding in the jungle, opened sudden and heavy fire at it. The team immediately took position and retaliated. But, the location and number of maoists was not clear due to the dense vegetation. Meanwhile the two suspects ran into the jungle and disappeared in it. With enemy tactically positioned inside the thick vegetation and firing at will, it was a difficult situation for the troops to make an advance. At that juncture, Shri Vivekanand, Dy. Comdt. overcame the initial surprise and displayed his tactical acumen by ordering his team to silent its guns. At the same time, he ordered SI/GD Lakhan Lal Meena, who was at rear with two teams, to advance and fire heavily at the direction from where the fire was coming. Consequently, the maoists stopped firing at the advance team and concentrated their fire at the rear team. The brave troopers took advantage of the situation and crawled behind the dense vegetation to cover their next move. On the other

side, SI/GD Lakhan Lal Meena valiantly led his troops and made a ferocious but cautious advance towards the maoists positions. Sensing the advance of the troops towards its positions, the maoists blasted a series of IEDs planted for its defence. The blast of IEDs forced the troops to stop their advance but by then the commander had succeeded in breaching the defence of the maoists and had crawled to the close vicinity of the maoists with his small team of intrepid troopers. The maoists were well entrenched behind secured morchas made of boulders and logs.The battle was highly skewed against the small team and the maoists were greater in number, but without caring for it Shri Vivekanand, Dy. Comdt. ordered his team to open heavy fire at the maoists. In the fierce assault, some of the maoists got injured and were seen ducking behind the morchas. The sudden and surprise attack dented the confidence of the maoists and some of the maoists withdrew deeper in the jungle carrying their injured cadres while others remained positioned behind secured covers to stop the advance of the troops. To uproot the maoists from their positions, the troops fired heavily and a fierce gunfight at a close distance took place. The bullets were narrowly missing the brave troopers but undeterred and without caring for their own lives, the troops stood firm to their ground. In order to break the deadlock and attack the maoists in their den, Shri Vivekanand Dy.Comdt. again ordered SI/GD Lakhan Lal Meena to advance from his direction. As the maoists noticed the advance of troops from two directions, they began to flee one by one while firing simultaneously at the troops. On seeing the maoists planning to escape, the small team of brave troops moved out of its covers and advanced firing ferociously at them. In the close face to face gunfight, in absence of any cover, the valiant team neutralized a maoist besides inflicting injuries to others. The bold and courageous moved petrified the maoists and they fled from the area. The team chased the maoists for some distance but the maoists managed to flee taking advantage of dense forest.

Extreme gallant action displayed by the above officers and men not only changed the course of the battle and neutralized a maoist but also saved the troops from falling into their ambush. The maoists who were tactically positioned and had occupied advantageous positions with secured defence were counter-attacked and forced to flee after sustaining severe injuries. On searching the area, dead body of a maoist along with 01 USA made Spring Field Rifle, 01 Walky talky set, 112 ammunitions, 18 Electronic Detonators, 10 Non-Electronic Detonators and other misc. items were recovered.

In this encounter, S/Shri Vivekanand Singh, Deputy Commandant, Bhavanee Singh Meena, Sub Inspector, Lakhan Lal Meena, Sub Inspector and V.D.Kamalakar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/03/2015.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

मुद्रण निदेशालय द्वारा, भारत सरकार मुद्रणालय, एन.आई.टी. फरीदाबाद में अपलोडएवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा ई–प्रकाशित, 2017
UPLOADED BY DIRECTORATE OF PRINTING AT GOVERNMENT OF INDIA PRESS, N.I.T. FARIDABAD AND E-PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2017

LAZAR SAGAYA RAJ
Digitally signed by LAZAR SAGAYA RAJ
Date: 2017.11.25 09:13:41 +05'30'